समर्पण

मरु-भारती

के

प्रधान संपादक

राजस्थानी साहित्य-गगन

के

जाज्वल्यमान नक्षत्र

व

हिन्दी जगत के

श्रेष्ठ आलोचक एव निवन्धकार

श्रद्धेय डॉ० श्री कन्हैयालाल जी सहल

को

उनके स्नेहमय निरतर प्रोत्साहन

के लिए

श्रद्धा पूर्वक समर्पित

—गोविन्द अग्रवाल

भूमिका

राजस्थानी लोक-कथाओं का यह सग्रह चुरू निवासी श्री गोविन्द अग्रवाल ने लोकवार्त्ता शास्त्र के आधार पर किया है। इसे दो खण्डों मे प्रकाशित करने की योजना है, जिसका पहला खण्ड अब प्रकाशित हो रहा है।

इस सग्रह की कहानियाँ सब प्रकार पठनीय हैं और भारतीय कथा-साहित्य मे इन्हे सम्मानित स्थान मिलने की आशा है। भारतवर्ष कहानियो का देश है। ऐसा अनुमान किया जाता है कि यहाँ लगभग तीन सहस्र लोक-कथाएँ हैं। उनका विधिवत् सकलन लोकवार्त्ताशास्त्र का महत्त्वपूर्ण अंग है। हमे यह देखकर हर्ष है कि राजस्थान के लोकवार्त्ताशास्त्री विद्वान् अपने उत्साह से क्रमश आगे बढ रहे हैं। "वरदा" पत्रिका ने पहले ही इस ओर अच्छा काम किया है। श्री मनोहर शर्मा और श्री गोविन्द अग्रवाल ने जितनी कहानियाँ सामने रखी हैं और जो अभी लोक मे व्याप्त हैं, उनकी विशाल सामग्री का वैज्ञानिक अध्ययन आवश्यक है। कौन-सी कहानी ऐतिहासिक पवाडो से जा मिलती है, कौन-सी जातक, पचतत्र एव नैतिक कथा-साहित्य से निकली है, कौन सी केवल विनोदपूर्ण चुटकुलो के रूप मे है, यह सूक्ष्म छान-बीन का विषय है।

प्रस्तुत लेखक ने प्राथमिक सग्रह मात्र किया है, किन्तु वैज्ञानिक दृष्टि से उच्चस्तरीय अध्ययन भी अपेक्षित है। यह भी ज्ञातव्य है कि इन कहानियों मे से कितनी ही अन्य प्रदेशों मे भी प्रचलित हैं, जैसे पृष्ठ तीन-चार पर "कौवे और चिडिया" की कहानी। ये कहानियाँ मानव-जीवन की

समस्याओं की शाश्वत भाषा है। कर्म और भाग्य, बुद्धि की चतुराई और मूर्खता, उत्साह और आलस्य, प्रेम और घृणा, आत्म विश्वास और निराशा इन तत्वों से मानव का जीवन बना है। जब से मनुष्य है, तब से ही मनोभावों की ये प्रेरणाएँ भी मानव के साथ हैं एवं इन्हीं से उसका जीवन सचालित होता आया है। उन्हें ही उसने कहानियों मे ढाला है। कहानी का कटाक्ष दूसरे पर होता है। कहानी के व्यक्ति की हार-जीत, भलाई-बुराई, कहानी कहने या सुनने वाले को दुखदाई नहीं जान पड़ती, पर कहानियों के अक्षर निरतर मानवीय जीवन के उतार-चढ़ाव की ओर सकेत करते हैं। घर के आँगन मे या घर से बाहर के बीहड़ जगल और पहाड़ों मे या नदी और समुद्र के जोखिम भरे स्थानों में सर्वत्र कहानी की भाषा की मिठास मधु-बिन्दुओ की वर्षा की भांति फैली हुई मिलती है। विश्व का कोई ही मानव शायद ऐसा हो, जिसे कहानी की चासनी अच्छी न लगे।

कहानी सुनने के लिए बाल-भाव चाहिए। अधेड़ या बुड्ढे व्यक्ति के भीतर भी सनातन बाल-भाव रहता ही है।

अनेक विद्वानो ने पुरानी कहानियो की जो उधेड़बुन की है, उससे विश्व की रचना के बहुत से तथ्य ज्ञात हुए हैं। कहानियो की रचना मे जैसे मनुष्य भाग लेते हैं, वैसे देवता भी। कहानी का धरातल इतना हलका-फुलका होता है कि उसमे स्वर्ग और पृथ्वी के सभी प्राणी, अर्थात् पशु-पक्षी, कीट-पतग, वृक्ष-वनस्पति, मनुष्य, देवयोनियाँ सभी पात्र बनाये जा सकते हैं। मानवीय स्वभाव के सौम्य और घोर रूप कहानी मे भिन्न-भिन्न पैंतरो के साथ आते हैं और वहाँ उन सबका स्वागत किया जाता है। कहानियों के जगत् मे कुछ भी जड नहीं है। वहाँ मिट्टी-पत्थर, नदी-पहाड़, पेड़-पौधे, फूल-कलियाँ, आकाश और हवाएँ, सूर्य-चन्द्र और तारे सभी प्राणवन्त जीवधारियों के समान व्यवहार करते हैं। वह एक विलक्षण ससार है, जहाँ सारी सृष्टि को कोई एक सूत्र में आपस मे पिरोए रहता है।

इस सग्रह की "इल्ली-घुणियाँ" शीर्षक कहानी, पृष्ठ ११७-११८ हमने अपने यहाँ उत्तर प्रदेश मे भी कार्त्तिक-स्नान के समय कही जाते

हुई सुनी है। इसके सरल वातावरण में इल्ली (सुरसुरी नाम का छोटा कीड़ा) घुन, राजकुमारी, रानी, राजा ये सब एक ही नाटक के पात्र बनते हैं और सब अपने चरित्र की सत्ता से व्यवहार करते हैं। इनमें इल्ली नामक सबसे छोटे कीड़े का चरित्र सबसे ऊपर उभड़ आता है। कहानियों के इस सनातन संसार को मानव श्रद्धा से अपना प्रणाम भाव अर्पित करता है।

—वासुदेव शरण अग्रवाल

काशी विश्वविद्यालय
२१-३-६४

यज्ञ का अनुष्ठान

राजस्थान का अतीत साहित्य और उसका सांस्कृतिक वैभव अत्यन्त समुज्ज्वल है। जिस मरु-रानी ने पानी रखकर रक्त का दान दिया, जहाँ के मानी आन-बान पर मरते आये, जहाँ सतियों की दिव्य ज्योति वातावरण को आलोकित करती रही, जहाँ के निवासियों को पद-पद पर संघर्ष करना पड़ा, उस राजस्थान की भूमि चाहे सस्यश्यामला न रही हो, चाहे वहाँ जल के अनन्त स्रोत न फूटे हों, किन्तु इसमें संदेह नहीं, संस्कृति के जितने अगणित स्रोत इस प्रदेश में फूटे, उनकी कोई तुलना नहीं।

वैसे तो समूचे लोक-साहित्य की दृष्टि से ही राजस्थान अत्यन्त समृद्ध है *किन्तु थोड़े 'अर्थवाद' का आश्रय लेकर यदि कहें तो कह सकते हैं कि* यहाँ की लोक-कथाएँ तो गगन-मण्डल में टिमटिमाते हुए तारों की भाँति असंख्य हैं। इस प्रदेश की अन्तरात्मा में अनेक कथा सरित्सागर और सहस्र-रजनी चरित छिपे हुए हैं।

अनेक वर्षों से मैं एक ऐसे व्यक्ति की तलाश में था जो राजस्थान की असंख्य लोक-कथाओं को लिपिबद्ध करने का काम कर सके। अंत में मेरा ध्यान राजस्थान की गौरवशाली सांस्कृतिक परम्परा के धनी श्री गोविन्द अग्रवाल की ओर गया जो राजस्थानी लोक-कथाओं के चलते-फिरते कोश हैं। मेरे 'ओड़ाने' से उन्होंने 'मरु-भारती' में राजस्थानी लोक कथा-कोश के अनुष्ठान का शुभारम्भ कर दिया। उनके अध्यवसाय, उनकी स्मरण-शक्ति और उनकी दायित्व-भावना को देख कर मुझे साश्चर्य आह्लाद हुआ। यह बड़े हर्ष की बात है कि राजस्थानी लोक कथा-कोश का यह यज्ञ जब से प्रारम्भ हुआ, तब से यह अखण्ड और अनवच्छिन्न क्रम से आज

भी चल रहा है और मैं पूर्णत आश्वस्त हूँ कि भविष्य मे भी अप्रतिहत गति से आगे बढता रहेगा।

राजस्थानी साहित्य और सस्कृति के अनन्य प्रेमी और पृष्ठपोषक श्रीयुत कृष्णकुमारजी बिडला का ध्यान उक्त कोश की ओर आकृष्ट हुआ। उन्ही की सतत प्रेरणा, प्रोत्साहन और सहायता से यह कोश खण्डश पुस्तकाकार प्रकाशित हो रहा है। मरु-भारती-परिवार तथा उक्त कोश के सग्रहकर्त्ता श्री गोविन्द अग्रवाल—हम सभी श्री बिडला जी के चिरकृतज्ञ रहेंगे।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि श्री गोविन्द अग्रवाल द्वारा प्रारम्भ किया हुआ यह अखड कोश-यज्ञ लेखक को यशस्वी बनाएगा तथा लोक-कथाओं के क्षेत्र मे शोध करने वाले अनुसधित्सुओ को भी इससे सहायता मिलेगी। 'मरु-भारती' के विशिष्ट परामर्शदाता तथा लोक-सस्कृति के मर्मज्ञ एव विविध शास्त्र-निष्णात सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ने उक्त लोककथा— कोश की भूमिका लिख कर हम उपकृत किया है और इसका गौरव बढाया है।

२५ मार्च, १९६४

कन्हैयालाल सहल
प्रधान सपादक
'मरु भारती'
पिलानी

नम्र निवेदन

बचपन में माँ, दादी और दादा से बहुतेरी कहानियाँ सुनी थीं, जिनमें से कुछ याद रहीं, कुछ भूल गया। मेरे छोटे दादाजी बहुत रोचक ढंग से कहानियाँ कहा करते थे। उनके कहानी कहने का ढंग इतना मोहक था कि पाँच छह वर्ष की अवस्था में उनके मुँह से सुनी खापरिया चोर जैसी बड़ी कहानियाँ भी आज मुझे ज्यों की त्यों याद हैं। कहानी शुरू करने से पहले वे,

बात कहता वार लागै,
हुकारै बात मीठी लागै,
बात मे हुकारो,
फौज मे नगारो,
आधा'क सोवै आधा'क जागै,
जागतोडा की पगडी
सूत्योडा ले भागै,
जद बाता का रग थोरा लागै . ।

आदि कह कर हमें मन लगा कर कहानी सुनने और हुकारा देने के लिए तैयार करते और फिर 'तो रामजी भला दिन दे, एक साहूकार के च्यार बेटा हा", आदि से कथा शुरु करते। कहानी सुनते वक्त हुंकारा देना बहुत आवश्यक है। इससे कथा कहने वाला अनुभव करता है कि कथा ध्यान में सुनी जा रही है और कथा कहने में उसका उत्साह बढ़ता रहता है। इसीलिए फौज में नगारे की तरह कथा में हुँकारे का महत्त्व है।

कभी कभी मैं सोचा करता कि ये कथाएँ लिखी जाएँ तो अच्छा हो। मुझे लगता कि यह बहुमूल्य कथा-साहित्य शीघ्रता से नष्ट होता जा रहा

है क्योंकि देश की आजादी के बाद आने वाली पीढ़ी इस कथा-साहित्य से बहुत दूर हो चुकी है और आगामी चन्द वर्षों मे यह प्राचीन कथा-साहित्य सदैव के लिए नष्ट हो जाएगा। मेरे मन मे बड़ी छटपटाहट थी कि किसी प्रकार इस साहित्य को सरक्षण मिले। तभी मुझे मरु-भारती के प्रधान सपादक आदरणीय डॉ० श्री कन्हैयालाल जी सहल का आदेश मिला कि मैं मरु भारती के लिए राजस्थानी लोक-कथाएँ लिखूं। उनका आदेश मेरी इच्छापूर्ति का साधन बन गया। मुझे ऐसा लगा मानो घर बैठे ही गगा आ गयी और मैं इस कार्य मे जुट गया। लेकिन विधि की विडबना ही कहिए कि हार्दिक इच्छा और रुचि होते हुए भी इस कार्य को पूरा समय नही दे सका। लेकिन डॉ० साहब का सहज स्नेह और प्रोत्साहन मुझे बराबर मिलता रहा और उन्होने थोडे ही समय मे मुझसे एक हजार कथाओ से भी अधिक का सग्रह करवा लिया। ये कथाएँ बराबर मरु-भारती मे निकल रही हैं और आगे भी निकलती रहगी, ऐसा मेरा विश्वास है। आदरणीय डॉ० साहब के प्रयत्न से ही ये कथाएँ अब पुस्तकाकार निकल रही हैं, जिससे इन राजस्थानी कथाओ के प्रचार और प्रसार मे अधिकाधिक बढोतरी हो सकेगी। इन सब के लिए डॉ० साहब का हृदय से अत्यत आभारी हूँ।

राजस्थान की चप्पा-चप्पा भूमि वीरो के बलिदानो से भरी पडी है। यहाँ का कण-कण राजस्थानी वीर और वीरागनाओ की गौरवपूर्ण गाथाओ से देदीप्यमान हो रहा है। महाभारत के वीर योद्धा कर्ण ने श्रीकृष्ण से अपनी अतिम इच्छा व्यक्त करते हुए कहा था कि मेरी चिता ऐसी जगह बनायी जाए कि जहाँ पहले कोई दाग न लगा हो। श्रीकृष्ण के दिव्य दृष्टि से देखने पर सूई की नोक के बराबर ऐसी जगह मिल भी गयी थी। लेकिन राजस्थान की धरती पर शायद सूई की नोक के बराबर भी ऐसी जमीन न मिलेगी जो शूरवीरो के खून से सिंचित न हुई हो। उन शूरवीरो के अद्भुत पराक्रम की कितनी कथाएँ काल के कराल गाल मे समा गयी हैं, इसका कोई लेखा—जोखा नही। फिर जो कथाएँ उपलब्ध हैं, वे भी दिन प्रति दिन

नष्ट होती जा रही हैं क्योंकि अधिकतर कथाएँ तो लोगों की जबान पर ही चलती आ रही हैं और जो कहीं हस्तलिखित भी पड़ी हैं वे भी दीमकों का भाजन बन जाने की बाट जोह रही हैं। इसलिए इन कथाओं के संरक्षण की आज सर्वाधिक आवश्यकता है। इनको संरक्षण न मिलना एक राष्ट्रीय अपराध होगा।

वीर गाथाओं के अतिरिक्त धार्मिक कथाएँ, नीति कथाएँ, बाल-कथाएँ, साहसिक और परियों आदि की विभिन्न प्रकार की अनगिनत कथाएँ हैं जिन सबका संकलन होना अत्यावश्यक है। नीति-कथाएँ पंचतंत्र और हितोपदेश की कथाओं की तरह ही बहुत रोचक एवं उपयोगी हैं। प्रायः हर राजस्थानी कहावत के पीछे कोई न कोई कथा होती है। इन कथा कहानियों का लोग-बाग प्रायः अपनी मंडली में, सफर में, अवकाश के समय अथवा कोई प्रसंग उपस्थित होने पर कहते हैं। वैसे मोटे तौर पर इन कथाओं को तीन भागों में बाँटा जा सकता है—

१ वे घरलू बाल कथाएँ जो घर की बड़ी बूढ़ी स्त्री (नानी दादी) या पुरुष बालकों को सुनाता है। शाम होते ही घर भर के बालक अपनी नानी दादी को घर कर बैठ जाते हैं और सब अपनी अपनी पसंद की कहानी कहने का आग्रह करते हैं। पशु-पक्षियों की, चोर-साहूकार की और राजा-रानी आदि की कथाएँ कह कर वृद्धा बालकों का मनोरंजन करती है। किसी हास्य कथा को सुनते वक्त बालक हँसते हँसते लोट-पोट हो जाते हैं तो किसी दुःखान्त कथा को सुनकर वे गमगीन बन जाते हैं। ये छोटी छोटी कथाएँ बालकों के कोमल मनों पर सदैव के लिए अंकित हो जाती हैं। कथा सुनाते वक्त वृद्धा बालकों के साथ विनोद भी करती जाती है। जब उसे बच्चों को टालना होता है तो वह कहती है—

> 'कांणी कैवें कागलो, हुंकारो देव भइया,
> आधलियें न चोर लग्या, भाग रे पागल्या।"

और कथा समाप्त करने पर वह अपने किसी नटखट पोते का नाम लेकर कहती है—

"ओड पा'णी, मूसा राणी, मूग पुराणा, नदू के सासरे का माई बामण से वाणा ।"

रात के समय घर के काम-काज से निवृत होने पर कथाए कही जाती हैं। यदि कोई बालक अपनी माँ से दिन मे कथा कहने का आग्रह करता है तो माँ यह कहकर बच्चे को टाल देती है कि दिन में कथा कहने से मामा रास्ता भूल जाता है।

इन कथाओ का एक बडा लाभ तो यह रहा है कि घर के सभी बालक बडो के सानिध्य मे आने का प्रयत्न करते हैं। बालको को मनोरजन के साथ साथ अच्छी शिक्षा मिलती है तथा इस मनोरजन म कुछ खर्च नहीं होता। इसके विपरीत सिनेमा वगैरह आधुनिक मनोरजन के साधनों के चल पडने से बालक बडो के समीप आने म कतराते हैं, उनके सानिध्य से दूर भागते हैं और पैसे खर्च करके अवगुण सीखते हैं।

२ दूसरे प्रकार की कथाएँ वे हैं जो रावल, भाट, ढाढी, चारण, मिरासी और राणी मगा आदि अपने आश्रय दाताओ या यजमानो को सुनाते हैं। ऐसी कथाएँ काफी बडी होती हैं। कथा सुनाने वाले तरह तरह के दोहे और गीत आदि बीच बीच म बोलते जाते हैं जिनसे कथाओ मे बहुत रोचकता आ जाती है। इस प्रकार कथा कहने वाले अपने विशेष ढग से कथा कहते हैं वे पुरजोर आवाज म कथा कहते हैं जिससे बैठे हुए सारे श्रोता अच्छी तरह कथा सुन सकें। साथ ही कथा कहने वाला कथा के पात्रो का सफल अभिनय भी करता जाता है। घोडे के दौडाने का प्रसग कथा म आता है तो कथा कहने वाला इस प्रकार की ध्वनि निकालता है जैसे वास्तव म घोडा दौड रहा हो।

राजा और रईसो के मनोरजन का मुख्य साधन शिकार होता था लेकिन घर पर फुरसत के वक्त वे कुशल कहानी कहने वालो से शूरो, सामन्तो, सुन्दरियों और वीरागनाओ की कथाएँ सुना करते थे और उन्हे भरपूर पुरस्कार भी देते थे। अपनी पसन्द की कथाओ को वे लिखवा भी लेते थे।

• ३ महिला व्रत कथाएँ—जो एक स्त्री अन्य स्त्रिया को घर मे, मन्दिर म अथवा तुलसी या वड-पीपल के वृक्ष के नीचे बैठ कर सुनाती है। महिला धार्मिक व्रत कथाओ का अपना महत्त्व है। कथा कहने वाली स्त्री कथा को हरुफ वं हरूफ इस प्रकार सुनाती है मानो कोई पुस्तक पढ रही हो। एक अक्षर भी कही कम या अधिक नहीं हो पाता। इन कथाओ का ही यह प्रभाव है कि इस मरु भूमि मे जहाँ वर्षा बहुत कम होती है यत्र-तत्र बड पीपल जैसे बडे और घनी छाया वाले वृक्ष दिखलाइ पड जाते हैं। वृक्ष की एक हरी शाखा का तोडन मात्र स कितना पाप होता है यह बात ये कथाएँ बतलाती हैं और साथ ही यह भी बतलाती हैं कि आक की एक डाली को नियमपूर्वक सीचने से भी कितना फल मिलता है। फलत वैसाख और जेठ की बडी धूप म भी राजस्थानी महिलाएँ अपने सुहाग को अमर बनाने क लिए और कुमारी कन्याएँ योग्य वर पाने की अभिलाषा से बड-पीपल आदि वृक्षो को दूर-दूर से पानी लाकर अपन हाथो से सीचती हुई दिखलाइ पडती हैं। वन महोत्सव मनान का काय तो अधिकतर अखबार और प्रचार तक ही सीमित रहा लकिन इन कथाओ का प्रत्यक्ष प्रभाव सदियो स स्पष्ट रूप से दिखलाई पड रहा है।

गगा और जमुना जैसी कथाएँ यह बतलाती रही है कि अनजाने भी चोरी करन का कितना बडा पाप होता है और दवी-दवताओ को भी इसका प्रायश्चित्त करना पडता है। फलत इन कथाओ का सुप्रभाव राजस्थान की नारी पर बहुत अधिक पडा है। य कथाएँ यथासमय नियमपूर्वक सुनी जाती हैं और कथा सुन कर ही अन्न-जल ग्रहण किया जाता है। सौभाग्यवती स्त्रिया अपन सुहाग को अमर बनाने के लिए पुत्र पौत्रा की कामना के लिए और धन धान्य की प्राप्ति के लिए विधान-सहित कथाएँ अवश्य सुनती हैं इसलिए इन कथाओ की परपरा अबाध गति स चलती रही है। इन कथाओ की एक और विशेषता यह रही है कि कथा के अन्त मे जो फलश्रुति कही जाती है उसम यह कामना की जाती है कि कथा म वर्णित काय को जो सुफल करन वाले को मिला वैसा सब को मिले। आज

'जय-जगत' या 'जिओ और जीने दो' का नारा सब को एक अनोखी सूझ लगता है लेकिन राजस्थानी व्रत-कथाओं की यह एक परपरागत अनूठी देन है।

इनके अतिरिक्त कथाओं की एक चौथी किस्म वह कही जा सकती है जो नव-युवक यार दोस्त अपने साथियों में बैठ कर कहते हैं। इन कथाओं में अश्लीलता का पुट होता है, अतः ऐसा साहित्य लिपि-बद्ध नहीं किया जा सकता। यदि इन कथाओं से अश्लील अंश और शब्द निकाल दिये जाएँ तो ये कथाएँ भी बड़ी उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं। मैंने इन कथाओं में कुछ अश्लील कथाओं को श्लील बनाकर पेश करने का प्रयत्न किया भी है।

इतिहास तो राजाओं के जन्म-मरण की तारीखों आदि का सूचीपत्र मात्र होता है। तत्कालीन जन-जीवन पर तो इन कथाओं से ही प्रकाश पड़ता है। ये लोक-कथाएँ ही राजस्थान के तत्कालीन जन-जीवन की सच्ची तस्वीर खींचती हैं और इन कथाओं का राजस्थान के जन-जीवन पर भरपूर असर रहा है।

जहाँ तक हो सका है, मैंने कथाएँ संक्षिप्त रूप में ही लिखने की चेष्टा की है लेकिन साथ ही मेरा यह प्रयत्न भी रहा है कि कथा का कोई आवश्यक अंग छूटने न पाये। कुछ ऐसे भी प्रसंग होते हैं जो थोड़े बहुत हेर फेर के साथ कई कथाओं में आते हैं। जो प्रसंग एक कथा में विस्तार से आ चुका है, वैसा ही प्रसंग दूसरी कथा में आने पर मैंने उसे बहुत संक्षिप्त कर दिया है। मैंने अपना कर्त्तव्य ईमानदारीपूर्वक और निष्पक्ष भाव से निभाने की चेष्टा की है। इसमें कहाँ तक सफल हो सका हूँ, यह तो विद्वान् और सहृदय पाठक ही बतला सकेंगे। जहाँ तक भाषा का सवाल है, मैंने सरलतम और बोलचाल की भाषा में कथाएँ लिखने का प्रयत्न किया है, जिससे अधिकाधिक पाठक इन कथाओं को पढ़ सकें तथा जिन राज्यों में हिन्दी का अभी बहुत प्रचलन नहीं हुआ है और जहाँ सरल हिन्दी ही समझी और पढ़ी जाती है, वहाँ के निवासी भी इन कथाओं में रुचि ले सकें। कथाओं के

शीर्षक राजस्थानी ही रखे गये हैं और यत्र-तत्र कुछ बहु प्रचलित राज-स्थानी शब्दा से भी पाठका को परिचित कराने का प्रयत्न किया गया है।

जितनी कथाएँ लिखी गयी हैं, वे सब सुनकर या पढकर मूल रूप मे ही लिखी गयी हैं। मैंने अपनी आर से उनम कुछ भी मिलाने की चेष्टा नही की हैं। जिन सबधियो, मित्रा परिचित या अपरिचित महानुभावा से मैंने कथाएँ सुनी हैं या जिन महानुभावा द्वारा पूव लिखित कथाआ से मुझे सहायता मिली है उन सब का हृदय से आभारी हूँ।

राजस्थान लोक-कथाआ का रत्नाकर है और इससे रत्ना को इकट्ठा करने के लिए भगीरथ प्रयत्न की आवश्यकता है जा सरकार या काई वडी साधनसपन सस्था ही कर सकती है। किसी एक आदमी के बूते का यह काम नही है और विशेष कर मरे जैस आदमी का तो कतई नहीं जो इस काय म रुचि रखते हुए भी अधिक समय नही दे सकता। फिर भी मरी हार्दिक इच्छा है कि अधिकाधिक राजस्थानी लोक-कथाआ का सकलन करूँ और आशा करता हूँ कि हितैषिया के आशीर्वाद और सहयाग स इस काय को निरतर जारी रख सकूगा।

—गाविद अग्रवाल

चूरू
१ अप्रेल १९६४

● घर का घर मे सलट लिया

एक गीदड और गीदडी पानी पीने के लिए तालाब पर गये। वे दोनों बहुत प्यासे थे, लेकिन तालाब के किनारे एक शेर बैठा था। शेर को देख कर दोना वही ठिठक गये और पानी पीने की कोई तरकीब सोचने लगे। सोचते-सोचते उन्हे एक युक्ति सूझी और वे दोनों सिंह के पास गये। सियारी ने सिंह से कहा कि जेठजी, हमारा न्याय आप कर दीजिए। हमारे तीन बच्चे हैं सो दो बच्चे मैं रखना चाहती हूँ और एक बच्चा इसे देना चाहती हूँ। लेकिन यह दो बच्चे स्वय लेना चाहता है और एक मुझे देना चाहता है। भला आप ही बतलाइये कि मैं एक बच्चा कैसे ले लूं? मैंने ही उन्हें जन्म दिया है, मैंने ही उन्हे पाला पोसा है। उधर गीदड भी दो बच्चा की माँग कर रहा था। तब सियारी ने कहा कि मैं तीना बच्चा को यहाँ ले आती हूँ, जेठजी जैसा उचित समझें कर दें। या कह कर सियारी पानी पीकर चलती बनी। सिंह ने सोचा कि—सियारी तीना बच्चा को ले आये तो पूरा कलेवा बन जाएगा। लेकिन बहुत देर बीत जाने पर भी जब सियारी नही आयी तो सियार ने सिंह से कहा कि हुजूर, वह कुल्टा अभी तक नही लौटी है, जरूर उसकी नीयत म फरक है। वह रॉड स्वय दो बच्चे लेना चाहती है, मैं अभी उसे घसीट कर लाता हूँ। या कह कर गीदड भी पानी पी कर चलता बना।

कुछ देर तक तो सिंह वही प्रतीक्षा करता रहा, लेकिन जब उसे भूख अधिक सताने लगी तो सियार सियारी का न्याय करने के लिए वह उनकी 'घुरी' पर स्वय गया और उसने पुकार कर गीदड से कहा कि अपने बच्चा को लेकर जल्दी बाहर आ जाओ, तुम्हारा न्याय कर दूं, मुझे देर हो रही है। सिंह की बात सुनकर सियारी ने अन्दर से ही कहा कि

जेठजी, आपने यहाँ आने की तकलीफ क्या उठाई ? हम तो 'घर के घर में ही सलट लिये' यह निपूता कहता है कि मैं दो बच्चे ही लूँगा सो क्या करूँ, दो बच्चे इसे दे दूँगी, मैं एक ही रख लूँगी। सियारी की बात सुनकर सिंह अपना सा मुँह लेकर चला गया।

● हलदी और सूंठ

हल्दी और सोठ दो बहिनें थीं। हल्दी खूब काम किया करती लेकिन सोठ काम को हाथ भी न लगाती। एक बार हल्दी अपनी नानी के यहाँ गई। रास्ते में एक हलवाई की दुकान आई। हलवाई के कहने पर हल्दी ने भट्टी लीप-पोत दी। फिर वह आगे बढ़ी तो एक खाती का घर आया। हल्दी ने उसका घर बुहार झाड़ कर साफ कर दिया। हल्दी आगे बढ़ी तो उसे एक झड़बेरी मिली। हल्दी ने झड़बेरी के कांटे बुहार दिये। इसी प्रकार जो भी उसे रास्ते में मिला वह सबका काम करती गई। नानी के यहाँ पहुँची तो वहाँ भी वह नानी का तथा अपनी मामियों का काम दौड़ दौड़ कर करती। सभी उसे प्यार करते। कुछ दिन नानी के यहाँ रह कर जब हल्दी लौटने लगी तो नानी और मामियों ने उसे तरह तरह की चीजें दीं। वे सब यही चाहती थीं कि हल्दी कुछ दिन और रहे।

सारी चीजें लेकर हल्दी वहाँ से चली। रास्ते में झड़बेरी मिली तो उसने हल्दी को अपने मीठे बेर दिये, खाती ने पलंग दिये, नानी ने सुन्दर खिलौने दिये और हलवाई ने तरह तरह की मिठाइयाँ हल्दी को दीं। हल्दी जब घर पहुँची तो सभी ने हल्दी की बहुत प्रशंसा की कि हल्दी तो बहुत चीजें लाई है लेकिन सोठ को बड़ी ईर्ष्या हुई। वह भी चीजें लाने के लिए नानी के घर चल पड़ी। रास्ते में हलवाई की दुकान आई। हलवाई ने सोठ से भट्टी लीपने के लिए कहा तो सोठ ने नखरे से उत्तर दे दिया 'थारी हल्दी-फल्दी मैं हूँ सोठया सेठ काम करूँ तो मेरे हाथों में मार खाना पड़ेगा के ?" सोठ आगे बढ़ी और जो भी उसे रास्ते में

मिला उसे यही उत्तर देती गई। नानी के यहाँ पहुँचकर भी सोठ ने कोई काम नहीं किया। जब उसकी नानी मामी कोई काम ओढ़ाती तो सोठ यही उत्तर देती, 'थाही हलदी पलदी मैं हूँ सठवा सूठ, काम करूँ तो मेरे हाथां में साल कोनी पडज्या के ?"

थोड़े ही दिनों में उसकी मामियाँ उससे उकता गई। वे मन में कहती कि सोठ किसी प्रकार यहाँ से निकले तो अच्छा रहे। निदान सोठ वहाँ से चली तो उसकी नानी मामियों ने उसे नाम-मात्र की चीजें दीं। रास्ते में उसे वही झडबेरी मिली जिसमें बड़े मीठे बोर लगे थे। सोठ ने बेर माँगे तो झडबेरी ने उसे झिडकते हुए कहा कि काम करते वक्त तो तेरे हाथों में साल पड़ता था अब बेर माँगने आई है, भाग जा यहाँ से। सोठ को रास्ते भर यही उत्तर मिला। वह खिन्न मन से घर पहुँची। घर पहुँचने पर सबने सोठ से यही कहा कि बाई, सब को काम प्यारा है, चाम प्यारा नहीं, हलदी ने भाग भाग कर काम किया तो वह इतनी चीजें ले आई, तू सठवा सोठ बनी रही तो तुझे भला चीजें भी कहाँ से मिलती ?

कागलो और चिड़ी

एक चिडी और कौवा आपस में दोस्त थे। कौवे को मिला लाल और चिडी को मिला एक मोती। कौवे ने चिडी से कहा कि जरा अपना मोती तो दिखलाना। चिडी ने मोती दिखलाया और कौवा उसे अपनी चोंच में दबाकर 'नींमडी' (नीम का वृक्ष) पर जा बैठा। चिडी ने नीमडी से जाकर कहा कि नीमडी नीमडी काग उडा। लेकिन नीमडी ने उत्तर दिया, "मैं क्यूं उडाऊ मेरो के लियो।" "काग मोती देवै नी, चिडी रोवती रैवैनी" (कथा कहते समय हर बार इस पद को दोहराया जाता है।) नीमडी के उत्तर से असंतुष्ट होकर चिडी खाती के पास जा कर बोली कि—खाती खाती नीमडी काट। लेकिन खाती ने भी कह दिया, "मैं क्यूं काटूं मेरो के लियो।" तब चिडी ने राजा के पास पुकार की, 'राजा राजा खाती नै डंड' लेकिन राजा ने उत्तर दिया कि "मैं क्यूं डंडूं मेरो के लियो।" तब चिडी ने

तू मुझे न काट मैं काग को उडा दूंगी। कौवे ने लोमडी से कहा कि तू मुझे न उडा मैं चिडी का मोती दे दूंगा।

कौवे ने चिडी का मोती उसे दे दिया और चिडी खुश होकर फुर्र से उड गई।

● पगडी गई भैंस के पेट

एक महाजन एक गूजर से कुछ रुपये माँगता था। गूजर ने रुपये नही दिये तो महाजन ने बीकानेर के मोहतें हाकिम के पास फरियाद की। साथ ही उसने हाकिम को एक पगडी भी बँधवा दी। हाकिम ने गूजर को तलब किया तो गूजर ने एक भैंस रिश्वत स्वरूप हाकिम के घर भेज दी। महाजन रुपये दिलवाने के लिए जल्दी करने लगा तो हाकिम ने उसे बुलवा कर कहा कि रुपये होने से मिलेंगे। महाजन ने अपनी पगडी को हाथ लगाते हुए हाकिम से कहा कि मेरी पगडी की लाज रखो। हाकिम पगडी को भूला नही था लेकिन गूजर ने उसके घर भैंस भेज दी थी अत उसने महाजन से कहा कि पगडी भैंस के पेट में गई। महाजन अपना सा मुँह लेकर अपने घर चला आया।

● वो ही कुहाडो वो ही वैसो

एक गाँव में 'बावली माता' की बडी मान्यता थी। गाँव में जो कोई चोरी करता उसका हाथ बावली माता की मूर्ति से चिपक जाता। एक दिन सैंसा नाम का खाती, 'रावले' की एक अच्छी भैंस चुरा कर लाया और इस डर से कि सवेरे मूर्ति को हाथ चिपक जाएगा वह देवी का 'मँड' (छोटा-सा देवालय) तोडने लगा। देवी ने कहा कि तू मेरा 'मँड' मत तोड, तेरा हाथ नही चिपकेगा। सैंसा चला गया। सवेरे भैंस की चोरी का हल्ला हुआ। गाँव भर के लोग परीक्षा देने के लिए देवी के 'मँड के पास इकट्ठे हुए और बारी बारी से हाथ चिपका कर परीक्षा देने लगे। सबसे अत में सैंसे की बारी आई। सैंसे ने देवी को चेतावनी देते हुए कहा

सुण ये माता बावली, भैंस गई है रावली ।
मैं हूँ खाती संसो, वोही कुहाड़ो वो ही बैंतो ॥

भैंसे का हाथ मूर्ति के नहीं चिपका और वह निर्दोष साबित हो गया ।

● नागी भली क छीके पाँव

ननद और भौजाई रात को साथ साथ सोया करती । ननद दरवाजे की ओर सोती और भौजाई को अपने पीछे सुलाया करती । लेकिन भौजाई का अपने जेठ के साथ अनुचित संबंध था और वह हर आधी रात को उसके पास जाया करती । इसके लिए उसने एक छींका लटका रखा था और ननद जाग न जाए इसके लिए छींके पर पैर रखकर चुपचाप दूसरी ओर को उतर जाया करती । लेकिन ननद से यह बात छिपी न थी ।

एक दिन भौजाई अपने वस्त्र उतार कर नहा रही थी कि उसका जेठ आ गया । अब उस स्त्री ने आसमान सिर पर उठा लिया कि जेठ ने मुझे स्नान करते हुए नग्नावस्था में देख लिया । मेरा तो पातिव्रत धर्म नष्ट हो गया । अब मैं अन्न पानी ग्रहण नहीं करूँगी और प्राण दे दूँगी । सारे लोग समझा कर हार गये लेकिन वह नहीं मानी । तब उसकी ननद ने एकान्त में उससे कहा

तेरो जेठ और मेरो वीर, जिण को देखत दुख्यो सरीर
बारह मास मोहि देखत भया, मैं मुख सेती कुछ नहीं कह्या ।
अब आयो कहने को दाँव, नागी भली क' छींके पाँव ॥

भौजाई को तो इस बात का गुमान भी न था कि ननद उसकी करतूतें जानती है । उसने ननद के पैरों पर गिर कर माफी मांग ली ।

● लेणा एक न देणा दोय

एक कछुआ और कौआ आपस में दोस्त थे । एक दिन एक चिड़ीमार

ने कौवे को फँसा लिया तो कछुवे ने चिडीमार से कहा कि तू कौवे को छोड दे। इसके बदले मैं तुम्हे एक कीमती मोती दे दूंगा। चिडीमार ने कहा कि तू पहले मुझे मोती दे तो मैं कौवे को छोड दूं। कछुवे ने तालाब में डुबकी लगाई और एक मोती लेकर बाहर आया। चिडीमार के मन में मोती को देख कर लालच आ गया और वह कछुवे से बोला कि इसकी जोडी का मोती लाकर देगा तब कौवे को छोडूँगा। कछुवे ने कहा कि मैं मोती ला दूंगा लेकिन पहले तुम कौवे को छोड दो। चिडीमार ने कौवे को बन्धन मुक्त कर दिया। कछुवे ने एक मोती और लाकर चिडीमार को दिया लेकिन चिडीमार ने कहा कि यह मोती छोटा है। तब कछुवे ने चिडीमार से कहा कि वह पहले वाला मोती मुझे दो मैं उसकी जोड का मोती ला दूंगा। चिडीमार ने मोती दे दिया और कछुवा जाकर पानी मे बैठ गया। चिडीमार रो रोकर कछुवे को पुकारने लगा लेकिन कछुवे ने तालाब के अन्दर से ही उत्तर दे दिया

एदा करै सो होय,
लेणा एक न देणा दोय ॥

अर्थात तू एक मोती लेता नही और मैं दो देता नही। निदान चिडीमार अपना सा मुह लेकर चला गया।

● देवी मड मे ही मरडका करै है

एक बनिये ने भैरूँ जी (भैरव) की मनौती मानी कि यदि मेरे पुत्र हो जाए तो मैं तुम्हारे एक भैसा चढा दूंगा। बनिये के बेटा हो गया। अब वह एक भैसा लेकर भैरव के थान पर पहुँचा। बनिया अब बडी दुविधा म पड गया। भैंसे की बलि उससे कैसे दी जाए? कुछ देर तक तो वह खडा-खडा सोचता रहा फिर उसने भैंसे की नाथ को भैरूँ जी के गले म डालकर हाथ जोड लिये और घर आ गया। थोडी देर तक तो भैसा वहीं खडा रहा लेकिन फिर उसका धैर्य समाप्त हो गया और उसने बलपूर्वक भैरूँ की मूर्ति को उखाड लिया और उसे घसीटता हुआ इधर उधर भागने

बरडावै सै ?" उसी वक्त बाड के ऊपर एक नेवला चढ रहा था। मेंढकी ने नेवले से कहा, "बाड चढता, बडका राजा, देखोजी जेठजी मैं नक्टी सूं ?" बडका राजा और जेठ जी बनकर नेवला फूल गया। उसने मेंढकी से प्यार भरे लहजे में कहा, 'ऐ रतनागर सागर की जायेडी, क्यूं अे साले ओछां सें बोलै सै ?"

नुगरी भायली

एक चूही और चिडी भायली थी। चूही ने चिडी से कहा कि आओ बहिन, कुएँ को उलांघें। चिडी तो फर्र से उड गई लेकिन चूही कुएँ का न उलांघ सकी। वह कुएँ मे गिर गई। चिडी रोने लगी। इतने में पानी निकालने वाले कुछ लोग कुएं पर आ गये। चिडी को रोते देख उन्होंने चिडी से पूछा कि तू क्या रो रही है ? चिडी ने कहा कि मेरी चूही भायली कुएँ में गिर गई है, उसे निकाल दो। उन लोगो ने चूही को बाहर निकाल दिया तो चिडी ने चूही से कहा कि भायली, तू तो कुएँ म गिर गई। *इतना सुनते ही चूही ने रोष पूर्वक कहा कि मैं क्यो गिर गई, कुएँ में गिर* तेरा बाप निगोडा, मैं तो हर हर गगा नहा रही थी।

चुहिया न फिर चिडी से कहा कि आओ इस बाड को उलांघें। चिडी तो फर्र से बाडका उलांघ गई लेकिन चुहिया बाड में उलझ गई। चिडी फिर रोने लगी और बडी मुश्किल से वह सुन कर उसने चूही को बाड में से निकलवाया। चिडी ने चूही से कहा कि तू तो बाड में फँस गई। इतना सुनते ही चूही ने तडाक से उत्तर दिया कि मैं क्या फँस गई, फँसे तेरा बाप निगोडा मैं तो कचर-कचर कान बिचवा रही थी।

अब चूही ने फिर प्रस्ताव किया कि आओ भैंस के नीचे से निकलें। चिडी तो शीघ्रता से उड गई लेकिन उसी वक्त भैंस ने पोटा' (गोबर) किया और चूही गोबर के नीचे दब गई। चिडी फिर रोने लगी। गोबर पाथने वाली चमारी आई तो उसने चिडी से पूछा कि तू क्यो रो रही है ? चिडी ने अपनी व्यथा कही तो चमारी ने चुहिया को गोबर के नीचे से

निकाल दिया। चिड़ी ने सहानुभूति पूर्वक चूही से कहा कि मावली तू तो दब गई। लेकिन चूही ने फिर आंखें तरेरते हुए उत्तर दिया कि भला मैं क्यों दब जाती, दब जाए तेरा बाप निगोड़ा मैं तो अपनी कमर दबवा रही थी। चूही की बात सुनकर चिड़ी आकाश में उड़ गई।

● भूत भाई रांड़ आई

एक जाट की बड़ी उम्र में शादी हुई। विवाह का उसे बड़ा चाव था लेकिन औरत बड़ी कर्कशा मिली। उस औरत का नियम था कि वह नित्य प्रातः काल अपने पति को मकान के बायें कोने पर बैठा कर उसके सिर में गिन कर इक्कीस जूते मारती और तब रोटी खाती। जाट कुछ दिनों तक तो जूतों की मार किसी तरह सहता रहा लेकिन निदान तंग आकर एक दिन भाग गया और दूर के किसी शहर में जाकर रहने लगा। जाट के भाग जाने का जाटनी का बड़ा अफसोस था, वह अब जूते लगाये तो किसे। अंत में उसने निश्चय किया कि जिस जगह जाट को बिठला कर जूते मारती थी उसी स्थान पर जूते मार कर रोटी खाली जाए। निश्चयानुसार वह उसी जगह पर इक्कीस जूते मार कर सन्तोष कर लेती।

रोजाना जूते पड़ने से जमीन में भी खड्डा पड़ गया। वहीं जमीन में एक हंडिया गड़ी हुई थी और उस हंडिया में एक भूत रहता था। जाटनी के जूते उस भूत के सर में लगते। भूत की खोपड़ी जूतों की मार से पिल-पिली हो गई। लेकिन रोज रोज जूते पड़ने से एक दिन हंडिया फूट गई और भूत उसमें से निकल कर भागा। जाटनी कुछ दूर तक तो उसके पीछे भागी लेकिन भूत हाथ नहीं आया। वह भूत भी उसी शहर में चला गया जहां वह जाट रहता था। एक दिन भूत ने जाट को देख लिया और वह जाट के पास जाकर बोला, 'जूत-भाई', राम-राम।" जाट चौंका। भूत ने अपना परिचय दिया और 'जूत-भाई' होने की व्याख्या भी की।

अब दोनों साथ-साथ रहने लगे। एक दिन भूत ने जाट से कहा कि मैं तुम्हें मालदार बना दूंगा, लेकिन तुम लालच मत करना। फिर भूत ने

जाट को अपनी योजना समझाई कि मैं नगर-सेठ के इकलौते बेटे के शरीर में प्रवेश करूँगा सो जब तक तुम नहीं आओगे, मैं नहीं निकलूंगा। तुम्हारे आते ही मैं निकल जाऊँगा। तुम सेठ से दस हजार रुपये ले लेना। लेकिन एक बात याद रखना कि दूसरी बार मैं राजा के बेटे के शरीर में प्रवेश करूँगा, वहाँ भूल कर भी मत आना, अन्यथा तुम्हें जान से मार डालूँगा।

भूत ने नगर-सेठ के बेटे के शरीर में प्रवेश करके जाट को दस हजार रुपये दिलवा दिये। फिर वह राजकुमार के शरीर में घुस गया। राजकुँवर हाय तोबा मचाने लगा। सभी सम्भव उपचार किये गये लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। तब किसी ने कहा कि नगर-सेठ के बेटे पर भी भूत का कोप हुआ था सो फलाँ जाट ने उसका उपचार किया था और अब वह भला चँगा है। तत्काल ही चौधरी को बुलावा भेजा गया। अब चौधरी बड़ी दुविधा में फँस गया, इधर गिरे तो कुआँ उधर गिरे तो खाई। राजा के आदमी उसे पकड़ कर ले गये। सोचते-सोचते जाट को एक तरकीब सूझी। जिस महल में राजकुमार लेटा था उसकी सारी जानकारी जाट ने प्राप्त की और फिर उसने सारे लोगों को वहाँ से हटा दिया। अब जाट ने धोती के पल्ले ऊपर की ओर कमर में खोस लिये, जूतियाँ हाथ में ले ली और दौड़ता-दौड़ता हाँफते हुए राजकुमार के पास पहुँचा और हाँफते-हाँफते ही बोला भूत भाई रांड आई भूत भाई रांड आई। या कहकर जाट वहाँ से महल के बाहर भागा। भूत ने सोचा कि जूते मारने वाली रांड उसकी तलाश करते करते यहाँ आन पहुँची है अब खैर नहीं, सो वह भी राजकुमार के शरीर से निकल कर बेतहाशा भाग पड़ा और भागता ही चला गया। उसने पीछे मुड़ कर देखने की भी हिम्मत नहीं की। राजा ने जाट को मुँह माँगा पुरस्कार दिया और अब जाट खूब आराम से रहने लगा।

● कोथल तूं क्युं उणमणो

एक चारण कुछ पढ़ा लिखा न था। वह कतार लादने के लिए अन्य

कतारियों के साथ जाया करता था। एक दिन वह कहीं जा रहा था। उसके पास आटे से भरी हुई कोथली थी लेकिन रोटी बनाने का कोई साधन न था। चारण एक ठाकुर के घर पहुँचा और उसने ठाकुर की लड़की से कहा कि मेरे लिए भी चार रोटियाँ बना दो। यों कहकर उसने आटे की कोथली ठाकुर की लड़की को सौंप दी। ठाकुर के घर में भूख थी अतः ठाकुर की लड़की ने कुछ आटा कोथली में से रख लिया। चारण को जब कोथली लौटाई गई तो उससे यह बात छिपी नहीं रही। उसने कोथली को सम्बोधित करके कहा :

> कोयल तूं क्युं उणमणो, क्युं तेरो ढीलो गात ?
> कांई कुत्ता फंफेड़ियो, कांई लाग्या बाईजी रा हाथ ?

ठाकुर ने देखा कि चारण सब जगह हमारी बदनामी करेगा अतः उसने कोथली फिर आटे से भरवा कर चारण को दे दी।

● ठग और चोर

एक चोर और एक ठग आपस में दोस्त थे। एक बार दोनों 'कमाने' के लिए जयपुर गये। चोर एक सोने का थाल चुराकर लाया और उसे पानी से लबालब भर कर छींके पर रख दिया। फिर वह छींके के नीचे खटिया डाल कर सो रहा। आधी रात को ठग उसके घर आया। उसने चोर द्वारा किया गया सारा बन्दोबस्त देखा। फिर उसने रसोई-घर में से एक फुंकनी ली और थाल का सारा पानी उसके सहारे खींच लिया। उसने फिर कपड़े से थाल को पोंछा और थाल लेकर चलता बना। थाल ले जाकर उसने पास के एक तालाब में छुपा दिया और अपने घर जाकर सो रहा।

इधर जब चोर की आँख खुली और उसने थाल को गायब पाया तो वह जान गया कि यह सारी कारस्तानी उसके ठग मित्र की ही है। वह उठ कर उसके घर गया। ठग आराम से खर्राटे भर रहा था। चोर ने उसके पैरों को हाथ लगा कर देखा। पैर घुटनों तक ठंडे थे, ऊपर गरम।

वह जान गया कि ठग पास के तालाब मे घुटनों तक पानी में थाल को छुपा कर आया है। वह उसी वक्त तालाब पर गया। उसका अनुमान सही निकला। थाल उसे मिल गया और वह थाल को लेकर अपने घर आ गया।

दूसरे दिन चोर ने अपने ठग-मित्र को अपने यहाँ जीमने का निमत्रण दिया। ठग आया तो उसे उसी सोने के थाल में भोजन परोसा गया। ठग को तो यही विश्वास था कि थाल तालाब मे गडा हुआ है, लेकिन चोर के यहाँ थाल को देख कर उसे बडा अचभा हुआ। जब ठग को सारी बात का पता चला तो उसने कान पकड लिये।

● च्यार सूणी

एक गाँव में चार 'सूणी' (शकुन देखने वाले) थे। वे चारो आपस मे मित्र थे। कमाते कजाते कुछ थे नही, सारे दिन गप्पें लडाया करते। घरवाले उनसे तग आ गय तो चारो दोस्त सौ-सौ रुपये लेकर कमाने के लिये चले। चलते-चलते रात हो गई तो उन्होंने एक वृक्ष के नीचे अपने डेरे लगाये। सोते वक्त रुपया को कोई चुरा न ले इसके लिए चारो दोस्त चारो ओर सो गये और बीच में रुपयो की थैली रख दी। लेकिन रात को कोई थैली उठा कर ले गया। सवेरे जब चारो उठे और थैली गायब देखी तो बडे असमजस मे पड गये। अब चारो शकुन देखने लगे। एक बोला, 'पगडी आँटेदार है' दूसरा बोला, 'पजामो घेरदार है' तीसरा बोला 'जूता बूँटेदार है' चौथा बोला, 'नाम मुरार है'। अब वे चारो ऐसे आदमी की तलाश में चले। चलते चलते वे दिल्ली पहुँच गये। घूमते घामते उन्हें एक आदमी दिखलाई पडो। उसे देखते ही एक बोला देखो, 'पगडी आँटेदार है' दूसरा बोला देखो 'पैजामा भी घेरदार है''। तीसरा बोला 'जूती भी बूँटेदार' है और चौथा बोला कि पूछ कर देखलो नाम उसका मुरार है। पूछे जाने पर उसने अपना नाम मुरार ही बतलाया तो चारो ने उसे पकड लिया और पकड कर उसे बादशाह के पास ले गये। सक्षेप में उन्होंने सारी बात बादशाह से कही और बोले कि यही हमारा चोर है, इसने

हमारे रुपये दिलाइये। मुरार से पूछने पर वह बोला कि मेरा नाम तो अवश्य मुरार ही है लेकिन मैंने इनके रुपये नहीं चुराये है।

बादशाह ने उन सबको दूसरे दिन आने के लिए कहा। दूसरे दिन जब वे आये तो बादशाह ने एक बंद मुंह का घड़ा उनके सामने रख कर पूछा कि बतलाओ इसमें क्या है? पहले ने सोचकर कहा, 'गोलमाल है' दूसरे ने कहा, 'गुलीदार है'' तीसरे ने कहा 'नारंदार' है और चौथे ने कहा ''नाम अनार है' बादशाह को विश्वास हो गया कि ये लोग सच्चे हैं क्योंकि घड़े में अनार ही था। मुरार को पीटा गया तो उसने रुपये लाकर दे दिये। बादशाह ने चारों को भरपूर इनाम दिया और उन्हें अपने यहाँ नौकर रख लिया।

● कोई वरतियो मरग्यो होसी

एक सेठ की हवेली में एक जाट नौकर रहा करता था। एक दिन सेठ के दूसरे नौकर ने जाट से कहा कि आज व्रत है सो तुम यदि आज व्रत रखो तो व्रत रखने वालों की सूची में अपना नाम लिखवा दो। जाट ने पूछा कि व्रत क्या होता है? नौकर ने कहा कि व्रत रखने वाला दोपहर को सिर्फ एक बार भोजन करता है। जाट ने कहा कि नहीं मुझे ऐसा व्रत नहीं चाहिए। जाट ने ना कर दी लेकिन जब दोपहर को सेठ और व्रत करने वाले अन्य लोग भोजन करने लगे तो जाट ने देखा कि सारे व्रत करने वालों को विविध प्रकार के मिष्ठान और फल परोसे जा रहे है। जाट के मुंह में पानी भर आया लेकिन वह तो मौका चूक गया था। जाट ने निश्चय किया कि अगली बार व्रत करने वालों की सूची में अपना नाम सबसे पहले लिखाऊंगा।

जन्माष्टमी आई तो जाट से फिर व्रत रखने के लिए पूछा गया। इस बार तो जाट तैयार ही बैठा था। उसने अपना नाम व्रत रखनेवालों की सूची में लिखवा दिया। मध्याह्न तक तो जाट किसी प्रकार सब्र किये बैठा रहा लेकिन जब भोजन की कोई तैयारी नहीं दिखलाई दी तो वह

निराश होने लगा। पल पल उसके लिए भारी हो रहा था लेकिन भोजन बनाने का कोई कार्य शुरू नही हुआ। निढाल होकर जाट एक कोने में पड रहा। सध्या होने से पहले ही उसकी आँखो के आगे तारे दिखलाई देने लगे। भूख के मारे उसका बुरा हाल हो गया।

शाम को मोहल्ले म कोई लडाई झगडा हो गया। शोरगुल सुनकर सेठ ने जाट से कहा कि चौधरी, जरा दखो तो बाहर क्या हो हल्ला हो रहा है? चौधरी के प्राण भूख के मारे निकले जा रहे थे। उसने ठडी साँस भरते हुए सेठ से कहा कि कोई बरतिया (व्रत रखने वाला) मर गया होगा। चौधरी का उत्तर सुन कर सेठ को हँसी आ गई। उसने अपने दूसरे नौकर को बुलाकर कहा कि चौधरी को भोजन करवाओ अन्यथा यह सचमुच ही मर जाएगा।

● चमार मारी चिडकली

एक चमारी एक ठाकुर के यहाँ काम करने के लिए जाया करती थी। एक दिन चमारी की इच्छा लपसी खाने की हुई तो वह ठाकुर के यहाँ से थोडे गेहूँ ले आई। गेहूँ भिगाकर उसने आँगन में सुखा दिये। कुछ चिडियाँ आकर गेहूँ चुगने लगी। चमार न एक ककडी मारी। और सब चिडियाँ तो उड गई लेकिन एक चिडी मर गई। चिड को अपनी चिडी के मर जाने का बडा रज हुआ और उसने चमार से बदला लेने की ठान ली।

चिडा एक खाती के घर गया और वहाँ से एक गाड ली (छोटी गाडी) ले आया। बैलो की जगह उसमें ऊँदरे (चूहे) जोते और चमार स बैर लेने के लिए चल पडा। रास्ते में उसे एक साप मिला। साँप ने पूछा चिडाजी चिडाजी कहाँ चले? चिड न उत्तर दिया

खाती की मेरी गाड ली, ऊँदर का मेरा बैल्या।
चमार मारी चिडकली, बैर काढण चाल्या॥

साँप न कहा कि मैं भी तुम्हारी मदद करूँगा। चिडे न साप को भी अपनी गाड ली पर बिठा लिया और आगे बढा।

थोडी दूर जाने पर उसे एक विच्छू मिला। विच्छू के पूछने पर भी चिडे ने वही उत्तर दिया .

गारै की मेरी गाड्‌ली, ऊँदर का मेरा बैल्या।
चमार मारी चिडक्ली, बैर काढ़ण चाल्या ॥

चिडे ने विच्छू को भी अपनी गाडी पर चढा लिया।

चिडा फिर आगे बढा तो उसे एक झडबेरी मिली। झडबरी के पूछने पर चिडे ने वही उत्तर दिया और झडबेरी ने चिडे को अपने काटे दे दिये। फिर चिडे को एक गाय मिली उसने अपना 'पोटा' (गोवर) चिडे का दिया। अत में चिडे को एक लाठी मिली चिडे ने उसे भी उटाकर गाडी पर रख ली और चमार के घर पहुँचा।

जिस वक्त चिडा चमार के घर पहुँचा सध्या हो गई थी। चमारी लपसी बना रही थी। चिडे ने अपने सारे साथिया को मोर्चे लगाने के लिए कह दिया। सांप पानी के घडे के नीचे छुप गया, बिच्छू दीपक के नीच जा बैठा। गाय का पोटा पोल में जम गया, वही एक कोने में लाठी छुपकर खडी हो गई और काटे सारे आँगन में विखर गये।

लपसी बनाते बनाते चमारी ने चमार को पुकारा कि थोडा पानी लाना। चमार घडे में से पानी लेने गया तो साँपने उसे डस लिया। चमार हायतोबा करने लगा तो चमारी दीपक लेकर उस सम्हालने चली विच्छू ने चमारी को डक मार दिया चमारी के हाथ स दीपक गिर गया और अँधेरा हो गया। दोना चिल्लाते हुए बाहर की ओर भागे लेकिन गावर से रपट कर गिर पडे। उनके शरीर में काटे ही काँटे चुभ गये। अब लाठी ने उनकी खवर लेनी शुरु की और उन्हें अधमरा कर दिया।

इस प्रकार चिडे ने अपनी चिडी क मारने का भरपूर बदला लिया। फिर उसने अपने साथिया का गाडी पर विठलाया और लौट पडा। लौटनी वार वह अपने साथियो को यथास्थान छोडता गया।

● कटक सेठ

एक सेठ बहुत मालदार था लेकिन साथ ही कजूस भी था। एक दिन वह पानी का लोटा भरकर शौच के लिए जा रहा था कि उसे सामने टीले पर खडे दो चोर दिखलाई पडे। चोरो ने सोचा कि आज सेठ का लोटा छीनना चाहिए, लेकिन सेठ उनके मनसूबे को ताड गया। उसने चोरो को सुना कर और लोटे की ओर देख कर कहा कि अरे, आज यह फूटा हुआ लोटा कैसे आ गया? मैं तो हमेशा चाँदी का लोटा लाया करता हूँ। अभी जाकर चाँदी वाला लोटा लेकर आऊँगा। यो कह कर सेठ घर की ओर चल पडा। चोरो ने सोचा कि चाँदी का लोटा आ जाए तो फिर और क्या चाहिए। लेकिन सेठ फिर नही लौटा।

चोरो ने जान लिया कि सेठ चालाकी से निकल गया। वे दोनो आकर सेठ के मकान की मोरी के नीचे छुपकर बैठ गये। जब कुछ देर हो गई तो सेठ ने सोचा कि चोर गये या नही देखना चाहिए। सेठ ने चोरो को देखने के लिए जैसे ही मोरी में मुंह डाला एक चोर ने झपट कर शीघ्रता से सेठ की मूँछें पकड ली। सेठ ने तत्काल सेठानी को आवाज लगाई कि ओ रामप्यारी की माँ, जल्दी से सौ रुपये लाना, चोर जी ने मूंछ पकड ली है तो वे सौ रुपये ही लेकर छोड देंगे लेकिन यदि वे नाक पकड लेंगे तो फिर दो सौ रुपये वसूल करेंगे। चोर ने सोचा कि मूंछ की अपेक्षा नाक पकडनी फायदेमद है सो उसने मूँछें छोडकर नाक पकडनी चाही लेकिन सेठ ने बडी फुरती से अपना मुंह अन्दर कर लिया। फिर उसने चोरो से व्यग्यपूर्वक कहा, मूर्खो मैंने तुम्हे आठ आने का फूटा हुआ लोटा भी नही दिया तो क्या तुम्हे मुफ्त ही दो सौ रुपये दे देता।

● ताखडी कोनी चालै

एक सेठ का कारोबार ठप्प हो गया। वह उदास मन अपनी दुकान पर बैठा था कि उधर से गाँव के ठाकुर की सवारी निकली। सेठ ने ठाकुर

को मुजरा किया। ठाकुर ने सेठ से पूछा कि सेठजी आज बड़े उदास दिखलाई पड़ते हो क्या बात है? सेठ ने कहा कि हुजूर, आजकल तखड़ी नहीं चलती है। इस पर ठाकुर ने हँस कर कहा कि तखड़ी तो हम चला देंगे। तुम कल से अपनी तखड़ी लेकर हमारे अस्तबल में आ जाना और वहीं कल से घोड़ों की लीद तौला करना। सेठ ने कहा कि बहुत अच्छी बात है।

दूसरे दिन सेठ तखड़ी और बाट लेकर अस्तबल पहुँच गया और उसने सबको ठाकुर का हुक्म सुना दिया। सारे साईस घोड़ों की लीद ला-ला कर तुलवाने लगे। सेठ लीद तौल कर उसका वजन और साईस का नाम अपनी बही में लिख लेता और लीद एक तरफ डलवा देता। साईस लोग आपस में काना-फूसी करने लगे कि आज यह क्या नया गुल खिला है। उन्होंने सेठ से इसका कारण पूछा तो सेठ ने कहा कि अस्तबल के घोड़े दुबले हो रहे है। तुम लोग घोड़ों को पूरा दाना नहीं देते हो। इसलिए ठाकुर साहब का आदेश है कि इसकी पड़ताल की जाए। जिस साईस के घोड़े की लीद कम होगी उसे दंड दिया जायगा। सारे ही साईस दाने की चोरी करते थे, अतः हर साईस सेठ से प्रार्थना करने लगा कि उसकी लीद पूरी दर्ज करा ली जाए। इसके लिए प्रति घोड़ा एक रुपया महीना सेठ का निश्चित कर दिया गया।

अस्तबल में सौ घोड़े थे, अतः सेठ को सौ रुपये मासिक आमदनी होने लगी। उधर लीद का ढेर बहुत ऊँचा हो गया। एक दिन उस गाँव के पड़ोसी ठाकुर को अपने बाग में खाद देने के लिए घोड़ों की लीद की आवश्यकता हुई तो सेठ ने वह सारी लीद उसे बेच दी और सेठ को उसमें भी काफी रुपये मिल गये। अब सेठ का कारोबार अच्छा चलने लगा।

दूसरी बार जब ठाकुर सेठ की दुकान के आगे से निकला तो सेठने फिर ठाकुर को मुजरा किया। ठाकुर ने सेठ से पूछा कि सेठजी, आजकल तो आपके चेहरे-पर बड़ी रौनक आ गई है। मालूम होता है कि आपको अच्छी आमदनी होने लगी है। इस पर सेठने हँस कर कहा कि यह सब

आपकी ही महरबानी है। मैंने कहा था न कि बनिये की तराडी चलनी चाहिए, फिर सब आनन्द है।

● चमार की लीक

एक सेठ ने एक चमार से लकडी का एक भार बारह आने में लिया और चमार से कहा कि जाकर दुकान से पैसे ले लो। सेठ ने एक ठीकरी पर कोयले से तीन खडी लकीर खीचकर उनके आगे एक अर्द्ध चन्द्राकार लकीर बना कर चमार को दे दी और चमार से कहा कि यह ठीकरी मुनीम को दिखला देना, वह तुम्हे बारह आने दे देगा।

चमार ठीकरी लेकर चला। रास्ते में उसने देखा कि सेठ ने तीन लकीरें खिचाई है जिनसे तीन चवन्नियाँ बनती है, यदि मैं एक लकीर और खीच दूँ तो पूरा रुपया बन जाएगा। यो सोचकर उसने गली में से एक कोयला उठाया और एक लीक खीच दी। लेकिन जब वह ठीकरी मुनीम को दी गई तो मुनीम ने सोचा कि चमार ने जरूर कुछ गडबड की है। यदि सेठजी को पूरा रुपया देना होता तो वे चार लकीरें न खीचकर एक रुपया ही लिख देते। इसलिए मुनीम ने चमार से कहा कि थोडी देर बैठ जाओ अभी सेठजी आ जाते हैं। चमार ने सोचा कि सेठ के आने से तो सारा भेद खुल जाएगा अत उसने मुनीम से ठीकरी ली और अपनी खीची हुई लकीर को मिटा कर मुनीम को दिखलाई कि मुनीमजी अब आप फिर ठीकरी को अच्छी तरह देखिये और मुझे पैसे दे दीजिए क्योंकि मुझे देर हो रही है। मुनीम ने चमार को बारह आने दे दिये।

चमार पैसे लेकर चल पडा लेकिन वह रास्ते भर यही सोचता रहा कि मैंने जो लकीर खीची थी उसमें चवन्नी क्यो नहीं बनी, आखिर मैंने उसमें कौन सा विष घोल दिया था ?

● ठाकर कूँलै माडेड़ो ई बुरो

एक सेठ ने नई हवेली बनवाई। हवेली बन गई तो उस पर चित्र-

भारी होने लगी। सेठ ने हवेली के दरवाजे में घाने पर एक जमादार का चित्र बनवाया जो हाथ में बंदूक लिये और कमर में तलवार बांधे खड़ा था। एक दिन सेठ की जान-पहिचान का एक ठाकुर उधर आ निकला। बातों बातों में ठाकुर ने जमादार के चित्र की ओर इशारा करके पूछा कि यह चित्र किसका है? सेठ ने मजाक में कह दिया कि यह तो आपके बाबा'सा का ही चित्र है। ठाकुर ने कहा कि यह तो बहुत अच्छा हुआ, आप तस्वीर के नीचे उनका नाम भी लिख दीजिए। सेठ ने नाम लिखवा दिया। ठाकुर चला गया।

कुछ वर्षों बाद एक दिन ठाकुर फिर आया। राम राम के पश्चात् ठाकुर ने सेठ से पूछा कि और तो सब आनन्द है न? इस बीच हवेली में कोई चोरी तो नहीं हुई? सेठ ने कहा कि चोरी भला क्या होती? अब ठाकुर ने पैंतरा बदला और बोला कि सेठ साहब, हमारी नौकरी का हिसाब दे दीजिए। सेठ ने पूछा कि कैसी नौकरी? ठाकुर ने उत्तर दिया कि मेरे बाबा'सा हवेली बनी तब से खड़े-खड़े आपकी हवेली का पहरा दे रहे हैं, उनकी इतनी धाक है कि उनका नाम सुनकर ही चोर इधर नहीं झांकता। सेठ ने कहा कि मैं आपके बाबो'सा का नाम दीवार पर से मिटवा दूंगा तो ठाकुर बोला कि आज तक की नौकरी का तो दे दीजिए आगे चाहे आप उनका नाम हटवा दें।

निदान सेठ को नौकरी के रुपये देने पड़े। लेकिन साथ ही सेठ के मुंह से यह भी निकला, 'ठाकर तो कूंलै माडेडो ई बुरो।'

• सौ का भाई सट्ठ

एक सेठ एक कुंजड़े से सौ रुपये मांगता था। बार-बार तकाजा करने पर भी जब कुंजड़े ने रुपये नहीं दिये तो एक दिन सेठ रुपये मांगने के लिए उसके घर गया। कुंजड़े ने पहले तो टालना चाहा लेकिन सेठ के अधिक कहने सुनने पर वह बोला कि सेठ जी आप सौ रुपये मांगते हैं सो आज आपका हिसाब चुकता किये देता हूं। 'देखिये सौ का भाई सट्ठ"

(अर्थात् सौ और साठ तो भाई भाई हैं, इसलिए यदि सौ दे दूँ या साठ दे दूँ कोई फरक नहीं पडेगा) 'आधा नै गयो नट" (साठ में से आधे रुपये ही आपको देने रहे) जिनमें से दस दूँगा, दस दिलाऊँगा और शेष दस का क्या लेना देना। आपका हिसाब चुकता हुआ, अब बच्चे का मुँह मीठा कराइये। कुँजडे की बात सुनकर सेठ को हँसी आ गई तो कुँजडे के बेटे ने अपने बाप से कहा कि बाबा देखो सेठ तो हँस रहा है। इस पर कुंजडा बोला कि मर्ई, सेठ हँसे क्या नहीं उसका दगड-दगड घर जो भर रहा है।

● धाया तेरा दूध-दलिया

एक मियाँ जी कई दिनों के भूखे थे। वे पानी पीने के लिए तालाब पर पहुँचे। तालाब में मामूली सा ही पानी था। में सफेद सफेद मिट्टी दिखलाई पड रही थी। मियाँ के प्राण भूख के मारे छटपटा रहे थे। उसने खुदा से अरज की कि या खुदावंद करीम, इस पानी का तो बन जाए दूध और इस गीली मिट्टी का बन जाए दलिया तो फिर मैं दूध और दलिया पेट भर कर खाऊँ। यो कहकर मियाँ ने अंजली भर भर कर "दूध और दलिया खाना शुरू किया, लेकिन भूख मरते हुए मियाँ जी को गश आने लगा और वे डगमगा गये। तब उन्होंने खफा होकर खुदा से कहा धाया तेरा दूध और दलिया, धक्के भी क्यूँ दे?"

● बे' का घाल्या ना टलै

एक दिन रावण को बे-माता' (विधना) मिली तो रावण ने उससे पूछा कि तू कहाँ गई थी? विधना ने कहा कि मैं तेरी मृत्यु के अक्षर डाल कर आई हूँ। रावण ने पूछा कि मेरी मृत्यु किसके हाथ होगी तो विधना ने कहा कि आज कौशल्या का जन्म हुआ है वह अयोध्या के राजा दशरथ की पत्नी बनेगी और उससे पैदा होने वाला लडका तुम्हें मारेगा। रावण ने कहा कि मैं यह विवाह होने ही नहीं दूँगा।

जिस दिन कौशल्या और दशरथ का विवाह होने वाला था उसके

पहले दिन ही रावण कौशल्या को उठा लाया। वह चाहता था कि कौशल्या को मारकर और उसकी बोटी बोटी करके समुद्र म बहा दे लेकिन मदोदरी ने कहा कि नारी पर हाथ उठाना आपको शोभा नहीं देता। तब रावण ने कौशल्या को एक बडे सन्दूक में बन्द करके उस समुद्र मे बहा दिया। सन्दूक को एक बडा मगरमच्छ निगल गया। यह देख कर रावण को सतोष हो गया।

कौशल्या के अचानक गायब हो जाने से कन्या पक्ष वालो को बडी चिन्ता हुई। अब क्या किया जाए ? अन्त में यह निश्चय किया गया कि कौशल्या की जगह एक डोम की लडकी का विवाह दशरथजी स कर दिया जाए। निश्चयानुसार डोम की लडकी को 'तेल्वान' चढाकर वधू का रूप दे दिया गया। उधर बरात आई तो कन्या पक्षवाले अगवानी के लिए चले। लेकिन दूल्हे का हाथी अचानक बिगड गया और भाग खडा हुआ। भागते भागत वह समुद्र तट पर जा पहुँचा।

जिस सन्दूक में कौशल्या को बद करके समुद्र म बहा दिया गया था और जिसे मगरमच्छ निगल गया था वह सन्दूक को पचा नहीं सका और समुद्र के दूसरे तट पर आकर उसने सन्दूक को उगल दिया। सन्दूक समुद्र के किनारे लग गया। राजा दशरथ का हाथी वही आकर रुका। हाथी पर राजा दशरथ के अतिरिक्त पडित और चँवर डुलाने वाला नाई था। हाथी रुक गया तो महावत न हाथी को बैठाया। सब लाग हाथी पर से उतरे। उन्होने सन्दूक को देखा तो वे उस बाहर ले आये।

सन्दूक को खोलने पर उसमें स एक बडी सुन्दर कन्या निकली। पडित ने लडकी स पूछा कि बेटी तू कौन है तो लडकी ने अपना परिचय दिया और सारी घटना कह सुनायी। पडित न कहा कि महाराजा दशरथ यही मौजूद है जिनसे आप का विवाह होना निश्चित हुआ था। विवाह का समय हो चुका है अत मै यही आप दोनो का विवाह करवा देता हूँ। या कहकर पडित न धरती, जल, आकाश अग्नि और ब्राह्मण (स्वय) के पाँच साक्षियो द्वारा फेरे करवा दिये।

इतनी देर हाथी जगल में चर रहा था। विवाह हो गया तो सारे लोग हाथी पर सवार हुये और घर आ पहुँचे। दोनो पक्षवाला को सारी बात जानकर बडी प्रसन्नता हुई। अब बेचारी डामनी को कौन पूछता था। वह तेल-वान चढी हुई भी कुँआरी रह गई। इमी बात को लेकर यह गाथा चल पडी -

> बे'का घाल्या ना टलै, टलै रावण का खेल।
> रैई कुंआरी डूमणी, धाल पटाँ मे तेल ॥

● बे'माता का अंछर भूठा नी होवै

एक सेठ ने एक महात्मा की बडी सेवा की। सेवा करते-करते बहुत दिन हो गये। एक दिन महात्मा को सेठ के हाथ की रेखाएँ दिखलाई पड गई। महात्मा को बडा पछतावा हुआ कि सेठ ने इतने दिनो तक मेरी सेवा की लेकिन मैंने इसे कुछ दिया नही, अब परसो तो इसकी उम्र पूरी हो जाएगी। सेठ के पूछने पर महात्मा ने अपने पश्चात्ताप का कारण उसे बतला दिया।

सेठ की उम्र बढाने के लिए महात्मा सेठ को साथ लेकर ब्रह्मा के पास पहुँचे। ब्रह्मा ने महात्मा का बहुत आदर सत्कार किया लेकिन सेठ की उम्र बढाने में अपनी असमर्थता प्रकट की। तब तीनो विष्णु भगवान के पास पहुँचे। विष्णु भगवान ने कहा कि सेठ की उम्र शिवजी भले ही बढा दें, मैं नहीं बढा सकता। तब चारो शिवजी के पास पहुँचे, लेकिन शिवजी ने कहा कि उम्र के अछर 'बेमाता' डालनी है अत वही इसमें हेर-फेर कर सकती है। अब पाँचो 'बेमाता' के पास चले। बेमाता एक पहाड की कदरा में रहती थी। कदरा में प्रवेश करने के लिए एक छोटे सूराख म मे होकर गुजरना पडता था। ब्रह्मा, विष्णु, शिव और महात्मा तो सूराख में से होकर कदरा में चले गये लेकिन सेठ कदरा में प्रवेश करने का प्रयत्न कर ही रहा था कि ऊपर से एक बडा शिलाखड आकर उस पर गिरा और सेठ की मृत्यु हो गई।

जिस वक्त ब्रह्मा, विष्णु, शिव और महात्मा कदरा में घुसे, 'बेमाता'

जार-जार रो रही थी लेकिन उन्हें देखते ही वह खिलखिला कर हँस पड़ी। चारों ने इसका कारण पूछा तो बेमाता ने उत्तर दिया कि इस सेठ के कपाल में मैंने यह अछर डाले थे कि ब्रह्मा, विष्णु शिव और ये महात्मा चारों जने यहाँ आयें और कदरा के बाहर झरोखे पर लगा शिलाखंड सेठ के ऊपर गिरे तब उसकी मृत्यु हो। लेकिन मैं यह सोच सोचकर रो रही थी कि आज मेरे अछर झूठे हो जाएँगे क्योंकि ऐसा सानक बनना बड़ा मुश्किल है। भला ब्रह्मा, विष्णु और शिव मृत्युलोक के एक तुच्छ जीव के लिए यहाँ क्यों आयेंगे। लेकिन आप सब आगये और बाहर शिला खड के गिरने से सेठ की मृत्यु हो चुकी है। मेरे अछर सच हो गये हैं इसी लिए मैं हँस रही हूँ।

बेमाता का उत्तर सुनकर चारों स्तम्भित रह गये। दो दिन की अवधि पूरी हो गई थी और सेठ मर चुका था।

विश्वास को फल

एक नगर में एक मालदार सेठ रहता था। उसके घर लड़का हुआ तो 'बे माता' अछर डालने के लिए आई। सेठ ने बे माता से पूछा कि तू कौन है ? बे माता ने कहा कि मैं बे माता हूँ और तेरे बेटे के अछर डाल कर आई हूँ। सेठ ने पूछा कि तू क्या अछर डाल कर आई है सो बतला। बे माता ने कहा कि तेरे मरने के बाद तेरा बेटा व्याध बनेगा और नित्य एक जानवर को मार कर अपना पेट पालेगा। बे माता की बात सुनकर सेठ ने कहा कि मेरे यहाँ किस बात की कमी है कुत्ते भी पेट भर कर सोते हैं। ऐसा कदापि नहीं होगा, तेरे अछर झूठे हैं। बे माता चली गई दूसरी बार सेठ के घर कन्या का जन्म हुआ और बे माता फिर अछर डालने के लिए आई तो सेठ ने फिर पूछा। बे माता ने उत्तर दिया कि यह वेश्या बनेगी। सेठ को यह बात भी बिल्कुल नहीं जँची।

समय पाकर सेठ की मृत्यु हो गई और उसका सारा धन नष्ट हो गया। और कोई चारा न देख कर सेठ का बेटा व्याध बन गया। एक जानवर

वह नित्य मार लेता और उसी मे अपना पेट पालता। सेठ की बेटी वेश्या बन गई।

एक साधु उस सेठ का मित्र था। एक दिन वह घूमता-घामता उस नगर में आ निकला। उसने लोगों से पूछा कि इस नगर में अमुक सेठ रहता था वह कहाँ है? लोगों ने कहा कि वह तो मर गया और उसके बेटा-बेटी अमुक अमुक धधा करते हैं। साधु वहीं टिक गया। शाम को जब सेठ का बेटा जगल से लौटा तो साधु ने उसे अपना परिचय दिया। दूसरे दिन साधु भी सेठ के साथ जगल में गया। साधु ने सेठ के बेटे से कहा कि तुम्हारे हाथ से रोजाना एक जानवर की मृत्यु होगी ऐसा तुम्हारे भाग्य में लिखा है और यह निश्चित है, इसे कोई टाल नही सकता। इसलिए तुम छोटे मोटे जानवरो को मत मारो। शाम तक कोई न कोई बडा जानवर अवश्य आएगा। चिड़ी-कमेडी से लेकर हिरन तक बहुत से जानवर उसके आगे आये लेकिन साधु ने हरबार सेठ के बेटे का हाथ पकड लिया। सेठ के बेटे को भूख सता रही थी लेकिन वह विवश था। अत में शाम होते-होते एक बडा हाथी वहाँ आ गया। साधु ने सेठ के बेटे से कहा कि इसके सिर में तीर मारो। सेठ के बेटे ने तीर मारा और हाथी चित हो गया। उसके मस्तक मे से बहुत से गजमुक्ता निकले जिन्हें बेचकर सेठ का बेटा फिर मालदार बन गया।

दूसरे दिन वह साधु सेठ की बेटी के पास पहुँचा और उससे कहा कि मैं तुम्हारे बाप का दोस्त हूँ एक बात मेरी मान। कल तुम्हारे घर कोई भी आये तुम किवाड मत खोलना। सेठ की बेटी ने हाँ भर ली। दूसरे दिन उसने किवाड बद कर लिये। पहले दस बीस रुपये देने वाले आये और फिर सौ दो सौ देने वाले आये और फिर हजारो रुपये देने वाले भी आये लेकिन सेठ की बेटी ने किवाड नहीं खोले। लेकिन वे-माता के अक्षर झूठे न हो जाएँ इसलिए उन्हें सच्चे करने के लिए अत में स्वय भगवान मनुष्य के वेश में आये लेकिन सेठ की बेटी ने कहा कि तुम चाहे भगवान हो, आज मैं किवाड नहीं खोल सकती। तुम भगवान हो तो

किवाड़ बंद होने पर भी अन्दर आ सकते हो। तब भगवान ने अन्दर आकर उसे दर्शन दिये और सेठ की बेटी की मुक्ति हो गई।

● अबलो नाई

अबला नाई मुलफेबाज ब्राह्मणों की सोहबत में रहता था। वे लोग प्रायः अबले से कहा करते थे कि अबला, एक दिन तो हमें मीठा भोजन खिला। बार-बार के कहने से अबले ने हाँ भर ली और सब मुलफेबाज मित्रों को दूसरे दिन भोजन का निमंत्रण दे दिया। लेकिन साथ ही उसने यह भी कह दिया कि मेरे पास इतने थाली लोटे नहीं हैं सो थाली लोटे अपने-अपने लेते आना।

दूसरे दिन यथासमय ब्राह्मण देवता आ-आकर जम गये। अबला एक जान-पहचान के हलवाई से मिठाई ले आया और ब्राह्मणों को जिमाने लगा। जब ब्राह्मण लोग जीमने लगे तो अबला एक बड़ा ताड़ का पंखा लेकर उन सबको हवा करने लगा। हवा करते वक्त अबला कहता जाता था, "थारोई चुन्न थारोई पुन्न, अबले नाई को तो पुन ई पुन" ब्राह्मणों ने भोजन कर लिया तो अबला बोला कि आप लोग घर पधारें, मैं आपके बरतन साफ करके आपके घर भिजवा दूँगा। सारे यार दोस्त अबले की बड़ाई करते हुए वहाँ से विदा हुए।

अबले ने सारे बरतन मलकर साफ किये और फिर उन्हें लेकर हलवाई के पास पहुँचा। अबले ने हलवाई से कहा कि ये बरतन मैं तुम्हारे यहाँ गिरवी रखता हूँ, ब्राह्मण लोग जैसे आयें उनसे अपनी मिठाई के पैसे वसूल करते जाना और उन्हें उनके बरतन देते जाना। सारी बात समझाकर अबला अपने घर चला गया।

इधर मुलफेबाजों ने अबले को टोकना शुरू किया कि तूने बरतन घर पर नहीं भिजवाये। दो चार दिन तो अबला टालता रहा लेकिन फिर उसने साफ कह दिया कि आपके बरतन अमुक हलवाई के यहाँ पड़े हैं सो उसके पैसे देकर अपने-अपने बरतन ले आओ। ब्राह्मण लोग बिगड़ने लगे

तो अबले ने कहा कि भू देवो, मैं ने तो पहले ही कह दिया था, "थारोई चुन्न थारोई पुन्न, अबलै नाई को तो पूनई पून ।" सो मेरे पास तो 'पून' (हवा) ही थी सो मैंने खडे होकर आपको खूब खिलाई । लाचार ब्राह्मण लोग अबले को गालियां और हलवाई को पैसे देकर अपने बरतन छुडाकर ले गये ।

● वीजलसार की तलवार

एक ठाकुर ने एक सेठ के यहाँ एक तलवार गिरवी रख रखी थी। तलवार दो चार रुपये की साधारण थी लेकिन ठाकुर ने उस पर चालीस रुपये उधार ले रखे थे । अब ठाकुर को क्या पडी थी कि वह रुपये देकर तलवार छुडवाये । सेठ भी इस बात को समझ गया अत उसने युक्ति से रुपये निकलवाने की सोची ।

सेठ ने ठाकुर की जान-पहिचान के लोगों को कहना शुरू किया कि अमुक ठाकुर की एक तलवार हमारे यहाँ गिरवी रखी थी लेकिन वह तलवार खो गई। ठाकुर को पता चला तो वडी आफत मचाएगा, अब क्या करें क्या न करें ? किसी ने जाकर ठाकुर से यह बात कह दी । ठाकुर ने सोचा कि अब अच्छा मौका हाथ आया है । वह रुपये लेकर सेठ के पास पहुँचा और बोला कि सेठजी, अपना हिसाब करके व्याज समेत रुपये ले लो और मेरी तलवार मुझको दे दो । सेठ ने कहा कि ठाकुर साहब, तलवार खो गई है, आप उतने रुपयों मे ही तलवार आई गई कर लीजिए। लेकिन ठाकुर ने कहा कि वाह यह कैसे हो सकता है, वह 'बीजलसार' की तलवार मेरे बावो'सा के हाथ की थी । उसी तलवार से मेरे बावो'सा ने बडी-बडी लडाइयाँ जीती थी । यों तो वैसी तलवार पाँच सौ रुपये में भी नही बन सकती और मुझे तो वह किसी भी मूल्य पर नहीं बेचनी है । यों कहकर ठाकुर ने अपनी 'म्योली' से रुपये निकालकर व्याज समेत सेठ की ओर फैंक दिये । सेठ ने रुपये उठाकर ऊपर की ओर रख लिये और ठाकुर से कहा कि आप थोडी देर विश्राम कीजिए । तलवार तो यों

गई है सो मिलनी नहीं है फिर भी एक बार और तलाश कर लेते हैं। ठाकुर बैठ गया। इधर ठाकुर खुश था कि आज साल भर का खर्चा सेठ से वसूल करूँगा, उधर सेठ खुश था कि डूबे हुये रुपये निकल आये।

तलवार तो पड़ी हुई थी ही। सेठ ने थोड़ी देर बाद तलवार लाकर ठाकुर को सौंप दी और कहा कि ठाकुर साहब, आज हमारा दिन अच्छा था जो आप की तलवार मिल गई। ठाकुर का मुंह उतर गया और वह उदास मुँह तलवार लेकर वहाँ से चलता बना।

● चुस्सी को बदलो

एक चुहिया को कहीं एक कौड़ी पड़ी मिल गई। वह राजा के महल में गई और सबको दिखलादिखलाकर कहने लगी कि मेरे पास जितना धन है उतना राजा के पास भी नहीं। राजा ने जो यह बात सुनी तो उसने अपने नौकरों को आज्ञा दी कि इस चुहिया की कौड़ी छीन ले आओ। चूहीं की कौड़ी छिन गई तो वह सबसे कहने लगी कि मेरा धन राजा ने छीन लिया, मेरा धन राजा ने छीन लिया। तब राजा ने कहा कि उस रांड का कौड़ा वापिस दे दो। इस पर चुहिया उछलती फुदकती सब को कहने लगी कि मेरे से डरकर राजा ने मेरा धन वापिस दे दिया मेरे से डर कर राजा ने मेरा धन वापिस दे दिया। अब राजा ने चूहीं को पकड़वा कर उसके बाल कटवा दिये और उसे 'भाडी' बना दी। चूहीं को इस बात से बड़ा रंज हुआ और उसने राजा से बदला लेने की ठान ली।

जिस मन्दिर में राजा नित्य देवी की आराधना करने जाता था चूही उस मन्दिर में गई और देवी की मूर्ति में छुप कर बैठ गई। राजा आया तो चूही ने मूर्ति के अन्दर से कहा कि राजा तू ने बड़ा पाप किया है। मूर्ति को बोलते सुन कर राजा को बड़ा भय हुआ। वह हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगा कि माँ मेरे से क्या अपराध बन पड़ा है? देवी ने फिर कहा कि पहले सारी प्रजा सहित अपना सिर मुडवाले फिर बतलाऊँगी। राजा ने सारे शहर में घोषणा करवाई कि सब अपना सिर मुँडवा लें।

राजा ने भी अपना सिर मुंडवा लिया । जब चूही ने जान लिया कि राजा सहित सारे लोग मूंडे गये तो वह खिलखिला कर हँस पडी और राजा से बोली कि राजा तू ने सिर्फ मुझको ही मुंडवाया था लेकिन मैंने तुझे तथा तेरी सारी प्रजा को मुंडवाकर अपना बदला ले लिया है। यों कहकर चूही कही बिल मे अतर्द्धान हो गई ।

● हिब्वो लड्डी

एक जाट के तीन बेटे अपने खेत पर काम कर रहे थे । उनकी सांडनी खेत मे एक ओर चर रही थी । तीन चोर आये और सांडनी को खोलकर ले चले । जाट के बेटो ने सोचा कि यो तो चोरो से हम नही जीत सकेंगे, अत इन्हे किसी प्रकार विश्वास देकर मारना चाहिए । तीनो ने युक्ति सोच ली और फिर चोरो को आवाज दी, "चोर जी, चोर जी, म्हारी सांड बीकानेर के टोले की है सो कूंची और बेलचै विना सोवणी काय लागैगी नी, सो आकर कूची और बेलचो ले ज्यावो ।" चोर आये और कूंची तथा बेलचा भी उठा ले गये । वे थोडी ही दूर गये थे कि लडको ने चोरो को फिर आवाज दी, "चोर जी, चोर जी, म्हारी सांड तमियै विना पाणी काय पीवैगी नो, सो तमियो ले ज्यावो ।" चोरो ने सोचा कि आज तो अच्छो मोदू हाथ लगे । यो लडको ने चार पांच बार पुकार पुकार कर सांडनी का सारा साज-सामान चोरो को दे दिया ।

सारा सामान लेकर चोर जाने लगे तो लडको ने फिर आवाज दी । चोरो ने आकर पूछा कि अब क्या रह गया है ? लडको ने कहा कि रह तो कुछ नहीं गया है, लेकिन हम एक खेल खेला करते है जिसका नाम है— हिब्वो लड्डी, सो यह खेल भी आप देखते जाएँ। यो कहकर लडके खेल दिखलाने के लिए तैयार हो गये । एक ने हाथ मे 'दैंताली' ली दूसरे ने, 'जेली' ली और तीसरे ने लाटी ले ली और तीनो पटे के हाथ दिखलाने लगे । तीनो का जोश क्षण-प्रतिक्षण बढता जा रहा था । चोर भी खूब तन्मय होकर

बैठे खेल देख रहे थे। एक भाई ने अपनी लाठी पटक दी और उसने चोर की फरसी ले ली तो दूसरे भाई ने चार से उसकी तलवार ले ली और तीसरे ने गँडासी ले ली और अब तीनों खूब जोर से हिब्बा-लड्डी खेलने लगे। चोरों ने सोचा कि लड़के अपना खेल समाप्त करके हमारे हथियार हमें वापिस कर देंगे। लेकिन बड़े भाई ने छोटों को समझाते हुए कहा, "फिर निया, हमला, दायाँ ने मैं एकला, एकें ने थे दाय—हिब्बा-लड्डा, हिब्बा लड्डी।" यो करते कराते उन तीनों ने चोरों को बीच में ले लिया और अवसर पाकर तीनों को मार डाला।

● सूवै की साख

एक औरत का यार परदेश से आया। औरत को खबर लगी तो वह उसके पास गई लेकिन उस वक्त वह मनुष्य गहरी नींद में सो रहा था। वह इतना थका हुआ था और इतनी गाढ़ी निद्रा में सोया हुआ था कि औरत के लाख जगाने पर भी न जागा। तब हारकर वह जाने लगी लेकिन फिर उसने सोचा कि यदि मैं यों ही चली जाऊँगी तो यह कहेगा कि तू आई ही नहीं इसलिए किसी को साक्षी बनाना चाहिए। ऊपर पिंजड़े में एक सूआ बैठा था। औरत ने सोचा कि इस सुग्गे को ही साक्षी बनाना चाहिए। यों सोचकर उसने सुग्गे से कहा —

> सूवा सूवा सूवटा, गल घालूँ तेरै हीरा।
> आई थी जाग्यो नहीं, साख भरो मेरा बीरा॥

इस पर सूआ बोला कि ऐसी बातों की साख बीरे (भाई) नहीं भरा करते। इस पर उस औरत ने फिर कहा —

> सूवा सूवा सूवटा, गल घालूँ तेरै नेवर।
> आई थी जाग्यो नहीं, साख भरो मेरा देवर॥

यह सुनकर सुग्गे ने साख भरने की हाँ कर ली और वह औरत चली गई।

● पाघ में फूल न सूक्यो

परदेश मे पांच-सात यार दोस्त बैठे आपस में घर की बातें कर रहे थे। प्रत्येक यही कह रहा था कि मेरी औरत सती है। एक लडके का विवाह हाल मे ही हुआ था। वह भी बोला कि मेरी स्त्री भी पतिव्रता है। उसकी बात सुनकर दूसरे ने व्यग्य से कहा कि तुम्हारी पतिव्रता देखी हुई है, मैं एक दिन मे उसका धर्म बिगाड कर आ सकता हूँ। उसके बात लग गई और उसने कहा कि अच्छा मेरे घर जाकर परीक्षा कर आओ। वह आदमी उसी के कपडे लत्ते पहन कर उसके घर गया। जिस वक्त वह घर पहुँचा उस समय सध्या हो गई थी, अँधेरा पड चुका था।

घर की मालकिन ने सोचा कि यह आदमी मेरे पति के जैसे ही कपडे पहने है लेकिन इसे सहसा नहीं पतियाना चाहिए।

विवाह होने के कुछ ही समय बाद उसका पति परदेश चला गया था, अत भ्रम भी हो सकता था। लेकिन अपने पति की यह बात उसे अच्छी तरह याद थी कि वह कभी वासी भोजन नहीं करता था। उस स्त्री ने अपनी दासी को बुलाकर कहा कि उनसे यह दे कि भोजन बनाने का समय अब नहीं रहा, किसी दादा वाले के यहा से आई हुई कुछ मिठाई रखी है सो वे मिठाई खा ले। उस आदमी ने वह मिठाई खुशी-खुशी खा ली। तब उस औरत का निश्चय हो गया कि यह उसका पति नहीं है। रात को उसने दासी को ही शृगार करके उसके पास भेज दी।

मुंह अँधेरे ही उस आदमी ने कहा कि मैं किसी आवश्यक काम से ही यहाँ आया था अब मुझे इसी समय वापिस जाना है। दासी ने जाकर अपनी मालकिन से कहा। उसे तो विश्वास हो ही गया था कि यह उसका पति नहीं है। उसने अपने पति को एक फूल दे रखा था जिसे वह अपनी पगडी मे हर समय लगाये रहता था। उस स्त्री ने अपने पति को कह दिया था कि जिस दिन यह फूल सूख जाए उस दिन यह समझना कि मेरा सती धर्म नष्ट हो

गया है। उसने अपने पति के नाम एक चिट्ठी लिख कर दासी के हाथ उस आदमी को भिजवा दी।

उसने जाकर चिट्ठी उस औरत के पति को दी। सारे ही यार-दोस्त बैठे थे। चिट्ठी में लिखा था

घर आयो पावणो, लायो न लूहरवो,
हिरणी फेर चुकायगी, पारधी रंयो उसो को उसो,
चतरां करो विचार, पाघ मे फूल न सूझयो।

स्त्री के पति ने पाग म से फूल निकाल कर देखा तो वह डहडहा रहा था मानो अभी पौधे से तोड़ा गया हो। उसने वह पत्र और फूल अपने सभी दोस्तों को दिखलाया। पत्र लाने वाले को भी पत्र का रहस्य समझाया गया। सारे मित्रों ने उसे लानत दी और सब उस स्त्री के पति की प्रशंसा करने लगे कि वास्तव में ही तुम्हारी पत्नी सती है।

● बीस बीस बीस

एक सेठ ने बुढ़ापे म विवाह करने की इच्छा की और नाई से कहा कि कोई अच्छी लड़की देखकर सगाई करके आ। नाई चला और घूमता घामता एक गाँव म पहुँचा। एक बनिये के घर नाई ठहर गया। उस बनिये के विवाह योग्य एक लड़की थी। नाई को लड़की पसन्द आ गई तो उसने लड़की के बाप से कहा कि आपकी बाई की सगाई हमारे सेठ स कर दो। नाई ने खूब नमक मिर्च लगाकर सेठ की बड़ाई की। बनिया सगाई करने के लिए राजी हो गया। जब नाई जीमने बैठा तो बनिये ने पूछा कि नवरी जी, सेठजी की अवस्था क्या होगी ? नाई चुप मार गया। बनिये ने फिर पूछा लेकिन नाई नहीं बोला। बनिये ने बार-बार पूछा तो नेवरा गुस्से में भर कर बोला कि *कह तो दिया बीस, बीस, बीस। बार-बार क्या पूछते हो ? सगाई करनी* हो तो करो अन्यथा सगाई करने वाले आपसे बहुत अच्छे-अच्छे खुशामद करते हैं। बनिये ने सगाई कर दी और विवाह मँड गया।

जब बरात आई और सेठ ने दूल्हे को देखा तो उस नाई पर बड़ा गुस्सा

आया। नाई को बुलाकर बेटी के बाप ने कहा कि तू तो कहता था कि सेठ जी की उम्र बीस साल की है, ये तो साठ के आस-पास है। नाई बोला कि सेठ जी, आप झूठ क्यों बोलते हैं ? मैंने तो कहा था कि सेठ जी की उम्र बीस, बीस, बीस साल की है सो कुल उम्र कितनी हुई आप जोड़ लीजिए, इसमें फर्क हो तो मेरा जिम्मा रहा। मर्द की जबान का मोल होता है, सो आप चुपचाप विवाह कर दीजिए, इसी में दोनों की इज्जत है।

लाचार बनिये को अपनी लड़की का विवाह उस बूढ़े सेठ से कर देना पड़ा।

● ईं मुरदै का पीला पाँव

सेठ की हवेली के पास एक सुनार रहता था। एक दिन सेठ ने सुनार से पूछा कि सोनी, आजकल तो बड़ा फीका दिखलाई पड़ता है, क्या बात है? सुनार ने कहा कि सेठ जी, सोना तो आजकल आँख से भी नहीं दिखलाई देता फिर फीका नहीं तो तीखा कैसे रहूँ ? सोना आँख से न दिखलाई पड़ने के कारण घर में भूख ने डेरा जमा लिया है। सेठ ने कहा कि यदि सोना आँख से देख लेने पर ही तुम्हारी भूख भाग सकती है तो कल हवेली आ जाना सो तुम्हें सोना दिखला दूँगा। सुनार ने हाँ भर ली।

दूसरे दिन सुनार, सेठ की हवेली जा पहुँचा। सेठ ने सुनार के सारे वस्त्र उतरवा लिये, सिर्फ एक लँगोट उसके बदन पर रहने दिया। फिर सेठ ने सुनार को अपने खजाने में प्रवेश करवा दिया और कहा कि जा, जी भर कर सोना आँखों से देख ले। सुनार खजाने में गया और ललचाई निगाहों से सोने के पासे, लग्गी और चाँदी की सिल्लियाँ देखने लगा। संयोग से उसी वक्त एक बिल्ली खजाने में घुस आई। सुनार ने देखा कि अब तो काम बन ही गया। उसने चाँदी की एक सिल्ली उठाकर बिल्ली के ऊपर रख दी। बिल्ली वहीं मर गई तो सुनार ने सोने के पासे और लग्गी मुन बिल्ली के पेट में घुसेड़ दिये और फिर बाहर आ गया। बाहर आते ही सेठ ने पूछा कि क्यों सोनी, सोना आँखों से देख लिया ? सुनार ने हाँ भरी, सेठ ने उसकी सलामी ले ली। सुनार कपड़े पहनकर अपने घर चला गया।

दूसरे तीसरे दिन मरी बिल्ली बुरी तरह दुर्गन्ध देने लगी। सेठ ने कहा कि बदबू के मारे घर में रहना मुश्किल हो गया है। बहुत खोज-बीन के पश्चात् मृत बिल्ली का पता चला और सेठ ने भगी से बिल्ली बाहर फिकवाई। सुनार तो ताक में बैठा ही था। भगी के जाने के बाद वह बिल्ली को उठाकर अपने घर की ओर चल पड़ा। एक दूसरे सुनार ने ताड़ लिया कि बिल्ली में सोने जैसी कोई कीमती वस्तु अवश्य है, तभी सुनार इसे ले जा रहा है। दूसरे सुनार ने पहले को चेतावनी देते हुए कहा, "ई मुर्दे का पीला पाँव" पहले सुनार ने सोचा कि इससे बिगाड़ने में फायदा नहीं अत उसने उत्तर दिया, 'मूँड कूटवो तू भी आव।" दूसरा सुनार भी पहले के घर गया। पहले सुनार ने दूसरे को कुछ दे दिलाकर विदा किया और फिर सारा माना निकाल कर रख लिया।

अब तो वह सोनी मालदार बन गया। दो चार दिन बाद सेठ उसकी दूकान के आगे से निकला तो उसने देखा कि सुनार का रंग ही दूसरा है। मूँछों पर बल दिये सोनी अकड़ के साथ बैठा था। सेठ ने पूछा कि क्या सोनी अब क्या हाल है ? सुनार ने उत्तर दिया कि बहुत अच्छे हैं मैंने कहा था न कि सोना आँख से देख लेने पर तो मौज ही मौज है।

● हूँ रे हूँ

एक जाट मर गया तो उसकी औरत तरह-तरह से विलाप करके रोने लगी। रोते-रोते वह बोली कि चौधरी चार सौ बीघे खेत छोड़कर मरा है अब उसे कौन जोतेगा ? भाई बिरादरी के तथा रिश्ते के बहुत से जाट वहाँ इकट्ठे हो रहे थे, उनमें से एक ने हुँकारा देते हुए कहा, 'हूँ रे हूँ' (अर्थात् खेत का मालिक मैं बन जाऊँगा) जाटनी ने फिर कहा मेरे घर में ऊँट, बैल और गायें हैं उनको कौन सम्हालेगा ? उसी जाट ने फिर कहा, 'हूँ रे हूँ'। जाटनी ने फिर पुकार मचाई कि चौधरी इतना बड़ा रेवड़ छोड़ गया है उसका धनी कौन होगा ? उसी जाट ने फिर कहा कि 'हूँ रे हूँ'। जाटनी फिर रोई कि अमुक बोहरा मेरे पति से दो हजार रुपये माँगता है उसे कौन चुकाएगा ? कोई नहीं बोला तो उसी जाट ने कहा कि इतनी देर हो गई मैं अकेला

ही हुँकारा दिये जा रहा हूँ इस बार और कोई भी तो हुँकारा दो।

● चाकरी जिसो फल

एक सेठ की औरत मर गई तो उसने दूसरी शादी नही की। उसके एक बेटे की बहू उसकी सेवा किया करती। जब सेठ नहाने के लिए बैठना तो वह चौकी डाल देती और गरम पानी की बाल्टी भरकर रख देती। सेठ नहाकर चला जाता तो वह उसकी धोती धोकर सुखा देती। धोती मे उसे नित्य एक लाल मिल जाता। इस बात से उसकी देवरानी को बडी डाह हुई। उसने कहा कि आज ससुर जी को मैं नहलाऊँगी।

उसने पानी उबालकर रख दिया और चौकी डाल दी। पानी बहुत गरम था सो शरीर पर डालते ही ससुर के शरीर पर फफोले पड गये लेकिन उसने कुछ कहा नही, चुपचाप नहाकर चला गया। बहू को इस बात की रत्ती भर भी चिन्ता न थी कि ससुर के शरीर पर फफोले पड गये हैं। उसने लाल की खोज मे जल्दी जल्दी धोती उलटी पलटी लेकिन बहू को लाल के स्थान पर एक मोटी सी जूँ मिली।

● आ ए बिलरिया, तेरी ताती खीर सलरिया

एक बुढिया अपने बेटे के साथ रहा करती थी। बेटा कमाने के लिए दिसावर जाने लगा तो बोला कि माँ, रोटी बनाने का झझट तेरे से न होगा अत तुझे एक गाय ला देता हूँ और चावलो का कुठला भर देता हूँ सो तू नित्य खीर बनाकर खा लिया करना।

सारी व्यवस्था करके बेटा चला गया। पीछे से एक बिल्ली आई और बुढिया से कहने लगी कि या तो मुझे नित्य खीर बनाकर खिलाया कर अन्यथा तेरी गाय और उसके बछडे के पैर काट खाऊँगी। जब खीर बनकर तैयार हो जाय तो उसे एक कटोरे मे डालकर आगन मे छोड दिया कर और मुझे पुकारा कर, आये बिलरिया तेरी ताती खीर सलरिया।' तब मैं आकर खीर खा लिया करूँगी।

बिल्ली के डर के मारे बुढिया नित्य ऐसा ही करने लगी। बहुत दिनो

के बाद उसका बेटा घर आया तो उसने अपनी मा से पूछा कि माँ, तू इतनी दुबली क्या हो रही है ? क्या गाय दूध नहीं देती अथवा और कोई बात है ? बुढ़िया ने बिल्ली की कारस्तानी बतलाई तो बेटे ने कहा कि अच्छी बात है, कल उसे आने दे।

दूसरे दिन बुढ़िया के बेटे ने लोहे की एक सीक आग में खूब गरम कर ली। बुढ़िया ने आवाज लगाई और बिल्ली आकर खीर खाने लगी। तभी लड़के ने पीछे से चुपचाप आकर बिल्ली के शरीर पर गरम सीक चेप दी। बिल्ली नौ-नौ वास उछलती हुई भागी।

दूसरे दिन बुढ़िया ने बिल्ली को फिर पुकारा

आयें बिलरिया, तेरी ताती खीर सलरिया।

लेकिन बिल्ली नहीं आई, उसने वहीं से उत्तर दिया

क्यू आऊ ए रडो, तेरो बेटो बालो गडो।

● दुनिया सुआरथ की है

सेठ बूढ़ा हो गया तो घर में उसकी कोई पूछ नहीं रही क्योंकि वह अपनी सारी संपत्ति पहले ही अपने बेटे और बहू को दे चुका था। उसका पोता दो वक्त आकर उसे रूखी-सूखी रोटी दे जाया करता। अपनी युवावस्था के दिन याद करके सेठ कभी-कभी रो पड़ता था।

एक सुनार उस सेठ का मायला था। एक दिन सुनार सेठ से मिलने आया तो सेठ ने उससे अपनी कष्ट-कथा कही। सुनार ने कहा कि, सेठ जी, आजकल यह दुनिया का दस्तूर हो गया है आपके पास कुछ हो तो मैं आपका कष्ट जीवन भर के लिए मिटा सकता हूँ। सेठ ने कहा कि मेरे पास और तो कुछ नहीं, काना में ये दो मुरकियाँ (काना में पहनने का छोटा आभूषण) तो हैं। सुनार ने वे मुरकियाँ सेठ से ले लीं और कहा कि मैं कल परसों फिर आऊँगा। सुनार ने चार रुपये के मोटे टके (मुसलमानी काल के मोटे पैसे जो पिछले कुछ वर्षों तक नाप-तोल के काम में लिये जाते थे) बाजार से खरीद और उन पर सोने का मुलम्मा चढ़ा दिया। अब वे पैसे सोने की

मोहरों-जैसे लगने लगे। सुनार उनको लेकर सेठ के पास गया और उसने सेठ को युक्ति बतलाई। सुनार की युक्ति सेठ को भी जँच गई।

दूसरे दिन सेठ ने जब देखा कि उसका पोता रोटी लेकर आने ही वाला है तो सेठ उन 'मोहरों' को छुपकर धीरे-धीरे गिनने लगा। लड़का आया तो सेठ ने 'मोहरें' छुपा ली, लेकिन लड़के से यह बात छिपी नहीं रही। उसने जाकर अपनी माँ से कहा कि दादा के पास तो बहुत सारी सोने की मोहरें हैं। उसकी माँ भी एक दिन छुपकर ससुर को मोहरें गिनते देख आई। अब सेठ के दिन फिर गये। उसकी खातिर होने लगी। नहाने के लिए गरम पानी आने लगा और रोटी भी घी शक्कर से मिलने लगी। सेठ का पोता आकर दिन में चार बार पूछने लगा कि दादाजी आपको क्या चाहिए? सेठ की शेष जिन्दगी आराम से कट गई। वह परलोक वासी हुआ तो उसकी अरथी बड़े शानदार ढंग से निकाली गई और मृतक के सारे क्रिया-कर्म अच्छी तरह किये गए। लेकिन जब सेठ का खजाना खोला गया तो घरवालों को बड़ा अफसोस हुआ कि खजाने में सिर्फ सोने का मुलम्मा चढ़ाए हुए चार रुपयों के पुराने टके थे।

● अम्मा तेरी क' मेरी

एक बदकार स्त्री थी। सास से उसकी जरा भी नहीं बनती थी। सास की बेइज्जती करने के लिए एक दिन वह पेट दर्द का बहाना करके लेट गई। उसके पति ने बहुतेरे वैद्य और हकीम बुलवाये लेकिन दर्द हो तो मिटे। आखिरकार उसके पति ने उससे पूछा कि तेरा दर्द किस तरह मिटे सो तू ही बतला। उसने कहा कि तुम यदि अपनी माँ के सिर के बाल मुँडवा कर उसका काला मुँह करके और उसे गधे पर चढ़ाकर मेरे सामने से निकालो तो मेरा दर्द मिट सकता है और किसी भी तरह से मेरा दर्द नहीं जाएगा। उसका पति जान गया कि यह सब इस दुष्टा की चालबाजी है। उसे अपनी चाल का मजा चखाने के लिए वह अपनी सास के पास गया और बोला कि तुम्हारी बेटी मर रही है उसके पेट में बड़ा दर्द है, वैद्य और हकीम सब दवा कर के हार गये। अब उसने एक नुस्खा बतलाया है। यदि तुम उसके

बताये अनुसार कर सको तो तुम्हारी बेटी बच सकती है। सास के हां भरने पर दामाद ने नुस्खा बतलाया। बेटी की ममता से वह सब करने को राजी हो गई। दामाद ने उसे 'मोडी' बना, मुंह काला कर और गधे पर चढ़ाकर अपनी स्त्री के आगे हाजिर किया। उसने सोचा कि मेरा पति अपनी मां को लाया है अत व्यंग्य से बोली

देख बनी का चाला, सिर मूंड्या मूं काला।

लेकिन तभी उसके पति ने नहले पर दहला लगाते हुए कहा

देख मरदां की हयफेरी, अम्मा तेरी क मेरी।

अपनी मां को पहिचानकर बेटी सन्न रह गई।

● के सी मरती वार

एक सुन्दर स्त्री चूड़ा पहनने के लिए मनिहार के यहां गई। स्त्री रूपवती थी सो मनिहार के मन में कुछ पाप आ गया। चूड़ा पहनाते वक्त मनिहार ने जान-बूझकर उसकी कलाई को बार बार दबा दी। वास्तव में वह औरत के मुंह से सीत्कार की आवाज सुनकर उसका आनन्द लेना चाहता था। लेकिन उस औरत ने कहा

रे मूरख मणिहार, वार वार क्या कर रहे।
के सी मरती बार, के सी पीकी सेज पर॥

तब मनिहार ने लज्जित होकर शीघ्रता से चूड़ियां पहना दी।

● इण होंठन के कारणै...

छोटी बहिन अपनी बड़ी बहिन के यहां मिलने गई। गर्मी की ऋतु थी। छोटी को प्यास लगी तो बड़ी ने मिट्टी के एक सकोरे में पानी भर लाकर उसको दिया। छोटी बहिन पानी पीने लगी तो मिट्टी का कोरा (नया) सकोरा उसके होठ में चिपक गया। इस पर वह रुष्ट होकर सकोरे से बोली

रे माटी का पूरवा, तोहि डारों पटकाय।
हॉट रखे हैं पीव को, तू क्यों चूमें आय॥

लेकिन बडी ने कहा

लाल सही मुक्की सही, बहुतक सही कुदार ।
इन होठन के कारणे, सिर पर धरयो अगार ।।

बडी बहिन की बात सुनकर छोटी ने सकोरे को चूमकर और छाती से लगा कर रख दिया ।

● दही का 'गुण'

एक सेठ का बेटा सिर्फ दही ही दही खाया करता । सभी लोग उसे समझा बुझाकर हार गये लेकिन वह दही खाना नही छोडता था । एक दिन उस सेठ के घर एक साधु भिक्षा लेने के लिए आया । सेठ ने साधु से कहा कि महाराज, यह लडका दही को छोडकर और कोई चीज नही खाता, इसको बहुत समझाया बुझाया लेकिन यह नही मानता । कृपा करके आप ही कोई उपाय बतलायें ।

साधु ने लडके को अपने पास बुलाकर कहा कि बेटा, दही खाना कदापि नही छोडना, दही खाने के बहुतेरे फायदे है । लडके ने पूछा कि महात्मा जी, दही के कुछ गुण मुझे भी बतलाइये । इस पर साधु ने कहा कि दही के चार गुण तो प्रत्यक्ष ही हैं, पहला यह कि दही खाने वाले के घर म चोर नही घुसते, दूसरा यह कि वह कभी पानी मे डूबकर नही मरता । तीसरा यह कि उसे कभी कुत्ता नही काटता और चौथा यह कि वह कभी बूढा नही होता । लडके के पूछने पर साधु ने अपनी बात को स्पष्ट किया कि अधिक दही खाने से आदमी को सास खांसी का रोग हो जाता है सो वह रात भर सोता नही खाँसता रहता है । घर के मालिक को जागता हुआ देखकर चोर घर मे नही घुसता । दमे का रोग हो जाने से उसे नहाना धोना नही सुहाता । अत जल मे डूबकर मरने का प्रश्न ही नही है । दमे का रोगी लाठी के सहारे चलता है अत हाथ म लाठी देखकर कुत्ता उसके पास नही फटकता और सास-खांसी का रोग हो जाने के कारण वह आदमी जवानी म ही मर जाता है अत उसे बुढापा नही व्यापता । साधु से दही की व्याख्या सुनकर लडके को होश हो गया और उसने दही खाना छोड दिया ।

● बिना करम मे लिखे धन कोनी मिलै

एक बूटा और उसकी बुढिया जगल से लकडी का भार लाकर अपना पेट पाला करते थे। एक दिन दोनो लकडी के भार लेकर जगल से लौट रहे थे कि उसी समय शिव-पार्वती उधर से निकले। बूढे-बूढी की दशा पर तरस खाकर पार्वती ने शिवजी से कहा कि महाराज, ये दोनो बहुत बूढे हो गये, लकडी ढोने लायक इनकी उम्र नही रही सो कृपा करके इन्हें धन दीजिए। शिवजी ने कहा कि इनके भाग्य मे धन लिखा ही नही है तो मैं कैसे दूं ? पार्वती ने हठ किया और 'मोन-चिडी' बनकर वृक्ष की डाल पर जा बैठी। तब शिवजी ने रुपयो से भरी एक थैली उनके रास्ते म डाल दी।

उधर बूढे ने बूढी से कहा कि हम बूढे हो चले। कुछ समय बाद हमारी आँखो की ज्योति और क्षीण हो जाएगी तथा एक दिन हम सर्वथा अधे बन जाएँगे। उस हालत मे हम किस प्रकार चलेगे सो आओ थोडी दूर तक अधे-अधी बनकर चल देखें। आँखें बन्दकर दोनो अधे-अधी बन गये और थैली को लाँघकर चले गये। तब शिवजी ने पार्वती से कहा कि देख लो, इनके आगे रुपयो की थैली भरकर डाल दी गई लेकिन बिना भाग्य मे लिखे ये थैली को नही उठा सके। पार्वती भी जान गई कि शिव महाराज ठीक कहते हैं अत वह अपना असली रूप बनाकर फिर शिवजी के पास आ गई।

● कासी को पडत

कासी जी से पढकर एक पडित अपने घर को जा रहा था। रास्ते मे वह एक गाँव मे ठहरा। जिस व्यक्ति के यहाँ पडित ठहरा था उसके एक युवा लडकी थी। लडकी ने पडित से पूछा कि आप क्या पढकर आ रहे हैं तो पडित बोला कि मैं वेद, शास्त्र, पुराण सब पढकर आया हूँ। कोई ऐसी विद्या बाकी नहीं रही जो मैं नही जानता हूँ। लडकी ने पूछा कि आपने त्रियाचरित्र पढा कि नहीं। पडित बोला कि यह विषय तो मेरे सामने कभी नही आया। इस पर लडकी ने व्यग्य से कहा कि तब तुमने क्या खाक पढा है।

पडित नहा-धोकर पूजा पाठ करने के लिए झोपडे म घुसा तो पीछे-पीछे

लडकी भी झोपडे मे घुस गई और उसने अन्दर से कुडी लगा दी। फिर वह जोर-जोर से रोने-चिल्लाने लगी। घर वाले और पास पडोस के लोग दौडे आये। झोपडे को बन्द पाकर वे ऊपर से झोपडे मे घुसे और घुसते ही उन्होंने पडित की खूब मरम्मत की। फिर उन्होंने लडकी से पूछा कि क्या बात थी ? लडकी की घिग्घी बँधी हुई थी। उसने रोते-रोते कहा कि जैसे ही मैं झोपडे मे घुसी, मैंने देखा कि पडितजी का सिर मत्रोच्चारण कर रहा है और धड अलग पडा है सो डर के मारे मैं चिल्लाने लगी। फिर लडकी ने कुछ सावधान होते हुए कहा, लेकिन तुम लोगों ने पडितजी को अकारण मार-पीटकर बहुत बुरा किया। यह सिद्ध पुरुष है, यह चाहे तो गाँव भर का अनिष्ट कर सकता है अत पडितजी को भेंट देकर और प्रार्थना करके प्रसन्न करना चाहिए।

सब लोग डर गये और पडितजी की भेंट-पूजा शुरू हो गई। उनके सामने विविध प्रकार की चीजो का ढेर लग गया। जब सारे लोग चले गये तो लडकी ने पडित जी से कहा कि अब तुम अविलम्ब यहाँ से चल दो। पडित बोला कि तुमने वह त्रियाचरित्र तो बतलाया ही नहीं, वह बतला दो तो मैं चला जाऊँ। इस पर लडकी बोली कि तुम निरे मोदू ही रहे। मैंने अकारण ही तुम्हे पिटवा दिया और फिर उन्ही पीटनेवालो को मूर्ख बनाकर तुम्हें इतना सामान दिलवा दिया और तुम्हारी पूजा करवा दी। यह त्रियाचरित्र का एक सबक है। अब तुम यहाँ से चले जाओ। पडित भी जान गया कि वास्तव मे यह विद्या तो बडी अनूठी है।

● तूमड़ी में जल है

मारवाड मे अकसर अकाल पडते ही रहते है सो एक बार अकाल पडा तो गाँव का बनिया शहर मे जाकर एक सेठ के बेटे से अपनी बेटी की सगाई कर आया और सेठ से रुपये ले आया। लेकिन वास्तव मे बनिये के कोई बेटी थी ही नही।

निश्चित दिन जनेत आ गई तो बनिये ने घर मे विवाह-मडप आदि बनवा लिये। फिर वह गाँव मे वधू की तलाश मे निकला। एक जगह उसने

एक 'मोडी' (सिर के बाल कटवाकर, साधु वेष बनाकर और भिक्षा मांग-कर खाने वाली स्त्री) को भिक्षा के लिए घूमती देखा। बनिये ने उससे कहा कि तुम मेरे साथ घर चलो, मैं तुम्हें खूब मिठाई खिलाऊँगा, तथा दो रुपये भी दूगा। तुम रातभर के लिए जैसा मैं कहूँ कर लेना और कुछ बोलना नहीं। 'मोडी' को यह सौदा बडा पसन्द आया और वह बनिये के घर आ गयी। बनिये ने उसे वधू बनाकर फेरे फेर दिये और सवेरा होते होते जनेत विदा कर दी।

वर-वधू को पालकी म बिठलाकर सेठ खुशी-खुशी घर चला। रास्ते मे सेठ ने पालकी के पास आकर अपने लडके से कहा कि बहू स पूछ ले कि जलपान करेगी क्या? शर्त के अनुसार मोडी रात भर बोली नहीं थी, लेकिन अब शर्त पूरी हो चुकी थी अत उसने पालकी से मुंह निकालकर कहा कि नही बच्चा तूमडी म जल है और 'बाटी' कॉख म है। माडी को देखकर और उसकी बात सुनकर सेठ सन्न रह गया।

● कजूस पडत, छाकटो नोकर

एक पडित ने एक नौकर रक्खा। पडित बडा कजूस था। वह शाम को एक वक्त ही भोजन बनाता था और नौकर को पेट भर रोटी नहीं देता था। नौकर ने सोचा कि ऐसे तो काम नही चलेगा, कोई न कोई युक्ति निकालनी चाहिए।

शाम को पडित ने नौकर को खाने के लिए रोटियाँ दे दी और फिर स्वय चौका लगाकर भोजन करने क लिए बैठा। इतने म सांप-साप करके नौकर चिल्लाया और उसने अपनी रोटियाँ जान-बूझकर पडित के चौके म फेंक दी। पडित बोला कि नालायक, यह क्या किया? तू ने मेरा चौका बिगाड दिया, अब मुझे भूखा ही रहना पडेगा। यो कहकर पडित ने अपनी थाली नौकर को दे दी कि ले ये रोटियाँ भी तू ही खा ले। नौकर ने तो इसी के लिए यह सब किया था। उसने भर पेट खाना खाया।

दूसरी शाम को पडित फिर चौका लगाकर जीमने बैठा तो नौकर न जाकर पडित जी क पैर पकड लिये और उनसे क्षमा याचना करने लगा

कि पंडित जी मुझे क्षमा कर दीजिए, मेरे कारण आपको दिन भर भूखों मरना पड़ा। नौकर चौके के अन्दर आ गया था इसलिए पंडित जी का खाना खराब हो गया। नौकर की दुष्टता से पंडित जी जल-भुन गये और उन्होंने झल्लाते हुए नौकर से कहा कि अरे वर्णसंकर, आज भी तो तूने मुझे भूखा ही रख दिया, मुझे ऐसा कम्बख्त नौकर नहीं चाहिए, जा भाग यहाँ से, अपना मुँह काला कर।

यों कहकर पंडित ने नौकर को छुट्टी दे दी।

● जयराम की माई

एक साधु भिक्षा माँगने के लिए जयराम सेठ की हवेली मे गया। सामने ही जयराम सेठ की बहू बैठी थी। साधु बोला "जयराम की माई, चून घाल।" जयराम की स्त्री को साधु की यह बात बुरी लगी और वह साधु को भला-बुरा कहकर हवेली से बाहर निकालने लगी। शोर सुनकर पड़ोसी 'जीवे' की बहू बीच बचाव करने के लिए आई। उसने जयराम की बहू से कहा कि बेचारे साधु को क्या पता था कि तुम्हारे पति का यह नाम है, इसने तो यो ही कह दिया। जीवे की स्त्री ने साधु का पक्ष लेकर उसका पिंड छुड़वाया तो साधु ने जीवे की स्त्री को आशीर्वाद देते हुए कहा, माई तेरो पूत जीवो"। साधु की बात सुनकर जीवे की स्त्री भी चमकी, उसने कहा कि निगोड़ा वास्तव में ही लुच्चा है। यों कहकर दोनों ने साधु को धक्के देकर बाहर निकाल दिया।

● बीनणी कै तो पूंछ ?

एक गाँव में एक बनिया रहता था। गाँव में अकाल पड़ा तो बनिया शहर में गया और एक सेठ से एक हजार रुपये लेकर अपनी बेटी की सगाई उसके साथ कर आया।

निश्चित दिन गाँव में बरात पहुँची। बनिये ने अपने घर में बहुत ऊँचा माँडा छवा दिया था। बरात उसी को लक्ष्य करके उस घर की ओर चल पड़ी। लेकिन इधर बनिये ने एक अरथी बनाई और उसमें एक मृत कुतिया को बाँधकर बहुत से लोगों को साथ ले बरात के सामने चला।

बरात वालों ने पूछा कि यह क्या बात है तो लडकीवालों ने कहा कि जिस लडकी की आपके यहां सगाई की गई थी और जिसका आज विवाह होना था वह अचानक मर गई । लेकिन अरथी जल्दी में बाँधी गई थी इसलिए कुतिया की पूँछ लटकती दिखलाई दे रही थी । सेठ ने पूछा कि यह क्या है तो बेटी के बाप ने उत्तर दिया कि यही तो बीमारी थी, अचानक ही लडकी के शरीर में पूंछ निकल आई और वह तुरत मर गई ।

निदान सारे बराती भी भावी वधू का दाह-संस्कार करने के लिए श्मशान तक गये ।

● मैं राड पडी कूवें में

एक गाव में एक जाट जाटनी रहते थे । जाट खेत पर काम करता जाटनी घर पर रहती। जाटनी चालाक थी वह अपने लिए हमेशा चूरमे के दो लड्डू बनाकर अलग छुपाकर रख देती । जाट घर आता तो जाटनी उसे रूखी-सूखी रोटी और राबडी परोस देती । जाट अपनी स्त्री से कहता कि आ तू भी जीम ले । इस पर जटनी कहती "मैं राड पडी कूवें म तूं तेरी खाले । यही बात रोजाना होती ।

नित्य घी चूरमा खाने से जाटनी मोटी हो गई तो जाट ने सोचा कि इस रहस्य का पता लगाना चाहिए । एक दिन जाट खेत से जल्दी घर आ गया । जाटनी घर पर नही थी । जाट ने चूरमे के लडडू ढूंढ लिए और खा-पीकर चला गया। हमेशा की तरह वह फिर शाम को घर आया और जीमने के लिए बैठा तो जाटनी ने रूखी-सूखी रोटियां और राबडी जाट के आगे रख दी । जाट ने जाटनी से कहा कि आजा तू भी जीमले । जाटनी ने उत्तर दिया 'मैं राँड पडी कूवें में तू तेरी खाले ।" इस पर जाट ने व्यग्य से जाटनी को कहा कि आज उस कूवे में मैं पड गया हूँ सो रोटी खाली है तो खाले अन्यथा रात भर तारे गिनेगी । जाटनी जान गई कि आज रहस्य खुल गया है सो वह लज्जित हो गई और उसने रूखी-सूखी रोटियाँ खाली ।

● अड्डो ई उड़ा दियो

एक अफीमची की नाक पर मक्खी बैठ गई । अफीमची ने मक्खी से बहुत विनय की, उसकी खुशामद की कि बाईजी राज, उड़जा । मक्खी नहीं उड़ी । अफीमची ने मक्खी उड़ाई भी तो वह फिर आ बैठी । अफीमची को मक्खी की यह हरकत बड़ी नागवार महसूस हुई । उसने अपनी जेब में से चाकू निकाला और अपनी नाक काट डाली । फिर वह मक्खी से झुंझलाते हुए बोला कि ले हरामजादी, अब मैंने तेरे बैठने का अड्डा ही उड़ा दिया है, अब किस पर बैठेगी ?

● अंख में दो पंख निकल्या

एक नवाब की शाहजादी ने प्रण कर रखा था कि जो उसकी पहेली का अर्थ बतला देगा वह उसी के साथ विवाह करेगी । अर्थ न बतलाने पर प्राणदंड की सजा थी । बहुत से राजा, राजकुमार और अन्य लोग पहेली का अर्थ न बतला सकने के कारण मृत्युदंड पा चुके थे ।

एक गांव में एक तेली अपनी बूढ़ी मां के साथ रहता था । उसने अपनी मां से कहा कि मैं नवाब की शाहजादी के पास जाता हूँ, यदि मैंने अर्थ बतला दिया तो फिर आनन्द ही आनन्द है नहीं तो जो होगा होगा सो देखा जाएगा । मां के मना करने पर भी बेटा घर से निकल पड़ा । रास्ते में उसने देखा कि एक ऊँट मरा हुआ पड़ा है । उसकी आँखें खुली पड़ी थी, पलकों में ओस के कण चमक रहे थे जो अब झर-झर कर जमीन पर गिर रहे थे । सारा दृश्य देख कर तेली के मुँह से निकल पड़ा :

> अंख में दो पंख निकल्या, जल चढ़ै है सूली ।
> के तो दो का तीन हो, नहीं जावै भड़ सनूली ।।

तेली ने सोचा कि बस, यही बात शाहजादी से पूछूंगा । यों सोचते-विचारते वह शाहजादी के पास पहुँच गया । शाहजादी ने तेली के लड़के से पूछा कि जब उसके थी तब तो कोई उसके पास नहीं आती थी अब नहीं रही तो सब भागी आती हैं । तेली को इसका कोई अर्थ नहीं सूझा तो वह झुंझला

कर वाला 'गधे का पूंछ' । तुम मेरी बात का जबाव दो

अस मे दो पस निकल्या, जल चढै है सूली ।
के तो दो का तीन हो नहीं जावैं जड समूली ॥

अर्थात् तुम्हारी पहेली का अर्थ तो मुझे आता नहीं । यदि तुम मेरे साथ शादी कर लो तो हम दो से तीन हो जाएँ नहीं तो हम समूल नष्ट हो जाएँगे । लेकिन शाहजादी को अपनी पहेली का उत्तर मिल गया था । गधे के जब तक पूंछ होती है वह मक्खियों को पूंछ से उडाता रहता है लेकिन पूंछ कट जाने पर हजारो मक्खियाँ आ आकर बैठ जाती हैं । तेली की बात का कोई उत्तर शाहजादी को नहीं आया अत उसने हार मान कर तेली से शादी करली ।

● जीजा, राम-राम

एक बनिया शहर में गया । भूख जोरो से लगी थी लेकिन पास मे पैसा नही था । किसी से मांगने में भी सकोच होता था अत बनिये ने सोचा कि अब तो कोई युक्ति निकालनी चाहिए । थोडी ही दूर चला होगा कि सामने एक हवेली दिखलाई पडी । हवेली के गोखे पर सेठ बैठा था । बनिये ने सेठ से कहा, जीजा, राम-राम । सेठ असमजस में पड गया कि यह अपरिचित साला कहाँ से आ गया । फिर उसने पास ही खेलते हुए छोटे लडके से कहा कि इन्हे घर म ले जा और अपनी माँ से कह दे कि तेरा भाई आया है । बनिया घर में गया तो सेठानी को देखकर बोला, 'मामी, राम राम' । सेठानी ने झट घूंघट निकाल लिया । वह पसोपेश में पड गई कि भाई उनका आया है या मेरा ? उसने सोचा कि लडके ने कहने मे भूल करदी है । सेठानी ने उसे भोजन करवा दिया । भोजन करके वह बाहर निकला और सेठ से बोला कि मैं अभी एक आवश्यक काम से जा रहा हूँ, शीघ्र ही लौटूंगा ।

इधर सेठ हवेली में गया तो उसने सेठानी से पूछा कि आज अपने भाई से क्या-क्या बातें हुई ? सेठानी ने कहा कि भाई मेरा था या आपका,

उसने तो मुझे देखते ही कहा, "मामी, राम-राम"। सेठानी की बात सुनकर सेठ शीघ्रता से बाहर आया और उसने बनिये को अपने पास बुलवाकर पूछा कि यह क्या बात है ? बनिये ने उत्तर दिया कि अमुक गाँव का बनिया हूँ, भूख लग गई थी, लेकिन पास में पैसे नहीं थे, किसी से याचना करते शर्म आती थी अतः मैंने आप को जोजा बनाया। आपने भोजन के लिए मुझे घर में भेजा तो मैंने सेठानी को अपनी मामी बनाई। यदि मैं उसका भाई बनता तो वह अपने मायके की अनेक बातें पूछती जिनका मेरे पास कोई उत्तर न था। लेकिन मामी कह देने पर उसने कुछ नहीं पूछा और मैं भोजन करके बाहर निकल आया।

बनिये की बात सुनकर सेठ ने सोचा कि आखिर जाति-भाई है, बनिये का बेटा है सो उसने बात आई-गई कर दी।

● तेरै से गेर्‌या भी कोनी जा

एक मियाँजी की बीबी बड़ी फूहड़ थी, लेकिन होशियारी बहुत जतलाती थी। एक दिन बीबी ने मियाँ से कहा कि मियाँजी, आप कहें तो आज थोड़ा हलवा पकालूँ। मियाँ बेचारा तो जानता था कि बीबी कैसी शऊरदार है लेकिन बीबी के आग्रह करने पर मियाँ न हाँ भरली। बीबी हलवा पकाने बैठी। बीबी ने चूल्हे पर कड़ाही चढाई और उसमें घी चीनी आटा और पानी डालकर चलाने लगी। लेकिन बहुत कोशिश करने पर भी जब हलवा नहीं बना तो बीबी ने मियाँ से कहा कि मियाँजी, हलवा तो नहीं बनता आप कह तो लपसी बनालूँ। मियाँ बोला कि तुमसे लपसी भी नहीं बनेगी। बीबी ने उत्तर दिया कि वाह, लपसी क्या नहीं बनेगी ? लपसी बनाने में भला क्या भेद है ? बीबी ने कड़ाही में थोड़ा आटा और डाला और फिर चलाने लगी लेकिन बहुत माथा-पच्ची करने पर जब लपसी भी नहीं बनी तो बीबी ने फिर मियाँ से कहा कि मियाजी लपसी तो नहीं बनती लेकिन आप कहें तो इसका दलिया तैयार कर लूं। मियाँ बोला कि बीबी तुमसे दलिया भी नहीं बनेगा। बीबी ने चिहुँक

कर उत्तर दिया कि वाह मियांजी आप मुझे क्या समझते हो, क्या मैं दलिया भी नहीं बना सकती ?

बीबी फिर चूल्हे के पास बैठी। उसने कड़ाही में घी, पानी आटा आदि और डाल दिये लेकिन बीबी के लाख प्रयत्न करने पर भी दलिया नहीं बना और सारा गुड़ गोबर हो गया। बीबी पसीने से नहा गई। अन्त में हारकर बीबी ने मियाँ से कहा कि मियाजी इसका तो कुछ नहीं बनेगा, आप कहें तो इसे उठाकर गली में फेंक आऊँ। मियाँ बोला कि बीबी, तुमसे फेंका भी नहीं जाएगा। इस पर बीबी ने फिर चमककर मियाँ से कहा कि वाह क्या तुम मुझे बिल्कुल फूहड़ ही समझते हो ? यो कहते कहते बीबी आवेश में आ गई और कड़ाही को उठाकर ले गई। उसने आव देखा न ताव कड़ाही घर की छत पर ले जाकर गली में उलट दी। गली में से कुछ भलेमानस गुजर रहे थे, उनके सारे कपड़े खराब हो गये। वे उलहना देने के लिए मियाँ के पास आये और बोले कि मियाँजी आपकी बीबी तो बड़ी फूहड़ है। मियाँ ने हाथ पाँव जोड़कर उन्हें किसी प्रकार विदा किया और फिर बीबी की ओर मुखातिब होकर बोला कि बीबीजी सुना, मैंने तो नहीं कहा लेकिन राह चलते लोग कह गये कि बीबी बड़ी फूहड़ है।

● घम्मक रोटा कर ल्याऊँ ?

एक बीबी अपने मियाँ से बहुत प्यार दरसाया करती। बीबी मियाँ से कहती कि मियाँजी यदि आप परदेस चले जाएँ तो मैं आपका मुह देखे बिना रोटी पानी भी नहीं खाऊँगी। परीक्षा लेने के लिए एक दिन मियाँ घर की छत पर छुपकर बैठ गया। मियाँ ने बीबी से कह दिया था कि मैं परदेश जा रहा हूँ अतः मियाँ को परदेश गया जानकर बीबी खाट मे पड़ रही।

थोड़ी देर बाद बीबी की सखिन आई। उसने बीबी से कहा, 'बीबी, कुछ खाये, मर ज्यावैगी।" बीबी ने उदासीनता से उत्तर दिया, क्या खाऊँ भैण, मेरा पिया गया परदेस। सखिन ने फिर पूछा, "घम्मक रोटा

कर ल्याऊँ ?" बीबी तो तैयार ही थी लेकिन उसने अनमनी होकर कहा, "कर ल्या मैंण तू जाणै ।" बीबी की बहिन ने धमसक रोटा बनाया और उसमें खूब घी और चीनी डाल कर बीबी को ला दिया। बीबी बड़े आराम से धमसक रोटा गटका कर लेट गई।

दूसरे दिन बीबी की बहिन फिर आई और पहले दिन की ही तरह बीबी से पूछा। "कुछ हलवापूड़ी कर ल्याऊँ ?" बीबी ने संतोष की साँस लेते हुए कहा, "करल्या मैंण तू जाणै ।" बीबी की बहिन ने हलवा-पूड़ी करके बीबी को खिलाया और चली गई। तीसरे दिन बीबी की बहिन फिर आई और बीबी को चिल्ले-पूड़े बना के खिला गई। उधर मियाँ तीन दिन से भूखा बैठा था, उसके पेट में चूहे कूद रहे थे। बीबी शौच के लिए बाहर गई तो मियाँ छत पर से आकर नीचे बैठ गया। बीबी आयी तो मियाँ को देख कर पूछने लगी, "मियाँ तू कित गया था ?" मियाँ बोला, "बीबी परदेस गया था ।"
फिर बीबी और मियाँ के निम्न प्रश्नोत्तर हुए :
"मियाँ, तुझे क्या मिल्या ?"
"बीबी, एक सरप मिल्या ।"
"मियाँ, वह मोटा कैसा ।"
"बीबी, तेरे धम्मक रोटे जैसा ।"
"मियाँ, वो चाले कइयाँ ?"
"बीबी, तेरे हलवे में घी चाले जइयाँ ।"
"मियाँ वो चोगे कइयाँ ?"
"बीबी, तेरे चिल्लै-पूड़ा में सुसुवा उठे जइयाँ ।"

बीबी जान गई कि निगोड़े ने सारी बातें देख ली हैं। मियाँ को भी बड़ा गुस्सा आ रहा था। वह एक मोटा लट्ठ ढूंढ कर लाया और बीबी की कमर पर जमाते हुए बोला कि रंडी, तू तो कहा करती थी न कि मैं तुम्हारा मुँह देखे बिना रोटी-पानी भी नहीं खाऊँगी।

×

● ल्या दो ई दे

एक दिन काजीजी ने खुदा से अरज की कि या खुदा तेरी इबादत करते और पाँच वक्त की नमाज गुजारते मेरी उम्र बीत चली लेकिन तू ने मुझे आज तक कुछ नहीं दिया। अब बुढ़ापे में इतना तो कर कि दूध पीने के लिए मुझे एक बकरी बख्श दे।

रात को काजी जी ने सपने में देखा कि उनके घर पर एक उत्तम किस्म की बकरी बँधी है। बकरी को देख कर काजी जी बड़े प्रसन्न हुए, पर फिर दुविधा में पड़ गये, बकरी दूध पीने के लिए रख ली जाए अथवा अच्छी कीमत पर बेच दी जाए। अन्त में उन्होंने यही निर्णय किया कि बकरी को पूरी कीमत लेकर बेच दी जाए। उन दिनों साधारणतया बकरी की कीमत दो रुपये से अधिक नहीं होती, लेकिन काजीजी ने पच्चीस रुपये में बकरी बेचनी निकाली। ग्राहक पाँच-दस रुपये से अधिक नहीं 'थामते' थे। अन्त में एक ऐसा ग्राहक भी आया जिसने बीस रुपये तक बकरी की कीमत लगा दी, लेकिन काजीजी पच्चीस पर अड़े रहे। अन्त में हुज्जत करते-करते काजीजी की आँखें खुल गई तो उन्हें बड़ा अफसोस हुआ। उन्होंने झट एक हाथ अपनी आँखों पर रखा और दूसरा हाथ फैला कर बोले, ला-ला दो रुपये ही दे।

● बलद घोड़ै की पिछाण कोनी

दो कुँजड़े सब्जी बेचने के लिए जाया करते थे। एक के पास एक बैल था सो वह बैल पर अपना सामान लादकर लाया-ले जाया करता। लेकिन दूसरे को सारा बोझ अपने सिर पर उठाकर ले जाना पड़ता था। दूसरा कुँजड़ा गाँव के ठाकुर के गढ़ में सब्जी बेचने आया करता था। एक दिन उसने ठाकुर से अरज की कि अपना सामान ढोने के लिए मुझे एक बछेरा दिया जाए। ठाकुर ने कुँजड़े को एक बछेरा दिलवा दिया।

अब वह बछेरे पर लाद कर सब्जी लाने लगा। बैल वाले कुँजड़े से वह पहले पहुँच कर सब्जी बेच देता था। सारे लोग सब्जी खरीद लेते

ता बैल वाला पहुँचता लेकिन फिर उसकी सब्जी नहीं बिकती। तब उसने खुदा से अरज की कि खुदावद करीम, इस दुष्ट कुँजडे का बछेडा मर जाय।

लेकिन सयोग की बात कि दूसरे दिन जब वह कुँजडा सोकर उठा तो उसने देखा कि उसका बैल मरा पडा है। तब उसने आकाश की ओर हाथ उठाकर व्यग्य पूर्वक खुदा से कहा कि या खुदा तुझे इतने दिन हो गये खुदाई करते, अब तक बैल और घोडे की पहिचान भी तुझे नहीं हुई ?

● राब तिहारो रोस जीवतडो भूलूं नहीं

एक पडित जी के घर में घाटा आ गया। 'राबडी' पी-पी कर वे किसी प्रकार अपने दिन गुजारते थे। पडितजी के एक यजमान आगरा रहने लगे थे। एक दिन पडितजी को ध्यान आया कि आगरे वाला यजमान आजकल बहुत मालदार है सो उसके यहाँ चला जाए।

पडित जी सेठ के यहाँ पहुँचे तो सेठ ने उनकी बडी आव-भगत की। सेठानी ने सोचा कि तरह-तरह के साग-सब्जी तो नित्य बनते ही हैं आज पडित जी की मनुहार किस चीज से की जाए ? सेठानी कभी साल छ महीने में शौकिया राबडी बनाया करती थी। सेठानी ने सोचा कि आज पडित जी के लिए राबडी' बनानी चाहिए।

लेकिन पडितजी तो 'राबडी' से ऊबकर ही यजमान के यहाँ पहुँचे थे। थाली में राबडी परोसी देख कर पडितजी आसन पर से उठ खडे हुए और राबडी को हाथ जोडते हुए बोले

> राब तिहारो रोस, जीवतडो भूलूं नहीं।
> छोडी थी सो कोस, आगै आई आगरै ॥

● एक चीज थे दे देयो

एक ब्राह्मण ने सेठ के पास आकर कहा कि सेठजी, लडकी का विवाह मँड गया है सो विवाह की सब तैयारी तो मैं खुद कर लूंगा, सारी चीजें मैं ले आऊँगा, लेकिन एक चीज आप को देनी होगी। सेठ ने कहा कि

कोई बात नहीं, जो चीज तुम्हें चाहिए वह विवाह से चार दिन पहले आकर ले जाना ।

विवाह के चार दिन शेष रहे तो ब्राह्मण ने सेठ के पास जाकर कहा कि सेठ जी, विवाह के सिर्फ चार दिन रहे हैं सो वह चीज आप मुझे दे दीजिए । सेठ ने पूछा कि पंडित जी, आपको कौन सी चीज चाहिए ? इस पर ब्राह्मण बोला कि और सब चीजें तो हो जाएँगी आप सिर्फ रुपये दे दीजिए । सेठ सोच विचार करने लगा तो ब्राह्मण बोला कि सेठ जी, आपने कहा था कि विवाह के लिए एक चीज तुम्हें मैं दे दूंगा सो आप यही एक चीज दे दीजिए, शेष सब चीजें अपने आप आ जाएँगी ।

लाचार ब्राह्मण को विवाह के लिए जितने रुपया की आवश्यकता थी उतने रुपये देकर सेठ ने उससे अपना पीछा छुड़ाया ।

● गधेडो आदमी वणग्यो पण...

एक मास्टर स्कूल में पढ़ाया करता था । रहने के लिए उसे कोई अच्छा घर नहीं मिला अतः वह एक कुम्हार के घर रहा करता था । कई लड़के पढ़ने के लिए कुम्हार के घर भी आया करते थे । एक दिन कुम्हार ने मास्टर से पूछा कि मास्टर जी, आपमें ऐसा कौन सा गुण है जो इतने सारे लड़के आपको हर वक्त घेरे रहते हैं ? मास्टर ने कहा कि मैं गधे को आदमी बनाता हूँ, यही मेरे में विशेष गुण है, मास्टर की बात सुनकर कुम्हार ने कहा कि मास्टर जी, मेरे यहाँ भी एक ऐसा गधा है जो बड़ा बदमाश है । वह मेरे किसी काम का नहीं है अतः आप उसे आदमी बना दीजिए और अपनी फीस मुझसे ले लीजिए । मास्टर ने हाँ भर ली और कुम्हार ने गधा मास्टर को सौंप दिया ।

कुछ दिन बीते तो कुम्हार मास्टर से रोज-रोज पूछने लगा कि मेरा गधा आदमी बना या नहीं । मास्टर ने सोचा कि कुम्हार की बेवकूफी का लाभ उठाना चाहिए सो उसने गधे को किसी दूसरे गाँव वाले के हाथ बेच दिया और कुम्हार के पूछने पर उससे कह दिया कि तेरा गधा आदमी बनने के लिए गया है । मास्टर ने कुम्हार से फीस के रुपये भी ले लिये ।

कुछ दिन बाद कुम्हार ने फिर पूछा तो मास्टर ने कह दिया कि तेरा गधा आदमी बन गया है और आजकल वह शहर में तहसीलदार के पद पर है।

कुम्हार और कुम्हारी तहसीलदार रूपी अपने गधे को लाने के लिए शहर पहुँचे। पूछते-पूछते वे तहसील तक चले गये। वहाँ उन्होंने चपरासी से पूछा कि तहसीलदार कौन सा है? चपरासी ने बाहर से ही बडी मेज के सामने कुर्सी पर बैठे तहसीलदार को दिखला दिया। कुम्हार ने कुम्हारी से कहा कि देख, है तो वही, वैसे ही लम्बे लम्बे कान हैं और वैसी ही चाल-ढाल है। कुम्हारी ने भी कुम्हार की बात की ताईद की। तब कुम्हार ने अपने 'गधे' के गले मे डालने के लिए रस्सा तैयार किया और कुम्हारी ने एक कूंडे में मोठ भरे। कुम्हार रस्सा हाथ मे लेकर दरवाजे के पास तैयार हो कर खडा हो गया और कुम्हारी 'गधे' को मोठ से भरा कूंडा दिखला कर मोठ चरने के लिए आवाज दे-दे कर पुकारने लगी। चपरासी ने मना किया तो दोनों चपरासी पर बिगडने लगे कि मास्टर को इतने रुपये देकर तो हमने अपने गधे को आदमी बनाया है और अब यह यहाँ आकर बैठ गया। हम इसके गले में रस्सा डाल कर अपने घर ले जाएँगे और इससे काम लेंगे।

कुम्हार और कुम्हारी की बेहूदगी पर तहसीलदार को बडा गुस्सा आया और उसने आकर दोनो को एक-एक लात लगा दी। तब कुम्हार ने कुम्हारी से कहा कि साला गधे से तहसीलदार बन गया तो भी दुलत्ती झाडने की आदत तो नही गई।

● मूरख चोर

एक छोटे स्कूल में गुरु जी बच्चो को जोर-जोर से पुकार कर हिसाब पूछ रहे थे कि बालको, मेरे पास दस हजार रुपये थे जिनमें से दो हजार मैंने लडकी के विवाह में लगा दिये और दो हजार रुपये अन्य कार्यों मे खर्च हो गये तो बतलाओ अब मेरे पास कितने रुपये शेष रहे? सारे लडके एक साथ बोले कि गुरुजी अब आपके पास छ हजार रुपये शेष हैं। उसी

समय एक चोर पाठशाला के पास से गुजर रहा था। उसने सोचा कि छ हजार रुपये मेरे लिए तो बहुत हैं। आज रात को इसी घर मे चोरी करूँगा।

शाम हुई तो गुरु जी तथा सारे बालक अपने-अपने घर चले गए। रात को चोर पाठशाला में घुसा लेकिन उसे कहीं रुपये नहीं मिले। किसी आले से स्याही की दवात गिरी तो चोर के कपड़े रँग गये और अँधेरे में अनजाने हाथ मारने से किसी आल से पट्टी गिरी तो चोर का सिर फूट गया। काफी देर तक हैरान होकर भी चोर के हाथ जब कुछ नहीं लगा तो वह अपनी मूर्खता पर पछताता हुआ वहाँ से चला कि यहाँ आकर तो खामखाह सिर फुड़वाया।

● भगतण की चतराई

एक बनिया तीर्थाटन के लिए जाने को हुआ तो उसके सामने यह समस्या खड़ी हो गई कि अपनी पूँजी किसके पास छोड़कर जाए। बनिये के घर से थोड़ी दूरी पर एक साधु रहता था जो बड़ा निरापेखी (निर-पेक्षी) बना हुआ था। बनिये ने सोचा कि अपने रुपये महात्मा जी के पास रख छोड़ने चाहिएँ। यों सोचकर बनिया अपने रुपये लेकर महात्मा के पास गया। महात्मा ने कहा कि हम तो मोह माया से परे हैं किसी के रुपये पैसे को हाथ भी नहीं लगाते लेकिन तुम ले आये तो उधर एक कोने में गाड़ जाओ और आकर वहीं से निकाल लेना। बनिये की और भी खातिरी हो गई और वह रुपये गाड़कर चला गया।

पीछे से साधु ने रुपये निकाल कर दूसरी जगह गाड़ दिये। बनिया तीर्थाटन से लौटा तो साधु साफ नट गया। कोई साक्षी भी नहीं था। बनिया उदास मुँह अपने घर लौट गया। बनिये के पड़ोस म एक वेश्या का मकान था। बनिये ने वेश्या से सारी बातें कही तो वेश्या ने बनिये को धीरज बँधाया कि तुम चिन्ता न करो मैं तुम्हारे रुपये दिला दूँगी। मैं साधु के पास जाती हूँ और तुम थोड़ी देर पीछे आकर अपने रुपये माँग लेना। यों कहकर वेश्या ने खूब अच्छे गहने कपड़े पहने और एक जनवा

कर मँगाया। फिर उसने दासी को बुलाकर सारी बात समझा दी और स्वयं गहनों की पेटी लेकर रथ में बैठ कर साधु के पास चली।

रथ झनझनाता हुआ साधु की कुटिया पर पहुँचा। वेश्या ने साधु को प्रणाम किया और बैठ गई। साधु के पूछने पर वेश्या ने कहा कि महात्मन्, मैं घर में अकेली हूँ, मेरे पति दिसावर गये हुए हैं, आजकल नगर में बहुत चोरियाँ हो रही हैं अतः आप मेरे गहनों की यह पेटी अपने यहाँ रख लीजिए, मेरे पति आ जाएँगे तो मैं ले जाऊँगी। आप कृपा कर इतना कष्ट मेरे लिए कीजिए। इतने में बनिया भी वहाँ आ गया और अपने रुपये माँगने लगा। साधु ने सोचा कि अब बनिये के रुपए नहीं दिये जाएँगे तो जेवरों की पेटी हाथ से निकल जाएगी। इसलिए साधु ने उदासीनता दिखलाते हुए बनिये से कहा कि बच्चा, जिस जगह तुमने रुपये गाडे थे वहीं पडे होंगे, खोजकर देखल। यों कहकर साधु ने हाथ के इशारे से बनिये को वह स्थान दिखला दिया जहाँ साधु ने बनिये के रुपये गाडे थे। बनिये ने अपने रुपये निकाल लिए और साधु को प्रणाम कर चलता बना। इतने में वेश्या की दासी हाँफती हुई दौडी आयी और बोली, बाई जी, मालिक दिसावर से आ गये हैं, आप शीघ्र घर चलें। दासी की बात सुन कर वेश्या ने बडा हर्ष प्रकट किया और साधु से बोली कि महात्मा जी, यह आपके चरणों के दर्शन का ही पुण्य प्रभाव है कि मेरे पति, जिनकी मैं बडी उत्सुकता से प्रतीक्षा किया करती थी घर आ गये हैं। अब जेवरों की पेटी यहाँ रखने की आवश्यकता नहीं। यों कहकर वेश्या ने प्रणाम किया और शरारतपूर्ण हँसी हँसती हुई रथ की ओर बढ गई। दासी ने जेवरों की पेटी उठाकर रथ में रखी और महात्मा जी टापते रह गये।

● नाई को ठोलो, वाणिये को टक्को

एक नाई ने एक सेठ की हजामत बनायी। नाई को शरारत सूझी और हजामत बनाने के बाद उसने सेठ के सिर में एक 'ठोला' मार दिया। सेठ को गुस्सा तो आया लेकिन वह गुस्से को पी गया और उसने इनाम

स्वरूप नाई को एक टका भी दे दिया। नाई के हाथ एक अच्छा गुर लग गया। अब वह जिसकी भी हजामत बनाता उसके सिर में एक *'ठोला'* अवश्य मार देता।

एक दिन नाई ने एक ठाकुर की हजामत बनायी और हजामत बना कर नाई ने ठाकुर के सिर में भी एक 'ठोला' मार दिया। ठाकुर को यह सह्य नहीं हुआ। नाई की इस बदतमीजी पर उसे बड़ा गुस्सा आया। पास ही तलवार पड़ी थी सो ठाकुर ने झट तलवार निकाली और नाई का सिर भुट्टा सा उड़ा दिया।

● बड़ां की बड़ी बात

एक सेठ बहुत मालदार था। उसकी बेटी का विवाह मँडा। 'सजन-गोठ' के वक्त लड़की के बाप ने समधी को बुलाने के लिए दो-तीन बुलावे भेजे लेकिन समधी हर बार यही कहता रहा कि आ रहे हैं। बहुत देर होने लगी तो बेटी के बाप ने फिर बुलावा भेजा। इस पर बेटे के बाप ने खीज कर कहा कि ऐसी क्या जल्दी है, सगाजी क्या मोहर, गिन्नी परोसेंगे? सेवकों ने जाकर यह बात अपने मालिक से कही तो सेठ बोला कि चलो कोई बात नहीं।

लेकिन बेटे वाले जब जीमने के लिए बैठे तो सचमुच ही सारे बरातियों को मोहर और गिन्नियाँ परोसी गईं। देख कर बेटे का बाप सन्न रह गया। मोहर और गिन्नियाँ तो खाई नहीं जा सकती थीं। निदान बेटे के बाप ने समधी से क्षमा माँगी और बोला कि ये मोहर और गिन्नियाँ तो उठाइये और भोजन परोसिये। लेकिन बेटी के बाप ने कहा कि साहजी साहब, थाली में परोसी हुई चीज वापिस नहीं उठायी जाती, यह तो जूठन है, हम इसे उठा कर कहाँ रखें? फिर बेटी के बाप ने अपने आदमियों से कहा कि इस जूठन को उठाकर भगिन को डाल दो और इन्हें भोजन परोसो। सारी मोहर और गिन्नियाँ उठाकर भगिन को डाल दी गईं और फिर बरातियों को मिठाइयाँ परोसी गईं।

● गडवै से भेर होगी

एक सुनार के घर के आगे खाली जगह पड़ी थी । एक खाती के माँगने पर सुनार ने वह जगह काम करने के लिए खाती को बतला दी । खाती ने अपना अड़ंगा फैलाते फैलाते सारी जमीन रोक ली । सुनार को यह बात बहुत बुरी लगी लेकिन अब खाती वहाँ से हटने का नाम नहीं लेता था । खाती और सुनार में नित्य झगड़ा होने लगा ।

राजा ने सुनार को एक गड़ुवा घड़ने के लिए दिया था लेकिन खाती से झगड़ा होने के कारण सुनार गड़ुवा नहीं घड़ सका । राजा के सेवक कई बार आये लेकिन सुनार से गड़ुवा नहीं घड़ा गया ।

एक दिन राजा ने सख्त हुक्म दिया कि सुनार आज ही गड़ुवा घड़ कर पेश करे । उस दिन सुनार का खाती के साथ जोरों का झगड़ा हुआ था । सुनार को बड़ा गुस्सा चढ़ा हुआ था लेकिन राजा का हुक्म सुनकर वह गड़ुवा बनाने के लिए बैठा, लेकिन गुस्से में चाँदी को पीटता गया और काफी बड़ा पात बन गया । गड़ुवे की जगह भेर तैयार हो गई । इतने में राजा का बुलावा फिर आ गया । सुनार उसी भेर को लेकर दरबार में हाजिर हुआ । भेर को देखकर राजा को बड़ा गुस्सा आया और वह सुनार को कड़ा दंड देना ही चाहता था कि सुनार ने अरज की कि अन्नदाता मेरा कसूर नहीं है

> पहली काम मे खोटो कीन्यो,
> घर माँग्यो खाती नै दीन्यो ।
> घड़तां घड़तां हुई अबेर,
> घड़ै हो गडवो, होगी भेर ।।

● कीकर छोडो कैर पधारो

एक जाट ने हवेली बनवाया। उस जगह एक कीकर का तथा एक कैर का पेड़ था । जाट ने सोचा कि कीकर के वृक्ष को यदि कटवा कर इसके तख्ते चिरवा लिये जायें तो हवेली के सारे किवाड़ इसी में बन

जाएँगे। लेकिन गाँव के लोगों ने कहा कि कीकर के वृक्ष में 'खेतरपाल' (क्षेत्र-पाल) का निवास है अत वृक्ष को कटवाना नहीं चाहिए। अनिष्ट की आशंका से जाटनी ने जाट का वृक्ष काटने से मना कर दिया।

जाट ने सोचा कि अब तो युक्ति से काम लेना चाहिए। दूसरे दिन सवेरे वह सोकर उठा तो कहा कि रात को सपने में मुझे खेतरपाल दिखलायी पड़े और मुझसे कहने लगे कि इस कीकर के वृक्ष में रहते रहते मेरा जी ऊब गया है अत मैं कीकर के वृक्ष को छोड़कर इस कैर के गाछ में रहना चाहता हूँ। तब मैंने भी खेतरपाल से प्रार्थना की

खेतर-पाल बलिहारे थारे,
याड़ो कारज अड्यो हमारे।
कीकर छोड़ो कैर पधारो,
इतरो कारज म्हारो सारो।

तब खेतरपाल बाबा प्रसन्न और संतुष्ट होकर कीकर को छोड़कर कैर में प्रवेश कर गये। अब कीकर के वृक्ष को काटने में कोई हानि नहीं है।

● चमार आपकी माया सागे लेग्यो

एक चमार के पास सौ सवा सौ रुपये थे। उन्हीं के बल पर वह बोहरा बना हुआ था। चमार ने किसी को पाँच रुपये और किसी को सात रुपये ब्याज पर दे रखे थे। एक बार वह बीमार हुआ तो उसने सारे रुपये इकट्ठे कर लिये। चमार को जब जान की आशा नहीं रही तो उसने मन में सोचा कि लोग कहते हैं कि माया किसी के साथ नहीं चलती, लेकिन मैं कोई ऐसी तरकीब करूँ कि अपनी माया (पूँजी) को साथ ही ले चलूँ।

चमार ने घरवाली से कहा कि मेरा मन राबड़ी पीने को करता है सो मेरे लिए बहुत सारी राबड़ी बना दो यही मेरी अंतिम इच्छा है। अनिच्छा होते हुए भी घरवाली ने राबड़ी बना दी। चमार ने राबड़ी से

भरी थाली अपने पास रखी और फिर सारे लोगों को मापडे से बाहर निकाल दिया। चमार ने किवाड बन्द कर लिये और राबडी के सहारे उन रुपया का एक एक करके निगल गया। ऐसा करने से चमार की मृत्यु उसी दिन हो गई।

दाह-सस्कार के पश्चात् घर वालो ने सारे घर को छान मारा लेकिन उन्हें एक रुपया भी नहीं मिला। सारे लोग हैरान थे कि आखिर रुपये गये तो गये कहाँ ? सारे गाँव के लोग कहते थे कि चमार के पास बहुत रुपये थे। रुपयो का कोई सुराग नहीं लगा तो घरवाले निराश हो गये।

लेकिन तीसरे दिन जब वे फूल चुगने के लिए मरघट पर गए तो जहाँ चमार के शव को जलाया गया था वहाँ राख को कुरदने पर उन्हें गास में चाँदी का एक डला मिला। अब लोगो की समझ में चमार की बात आई कि चमार अपने रुपया को साथ ले जाना चाहता था लेकिन रुपये उसके साथ नहीं गए। उसकी पूँजी यहीं रह गई।

● राव कैऊँ क जोधो ?

एक गाव म राव और जोधा नाम के दो ठाकुर भाई रहते थे। एक चमारी अपने घर के आँगन में बैठी अपने छोटे बच्चे को खिला रही थी और लाड से कह रही थी कि 'तुझे राव कहूँ या जाधा, तुझे राव कहूँ या जोधा ?' सयोग से ठाकुर उसी वक्त उधर से गुजरा। चमारी की बात उसके काना में पड़ी तो उसने बाड के ऊपर से झाँका और घुडककर चमारी से पूछा कि क्या कहा ? ठाकुर को सामने देख कर चमारी हक्की-बक्की रह गई। वह सहमती हुई बोली कि ठाकराँ, मैं तो इस निगोडे को कह रही थी तनै साँप खावै क 'गोघो'। ठाकुर मन में जान गया कि चमारी सफेद झूठ बोल रही है लेकिन फिर कुछ सोचकर आगे बढ गया। चमारी के भी जी में जी आया।

● मेरै धणी नै आधो कर दे

एक छिनाल औरत थी। वह नित्य मन्दिर में जाकर देवी से प्रार्थना करती कि मेरे पति को अधा करदे। एक दिन उसका पति देवी की

मूर्ति के पीछे छुप कर बैठ गया और अपनी स्त्री के प्रार्थना करने पर बोला कि अपने पति को खूब माल-मलीदा बना कर खिलाया कर, वह शीघ्र ही अंधा हो जाएगा। औरत प्रसन्न मन घर आई और उसी दिन से अपने पति को माल मलीदा खिलाने लगी।

कुछ दिन बाद उसका पति बोला कि चूकरी की माँ, मेरे को तो आजकल कम दिखायी देने लगा है, इसका क्या कारण है? पति की बात सुनकर वह मन ही मन बड़ी प्रसन्न हुई। वह अब मलीदे में और अधिक घी डालने लगी। परिणाम स्वरूप उसका पति कुछ ही दिनों में पूर्णतया 'अंधा' बन कर खटिया पर बैठ गया।

अब वह औरत अपने यार को बुला लाई और सारे घर का सामान बाँधकर उसके साथ भागने की तैयारी करने लगी। उसका पति अंधा बना सब कुछ देख रहा था। जब सारा साज सामान तैयार हो गया और दोनों चलने को हुए तब वह लाठी लेकर उठा। पहले उसने उस आदमी को खूब पीटा और जब वह भाग गया तो अपनी औरत पर पिल पड़ा और बोला कि रंडी, क्या तू इसीलिए नित्य मंदिर में जाया करती थी और देवी से प्रार्थना करती थी कि मेरे खसम को अंधा बना दे।

● लुगाई को के भोली

एक ठाकुर ने विवाह किया। ठकुरानी घर आयी तो उसने ठाकुर से कहा कि जब भी मेरे कमरे में आओ खखारा करके आया करो, कभी बिना खखारा किये मत आना। ठाकुर वैसा ही किया करता लेकिन एक दिन उसने सोचा कि आज तो बिना खखारा किये ही चलूं देखें क्या होता है। ठाकुर ज्यों ही कमरे में घुसा उसने देखा कि ठकुरानी सिंहनी बनी बैठी है। ठाकुर का कलेजा कांप गया वह उल्टे पैरों लौटा और घर से भाग निकला। चलते चलते वह एक गाँव में पहुँचा। उसने देखा कि एक घर में दो स्त्रियाँ गाय दुह रही हैं एक ननद है दूसरी भाभी। भाभी दूध निकाल रही है और ननद बछड़े को पकड़े है। ननद ने भाभी से कहा कि भाभी, दूध की

धार जरा धीरे मारो, दूध के फेन इतने जोरों से उठ रहे हैं कि मुझे तो डर लगता है। ठाकुर ने उसकी बात सुनी तो मन ही मन कहने लगा कि यह लड़की कितनी भोली है, विवाह तो ऐसी स्त्री से करना चाहिए, मैं भी किस बला में फँस गया था।

वह घर उस गाँव के ठाकुर का था। ठाकुर घर में चला गया। घर के मालिक को उसने अपना परिचय दिया तथा साथ ही उस लड़की से विवाह करने की अपनी इच्छा भी व्यक्त कर दी। लड़की के बाप ने ठाकुर की बात स्वीकार कर ली और अपनी बेटी का विवाह उस ठाकुर के साथ कर दिया। अब ठाकुर वहीं रहने लगा।

उधर ठाकुर की पहली स्त्री को इस बात का पता चला तो वह सिंहनी बनकर उस गाँव में आयी और गाँव के एक ऊँचे टीले पर चढ़कर दहाड़ने लगी। ठाकुर जान गया कि यह सिंहनी कोई और नहीं उसकी पहली स्त्री ही है जो उसकी मौत बनकर यहाँ आयी है। वह डर के मारे काँपने लगा। ठाकुर की नई स्त्री ने पूछा तो ठाकुर ने पिछली सारी घटना कह सुनायी। सुनकर वह बोली कि तुम चिन्ता न करो, मैं अभी इसका काम तमाम करके आती हूँ। यों कहकर वह नौहत्था नाहर बन कर वहाँ से चली और सिंहनी का काम तमाम करके शीघ्र ही लौट आई। ठाकुर यह सब देखकर और भी डर गया। वह सोचने लगा कि कहाँ तो यह दूध के फेन से डरती थी और कहाँ इसका यह भयकर कर्म? नारी जाति से उसे वैराग्य हो गया और वह साधु बनकर एक दिन चुपचाप घर से निकल गया।

● आ को घर कड़्या बसैगो

एक जमाई ससुराल से अपनी पत्नी को विदा कराके ले चला तो वह रोने लगी। उसे रोते देख उसका पति भी रोने लगा और उन दोनों को रोते देखकर जमाई के साथ आया हुआ उसका बोरत भी रोने लगा।

घरवालों ने सोचा कि अचानक ऐसी क्या बात हो गई जो तीनों ही रोने लगे हैं। पूछने पर लड़की ने कहा कि मैं तो अपने माँ-बाप से बिछुड़ रही हूँ इसलिए रो पड़ी। जमाई ने कहा कि अपनी पत्नी को रोते देख मुझे

भी रोना आ गया। तब दोस्त से पूछा गया तो वह बोला कि मैं इसलिए रोया कि ये पति-पत्नी जब दोनों ही रो रहे हैं तो भला इनका घर कैसे बसेगा ?

● हराम को बेटो

रेलगाडी सिट्टी देकर चल पडी तो एक बनिया हांफता हुआ दौडा आया और एक डिब्बे मे चढने की कोशिश करने लगा। बनिये के पास तीन चार छोटी मोटी गठरियाँ थी लेकिन डिब्बे मे पुलिस के कुछ सिपाही बैठे थे जो छुट्टी लेकर अपने घर जा रहे थे। वे बनिये को डिब्बे मे घुसने नही दे रहे थे। बनिये ने एक हाथ से डिब्बे का हैंडल पकड लिया, गाडी की गति क्षण प्रतिक्षण बढती जा रही थी। अब न वह गाडी से उतर सकता था न डिब्बे मे घुस सकता था।

बनिये ने सिपाहियो से कहा कि मैं आपको बडी मजेदार बातें कहूँगा, आप मुझे अन्दर आ जाने दीजिए। बनिये को मनोरजन का साधन समझ कर सिपाहियो ने उसे अन्दर घुस जाने दिया। बनिये के जी मे जी आया। सिपाहियो ने बनिये से पूछा कि सेठ जी इन गठरियो मे क्या लाये हो ? बनिया बोला कि मैं चार पाँच साल बाद घर जा रहा हूँ, दिसावर गया था, लेकिन अब सुना है कि मेरी स्त्री को लडका हुआ है सो उसके लिए गोंद, सोंठ और अजवायन आदि चीजें ले जा रहा हूँ।

बनिये की बात सुनकर सारे सिपाही ठहाका मार कर एक साथ ही हँस पडे और बोले कि सेठ जी, आप पाँच साल बाद घर जा रहे हैं तो वह आपका लडका कैसे हुआ ? वह तो हराम का लडका है। सेठ बोला कि मैं उसे अपना कब कहता हूँ ? मैं भी तो उसे हराम का ही समझता हूँ। उसे पाल-पोस कर पुलिस मे भरती करा दूँगा सो वह भी आप लोगों के साथ ही रहा करेगा।

सेठ के इस कटु व्यग्य को सुनकर सारे सिपाही धरती कुरेदने लगे।

● आदमी बोली सें पिछाण्यो जावै

एक राजा अपने साथियो के साथ शिकार खेलने के लिए वन मे गया।

राजा ने एक हिरन का पीछा किया लेकिन हिरन भाग कर ओझल हो गया। राजा उसकी खोज में आगे बढ़ता गया। पीछा करते-करते राजा को एक सूरदास साधु तपस्या करता हुआ दिखलायी पड़ा। राजा ने सूरदास से बड़े मीठे स्वर में पूछा कि हे सूरदास जी महाराज, इधर से कोई हिरन भागता हुआ निकला हो तो कृपया बतलाइये। सूरदास ने उत्तर दिया कि नहीं राजन्, इधर से कोई हिरन नहीं गया। थोड़ी देर पीछे उधर से राजा का मंत्री गुजरा और उसने भी सूरदास से पूछा कि सूरदास जी, इधर से कोई हिरन तो भागता हुआ नहीं निकला? सूरदास ने उत्तर दिया कि नहीं दीवान जी, कोई हिरन नहीं निकला। थोड़ी देर बाद हवलदार आया और उसने रोब से पूछा कि क्या सूरदास, इधर से कोई हिरन तो नहीं गया। साधु ने कहा नहीं हवलदार, कोई हिरन नहीं गया। अन्त में सिपाही आया और उसने बड़े कठोर स्वर में सूरदास से पूछा क्यों रे अन्धे, इधर से कोई हिरन तो नहीं गुजरा? सूरदास ने उत्तर दिया कि नहीं सिपाही, नहीं गुजरा।

आगे जाकर सब लोग इकट्ठे हुए और सबने अपनी अपनी बात कही तो सूरदास की विज्ञता पर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। वे सब फिर सूरदास के पास आकर पूछने लगे कि आपके नेत्र नहीं है लेकिन फिर भी आपने हम सबको कैसे पहिचान लिया? इस पर सूरदास ने उत्तर दिया कि मैंने आपकी बोली से (बोलने के ढंग से) आप सबको पहिचान लिया।

● गादड़ा नै सोड भराई

रामगढ़ के सेठ बहुत प्रसिद्ध हुए है। एक बार 'बीड' (जंगल) में सियार बोलने लगे तो सेठ ने अपने इर्द गिर्द रहने वाले ब्राह्मणों से पूछा कि गीदड़ क्यों बोल रहे हैं? ब्राह्मणों ने कहा कि सेठ जी, गीदड़ भूखों मर रहे हैं इसलिए पुकार पुकार कर भोजन माँग रहे हैं। सेठ ने कहा कि इनको भर पेट लड्डू खिलाओ। बहुत सारे लड्डू बने और ब्राह्मण सारे लड्डू अपने-अपने घरों को ले गये। दूसरे दिन गीदड़ फिर बोले तो सेठ ने पूछा कि गीदड़ आज क्यों बोल रहे है? ब्राह्मणों ने उत्तर दिया कि गीदड़ जाड़े के मारे काँप रहे है, इसलिए बोल रहे हैं। सेठ के हुक्म से गीदड़ों के लिए बहुत सारी रजाइयाँ

बनायी गई लेकिन वे सब रजाइयाँ ब्राह्मण लोग अपने अपने घरों को ले गये। तीसरे दिन गीदड फिर बोले तो सेठ ने ब्राह्मणों से फिर पूछा कि आज गीदड फिर क्या बोल रहे है ? इस पर ब्राह्मणों ने उत्तर दिया कि सेठ जी, आज सारे गीदड मिल कर आपको आशीर्वाद दे रहे हैं।

● चोखी साची कोनी होवै, न्याऊ साची होज्या

एक गरीब आदमी के पास पीतल की एक टोकनी थी। यह टोकनी ही उसकी सपत्ति थी इसके अतिरिक्त उसके पास और कुछ न था। उस आदमी ने यह बात सुन रखी थी कि आदमी के मुह से दिन भर मे निकलने वाली बातो मे से एक बात अवश्य सत्य हो जाती है। इसलिए वह एक दिन अपनी टोकनी को प्रात काल ही अपने सामने रखकर बैठ गया और एक लकडी से टोकनी को पीट पीट कर कहने लगा कि 'हो जा सोने की हो जा सोने की'। ऐसा करते करते शाम हो गई लेकिन टोकनी सोने की न बनी। वह आदमी बहुत हैरान और परेशान हो चला था अत क्रोध मे आकर बोल पडा कि सोने की न बने तो न सही लोहे की ही बन जा और उसी वक्त पीतल की टोकनी लोहे की टोकनी मे परिवर्तित हो गई।

● उलडो-उलडी

एक था उलडा एक थी उलडी। उलडा खेत पर काम करने के लिए जाता उलडी उसके लिए छाक (भोजन) लेकर जाती। उलडे की मा उसके लिए हमेशा खिचडी बनाती और उसमे बहुत सारा घी डालती। लेकिन उलडी को रास्ते मे एक बन्दर मिलता और वह उलडी से कहता

> उलडी ए उलडी, उतार तेरी कुलडी,
> पपोल मेरी पूछडी, खाऊँ तेरी खीचडी।

उलडी डर के मारे खिचडी की थाली उसके आगे रख देती और स्वय बन्दर की पूछ सहलाने लगती। बन्दर घी युक्त खिचडी स्वय खा लेता और उलडे के लिए थोडी रूखी-सूखी खिचडी छोड देता। वह बची-खुची खिचडी ले जाकर उलडी उलडे को दे देती।

एक दिन उलडे की माँ खुद छाक लेकर गई, उस दिन बन्दर ने खिचडी नही माँगी। खिचडी देखकर उल्डे ने अपनी माँ से कहा कि माँ, आज तू तो खिचडी मे बहुत घी डाल कर लायी है, बाई तो हमेशा रूखी-सूखी खिचडी लाती है। उसकी माँ ने कहा कि मैं तो नित्य इतना ही घी डालती हूँ।

उलडी से पूछने पर सारा भेद खुला तो दूसरे दिन उलडा अपनी बहिन के पीछे पीछे चला। उसने एक मोटा सोटा अपने साथ ले लिया। बन्दर तो हिला हुआ था ही, उलडी को देखकर उसने नित्य की तरह ही कहा

उलडी ए उलडी, उतार तेरी कुलडी,
पपोल मेरी पूँछडी, खाऊँ तेरी खोचडी।

बन्दर खिचडी खाने लगा तो उलडे ने पीछे से एक सोटा उसकी पीठ मे जमा दिया। बन्दर की कमर टूट गई और वह फिर कभी खिचडी खाने के लिए नहीं आया।

● मूनियो ठग

बहुत सारी स्त्रियाँ मिट्टी लाने के लिए खदक पर गई थी। वे आपस म बातें कर रही थी। कोई कह रही थी कि आज मुझे मेरा भाई लने के लिए आएगा कोई कह रही थी कि मुझे मेरा बाप लेने के लिए आएगा। लेकिन एक स्त्री ने कहा कि मुझे तो बाँबी का साँप भी लेने के लिए नहीं आएगा। वही खदक पर मोहनिया' नाम का ठग बैठा था उसने सोचा कि इसे लेने के लिए मैं जाऊँगा। सारी स्त्रियाँ मिट्टी ले लेकर चल पडी। मोहनिया उस स्त्री के पीछे पीछे हो लिया और उसके घर चला गया। घर पहुँच कर उसने उस स्त्री से कहा बाई राम राम। इस अनजान भाई को देखकर वह औरत चौंकी उसने कहा कि मरे तो कोई भाई भतीजा था ही नहीं, तू कहा से आ गया? मोहनिया बोला कि मैं बहुत वर्षो बाद घर लौटा हूँ, जब मैं घर से गया था तब तू बहुत छोटी थी। बहिन अपना सारा सामान बाँध कर भाई के साथ ऊँट पर सवार होकर पीहर चल पडी। थोडी दूर बाद बहिन ने पूछा कि घर कब आएगा तो भाई ने सिर्फ हूँ कर दिया। हूँ हा करते करते वे काफी दूर निकल गये तो मोहनिया बोला कि राड,

कैसा घर आएगा ? मैं तो तुझे ठग कर लाया हूँ । मोहनिये की बात सुनकर वह बेचारी मन्न रह गई ।

दोपहर को मोहनिया एक वृक्ष के नीचे ठहर गया और स्त्री से बोला कि चूरमा बना ले । स्त्री चूरमा बनाने लगी, मोहनिया इधर-उधर चला गया । स्त्री ने सोचा कि न जाने यह दुष्ट मेरी क्या गत बनाएगा, इससे अच्छा तो यही है कि मैं विष खाकर मर जाऊँ । उस स्त्री के पास अफीम था सो उसने अपने लड्डू में वह अफीम मिला दिया । दोनों जीमने बैठे तो मोहनिये को सन्देह हुआ कि राँड ने लड्डू में कुछ मिला न दिया हो । इसलिए मोहनिये ने अपना लड्डू उस स्त्री को दे दिया और उसका लड्डू स्वयं खा गया । लड्डू खाते ही मोहनिया बेहोश हो गया । स्त्री ने सोचा कि अब हिम्मत से काम लेना चाहिए । उसने मोहनिये के वस्त्र उतार कर स्वयं पहने और मोहनिये को एक बोरे में भरकर और बोरे को ऊँट पर लादकर आगे चल पड़ी । अन्धेरा होते होते मोहनिये का गाँव आ गया । मोहनिये के दोस्तों ने 'मोहनिये' से पूछा कि मोहनिया आज तो बहुत माल मार कर लाया है ? 'मोहनिये' ने कहा कि हाँ, यह तुम भी लो । या कह कर उसने वह बोरा नीचे ढकेल दिया । फिर उस औरत ने अपने घर की राह ली मोहनिये के दोस्त ठग 'धन' के बोरे को उठा कर खुशी-खुशी घर आये । घर आकर प्रथा के अनुसार उन्होंने खूब दाल चूरमा बनाया । सारे घर वाले खुश थे कि आज अनायास ही धन का बोरा मिल गया है ।

बच्चे चूरमा लेजा-लेजाकर उस बोरे पर धम्म से बैठते और खुशी खुशी चूरमा खाते । बच्चों के बार बार ऊपर गिरने से मोहनिये का नशा दूर हुआ और उसने बोरे के एक छेद में से थोड़ा सा मुँह निकाल कर बच्चों से कहा कि थोड़ा चूरमा मुझे भी दो । बच्चे भय के मारे उछल पड़े और अपने बाप के पास जाकर बोले कि बाबा, धन के बोरे में तो 'बलाय' (बला) है । बोरे को खोलने पर ठगों ने मोहनिये को पहिचाना और उससे सारी हकीकत पूछने लगे । मोहनिया बोला कि यारो, मैं तो एक राँड को ठग कर लाया था लेकिन वही मुझे ठग कर ले गई ।

अब मोहनिया और उसके छः अन्य दोस्त उस 'रांड' को फिर से लाने के लिए चल पड़े। वह भी जानती थी कि ये लोग बदला लेने के लिए आएँगे। इसलिए वह अपने कोठे मे एक तेज धार वाला चाकू लेकर बैठ गई, मोरी के किवाड़ उसने खुले छोड दिये। एक ठग ने देखने के लिए मोरी में मुँह डाला तो उस औरत ने बडी फुरती से उसकी नाक काट ली। ठग ने अपना मुँह बाहर निकाला और नाक पर हाथ रखते हुए बोला कि अरे मुझे तो बर्रे ने काट खाया। दूसरे ने मुँह डाला और उसकी भी वही गति हुई, वह भी नाक पर हाथ रखते हुए बोला कि मुझे तो मधुमक्खी ने काट खाया। सबसे पीछे मोहनिया ने मोरी में मुँह डाला, उसकी भी वही गत हुई तो उसने मुँह बाहर निकाल कर कहा कि अरे, मेरी तो नाक ही उड गई। अन्य साथियो ने कहा कि हमारी भी नाक उड़ गई लेकिन हमने सोचा कि अब किसी की नाक साबित रह गई तो वह हमे चिढायेगा, इसलिए हमने पहले नही कहा।

सातो ठगो ने विचार किया कि अब हम किसी को मुँह दिखाने लायक नही रहे अत. चलकर खेती करेंगे और खेत मे ही रहेगे। यो विचार कर सातो ठग खेती करने लगे। इधर उस औरत ने सोचा कि उन ठगो का धन किसी प्रकार हथियाना चाहिए। उसने एक दिन चूरमे के सात लड्डू बनाये और प्रत्येक ठग की एक एक कटी नाक हर लड्डू मे डाल दी। फिर वह लड्डू लेकर ठगो के घर चली। मोहनिये के घर पहुँच कर उसने मोहनिये की माँ से कहा, मौसी, राम-राम, भाई कहाँ गये हैं? मोहनिये की मां ने कहा कि वे तो खेत पर गये हुए हैं। औरत ने कहा कि मैं अपने भाइयो के लिए लड्डू लायी हूँ सो उन्हे दे आ। 'मौसी' लड्डू लेकर खेत पर गई और इधर उसने चूल्हे और चक्की के नीचे जो धन गडा था उसे खोदकर पोटली बाँधी और चल पडी। इधर मोहनिये वगैरह ने लड्डू फोड़े और हर लड्डू मे एक-एक नाक देखी तो वे जान गये कि वही रांड आ पहुँची है। वे भागे-भागे घर आये तो उन्होंने घर की हालत देखकर अपने सिर पीट लिये। उन्होने निश्चय किया कि उस कुलटा को घर नही पहुँचने देंगे, रास्ते मे ही पकड़ेंगे। यो सोच कर उन्होंने शीघ्रता से उसका पीछा किया।

अंधेरा हो जाने के कारण वह औरत एक ऊँचे वृक्ष पर छुपकर बैठ गई थी। संयोग से माता ठग भी उसी वृक्ष के नीचे आकर सो गये। आधी रात को मोहनिये की आँखें खुलीं तो उस औरत ने मोहनिये से कहा कि तुम अकेले ऊपर आ जाओ मैं तुम्हें आधा धन दे दूंगी। मोहनिया ऊपर गया और जैसे ही उसने कहा कि 'ल्या' वैसे ही उस औरत ने मोहनिये की जीभ काट डाली। मोहनिया, अल्लल ल ल करता धड़ाम से नीचे गिरा। नीचे सोये ठग चौंककर उठे, उन्होंने जाना कि कोई भूत प्रेत है सो वे छहा उठकर भागे। मोहनिया भी अल्लल अल्लल करता उनके पीछे भागा।

सवेरा होने पर ठगों ने मुड़कर देखा तो मोहनिया उनके पीछे भागा आ रहा था। ठगों ने पूछा तो मोहनिये ने इशारों से सारी बात बतलायी। अब सारों ठग सौगन्ध खा गये कि उस रांड के गाँव की तरफ पैर करके भी नहीं सोयेंगे।

● कह वधाऊ बात

एक सेठ ने एक बाड़ा बनवाया और उसमें 'वधाउडे' को नौकर रखा। बाड़े का 'फल्सा' (एक तरह का किवाड़) बहुत मजबूत करवाया गया था। एक रात को बाड़े में चोर घुसे लेकिन कुछ 'फल्से' के नीचे दब कर मर गये। वहीं बाड़े में एक बाबा जी धूना तापते थे सो कुछ उस धूने में गिर कर मर गये। बाड़े में एक शमी वृक्ष था जिस पर एक भारी शकट टंगा हुआ था, संयोग से वह गाड़ा नीचे गिर पड़ा और कुछ चोर उस गाड़े के नीचे दब कर मर गये। बाड़े में एक मोर और कौवा रहते थे। कुछ चोरों को उन्होंने मिल कर मार डाला। वधाउडे को डर लगा और वह एक गादी के वृक्ष पर छुप कर बैठ गया। सबेरे सेठ आया तो सेठ और वधाउडे में निम्न संवाद हुआ

सेठ—'कह वधाउडा बात"
वधाऊ—सेठा फलसै मार्‌या सात।
सेठ—हैं, या के हाणी,
वधाऊ—च्यार मार्‌या बाबा जी की धूणी।

सेठ—आगै ?
बधाऊ—पांच च्यार मार्या लुहारां हारै गाडै ।
सेठ—और ?
बधाऊ—पांच च्यार मार्या बागै और मोर ।
सेठ—तूं कइयां बच्यो बधाउडा मेरा बूंदी ?
बधाऊ—सेठां मैं चढ बैठ्यो गूंदी ।

● आखरी सबक

एक राजा का बेटा गुरुजी के यहाँ पढने के लिए जाया करता था। जब पढाई पूरी हो गई तो गुरु राजा के दरबार मे गया। राजा ने गुरु का बहुत सम्मान किया और कुँअर की पढाई के विषय मे पूछा। गुरु ने उत्तर दिया कि राजन् और तो सारी पढाई पूर्ण हो चुकी है सिर्फ एक सबक देना शेष रहा है सो वह कल मैं दरबार मे आपके सामने ही दूंगा।

दूसरे दिन यथासमय गुरु दरबार मे उपस्थित हुए। उन्होने राजकुमार को अपने पास बुलाया। राजकुमार गुरु के चरण छूकर उनके पास खडा हो गया। तभी गुरु ने राजकुमार को दो बेंत लगा दिये और कहा कि अब तुम्हारी पढाई पूरी हो गई अब तुम जा सकते हो। राजकुमार को कभी किसी ने जुबान से कडा शब्द भी नही कहा था। बेंत पडने से वह तिलमिला उठा। राजा को भी बडा गुस्सा आया। राजा ने गुरु से पूछा कि गुरु जी यह कौन सा सबक है ?

गुरु ने उत्तर दिया कि राजन् यही राजकुमार समय पाकर राजा बनेगा। आज का यह सबक राजकुमार को आजीवन याद रहेगा और किसी अपराधी को दड देते वक्त खूब सोच समझ कर देगा। आज राजकुमार को बेंत की पीडा का अनुभव हो गया है अत यह बबरता से घृणा करेगा। गुरु की बात सुनकर राजा सन्तुष्ट हो गया।

● भली भई पी मर गयो

एक स्त्री रात को अपने पति को दूध पिलाने के लिए कटोरा भर दूध

लायी, लेकिन दूध बहुत गरम था और स्त्री की आँखों में नींद घुली आ रही थी। उसने तकिये पर सिर रखा और सिर रखते ही गहरी निद्रा ने उसे आ दबाया। उधर दूध की गंध से आकर्षित होकर एक साँप आ निकला, उसने दूध में मुँह डाला, लेकिन उबलते हुए दूध से उसका फन जल गया और साँप वहीं मर गया।

बहुत देर बाद जब उस स्त्री की आँखें खुली और उसने साँप को देखा तो वह एक बार तो डर गई लेकिन फिर सारी बात उसकी समझ में आ गई और वह प्रसन्न होकर बोली

भली भई पी मर गयो, नातर होती राँड।
पाड़ पोसण देती ओलमो, हाकिम देतो डाँड ॥

अर्थात् यह अच्छा हुआ कि साँप दूध पीकर मर गया अन्यथा यदि दूध पीकर चला जाता और शेष विषयुक्त दूध में अपने पति को पिला देती तो बड़ा अनर्थ हो जाता, मैं विधवा हो जाती, पड़ोसिन सहानुभूति जतलाने के बजाय उपालम्भ देती और हाकिम दंड देता कि इस कुल्टा ने अपने पति को दूध में विष पिलाकर मार दिया।

● बेरो मन्नैं ई कोनी

एक बार गाँव के लोगों को एक बड़ा टिड्डा मिल गया। पहले उन्होंने कभी टिड्डा देखा नहीं था अतः सब आश्चर्य में डूबे एक दूसरे से पूछने लगे कि यह क्या है यह क्या है? लेकिन जब कोई हल नहीं निकला तो वे अपनी समस्या का समाधान करवाने के लिए लाल-बुझक्कड़ के पास गये। गाँव के लोगों की बात सुनकर और टिड्डे को देखकर बुझक्कड़ जी पहले तो हँसे और फिर रोये। लोगों ने बुझक्कड़ जी से पूछा कि यह क्या माजरा है जो आप पहले हँसे और फिर रोये?

बुझक्कड़ जी ने कहा कि मैं हँसा तो इसलिए कि तुम इतने बड़े बड़े हो गये और तुम्हें यह भी पता नहीं कि यह क्या है तुम्हारी इस नासमझी पर मुझे हँसी आ गई और रोया इसलिए कि पता मुझे भी नहीं है कि यह है क्या?

● हारेडो सिर कोनी राखूं

ठाकुर और सेठ नदी के किनारे खडे थे। नदी मे एक बडा सन्दूक तैरता आ रहा था। ठाकुर ने कहा कि सन्दूक भरा हुआ है। सेठ ने कहा कि सन्दूक खाली है। ठाकुर ने शर्त लगाने के लिए कहा। दोनो म शर्त हो गई कि जीतने वाला हारने वाले का सिर काट ले। सेठ ने सोचा कि यदि सन्दूक भरा हुआ होता तो उसका कुछ भाग पानी मे अवश्य डूबा रहता और वह इतनी शीघ्रता से आगे नही बढता, अत मैं अवश्य जीतूंगा। लेकिन ठाकुर ने और ही चाल चल रखी थी।

सन्दूक एक किनारे लगा और खोलने पर खाली मिला। ठाकुर न सेठ से कहा कि मैं शर्त हार गया हूँ अत आप मेरा सिर काट ले। सेठ ने सोचा था कि ठाकुर पर एहसान जताकर उसे छोड दूंगा लेकिन ठाकुर नही माना। उसने सेठ से कहा कि मैं हारा हुआ सिर नहीं रख सकता। यह सिर अब आपका हो चुका है अत या तो इसे काट लीजिए अन्यथा इसे खाने के लिए अन्न और बाँधने के लिए साफा' (पगडी) दीजिए। सेठ से ठाकुर का सिर काटा नही गया अत वह ठाकुर को अन्न और पगडी देने लगा। ठाकुर हर महीने आकर महीने भर का अन्न ले जाता और छ महीने मे एक साफा ले जाता।

सेठ का बेटा दिसावर से आया और उसने ठाकुर की लाग देखी तो बेटे ने बाप से पूछा कि अमुक ठाकुर क्या अपने यहाँ नौकरी करता है? बाप ने सारी बात बेटे को बतला दी। अगली बार जब ठाकुर आया तो सेठ के बेटे ने ठाकुर से पूछा कि क्यो ठाकुर साहब, आपका यह सिर हमारा है न? ठाकुर ने हाँ भरी तो सेठ के बेटे ने कहा कि आप कल आएँ, इस सिर मे से हमे एक आँख निकालनी है सो कल निकालेंगे तथा एक ओर को मूछ भी काटेंगे। दोनो चीजें हमे दिसावर भेजनी हैं सो आप कल अवश्य आ जाएं। ठाकुर ने हां तो भर ली लेकिन फिर उस सेठ की हवेली मे जीते जी कभी नहीं आया।

● अब आप सैं भी गयो

एक स्त्री एक साधु की सेवा किया करती थी। साथ में उसका पुत्र भी साधु की सेवा के लिए जाया करता था। एक दिन स्त्री ने साधु को कुछ फल और मिठाई लाकर दी और कहा कि महात्मा जी, आज मेरे बेटे की सगाई हुई है। साधु ने कहा कि सो तो अच्छी बात है लेकिन अब वह हमारे से तो हो गया अर्थात् हमारी सेवा करने के लिए अब वह नहीं आएगा। कुछ दिन बाद स्त्री ने साधु से कहा कि महात्मा जी आज मेरे बेटे का विवाह है। महात्मा ने कहा कि अब वह घर वाला से भी गया। फिर एक दिन उस स्त्री ने महात्मा से कहा कि आज मेरा बेटा 'मुकलावा' (गौना) कर लाया है। यह सुनकर महात्मा ने कहा कि अब वह अपने यार-दोस्तों से भी गया अर्थात् अब वह यार दोस्तों की बजाय पत्नी के सान्निध्य में अधिक रहना चाहेगा। फिर एक दिन जब उस स्त्री ने आकर कहा कि आज मेरे बेटे के लड़का हुआ है तो महात्मा ने हँस कर कहा कि अब वह अपने से भी गया अर्थात् अब वह अपनी परवाह न करके बच्चे की सुख-सुविधा का अधिक ध्यान रखेगा।

● देख्यो तेरो तेल-फुलेल

एक महाजन एक तेली से कुछ रुपये माँगता था। तेली ने रुपये नहीं दिये तो महाजन ने हाकिम के पास फरियाद की। हाकिम ने तेली को बुलाया तो तेली ने तेल से भरा एक घड़ा हाकिम के घर भेज दिया। तब हाकिम ने महाजन से कह दिया कि रुपये होने से मिलेंगे, इस वक्त तेली के पास रुपये नहीं हैं। तब महाजन ने हाकिम के पैर छूने का बहाना करते हुए एक मोहर उसके पैर के नीचे सरका दी। तब हाकिम तेली को धमकाने लगा कि महाजन के रुपये देने पड़ेंगे। तेली ने सोचा कि हाकिम तेल का घड़ा भूल गया है अतः हाथ जोड़ कर बोला कि तेल देखो तेल की धार देखो। हाकिम तेली का आशय समझ कर बोला कि देख्या तेरा तेरा फुलेल, मेरे तल्वे में और ही लग गई है। या कहकर हाकिम ने महाजन को तेली से रुपये दिलवा दिये।

के सिर मे एक 'ठोला' (हाथ की मुट्ठी बन्द कर, मध्यमा उँगली को मुड़े हुए रूप मे ही बाहर कर उससे प्रहार करना) कस कर जमा दिया। उसकी दुष्टता देखकर महात्मा जी के चेलों को बड़ा क्रोध आया, उन्होंने उस आदमी को पकड़ लिया। वे चाहते थे कि उस दुष्ट को पीट-पीट कर उसकी जान निकाल दें।

लेकिन महात्मा शात मुद्रा मे बैठे रहे, उनके माथे मे जरा भी बल नहीं आया। उन्होंने अपने चेलों को शात करते हुए कहा कि कोई आदमी एक टके की हाँडी लेता है तो वह भी उसे खूब ठोक-बजाकर देखता है। लेकिन यह भाई तो मुझे गुरु बनाना चाहता है अत उचित ही है कि यह पहले मेरी परीक्षा कर ले। मैं तो इसके विवेक की तारीफ़ करता हूँ, तुम व्यर्थ ही क्यों गुस्सा करते हो ?

महात्मा जी के इस व्यवहार का उस आदमी पर जादू का सा असर हुआ और वह उसी वक्त उनका शिष्य बन गया।

● कथा सुणनें को फल

एक बनिया कभी कथा भागवत आदि नहीं सुनता था। एक दिन वह मन्दिर म किसी काम से गया। वहाँ कथा हो रही थी। बनिये ने झट अपने दोनो कानो मे उँगलियाँ डाल ली लेकिन फिर भी उसे इतनी बात सुनायी पड़ ही गई कि किसी भी भूत-प्रेत या देवता की परछाई जमीन पर नही पड़ती।

एक रात वह बनिया अपने घर मे सोया था कि आधी रात को एक आदमी काले कपड़े पहनकर और भूत बनकर उसे मारने के लिए आया। बनिया पहले तो उसे देखकर डरा लेकिन जब उसने दीवार पर उस 'भूत' की परछाई गिरती देखी तो उसे ध्यान आ गया कि वास्तव मे यह भूत नहीं है। उसने हिम्मत कर ली और 'भूत' को मार डाला जो वास्तव में उसका एक शत्रु ही था।

बनिये ने सोचा कि कथा के दो अक्षर सुनने मात्र से मेरी जान आज बच गई है अब नित्य नियम से कथा सुना करूँगा।

● जुग देख कर जीणो है

एक आदमी बहुत ही गरीब था। पूंजी के नाम पर उसके पास सिर्फ एक पैसा शेष था। उसने एक पैसे की मूली ली और उसे ही खाता हुआ चल पड़ा। मूली के पत्ते तोड़ कर उसने अलग फेंक दिये। वह आदमी अपनी इस हीन दशा पर बहुत पछताता हुआ जा रहा था। संयोग से उसके पीछे-पीछे एक उससे भी गरीब आदमी आ रहा था। उसके पास एक पैसा भी नहीं था, भूख जोरों से लग रही थी अतः उसने वे मूली के पत्ते उठा लिए और उन्हें ही खाता हुआ चलने लगा। पहले आदमी ने पीछे की ओर मुड़ कर देखा तो उसे अपनी हीन अवस्था पर यह सोच कर संतोष हो गया कि खैर अपने से भी गरीब आदमी इस दुनिया में हैं। जिन पत्तों को मैंने फेंक दिया था यह बेचारा उन्हीं से अपना पेट भर रहा है।

● मियाँजी की बुगची

एक मियाँ जी कहीं जा रहे थे। रास्ते मे उन्हें एक सूई पड़ी मिल गई। सूई को लेकर वे काजी के पास गये और उन्होंने काजी से पूछा कि राह मे कोई गिरी हुई चीज मिल जाए तो उसे लेना जायज है अथवा नाजायज। काजी ने व्यवस्था दी कि उस चीज को उठाकर तीन बार जोर जोर से आवाज लगा देनी चाहिए कि अमुक चीज किसकी है? यदि उस चीज का मालिक आवाज सुन कर आ जाए तो वह चीज उसे दे देनी चाहिए अन्यथा उस चीज को वह स्वयं रख ले। तीन आवाज लगा देने से वह चीज हलाल हो जाती है अन्यथा हराम होती है। मियाँजी ने बड़े जोर से तीन आवाजें लगा दी कि यह सुई किसकी है। आवाज सुन कर सूई का मालिक आया और मियाँजी ने उसे दे दी।

दूसरी बार मियाँ जी को राह मे किसी राहगीर की गिरी हुई एक बुगची मिल गई। बुगची देखकर मियाँजी का मन चलायमान हो गया। उन्होंने काजी की व्यवस्था के अनुसार 'यह बुगची किसकी है' की तीन आवाजें लगायी लेकिन उन्होंने 'बुगची' शब्द का उच्चारण बहुत धीमा किया और 'किसकी' शब्द को इतनी शीघ्रता से और ऐसे ढग से कहा कि कोई कुछ समझे ही नहीं। इस प्रकार मियाँजी ने 'बुगची' हलाल बनाकर रख ली।

● सा'ब के रिपिये का सो टक्का

एक मियाँ जी मोदी की दुकान पर सौदा लेने गये। मोदी से उन्होंने पूछा कि आटा क्या भाव ? मोदी ने कहा, एक रुपये का पाँच सेर। मियाँ जी ने मोदी से कहा अजीब मूर्ख हो, पाँच सेर के भाव तो सभी लेते हैं, मियाँजी चार सेर के भाव लेंगे। यों कहकर उन्होंने चार सेर के भाव से एक रुपये का आटा ले लिया। फिर मियाँ जी ने पूछा कि हल्दी क्या भाव ? मोदी ने कहा कि एक रुपये की सवा सेर। मियाँ जी ने फिर मोदी को डाँटते हुए कहा, अजीब अहमक हो ? सवा सेर के भाव तो अन्य सभी लोग लेते हैं, मियाँजी एक सेर के भाव लेंगे। मोदी ने सोचा कि आज अच्छा बेवकूफ फँसा है। मियाँ जी ने चार-पाँच रुपये का सौदा लिया जिसमें उन्होंने मोदी को एक-डेढ़ रुपया अधिक दे दिया। अन्त में मियाँ जी ने कहा कि टका किस भाव ? मोदी ने कहा कि एक रुपये के बत्तीस। इस पर मियाँ जी बिगड़ कर बोले कि चल बेवकूफ, रुपये के बत्तीस टके तो सभी लेते हैं सा साहब के रुपये के सौ टके होते हैं क्या तुम्हें इतना भी पता नहीं ? ला पाँच रुपये के टके भी दे दे। लाचार मोदी को पाँच रुपये के टके सौ के भाव देने पड़े।

● च्यार मूरख

चार मूर्ख अपने-अपने घर से पच्चीस-पच्चीस रुपये लेकर कमाने के लिए चले। चलते चलते चारों एक तेली के घर पहुँचे। तेली के यहाँ एक बूढ़ा और बेकार बैल खड़ा था। तेली को पच्चीस रुपये देकर उन्होंने बैल खरीद लिया और चल पड़े। थोड़ी दूर चलने पर बैल ने पेशाब किया तो मूर्खों ने आपस में कहा कि इस बैल का पेट तो फूटा हुआ है तेली ने हमें फूटा हुआ बैल देकर ठग लिया है। वे चारों वापिस तेली के पास गये और उससे झगड़ा करने लगे कि तुमने हमें फूटा हुआ बैल देकर ठग लिया। तेली ने कहा कि मेरा बैल छोड़ दो और यह भैंस ले लो। भैंस की कीमत डेढ़ सौ रुपये है। मूर्खों ने कहा कि हमारे पास तो सिर्फ सौ रुपये हैं। भैंस बाँझ थी अतः तेली ने बड़ी खुशी से सौ रुपये लेकर भैंस उनको सौंप दी। चारों मूर्खों ने भैंस के पेट पर हाथ फेर कर तसल्ली कर ली कि भैंस फूटी हुई नहीं है।

भैंस लेकर चारों मूर्ख चले। चलते-चलते पानी का एक छोटा नाला आया। पानी उसमें बहुत मामूली सा ही था लेकिन मूर्खों ने सोचा कि इस नदी में हम डूब जाएँगे। किसी ने भैंस की पूंछ पकड ली और किसी ने सींग और भैंस उन चारों को नदी पार ले गई। नदी पार कर लेने पर चारों ने सोचा कि हममें से कोई नदी में डूब न गया हो अत वे आपस में गिनती करने लगे। जो भी गिनता वह अपने को छोड़कर शेष तीन को गिनता। बार-बार गिनती करने पर भी जब वे पूरे नहीं हुए तो उन्हें विश्वास हो गया कि एक आदमी नदी में अवश्य डूब गया है।

चारों मूर्ख रोने लगे। इतने में वहाँ एक आदमी आया और उसने पूछा कि तुम सब क्यों रो रहे हो? मूर्खों ने कहा कि हम चार आदमी थे लेकिन नदी पार करने में एक आदमी नदी में डूब गया है, इसीलिए हम रो रहे हैं। आगन्तुक ने कहा कि यदि मैं चार आदमी पूरे कर दूँ तो तुम मुझे क्या पुरस्कार दोगे? मूर्खों ने कहा कि तुम यह भैंस ले लेना। तब उस आदमी ने चारों को एक पंक्ति में खड़ा किया और पहले को एक जूता लगा कर बोला, 'एक' फिर दूसरे को जूता मारते हुए बोला 'दो' फिर तीसरे को जूता लगाते हुए कहा 'तीन' और फिर चौथे को जूता मारकर कहा 'चार'। चार आदमी पूरे हो गये तो चारों बडे प्रसन्न हुए कि नदी में डूबा हुआ साथी वापिस आ गया। वह आदमी भैंस को लेकर चला गया और चारों मूर्ख बड़ी कमाई करके खुश होते हुए अपने घरों को लौट पड़े कि नदी में डूबा हुआ आदमी वापिस मिल गया।

● थे चोखा, थे भला

एक बनिया अपने गांव को जा रहा था। रास्ते में उसे दो ठाकुर मिल गये। ठाकुरों ने सोचा कि बनिये से उसका माल छीनना चाहिए। दोनों बनिये के पास गये और उससे बोले कि सेठाँ, हम दोनों में कौन भला है, कौन बुरा? ठाकुरों ने सोचा कि जिसे बुरा बताएगा वही बनिये के रुपये छीन लेगा। लेकिन बनिया उनकी चाल को समझ गया और उन्हें टालन

की चेष्टा करता हुआ एक से बोला "ठाकरां थे नला," फिर दूसरे से कहा "थे चोखा" अर्थात् एक नले हैं दूसरा अच्छे हैं। ठाकुर माने नहीं, वे बार-बार बनिये से पूछते और बनिया बराबर आगे बढ़ता जाता। वह एक ठाकुर को एक हाथ से और दूसरे को दूसरे हाथ से आगे धकेलता और यह कहता कि मेरे लिए आप नले हैं और आप अच्छे। यों कहते-कहते बनिया गाँव में पहुँच गया। उसकी दुकान नजदीक आ गई तो वह अपनी दुकान पर चढ़ गया और दोनों से बोला कि भले और अच्छे कहने से तुम्हें सन्तोष नहीं होता तो सुनो, एक नालायक और दूसरा कमीना। अब जाओ मेरा पीछा छोड़ो। दोनों ठाकुर अपना सा मुँह लेकर वहाँ से आ गये।

● छुलग सैं भी आगै गई

एक चमार एक सेठ के यहाँ काम धन्धा करने के लिए आया करता था। एक दिन चमार आया तो बड़ा उदास था। सेठ ने चमार से उदासी का कारण पूछा तो चमार ने कहा कि मेरी छोटी लड़की मर गई है। सेठ ने चमार को धीरज देते हुए कहा कि आज एकादशी का दिन है सो तुम चिन्ता मत करो, लड़की सीधी स्वर्ग गई है। इस पर चमार बोला कि सेठजी, वह स्वर्ग में ही क्या, स्वर्ग से भी कहीं आगे गई होगी क्योंकि वह बड़ी 'अचपली' (चपल) थी, स्वर्ग में टिकने वाली नहीं थी।

● होठ बड़ा सा कर दिया

एक चमार शहर में गया तो उसने हलवाई की दुकान पर लोगों को दही-बड़े खाते देखा। हलवाई बड़े बनाता जा रहा था और उपस्थित जन बड़े चाव से बड़े खा रहे थे। चमार ने पूछा कि यह क्या पदार्थ है? उत्तर मिला, 'दही-बड़े'। चमार का मन भी बड़े खाने का हुआ लेकिन पास में पैसे नहीं थे अतः उसने निश्चय किया कि घर चलकर बड़े जरूर खाऊँगा।

लेकिन घर जाते-जाते चमार बड़ों का नाम भूल गया। उसने चमारी से कहा कि मुझ 'वे' (वे) बना दे। चमारी कुछ समझी नहीं। दो-चार बार कहने पर भी जब चमारी नहीं समझी तो चमार को बड़ा गुस्सा आया और

उसने चमारी के मुँह पर दो चार थप्पड लगा दिये। बेचारी चमारी रोने लगी और रोते-रोते बोली कि निपूते ने मेरे होठ सुजाकर बड़े से बना दिये। इस पर चमार बोला कि राँड, इतनी मार खाकर तूने यह नाम बतलाया, पहले ही क्यों नहीं बतला दिया।

मेरी सास मंगावै चीज

सावन की तीज आयी तो सास ने बहू को बाजार से मेहँदी लाने के लिए भेजा (राजस्थान मे तीज के अवसर पर सौभाग्यवती स्त्रियाँ हाथो मे मेहँदी अवश्य रचाती है) लेकिन उसके पति का नाम मेहँदा था अत वह पसारी से मेहँदी का नाम लेकर माँगने मे सकोच कर रही थी। मेहँदी लिये बिना घर जाना भी उचित नही था अत सोच विचार कर उसने पसारी से कहा:

सावण का सतरा गया, आई नुहेली तीज।
घाल तराजू तोल दे, मेरी सास मंगावै चीज॥

अर्थात् सावन के सतरह दिन बीत गये है और नवेली तीज आ गई है, मेरी सास ने चीज मँगाई है सो तराजू मे डाल कर तोल दो।

दुकानदार समझ गया और उसने स्त्री को मेहँदी तोलकर दे दी।

थारै पाव ई कोनी होगो...

एक बुढिया की आदत थी कि जब पास-पडोस के लोग खेत जोतने के लिए हल लेकर जाते तो बुढिया उन्हे अवश्य टोक देती। उन लोगो को बडा बुरा लगता।

आषाढ का महीना आया, वर्षा हुई तो किसानो ने सोचा कि बुढिया अवश्य टोकेगी सो वे सब मिलकर उसके पास गये और उससे बोले कि दादी, हम जब अनाज निकालेगे तो आधा-आधा मन अनाज तुझे दे देंगे, कल जब हम खेत को जाएँ तो टोकना मत। बुढिया ने हाँ भर ली। लेकिन दूसरे दिन सवेरे जब वे हल और बीज लेकर खेतों की ओर चले तो पीछे से बुढिया ने आवाज लगायी कि सुनो रे बीरो, तुम्हारे खेत मे चाहे पाव भर अनाज भी नही होगा, मैं तो अपना आधा-आधा मन अनाज सबसे ले लूँगी।

किसानो ने सोचा कि इस राँड को इसलिए तो आधा-आधा मन अनाज

देना किया था कि यह हमें टाके नहीं लेकिन इसने तो सर्वप्रथम ही टाक दिया।

● बोझ तो मरसी

एक जाट और मियां दोस्त थे। वे प्राय आपस में कभी-कभी मजाक भी कर लिया करते थे। एक दिन मियां ने जाट से कहा कि आओ तुक मिलाएं। मियां बोला, 'जाट रे जाट, तेरे सिर पर खाट।' जाट ने जवाब दिया, मियां रे मियां, तेरे सिर पर कोल्हू। इस पर मियां बोला कि जाट, तेरी तुक ऊंची नहीं। जाट ने उत्तर दिया कि तुक चाहे न मिले लेकिन सिर पर कोल्हू का बोझ इतना रहेगा कि तेरी खोपड़ी पिलपिली हो जाएगी।

● यो बाल तो बाँको है

एक ठाकुर को रुपयों की आवश्यकता हुई तो उसने सेठ के पास जाकर कहा कि सेठ जी, मुझे दो सौ रुपये चाहिए। सेठ ने पूछा कि रुपयों के एवज में क्या रखोगे तो ठाकुर ने अपनी मूंछ का एक बाल उखाड़ कर दे दिया। सेठ ने बाल लेकर हिफ़ाजत से रख दिया और ठाकुर को रुपये दिलवा दिये।

वहां सेठ की गद्दी में एक जाट बैठा हुआ था। उसने सोचा कि रुपये लेने का यह तो बड़ा सुन्दर और सस्ता तरीका है इससे लाभ उठाना चाहिए। यो सोच कर जाट ने सेठ से कहा कि सेठजी मुझे भी दो सौ रुपये चाहिए। सेठ ने पूछा कि रुपयों के बदले में तुम क्या वस्तु रहन रखोगे? जाट ने भी अपनी मूंछ का एक बाल उखाड़ कर सेठ को दिया और कहा कि यह बाल रख लो। सेठ ने बाल को देखकर कहा कि चौधरी यह बाल तो टेढ़ा है। सेठ की बात सुनकर जाट ने अपना मुंह सेठ के सामने करते हुए कहा कि सेठ जी, आपको जो बाल सीधा लगे वह ले लीजिए।

इस पर सेठ ने हँसते हुए कहा कि चौधरी इस तरह बाल देने वालों को रुपये नहीं मिलते।

● बाकलासर तो आ ढूक्या

बीकानेर के महाराज एक बार शादी करने के लिए बाकलासर गये।

काकलासर एक बहुत छोटा और साधारण गाँव है। महाराजा हाथी पर थे और जिस घर मे उनकी शादी होनी थी उस घर की पोली (पोल) बहुत नीची थी। 'तोरण मारने' के लिए काफी नीचे झुकने की आवश्यकता थी अत. उपस्थित लोगों ने प्रार्थना की कि अन्नदाता, नीचा, नीचा। वहीं एक चारण खड़ा था। उसने कहा कि बीकानेर के महाराजा काकलासर तो आ ढुके अब और क्या नीचे होंगे अर्थात् कहाँ बीकानेर के महाराजा और कहाँ यह साधारण घर?

● फेर के मॉंडै के लाय लगाणी है ?

एक बुढ़िया की यह आदत थी कि पास-पड़ोस में विवाह शादी होने पर वह बिना बुलाये ही उस घर मे चली जाती और प्रायः न कहने योग्य बातें कह देती। एक दिन उसके पडोसी के घर मे लडकी का विवाह था। लडकी के बाप ने बुढिया के पास जाकर कहा कि बुढिया माई, आज तू हमारे घर न आना, मांडा (थाम) रोपने के बाद मैं तुम्हे एक रुपया और सेर भर मिठाई यहीं भेज दूंगा। यह सुनकर बुढिया बोली कि तब भला मुझे तुम्हारे घर आकर क्या मांडे को आग लगानी है, तुम मिठाई और रुपया यहीं भेज देना।

● मुनीम और नौकर

एक सेठ के एक नौकर रहा करता था। वह प्राय: सोचा करता कि मैं बडे तडके उठकर बहुत रात गये तक इतना काम करता हूँ लेकिन मुझे सिर्फ दस रुपये महीना मिलता है और यह मुनीम केवल चार घंटे आकर गद्दे पर मसनद के सहारे बैठ जाता है कुछ करता-धरता नही फिर भी इसे तीन सौ रुपये माहवार मिलते हैं। एक दिन नौकर ने सेठ से अपने मन की बात कह दी तो सेठ को हँसी आ गई। सेठ ने कहा कि कल तुझे इस बात का उत्तर दूंगा।

दूसरे दिन सवेरे ही सेठ ने नौकर से कहा कि दरिया पर जाकर जरा देख तो कि आज क्या आया है? नौकर दौड़ा-दौड़ा गया और लौटकर बोला कि एक

जहाज आया है। सेठ ने पूछा कि जहाज मे क्या है ? नौकर फिर भागा और खबर लाया कि जहाज मे चावल भरे हैं। सेठ ने नौकर से पूछा कि कैसे चावल हैं ? किस भाव के हैं ? नौकर फिर जाने ही वाला था कि इतने मे मुनीम जी आ गये। सेठ ने मुनीम से कहा कि मुनीम जी जरा देखो तो आज दरिया पर क्या आया है ?

मुनीम गया और उसनें सारे चावल खरीद लिए। बाजार कुछ तेज था अत मुनीम ने आठ आने मन का मुनाफा लेकर सारे चावल दूसरे व्यापारी को ऊपर के ऊपर बेच दिये और मुनाफे के पाँच हजार रुपये लाकर सेठ के आगे धर दिये। वह नौकर भी तब वही था। मुनीम ने सारी बात सक्षेप मे सेठ को बतला दी, नौकर नें भी मुनीम की बात सुनी और तब सेठ ने अर्थ-पूर्ण दृष्टि से नौकर की ओर देखते हुए कहा कि देख, मुनीम जी को इस बात के लिए तीन सौ रुपये मिलते हैं।

● भलो और बुरो

एक भला आदमी कही कमाने के लिए जा रहा था। रास्ते मे उसे एक बुरा आदमी मिल गया। वह भी उसके साथ हो लिया। दोनो दोस्त बन गये। रास्ते म प्यास लगी तो दोना कुएँ पर पानी पीने के लिए गये और बुरे आदमी न भले को कुएँ म धक्का दे दिया। बुरा वहाँ से चलता बना। कुएँ मे गिरने पर भी भले को चोट नही लगी और वह कुएँ की कोठी पर बैठ गया। उस कुएँ म दो जिद रहते थे जो सवेरा हाने से पहले चले जाते थे और रात होने पर लौटते थे। रात को दोनो जिद आय और आपस मे बातें करने लगे। एक ने कहा कि आजकल मैं तो बादशाह की शाहजादी के शरीर मे प्रवेश कर जाता हूँ और पेट भर लड्डू खाकर वहाँ से निकलता हूँ। दूसरे ने पूछा कि क्या तुम्हें वहाँ से कोई नही निकाल सकता तो पहले ने कहा कि नही, इसका रहस्य किसी को मालूम नहीं है, जिस वक्त मैं शाहजादी के शरीर मे प्रवेश करूँ उस वक्त यदि कोई नर रक्त की कार मेरे चारा ओर लगा दे तो मैं उस शरीर को छोडकर अन्यत्र चला जाऊँ और फिर कभी उसम प्रवेश न करूँ। दूसरे ने कहा कि आजकल मैं भी बडे ठाट से

रहता हूँ, अमुक स्थान पर एक वड का वृक्ष है, वही एक दरार है उस दरार मे से होकर मैं उस वृक्ष के नीचे चला जाता हूँ। वहाँ बडा खजाना गडा है, इतना अधिक धन वहाँ पडा है कि उसका कोई सुमार नही। पहले ने पूछा कि तुम वहाँ से कैसे निकल सकते हो? दूसरे ने उत्तर दिया कि वहाँ से मुझे निकालने वाला कौन है? यदि उस दरार मे भैसे का खून और उबलता हुआ तेल डाला जाए तो अलबत्ता मुझे वहाँ से भागना पडेगा, लेकिन इस रहस्य को कोई नही जानता। यो कहकर दोनो जिंद बडे जोर से हँसे। भला आदमी पहले तो बहुत डरा लेकिन फिर सँभल कर बैठ गया। सवेरा होने से पहले ही दोनो जिंद चले गये।

दूसरे दिन कोई बनजारा अपनी 'बालद' के साथ उधर से गुजरा। बनजारे के सेवक कुएँ से पानी निकालने के लिए गये और उन्होने भले आदमी को बाहर निकाल दिया। वह चलकर बादशाह के नगर मे आया। बादशाह की शाहजादी मे जिंद घुसा हुआ था और बादशाह के नौकर टोकरे भर-भर कर लड्डू ले जा रहे थे। 'भला' वहाँ पहुँचा और उसने कहा कि मैं शाहजादी को ठीक कर सकता हूँ। बादशाह ने कहा कि तुम यदि सचमुच ऐसा कर दोगे तो तुम्हे बहुत भारी पुरस्कार मिलेगा और इस शाहजादी का विवाह भी तुम्हारे साथ ही कर दिया जायगा। जिंद की बतलायी हुई तरकीब से ही "भले' ने जिंद को वहाँ से सदैव के लिए भगा दिया और बादशाह ने अपने वचन के मुताबिक शाहजादी का विवाह उसके साथ कर दिया और उसे बहुत धन दिया। अब 'भला' वहाँ खूब आनन्द से रहने लगा।

एक दिन भला आदमी अपने सेवको के साथ बाजार मे घूम रहा था कि 'बुरा' उसे दिखलायी पड गया। उसकी दशा बहुत खराब हो रही थी, बाल बढे हुए थे, कपडे फटे हुए थे और भूख के मारे 'बुरे' का बुरा हाल हो रहा था। भले ने उसे पहचान लिया और कहा कि दोस्त, मेरे साथ आओ। वह बुरे को अपने महल मे ले गया। बुरे की हजामत बनवाकर उसे नहलाया-धुलाया गया तथा पहनने को नये वस्त्र दिये गए। भले ने बुरे से कहा कि आओ खाना खाएँ लेकिन बुरे ने कहा कि मैं अभी खाना नही खाऊँगा तुम

खा लो। भला आदमी खाना खाकर चला गया और अपनी पत्नी से कह गया कि यह मेरा भाई है इसे खूब अच्छी तरह भोजन कराना। भले के जाने के बाद बुरे ने बादशाह की बेटी से कहा कि मैं यहां भोजन नहा करूँगा क्योंकि जिस आदमी के साथ तुम्हारी शादी हुई है वह वास्तव म हमारे गाँव का चमार है। बुरे की बात सुनकर शाहजादी सन्न रह गई। बरा वहाँ से चल दिया। इधर शाहजादी उदास मन अपने बाप के पास गई और उससे सारी बात कह दी।

बेटी की बात सुनकर बादशाह को भी बडा गुस्सा आया और उसने अपने दामाद को पकड मँगवाया और उससे पूछा कि सच सच बतला कि तू कौन है? 'भले' ने कहा कि किसी समय मेरे पूर्वज यहाँ राज्य करते थे, मैं भी बादशाह का बेटा हूँ। यदि आपका यकीन न हो तो मेरे साथ चलिये, मैं अपने पूर्वजो का खजाना आपको दिखलाऊँगा। बादशाह तथा उसके कर्मचारियो को लेकर 'भला' उस बड के वृक्ष के पास पहुँचा। उसने भैंसे का खून और खौलता हुआ तेल उस दरार मे डाला। जिद भाग गया। खुदवाई करायी गई तो वहाँ अपार धन राशि मिली। बादशाह भी देखकर दग रह गया। उसे यकीन हो गया कि सचमुच ही उसका दामाद किसी बडे बादशाह का वशज है।

बादशाह ने अपने दामाद को ही अपना उत्तराधिकारी बना दिया। एक दिन फिर 'बुरा' उसको मिला तो उसने पूछा कि तू बादशाह कैसे बन गया सो मुझे बतला। 'भले' ने सारी बात बतलायी तो बुरा भी जाकर उसी कुएँ मे गिरा और कुएँ की कोठी पर बैठ गया। रात को दोना जिंद इकट्ठे हुए और एक दूसरे का हालचाल पूछने लगे। एक ने कहा कि हाल बहुत बुरे हैं, जिस दिन हम दोना बातें कर रहे थे उस दिन न जाने यहाँ कौन छिपा बैठा था सो उसने हमारी बातें सुन ली और उसने जाकर मुझे शाहजादी के शरीर से सदा के लिए निकाल दिया। बादशाह तो टोकरे भर भरकर लड्डू खिलाता था लेकिन साधारण आदमी तो ऐसा नही कर सकता और तुम्हारी कसम, उसी दिन से भूखों मर रहा हूँ। दूसरे ने कहा कि मेरा भी

यही हाल हुआ। इतने म बुरा बोल उठा कि मैं बादशाह कैसे बनूँ इसकी तरकीब मुझे बतलाओ। जिदा ने सोचा कि शायद यही वह दुष्ट है, दोनों उस पर टूट पडे और उसकी बोटी-बोटी चबा गये।

● डूम और चोर

एक डोम के झोपडे के सामने राख, मिट्टी और कूडे का बडा ढेर लग गया। डोमनी ने कहा कि इस कूडे के ढेर को खुदवा कर अलग फिकवाओ। डोम ने उत्तर दिया कि रात को चोर चोरी करने के लिए इधर से ही जाया करते हैं और वे अकसर चिलम सुलगाने के लिए अपने झोपडे से सरकडे निकाल लिया करते हैं अत कूडे का ढेर उन्ही से हटवाऊँगा। डोम-डोमनी ने मिलकर युक्ति निकाली और रात को जब चोर आये तो डोम ने उन्हे सुनाते हुए डोमनी से पूछा कि इस बार फलाँ यजमान ने तुम्हे जो सोने के कडे दिये थे वे कहाँ हैं? डोमनी ने कहा कि चुप भी रहो, कोई सुन लेगा। मैंने वे कडे झोपडे के सामने वाले कूडे के ढेर मे छुपा रखे हैं जहाँ किसी को स देह नही होगा।

चोरो ने सोचा कि आज अच्छे मुहूर्त्त से आये थे जो सोने के कडे अनायास ही मिल जाएँगे। चोरा ने पहले कूडे के ढेर को कुरेदा लेकिन जब उन्हे कडे नही मिले तो उन्होने निश्चय किया कि इसे ढेर को उठाकर कही दूर डाल दें और फिर दिन मे आकर कडे देख लगे। या निश्चय करके वे पाटलियाँ बाँध-बाँधकर राख ढाने लगे और सवेरा होने से पहले ही उन्होने सारा ढेर साफ कर दिया। दूसरे दिन जब चोर राख बरसा-बरसा कर कडे ढूँढ रहे थे तो डाम उधर से निकला। डोम ने खखारा किया चोर सहमे। डोम ने कहा कि यजमान हमारे पास कहाँ सोने के कडे रखे थे, डोमनी कई दिन से कह रही थी कि इस कूडे के ढेर को अलग फिकवाओ सो मैंने तो एक तरकीब निकाली थी, अब आप व्यर्थ ही क्या परेशान होते हैं? चोर खिसिया कर रह गये। लेकिन रात को वे बदला लेने के लिए डोम के घर मे घुसे, उधर डोम भी बेखबर न था। उसने एक जहरीला बिच्छू एक तग मुँह के करवे मे बन्द करके 'हटडी' (पुराने ढग की आलमारी) मे छोड दिया।

चोर आये तो डाम ने डोमनी से पूछा कि अमुक यजमान ने प्रसन्न होकर तुम्हें जो कीमती मूंदडा' (अँगूठी) दिया था वह कहाँ है। डोमनी ने धीरे से 'मूंदडे' का पता बतला दिया। चोरा ने भी सुना। एक भागा भागा गया और उसने करवे म उँगली डाली। बहुत समय से बन्द रहने के कारण बिच्छू क्रोध म भरा बैठा था उसन चार की उँगली म काट लिया। वह हाय-तोबा मचाने लगा ता डाम ने व्यग्य से कहा क्या यजमान, सँवरा है क्या ? डोम को जगा हुआ जानकर चोर भाग गये लेकिन जिसको उँगली म बिच्छू ने काट लिया था वह एक 'कुठल' म छुप गया।

डाम न चोर को छुपते हुए देख लिया। उसने डोमनी से कहा कि आज मुझे ता नीद नही आती है हुक्का भर कर ला दे। डोम ने जान-बूझकर कुठले म ही कुल्ले किये, उसी म खखार डालता रहा और हुक्का पीकर उसने हुक्का भी कुठले म ही याढ दिया। चोर का शरीर झुल्स गया लेकिन वह चुप मार रहा। उसने सोचा कि डोम अनजाने ही यह सब कर रहा है। सवेरा हुआ तो डोमनी फिर डोम के लिए हुक्का ताजा करके लायी। डाम न डोमनी की ओर जान बूझकर थूक दिया तो डोमनी नाराज होकर बोली कि, धनी सवेरे-सवेरे यह क्या किया ? डोम बोला कि वाह इतन म ही नाराज हो गई जरा उस यजमान का धैर्य भी देखो कि रात भर से कुठले मे बैठा चुपचाप सब कुछ सहन कर रहा है। डोम की बात सुनकर चोर कुठल म से निकला और उसन सौगध खायी कि फिर कभी किसी डोम के घर चोरी करन के लिए नहीं जाऊँगा।

● सरवर-सुलतान और नफरे-नफरान

सरवर-सुल्तान और नफरे-नफरान नाम के दो मुसलमान भाई कमाने के लिए चले। रास्ते म उन्हें एक जाट मिला। जाट ने कहा कि मैं भी तुम्हारे साथ कमाने चलूँगा। सरवर-सुलतान ने जाट को दो रुपये दिये और कहा कि खाना बना ले। जाट ने खीर बनायी लेकिन उसने सोचा कि सारी खीर मेरे हाथ लग जाए तो अच्छा रहे। या सोचकर उसन आटे का एक किरधाँटिया' (जानवर विशेष जिसे मुसलमान अपना बैरी समझते हैं) बनाया

और उसे खीर मे डाल दिया। जब जाट दोनो भाइयो को खीर परोसने लगा तो उसने जान-बूझकर 'किरकांटे' को भी खीर के साथ उँडेल दिया और बोला कि अरे रे खीर मे तो तुम्हारा दुश्मन पडा है। दोनों ने जाट से कहा कि सारा खाना फेंक दे। जाट ने कहा कि आप लोग खीर न खाएँ, फेंकने से क्या फायदा होगा, मैं खाऊँगा। जाट ने सारी खीर उदरस्थ कर ली। दोनो भाइयो ने जाट से कहा कि तेरा और हमारा साथ नही निभेगा, तू चला जा। जाट के जाने के बाद दोनो भाई वहाँ से चल पडे और चलते-चलते शहर मे आये। शहर मे आकर उन्होने एक मकान किराये पर लिया। फिर सरवर-सुलतान ने नफरे-नफरान से कहा कि मैं काम की तलाश मे कचहरी जाता हूँ, तुम दलिया पका लेना।

नफरे-नफरान को दलिये मे डालने के लिए नमक की आवश्यकता हुई लेकिन जब ढूंढने पर भी उसे नमक नही मिला तो वह सरवर सुलतान से पूछने के लिए कचहरी गया। वहाँ दोनो मे इस प्रकार बातचीत हुई

> ओ भाई सरवर सुलतान,
> क्यो भाई नफरे-नफरान ?
> सफेद मोती बिन
> काली हो रही है हैरान।

सफेद मोती से मतलब नमक से था और काली से मतलब काली हांडी से था, जिसमे दलिया पक रहा था। सरवर-सुलतान ने नमक का पता बतलाया, "ऊपर बारी, नीचे ताख"। कोई दरबारी उनकी बातचीत का आशय नही समझा। लेकिन जब नफरे-नफरान घर आया तो उसने देखा कि एक कुत्ते ने हांडी नीचे गिराकर फोड डाली है, हांडी का 'गल्वा' (गला) कुत्ते की गर्दन मे है और कुत्ता जमीन पर गिरा हुआ दलिया चाट रहा है। यह सब देखकर नफरे-नफरान फिर कचहरी गया। दोनो म फिर निम्न बातें हुई

> ओ भाई सरवर-सुलतान !
> क्यों भाई नफरे-नफरान ?

गल मठे चौडे मैदान,
कालो हो रही है हैरान ।

फिर सरवर-सुल्तान ने अपने भाई को समझाया, "घर बूचे पर पलाण' अर्थात् बिना गले का जो एक घडा पडा है उसमे दलिया रांध ले । नफरे-नफरान घर आया और उसने घडा चूल्हे पर चढाया, लेकिन दलिये को चलाने के लिए उसके पास जो 'डोई' थी वह घडे मे नही आती थी क्योकि घडे का मुंह बहुत सँकरा था । इसलिए नफरे-नफरान फिर दरबार मे गया और बोला

ओ भाई सरवर-सुलतान,
भाई ने पूछा—क्यो भाई नफरे-नफरान ?
उत्तर मिला—बूचा नहीं लेता है लगाम ।
इस पर आदेश हुआ—'घर साले पर उलटा पलाण,
अर्थात् 'डोई' को उलटी तरफ से काम म लो ।

● पिलगाण ल्यो पिलगाण

एक मियाँ जी का एक 'सेरू' (चारपाई की एक छोटी भुजा) मिल गया । मियाँ जी ने कहा कि यह तो पलँग ही है और वे उसे बेचने के लिए निकले । मियाँ जी आवाज लगाते थे

दोय तो लमगाण नहीं हैं, एक नई है सिराण ।
च्यारूँ पाया मूल नहीं, पिलगाण ल्यो पिलगाण ॥

अर्थात् पलँग की दो लम्बी भुजाएँ नहीं है, एक छोटी भुजा नहीं है तथा चारो पाये तो कतई नही है कोई पलँग लो, कोई पलँग लो ।

रूपातर

दो ईस नहीं, दो सेरू नहीं अर तीन नहीं टिकावू ।
बीच को झकझोल नहीं या खाट है बिकावू ॥

● घोडी म्हारी जीभ कै बांधो

एक सेठ अपनी हवेली के चबूतरे पर बैठा था । उधर से एक ठाकुर

अपनी घोडी पर चढा हुआ निकला। सेठ ने ठाकुर से कहा ठाकराँ, राम-राम। बस ठाकुर को और क्या चाहिए था। वह घोडी पर से उतर पडा और सेठ से पूछने लगा कि सेठजी, घोडी कहाँ बाँधी जाए? सेठ जान गया कि ठाकुर से राम-रमी कर ली तो इसे ठहराना भी पडेगा अत उसने ठाकुर से व्यग्य के साथ कहा कि ठाकुर साहब घोडी मेरी जीभ से बाँध दीजिए क्योकि यह चुपकी नही रही और इसने आप से राम-रमी की।

● जनानो पग तो टिक्यो

एक मियाँ जी बूढे हो चले लेकिन उनका विवाह नही हुआ। मियाँ जी विवाह करने के लिए बडे इच्छुक थे लेकिन औरत उनके भाग्य मे बदी ही नही थी। एक दिन एक मुर्गी मियाँ जी के घर मे घुस गई तो किसी पडोसी ने कहा कि मियाँ जी आपके घर मे मुर्गी घुस गई है। मियाँ जी ने इसे अपना अहोभाग्य माना और बोले कि शुक्र है खुदा का जो आज मेरे घर मे भी जनाना पैर तो टिका।

● मियो वफात पाग्यो

जाट और मियाँ दोनो सेना मे भर्ती हुए। मियाँ मारा गया और कुछ समय बाद जाट अपने घर लौटा। रास्ते मे मियाँ का गाँव पडता था। जाट को भूख लग आई थी अत उसने सोचा कि मियाँ के घर खाना खाता चलूँ।

मियाँ की बीवी के पास जाकर जाट ने कहा कि बीवी, तुम्हारे मियाँ ने 'विलायत' पायी है। बीवी ने सोचा कि मियाँ जी बडी तरक्की कर गये हैं अत इसे शुभ सवाद मानकर बीवी ने जाट को खूब अच्छी तरह भोजन कराया। भोजन कर लेने के पश्चात् जाट ने बीवी से पूछा कि बीवी, तुम्हारे यहाँ जब कोई मर जाता है तो उसे क्या कहते हैं? बीवी ने कहा कि वफात पाना कहते हैं। बीवी की बात सुनकर जाट बोला कि तुम्हारे मियाँ ने तो वही पायी है। बीवी सुनकर सन्न रह गई। उसने जाट से कहा कि निगोडे, पहले ही यह बात क्यो नही बतलायी?

● वखत की सूझ

प्रथम विश्वयुद्ध में एक भारतीय राजा भी अँगरेजों की तरफ से मोर्चे पर गया था। लेकिन मोर्चे पर जाकर राजा घबड़ा गया। उसने सोचा कि किसी न किसी तरह अपने देश चलूं तो अच्छा रहे, लेकिन छुट्टी मिलती न थी। कुछ सोच-विचार कर राजा ने अपने मंत्री को तार देकर पूछा कि मा जी (माताजी) कैसी हैं, तुरत जवाब दो। मा जी तो सर्वथा स्वस्थ थीं। सभी को यह तार पाकर आश्चर्य हुआ लेकिन दीवान अपने मालिक का आशय समझ गया और उसने जवाब दिया कि मा जी सख्त बीमार हैं, कृपया फौरन आएँ। उस तार की बदौलत राजा को छुट्टी मिल गई और वह अपने राज्य में आ गया।

● तेरी मा नैं हिरणी कर देस्युं

एक जाट के लड़के की माँ बीमार हो गई। लड़का पास के शहर में गया और वहां से एक वैद्य को बुलाकर लाया। जाटनी से हिला डुला भी नहीं जाता था। लेकिन वैद्य ने उसे देख-भालकर लड़के से कहा कि तू चिन्ता न कर, तेरी माँ को हिरनी बना दूंगा अर्थात् आज इससे चाहे हिला-डुला भी नहीं जाता है लेकिन दवा लेने से यह हिरनी की तरह भागने लगेगी। लेकिन लड़का वैद्य की बात सुनकर रोने लगा। वैद्य ने पूछा कि तू रोता क्यों है तो लड़के ने उत्तर दिया कि मेरी माँ मर जाएगी तो भी मेरे से तो चली जाएगी और यदि हिरनी बन जाएगी तो भी मेरे हाथ नहीं आएगी। दोनों प्रकार से ही मैं अपनी माँ से वंचित हो जाऊंगा, फिर तुम्हें किस बात के पैसे दूं ? तुम अपने घर जाओ।

● जहानखाँ अर तुर्रे खाँ

एक मियाँ अपने मन में बड़ा तीसमारखाँ बना फिरता था, किसी को कुछ समझता ही न था। एक दिन उसे एक दूसरा मियाँ मिला। दूसरे ने उससे पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है तो पहले ने बड़ी अकड़ के साथ उत्तर दिया कि मेरा नाम जहानखाँ है, तुम्हारा क्या नाम है ? दूसरे ने उससे भी अधिक ऐंठ से कहा कि अरे, मेरा नाम नहीं जानता ? मेरा नाम तुर्रे-ना

अर्थात् तुझे खाने वाला है। दूसरे की बात सुन कर पहला मियाँ ढीला पड गया।

● पुराणो सो स्याणो

एक सेठ का व्यापार बहुत फैला हुआ था। कई दिसावरो मे उसकी गद्दियाँ थी। लेकिन सेठ के मरने के बाद उसके बेटे ने काम को अच्छी तरह नही सँभाला। उसने पुराने-पुराने सभी आदमियो को निकाल कर नये आदमी रख लिये। फलत काम-काज बहुत ढीला हो गया।

एक दिन सेठ के बेटे पर दस हजार रुपये की दर्शनी हुडी आ गई। गल्ले म रुपये थे नही लेकिन हुडी का सिकरना बहुत आवश्यक था। लडका उदास मुंह अपने घर गया तो उसकी माँ ने पूछा कि बेटा आज क्या बात है? बेटे ने सारी बात बतलायी तो माँ ने कहा कि रुपयो का बन्दोबस्त होने मे कुछ समय लग जाएगा, तुम अपनी सारी शाखाओ को लिखो कि रुपये शीघ्र भेजें लेकिन तब तक हुडी खडी नही रह सकती, इसलिए तुम अपने बूढे मुनीम को बुलवाओ।

बूढे मुनीम को बुलावा भेजा गया। मुनीम बहुत बूढा हो चला था, जाडे की ऋतु थी अत कुछ समय पश्चात् बूढा मुनीम रूई की मिरजई पहने और दुशाला ओढे जाडे के मारे काँपता हुआ दुकान पर आया। मुनीम ने कहा कि आज तो बहुत जाडा पड रहा है जरा सिगडी तो मँगवाओ। मुनीम के लिए सिगडी मँगवायी गई। हुडी लाने वाले ने हुडी मुनीम के हाथ मे दी और मुनीम काँपते हुए हाथो से हुडी पढने लगा। मुनीम के हाथ ठड के मारे अब भी काँप रहे थे और हुडी मुनीम के हाथो से छूट कर सिगडी मे गिर पडी। हुडी जल गई तो मुनीम ने हुडी लाने वाले से खेद प्रकट करते हुए कहा कि भाई, हुडी तो मेरे हाथ से गिर कर जल गई, अब तुम इसकी पैठ मँगवा लो। पैंठ आते ही तुम्हें रुपये मिल जाएँगे।

हुडी वाला आदमी यह नही जान सका कि मुनीम ने हुडी जान-बूझकर सिगडी मे डाली है। सेठ का फर्म बहुत बडा था और मुनीम का भी काफी प्रभाव था अत उसने मुनीम से कहा कि मुनीमजी कोई बात नहीं, पैंठ

भ्रा जाएगी। वह आदमी चला गया तो सेठ के बेटे ने मुनीम के पैर पकड लिए और उसे फिर बडा मुनीम बना दिया।

● गम वडी

एक जाट की औरत बदकार थी। वह हमेशा अपने पीहर मे ही रहा करती, किसी प्रकार ससुराल नही जाती थी। एक बार उसका पति उसे लेने के लिए आया तो घर वालों ने उसे ससुराल भेज दी। रास्ते मे जाटनी ने कहा कि मैं तो बहुत थक गई हूँ अत रात भर इस कुएँ पर विश्राम लेना चाहिए। दोनों कुएँ पर ठहर गये। जाट को नींद आ गई तो जाटनी ने उसे कुएँ मे गिरा दिया और स्वय अपने पीहर आ गई। घरवालो के पूछने पर उसने कह दिया कि वह निगोडा मुझे सोती हुई छोडकर कहीं चला गया। उधर जाट को भी दूसरे दिन किसी ने कुएँ से निकाल दिया और वह अपने घर चला गया। घर वालो के पूछने पर उसने कह दिया कि मेरी ससुराल वाला ने मेरी औरत को भेजा नही।

कई वर्ष बीत गये। जाटनी की युवावस्था बीत चली तो यारा ने उसकी सुधि छोड दी। जाट को भी इस बात का पता लग गया और वह फिर अपनी स्त्री को लाने के लिए अपनी ससुराल गया। अब जाटनी के लिए पीहर मे कोई आकर्षण नहीं रह गया था अत वह ससुराल आ गई। समय बीतता गया। जाट-जाटनी बूढे हो गये। बेट पोता से घर भर गया। जाट सम्पन्न था अत घर में किसी बात की कमी न थी।

एक दिन जाटनी बिलोना बिलो रही थी और जाट अपनी गोद मे पोते को लिए बैठा था। 'गम बडी र गम बडी' कह कहकर जाट अपने पोते को खिला रहा था। जब ऐसा करते-करते बहुत देर हो गई तो जाटनी ने जाट से पूछा कि आज यह क्या रट लगा रहे हो? जाट ने बात टालनी चाही, लेकिन जाटनी नहीं मानी तो जाट बोला कि वास्तव म ही गम बहुत बडी चीज है, यदि मैं गम न खाता तो आज इतने बेट पोत कहाँ से होते, क्या तुम उस रात की कुएँ वाली बात भूल गई? जाटनी को सपने मे भी गुमान नहीं था कि जाट उस बात को अपने मन में दबाये बैठा है। जाट के मुँह से

यह बात सुनकर गाटनी के मुंह से निकला 'हैं' और 'हैं' के साथ ही उसके प्राण-पखेरू उड़ गये।

● खोदसी जिको ई पड़सी

बादशाह और वजीर वेष बदलकर शहर में घूमने निकले। उन्होंने देखा कि एक लडका गढा खोद रहा है। वजीर ने पूछा कि लडके तू गढा क्यों खोदता है तो लडके ने उत्तर दिया कि तुम्हें इससे क्या मतलब है? जो खोदेगा वही उसमें गिरेगा। लड़के का उत्तर सुन कर वजीर बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने लड़के को अपने साथ ले लिया।

लडके को घर लाकर वह पढाने-लिखाने लगा। वजीर के भी उतना ही बडा लडका था। दोनों साथ-साथ पढते, लेकिन वज़ीर के लडके से वह लडका बहुत होशियार था। वज़ीर को ईर्षा हुई और उसने उस लड़के को जान से मरवा देने की ठान ली। वजीर कसाई के घर गया और उसने कसाई से कहा कि तुम्हारे पास एक लडके को मास लेने के लिए भेजूंगा सो तुम उसको मारकर उसकी बोटी-बोटी कर देना। वज़ीर ने घर आकर उस लडके से कहा कि अमुक कसाई के घर जाकर सेर भर मास ले आ। लडका चला। घर से थोडी ही दूर पर वज़ीर का लडका अन्य लडकों के साथ 'चर भर' (एक राजस्थानी खेल) खेल रहा था। वज़ीर के लडके ने आवाज देकर उस लडके को अपने पास बुलाकर पूछा कि तू कहाँ जा रहा है? लडके ने उत्तर दिया कि तुम्हारे पिता ने मुझे सेर भर मास लाने के लिए कहा है सो लाने के लिए अमुक कसाई के घर जा रहा हूँ। वज़ीर के लडके ने कहा कि तुम मेरे बदले यहाँ खेलो, मैं सात बाजी हार चुका हूँ, तुम खेल कर इनको हराओ, मैं मास लाने जाता हूँ। वज़ीर का लडका मास लाने के लिए चला गया और वह लडका चर-भर-खेलने लगा।

कसाई ने वज़ीर के लडके को मारकर उसकी बोटी-बोटी कर डाली। इधर बहुत देर हो जाने पर भी जब वज़ीर का लडका घर नहीं आया तो वज़ीर उसे ढूंढने के लिए घर से बाहर निकला।

जिस लडके को उसने मास लाने के लिए कसाई के घर भेजा था वह

अ य लडका के साथ बैठा चर-मर खेल रहा था। वजीर के पूछने पर लडके ने उत्तर दिया कि आपका बेटा यहाँ चर मर खेल रहा था। मैं इधर से गुजरा तो उसने मुझे पुकारकर कहा कि मैं सात बाजी हार गया हू सो मेरे बदले तुम खेलो, मास लाने के लिए कसाई के यहाँ मैं जाता हूँ, सो मैंने तो सात बाजियाँ उतार कर इनके ऊपर सात बाजियाँ और चढा दी हैं लेकिन वह तो अभी तक नही आया।

वजीर जान गया कि लडके का क्या हाल हुआ होगा, उसके मुँह से निकल पडा कि वास्तव मे जो खोदता है, वही उसम पडता है।

● पीपल-तुलसी

एक थी सास और एक थी बहू। सास ने बहू से कहा कि मैं तीर्थाटन के लिए जा रही हूँ, तुम अपने यहाँ जो दूध-दही होता है वह बेच-बेचकर रुपये इकटठे कर लेना। सास चली गई।

चैत-बैसाख का महीना आया तो बहू सारा दूध दही ले जाकर पीपल और तुलसी मे सीच देती और फिर खाली टोकनी लाकर घर रख देती। सास घर आयी तो उसने बहू से दूध और दही के रुपये माँगे। बहू ने कहा कि जी मैं तो सारा दूध और दही पीपल-तुलसी म सीचती रही हूँ, मेरे पास रुपये नही है। लेकिन सास ने कहा कि चाहे जो भी हो मुझे तो रुपये देने पडेंगे। तब बहू पीपल और तुलसी के पास जाकर बैठ गई और उनसे बोली कि मेरी सास मुझसे दूध-दही के पैसे माँगती है। पीपल-तुलसी ने कहा कि बाई, हमारे पास रुपये-पैसे कहाँ हैं? ये ककड-पत्थर अवश्य पडे हैं इन्हें भले ही उठा कर ले जा। वह सारे ककड-पत्थर उठाकर घर ले आयी और घर लाकर उन्हें अपने कमरे मे रख दिये। दूसरे दिन सास ने फिर रुपये माँगे तो बहू ने अपना कमरा खोला। बहू ने देखा कि सारे ककड-पत्थरो के हीरे-मोती बन गये हैं और कमरा जगमगा रहा है। बहू ने सास से कहा कि सास जी, अपने रुपये ले लो। हीरे-मोती आदि देखकर सास का भी मन चला। उसने कहा कि मैं भी पीपल और तुलसी सीचूँगी।

दूसरे दिन से सास जब दूध-दही बेच कर लौटती तो उन बरतनो में

पानी भर कर पीपल और तुलसी म डाल आती। जब कुछ दिन ऐसा करते-हो गये तो एक दिन सास ने बहू से कहा कि तू मेरे से दूध-दही के रुपये माँग। सास के कहने से बहू ने रुपये माँगे तो सास बोली कि मेरे पास रुपये कहाँ हैं ? मैं तो दूध-दही से पीपल और तुलसी को सींचती रही हूँ। फिर सास जाकर पीपल और तुलसी के नीचे बैठ गई और बोली कि मेरी बहू दूध-दही के रुपये माँगती है। पीपल-तुलसी ने उत्तर दिया कि हमारे पास रुपये कहाँ है ? ये ककड-पत्थर पडे हैं सो चाहो तो मले ही ल जाओ। साम ककड-पत्थर लेकर खुशी-खुशी घर आयी और उसने ककड-पत्थर लाकर अपने कमरे म रख दिये। दूसरे दिन जब कमरे को खोला गया तो सास क्या देखती है कि सारा कमरा साँप और बिच्छुओ से भरा पडा है।

सास ने बहू से पूछा कि बहू, यह क्या बात है ? तू तो ककड पत्थर उठा कर लायी थी उनके तो हीरे मोती बन गये और मैं जो ककड पत्थर उठा कर लायी उनके साप बिच्छू बन गये ? बहू ने सहज भाव से उत्तर दिया कि सास जी, मैंने पीपल-तुलसी को शुद्ध मन से सींचा था सो ककड-पत्थरा के हीरे मोती बन गय और आपने लालच वश ऐसा किया था अत आपके लाये हुए ककड-पत्थरा के साँप बिच्छू बन गये।

● मैं ही तो मा हूँ जद पूत खसमडा जी लियो

एक आदमी को सनिपात हो गया। वैद्य उसे देखने के लिए आया। वैद्य ने यह देखने के लिए कि रोगी आदमी का पहिचानता है या नही उसकी स्त्री को उसके पास बुलाया और उससे पूछा कि बतलाओ यह कौन है ? रोगी ने अपनी स्त्री को घूरकर देखा लेकिन रोग की प्रबलता के कारण वह उसे पहिचान नही सका। उसने अटक-अटक कर कहा कि यह यह तो मा है। पति की बात सुनकर स्त्री का रहा-सहा धीरज भी जाता रहा और वह निराश होकर बोली मैं ही तो माँ हूँ तो पूत खसमडा जी लियो' अर्थात् यदि मैं ही माँ हूँ तब तो पूत-पति तुम जी लिए ?

● डाँस और हवा

एक बार डाँस और मच्छरो ने मिलकर विचार किया कि यह हवा हमे

बहुत सताती है। हम किसी के शरीर पर बैठकर उसका रक्त चूसने की चेष्टा करते हैं लेकिन हवा का एक झोंका आकर हमे तुरन्त उडा देता है।

विचार-विमर्श के बाद उन्होंने भगवान विष्णु के पास हवा की शिकायत की। विष्णु भगवान ने पवन को तलब किया। लेकिन जब सबूत देने के लिए मच्छरो को आवाज दी गई तो एक भी मच्छर हाजिर नही हुआ। चूंकि पवन विष्णु भगवान के न्यायालय मे उपस्थित था अत मच्छर वहाँ जाने की हिम्मत नही कर सके। मच्छरों के हाजिर न होने के कारण उनका मुकदमा अदम-पैरवी मे खारिज कर दिया गया।

● राजा वहलोचन

राजा वहलोचन अपने बहुत से सेवको के साथ शिकार खेलने के लिए वन मे गया। शिकार का पीछा करते-करते राजा बहुत दूर निकल गया। उसके सगी-साथी सब पीछे रह गये, सिर्फ राजा का मत्री उसके साथ रहा। शिकार हाथ से निकल गया और दोनो वन मे भटक गये। सध्या हो गई तो दोनो एक बड के बडे वृक्ष के नीचे ठहर गये। राजा ने मत्री से कहा कि रात भर यहीं विश्राम करके सवेरे यहां से चलेगे। पहले तुम सो जाओ, मैं पहरा लगाता हूँ। फिर मैं सो जाऊँगा तुम पहरा देना। मत्री सो गया और राजा पहरा देने लगा। आधी रात हुई तो राजा ने मत्री को जगाया और स्वय सो रहा।

राजा को गहरी नींद मे सोते देख मत्री ने सोचा कि राजा का कुँअर अभी बहुत छोटा है, यदि मैं राजा को मार डालूँ तो राज्य के सारे अधिकार मेरे हाथ मे आ जाएँगे, जैसा मैं चाहूँ कर सकूँगा। जब राजकुमार बालिग होगा तब देखा जाएगा। यो सोचकर मत्री ने सोते हुए राजा का सिर काट डाला और उसके घोडे को भी मार दिया।

बड के ऊपर एक बनिया छिपा बैठा था। वह दिसावर से अपने घर को लौट रहा था और सध्या हो जाने के कारण इसी बट वृक्ष पर रात काटने के लिए बैठ गया था। मत्री के इस जघन्य कर्म को देखकर बनिया सिहर उठा, वह और भी सिमट कर गया बैठ गया। ऐसा करने में वृक्ष के कुछ

पत्ते हिले तो मंत्री ने ऊपर की ओर देखा, लेकिन जब उसे कुछ दिखलायी नहीं दिया तो उसने सोचा कि कोई लंगूर होगा। यह सोचकर मंत्री ने विशेष ध्यान नहीं दिया।

सवेरा होने पर मंत्री अपने घोड़े पर सवार होकर नगर की ओर चल पड़ा। रास्ते में राजा के सेवक उसे मिले तो मंत्री ने बड़ी उदास मुद्रा बना कर कहा कि महाराज को एक शेर ने मार डाला। मंत्री की बात सुनकर सभी को बड़ा रंज हुआ। नगर भर में शोक छा गया।

शिशु राजकुमार राजा बना और मंत्री सारा राज्य-कार्य चलाने लगा। अब मंत्री जो चाहता, करता। समय पाकर राजा बालिग हुआ और अब वह स्वयं राज-काज देखने लगा। वह रात्रि को प्राय वेष बदलकर नगर में घूमा करता। एक दिन आधी रात को वह एक घर के पास छुपा बैठा था तो उस पति पत्नी का वार्तालाप सुनायी पड़ा। पति कमाने के लिए दिसावर जा रहा था पत्नी अपने पति से कह रही थी कि तुम जल्दी लौटना, मुझे भूल मत जाना। पत्नी की बात सुनकर पति ने कहा

> कटि केहर मृग लोचनी, तस्कर की सी तबक।
> मैं कस भूलूं कामणी बहलोचन बड सबख॥

अर्थात तुम्हें और बड वाली उस घटना को जहाँ राजा बहलोचन की हत्या हुई थी मैं कभी नहीं भूल सकता। राजा ने दोहा सुना और सुनते ही उसके दिल में हलचल मच गई। वह उसी वक्त लौट गया और सेवक को भेज कर उसने उस मनुष्य को बुलवाया। यह आदमी वही बनिया था जो राजा की हत्या के समय बड पर छुपा बैठा था। बनिया भय के मारे कांपने लगा तो राजा ने उसे अभयदान देकर पूछा कि सारी बातें मुझे सत्य सत्य बतलाओ। बनिये ने आँखों देखी सारी घटना सत्य सत्य सुना दी। राजा को रात भर नींद नहीं आई।

सवेरा होते ही राजा ने मंत्री को बुलवा भेजा। मंत्री के आने में कुछ देर हुई। राजा को पल पल भारी हो रहा था, उसने दूसरा और तीसरा बुलावा भेजा। मंत्री जान गया कि आज राजा को अपने बाप की मृत्यु का

भेद ज्ञात हो गया है। उसने अपने बेटों को बुलाकर सारी बात समझायी और उन्हें साथ लेकर वह राजा के पास पहुँचा। राजा के पूछने पर मत्री सारी घटना सुनाने लगा। जब राजा की हत्या का प्रसग आया तो मत्री के बेटों ने कहा कि अरे हत्यारे, तूने यह क्या दुष्कर्म किया ? ऐसे धर्मात्मा और न्यायी राजा को तू ने अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर मार डाला, जिस राजवश का नमक खाते-खाते अपनी पीढियाँ गुजर गई उस वश के राजा की तू ने हत्या कर डाली, हमारा यह कलक कैसे धुलेगा, तू हमारा बाप नही कसाई है, हम ऐसे हत्यारे को जीवित देखना नही चाहते। यो कहकर मत्री के बेटों ने अपने बाप को छुरो से वही मार डाला। राजा को विश्वास हो गया कि मत्री के बेटे बहुत भले हैं, यह दुष्ट ही ऐसा था जिसे उसकी करनी का फल मिल ही गया। यो सोचकर राजा का क्रोध शात हो गया और उसने मत्री के बडे लडके को दीवान बना दिया।

● एक नही दो

एक राजा के दो मत्री थे। एक दिन राजा की सवारी निकली, दोनो मत्री साथ थे। जब राजा की सवारी एक सेठ की दुकान के सामने से गुजरी तो सेठ ने झुककर मुजरा किया। राजा ने सेठ की ओर दो उँगलियाँ उठा कर कुछ पूछा। इसके उत्तर म सेठ ने राजा की ओर एक उँगली उठा दी।

उक्त सेठ पहले बहुत माल्दार था और दरबार मे उसकी बडी पूछ थी लेकिन आज कल सेठ की आर्थिक स्थिति यहाँ तक गिर गई थी कि दो जून रोटी भी मयस्सर नहीं होती थी। दो उँगलियाँ दिखलाकर राजा ने सेठ से यही पूछा था कि क्या दोनो वक्त रोटी मिल जाती है लेकिन सेठ ने एक उँगली उठाकर राजा से कहा था कि नही एक वक्त ही रोटी मिल पाती है। राजा और सेठ मे बातें हो गई, लेकिन दोनो मत्री कुछ नही समझे। उन्होने सोचा कि सेठ पुराना दरबारी है और राजा ने सेठ से पूछा है कि मत्री एक चाहिए या दो। इसके उत्तर में सेठ ने कहा कि मत्री तो एक ही चाहिए।

दोनों मत्रियों के कलेजो मे उथल-पुथल मच गई कि राजा किसे रखेगा और किसे निकालेगा। दोनों मत्री बारी-बारी से सेठ के पास पहुँचे। सेठ

उनकी बात ताड़ गया। उसने प्रत्येक मन्त्री से पचास-पचास हजार रुपये ले लिये और दोनों को ही आश्वासन दे दिया कि तुम्हें नहीं हटाया जाएगा।

कुछ दिना बाद उसी प्रकार राजा की सवारी फिर निकली। इस बार राजा ने सेठ की ओर एक उँगली उठाकर पूछा कि क्या आज कल भी एक जून ही खाना मिलता है? इस पर सेठ ने राजा की ओर दो उँगलियाँ उठा दीं। दोनों मन्त्री खुश हो गये कि सेठ ने दोनों को मन्त्री-पद पर बनाये रखने की सिफारिश कर दी।

● मिये की सीरणी

एक मियाँ कहीं जा रहा था। चलते-चलते उसने खुदा से मिन्नत मानी कि या खुदा, मुझे कहीं एक रुपया पड़ा मिल जाए तो मैं तुम्हारे नाम की चार आने की 'सीरणी' (प्रसाद) बाँट दूँ। खुदा की कुदरत कि मियाँ को थोड़ी दूर चलने पर ही एक जगह कुछ पैसे पड़े मिल गये। मियाँ ने सोचा कि मेरी प्रार्थना मजूर हो गई और उसने पैसे उठा लिए लेकिन गिनने पर जब वे सिर्फ बारह आने हुए तो उसने बड़ी सजीदगी से कहा कि या खुदा तू भी कितना बेविश्वासी है, तू ने मेरा इतना भी विश्वास नहीं किया जो चार आने के पैसे अग्रिम ही काट लिए।

● अँई पत्थर जुवानी में पड़्या था

एक मियाँजी बड़े दुबले-पतले से थे लेकिन कहने को बड़े तगड़े बनते थे। एक दिन मियाँ जी कहीं जा रहे थे कि कमजोरी के मारे चलते-चलते ही डगमगा गये। लेकिन अपनी कमजोरी बुढ़ापे के सिर मढ़ते हुए बोले, "हाय बुढ़ापा"। फिर मियाँजी ने इधर-उधर देखा कि कोई दूसरा तो नहीं है और फिर ठण्डी साँस लेकर अपने आप पर ही हँसते हुए बोले कि जवानी म भी भला ऐसा क्या था कि जिस पर नाज किया जा सके, यही पत्थर जवानी मे पड़े थे।

● बाकी को गोट बधग्यो

एक गाँव मे मूर्ख ही मूर्ख बसते थे। वे अपनी हर समस्या लाल बुझक्कड़ से हल करवाते क्योंकि उनकी समझ मे लाल बुझक्कड़ ही इस पृथ्वी पर

सबसे समझदार व्यक्ति थे। एक रात को एक हाथी उस गांव में से होकर निकला। सवेरे जब गांव के लोगों ने हाथी के खोज (पद चिह्न) देखे तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि आज यह कौन जानवर इधर से गुजरा है? पैरों के निशान भी इतने बड़े हो सकते हैं यह तो हमारी कल्पना में भी नहीं आता। सब मिलकर बुझक्कड़ जी के पास गये। बुझक्कड़ जी ने खोज देख कर कहा

जाणन हाला जाण्या, के जाणै अण जाण।
पगां कै चाकी बांध कर, कूद गया मिरघाण॥

अर्थात् जानने वाले जान गये, बेचारे 'अनजान' (मूर्ख) भला इन बातों को क्या जानें? हिरन अपने पैरों में चक्की के पाट बांध-बांध कर कूद गये हैं, ये निशान उन्हीं के हैं।

फिर सारे लोग उन चिह्नों के सहारे-सहारे आगे बढ़े तो उन्हें हाथी खड़ा दिखलायी पड़ा। सारे लोगों ने लाल बुझक्कड़ से फिर पूछा कि यह क्या है? लाल बुझक्कड़ ने तुरन्त उत्तर दिया कि मूर्खों, इतना भी नहीं जानते? यह अमावस्या की काली-पीली रात है, जितनी बीती, सो बीती, शेष का 'गोट' बंध गया अर्थात अमावस्या की काली-पीली रात जो व्यतीत होने से बच रही वह सिमट सिकुड़ कर ठोस रूप में सामने दिखलायी पड़ रही है।

● ऊपर सैं बावोजी दीखै

एक बाबाजी एक जाट के खेत में से नित्य रात को सिट्टे, मतीरे आदि तोड़ कर ले आया करते थे। बाबाजी ने अपनी चरण पादुकाएँ इस तरकीब से बना रखी थीं कि उनके पद चिह्न गधे के पद चिह्न जैसे अंकित होते थे। खेत का मालिक यही सोचता कि कोई गधा खेत चर जाया करता है। एक रात खेत का मालिक गधे को पकड़ने के लिए खेत में छुपकर बैठ गया। आधी रात को बाबाजी आये और सिट्टे तथा मतीरे तोड़कर चलने लगे। जाट ने बाबाजी को पकड़ा तो सारा रहस्य खुल गया। जाट ने कहा

गटमण गटमण माला फेरै,
अै तो काम तिर्यांरा।

ऊपर सूं बाबोजी दीखे,
नीचे खोज गधां का ।

अर्थात् मैं तो समझता था कि गधा खेत चर जाता है लेकिन यह सब तो बाबाजी की कारस्तानी है जो माला फेरते हैं और बाबाजी का वेष बनाये हैं किन्तु नीचे जिनके गधे की खोज हैं।

● क्युंई कमायो ई है

एक पसारी रात को अपनी दुकान में सोया करता था। एक रात कोई आदमी पंसारी के पास एक रुपये की चीजें लेने के लिए आया। पसारी ने एक रुपये का सौदा दे दिया और ग्राहक रुपया देकर चलता बना। लेकिन वास्तव में ग्राहक ने रुपये की बजाय तांबे का टका दिया था (पहले ईस्ट इंडिया कंपनी के तांबे के टकों का प्रचलन था जो आकार में रुपये के बराबर होते थे) पसारी को रात को कम दिखलायी पड़ता था और प्रकाश भी नहीं था अतः उसने टके को ही रुपया समझ कर ले लिया था।

सवेरे पंसारी के लड़के ने कहा कि पिताजी आप कहते हैं कि मैंने रात को रुपये का सौदा दिया था लेकिन यहाँ तो सिर्फ एक टका ही रखा है। मालूम होता है कि दुष्ट ग्राहक रुपये के बदले टका ही दे गया है। इस पर पंसारी ने कहा कि बेटा तब भी कोई हर्ज नहीं, हमने तो कुछ कमाया ही है। मैंने टके के बदले एक पैसे का ही धन दिया है।

● मरद तो इकदंता ही भला

एक मियाँजी की बीबी गुजर गई तो बुढ़ापे में 'नाता' करके दूसरी बीबी लाये। इतनी देर तक तो मियाँ साहब दूल्हा बने हुए थे और अपने बुढ़ापे को किसी हद तक छुपाये थे। उनके मुँह में सिर्फ एक दाँत शेष रहा था। घर आकर उन्होंने नई बीबी से कहा.

मरद तो इकदंता ही भला

अर्थात् मर्द तो वही जिसके मुँह में सिर्फ एक ही दाँत हो। लेकिन बीबी के मुँह में एक भी दाँत बाकी नहीं बचा था। उसने तपाक से उत्तर दिया

कि मियांजी वाह, मुंह म हाड भी क्या लाड, मुंह तो एकदम सफम-सपा (सफाचट) ही अच्छा। बींबी की बात सुनकर मियांजी शेखी बघारना भूल गए।

● दोनू कानी जीत

एक सेठ के यहाँ एक जाट नौकर था। सेठ नित्य दरबार म जाया करता। एक दिन जाट ने सेठ से कहा कि मैं भी आपके साथ चला करूँगा। सेठ ने कहा कि वह बादशाह का दरबार है और तुम जट्ट (मूर्ख) हो, सो कही कुछ बेअदबी कर बैठे तो लेने के देने पड जाएँगे। जाट ने सेठ से कहा कि मैं कुछ भी नही बोलूंगा।

जाट अब सेठ के साथ दरबार म जाने लगा। दोपहर को एक काजी बादशाह को कुरान पढकर सुनाया करता था। एक दिन काजी ने बादशाह से कहा कि हुजूर, आज के सातवें दिन रोज कयामत होगी। काजी की बात सुनकर जाट से नहीं रहा गया। वह बोल पडा कि काजी झूठ कहता है, कयामत नही होगी। बादशाह को जाट की बात नागवार गुजरी, सेठ भय से कांपने लगा लेकिन जाट अपनी बात पर अडा रहा। अत म यह शर्त तय हुई कि यदि कयामत हो जाए तो जाट दस हजार रुपये काजी को दे और यदि कयामत न हो तो काजी जाट को दस हजार रुपये दे। काजी की ओर से बादशाह ने रुपया की हाँ भर ली लेकिन सेठ ने जाट की हाँ नही भरी तब जाट ने सेठ को अलग ले जाकर कहा कि इस सौदे म घाटा नहीं है, यदि प्रलय हो गई तो न काजी बचेगा और न हम फिर कौन किससे रुपये लेगा ? और यदि प्रलय नहीं हुई तो हमको दस हजार रुपये मिल जाएँगे। बात सठ की समझ म आ गई उसने जाट की ओर से रुपय देने की हाँ भर ली।

सातवें दिन न प्रलय होनी थी न हुई और सठ को दस हजार रुपये मिल गये।

● जाट हाली गद-गदी

एक जाट के पोता हुआ। बच्चा दो-तीन महीने का हो गया तो उसकी

माँ ने बच्चे को घर के आँगन मे सुला दिया। शाम को जाट खेत से घर आया, पोते को देखकर वह बडा प्रसन्न हुआ। जाट के हाथ मे 'जेली' (एक लाठी जिसके दो सीग लगा दिये जाते हैं और जिनमे पिरोकर घास इधर उधर ले जाई जाती है) थी। कुछ देर तक तो वह बच्चे को खडा खडा देखता रहा फिर उसने बच्चे को गुदगुदा कर हँसाने की गरज से 'जेली' के दोनो सीग बच्चे के पेट मे लगाये और 'सीगो' से गुदगुदाने लगा। लेकिन 'जेली' के नोकदार सीगें बच्चे के पेट को फाडकर दूसरी ओर निकल गये।

● मूरख नौकर

एक मुख्तार साहब ने एक नौकर रखा। मुख्तार साहब ने नौकर से कहा कि मैं कचहरी जाता हूँ, तुम मेरे पीछे-पीछ आना, रास्ते मे कोई चीज गिर जाए तो वह भी उठा लाना। मुख्तार साहब घोडे पर चढकर कचहरी को चले और नौकर उनके पीछे-पीछे हो लिया। थोडी दूर जाकर घोडे ने लीद की और नौकर ने लीद उठाकर रूमाल मे बाँध ली। मुख्तार साहब कचहरी मे जाकर अन्य मुख्तारो के साथ बैठ गये। तभी नौकर ने हाजिर होकर मुख्तार साहब के सामने रूमाल पेश किया और कहा कि जनाब, और कोई चीज तो नही गिरी, घोडा अपने पीछे यह लीद डाल आया था सो हाजिर है। नौकर की बात सुनकर मुख्तार साहब का मुँह उतर गया।

दूसरे दिन उन्होने नौकर से कहा कि तू घर पर ही रहा कर। कोई काम हो तो कचहरी मे आकर मुझसे कह दिया कर। एक दिन बीबी ने नौकर से कहा कि कचहरी जाकर मुख्तार साहब से कहो कि घर मे आटा और लकडी कतई नही हैं सो आटा और लकडी दिलवा दें। नौकर कचहरी गया और उसने मुख्तार साहब को देखकर दूर से ही आवाज लगायी कि मुख्तार साहब, बीबीजी ने कहा है कि घर मे आटा और लकडी नही हैं। मुख्तार साहब को बडा बुरा लगा और उन्होने घर आकर नौकर को समझाया कि कचहरी जाकर बेवकूफ की तरह मत चिल्लाया कर, जो कुछ कहना हो अकेले मे धीरे से कहा कर। नौकर ने कहा हुजूर, बहुत अच्छा।

सयोग से एक दिन मुख्तार साहब के घर मे आग लग गई। बीबी ने

नौकर से कहा कि फौरन जाकर मुख्तार साहब को खबर करो कि आग बुझाने का प्रबन्ध इसी वक्त करें। नौकर गया तो उसने देखा कि मुख्तार साहब अन्य लोगों से घिरे बैठे हैं और काम में लगे हुए हैं। नौकर एक ओर बैठ गया। शाम को जब सारे लोग चले गये तो एकान्त पाकर नौकर ने कहा कि मुख्तार साहब, आपके घर में आग लग गई है मैं कब से आया बैठा हूँ, लेकिन आपके हुक्म के मुताबिक मैंने एकान्त में ही आपसे यह बात कही है।

नौकर की बात सुनकर मुख्तार साहब ने सिर पीट लिया और उसी वक्त उसको छुट्टी दे दी।

● बण्यो वणायो घर ढहग्यो

एक तेली तेल से भरा हुआ घडा लिये जा रहा था। रास्ते में उसे शेखचिल्ली मिल गया। तेली ने शेखचिल्ली से कहा कि यह घडा तुम बाजार तक ले चलो मैं तुम्हें दो आने दे दूँगा। शेखचिल्ली ने घडा अपने सिर पर ले लिया और तेली के साथ चल पडा।

चलते चलते शेखचिल्ली सोचने लगा कि तेली से दो आने लेकर अंडे लाऊँगा। अंडा में से बच्चे निकलेंगे और थोडे ही समय में वे अच्छी मुर्गियाँ बन जाएँगी। उन मुर्गियों को बेचकर एक बकरी ले आऊँगा। बकरी के बहुत से बच्चे होंगे, उन सबको बेचकर भैंस लाऊँगा और फिर भैंस बेचकर बीबी लाऊँगा। बीबी के बच्चे होंगे और वे आकर मुझसे कहेंगे कि अब्बाजान चलो अम्मा खाना खाने को बुलाती हैं। लेकिन मैं बडी ऐंठ के साथ एक बच्चे का चाँटा जडते हुए कहूँगा कि चल यें भाग जा यहाँ से, अभी नहीं खाऐंगे। शेखचिल्ली इन सब विचारों में इतना डूब गया था कि उसे घडे का ध्यान ही नहीं रहा और बच्चे को चाँटा लगाने के लिए जैसे ही उसने हरकत की, तेल का घडा धम्म से जमीन पर आ गिरा। तेली बिगड कर बोला कि अरे यह क्या कर दिया, तेल का घडा फाड दिया ? इस पर शेखचिल्ली अफसोस जाहिर करता हुआ बोला कि—तेरा तो घडा ही फूटा है यहाँ तो बना बनाया घर ही ढह गया।

● भगतण की सीख

एक सेठ बहुत मालदार था। सेठ का बेटा वेश्या के यहाँ जाने लगा और धीरे-धीरे उसने सारा धन वेश्या को ठगा दिया। जब उसके पास कुछ भी नही रहा तो वेश्या ने सेठ के बेटे को घर से निकाल दिया। सेठ के बेटे को बडा दुख हुआ और उसने वेश्या से कहा कि मैंने तुझे बेशुमार धन दिया है सो यादगार के लिए मुझे कोई सहिदानी तो दो। वेश्या ने एक बाल उखाड कर सेठ के बेटे को दे दिया।

सेठ का बेटा पछताता हुआ वेश्या के घर से चला। वह सोचने लगा कि इतना धन खोकर मुझे एक बाल मिला है सो इसे यत्न से रखना चाहिए। यह सोचकर वह सुनार के पास गया और बोला कि इस बाल को एक तावीज मे मढ दो। सुनार ने सोचा कि यह बाल अवश्य ही करामाती है सो बाल को मुँह मे पकड कर तावीज को ठीक करने लगा। सुनार ने बाल का थोडा सा हिस्सा अपने मुँह मे कुतर कर रख लिया और शेष को तावीज मे मढ दिया। अब सुनार ने सोचा कि सेठ के बेटे से बाल के गुण पूछने चाहिए। सुनार के पूछने पर सेठ के बेटे ने आदि से अत तक की सारी घटना कह सुनाई और बोला कि यह बाल उस निर्लज्ज वेश्या ने याद स्वरूप दिया है। बाल की कहानी सुनकर सुनार को ग्लानि हो गई और वह थू-थू करके बाल के टुकडे को थूकने लगा।

● बिरामण को धरम है

एक ब्राह्मण एक सेठ के यहाँ आया जाया करता था। सेठ कजूस था। एक दिन ब्राह्मण आया तो सेठ ने पूछा कि क्यो पडितजी, स्नान कर आये क्या? ब्राह्मण ने स्नान नही किया था इसलिए उसने सकोच के साथ कहा कि नही सेठजी, स्नान नही किया है। लेकिन ब्राह्मण के मन म यह धोखा हुआ कि यदि आज स्नान करके आया होता तो सेठ अवश्य ही कुछ न कुछ देता।

सेठ से कुछ पाने की आशा मे ब्राह्मण दूसरे दिन तडके ही उठा और नहा-धोकर तिलक छापा लगाकर प्रसन्न चित्त सेठ के यहाँ पहुँच गया। सेठ ने ब्राह्मण से पूछा कि क्या पडितजी स्नान कर आये? पडितजी ने तपाक

से उत्तर दिया कि हाँ सेठ साहब, स्नान ध्यान करके आ रहा हूँ। ब्राह्मण की बात सुनकर सेठ ने निर्लिप्त भाव से कहा अच्छा किया पंडितजी, नहाना धोना तो ब्राह्मण का धर्म है।

यों कहकर सेठ अपने काम में लग गया और ब्राह्मण पछताता हुआ अपने घर लौटा कि व्यर्थ ही बड़े तड़के उठा और ऐसी ठंड में स्नान किया।

● जीकारै बतलावणो

नववधू घर में आयी तो सास ने बहू को समझाया कि अपने घर की यह रीति है कि सबको 'जी' (आदर सूचक शब्द) कह कर बतलाना चाहिए। बहू ने सास की आज्ञा शिरोधार्य कर ली।

एक दिन भैंस के पाडे ने बहू की नयी साड़ी पर 'पोटा' (गोबर) कर दिया। बहू इस बात का उपालंभ देने के लिए सास के पास पहुँची और कहने लगी, "सासुजी, थारीजी, भैंसजी कोजी पाडोजी म्हारीजी नयीजी साडीजी परजी पोटोजी करजी दियोजी।" बहू की बात सुनकर सास ने बहू से कहा कि बहू, बावली तो नहीं बन गई है, इस प्रकार क्या कह रही है? बहू ने कहा कि सास जी, आपने ही तो कहा था कि सबको 'जी' कहकर पुकारना चाहिए, मैं तो आपकी आज्ञा का पालन ही कर रही हूँ।

● मूंग ल्यो मूंग

एक सेठ ने नफा कमाने के लिए मूग खरीदे। लेकिन संयोग से मूंगों में बहुत घाटा लग गया। सेठ का मन बहुत खिन्न हुआ। वह अपनी ससुराल गया तो सास ने दामाद के लिए मूंग चावल बनवाये। दामाद जीमने के लिए बैठा और सास जिमाने लगी। सास बारबार अपने दामाद से कहती कि कुँअरजी मूंग लीजिए मूंग। दो चार बार तो सेठ ने ध्यान नहीं दिया लेकिन फिर उसने सोचा कि मुझे मूंगों में बड़ी हानि उठानी पड़ी है इसलिए शायद सास ताना मार रही है। अतएव अगली बार जब सास ने दामाद से कहा कि कुँअरजी, मूंग लो तो सेठ तुनक कर बोला कि सासजी, क्या ताना मार रही हो, मूंग लिये नहीं या लेंगे नहीं, घाटा-नफा तो यों ही चलता रहता है।

● आप ई ल्यासी

एक ठाकुर वस नाम का ठाकुर था। घर में दो जून खाने को रोटियाँ भी नहीं थीं। वृद्ध हो चला था लेकिन बाल बच्चा भी नहीं हुआ था। वृद्धावस्था मे ठकुरानी गर्भवती हुई। ठाकुर मजदूरी करके किसी प्रकार पेट भरता था।

एक दिन ठाकुर तालाब से पानी का घडा भरकर घर लौट रहा था कि सामने से एक औरत आती हुई मिली। औरत ने ठाकुर से कहा कि ठाकुरां, आपके घर तो कुंअर जन्मा है और आप यहाँ घूमते हैं। औरत की बात सुनकर ठाकुर ने कधे पर से घडा उतार कर वहीं रख दिया और बोला कि जब लडका हो गया है तो वह अपने आप ही पानी लाएगा, मैं तो बहुत दिना तक पानी लाता रहा और ठाकुर घडे को वहीं रख कर अपने घर आ गया।

● मोठाँ को घाटो

एक सेठ के बेटे ने नफा कमाने के लिए मोठ भरे लेकिन मोठ का भाव बहुत गिर गया। सेठ के बेटे ने नौ सेर के भाव से मोठ खरीदे थे लेकिन मोठ का भाव गिरकर नौघडी (एक घडी=५ सेर) अर्थात् एक मन पाँच सेर का हो गया। तब उसने अपने चाचा से कहा, 'देखो चाचा, मोठा के करी लिया था नौ सैर बेच्या नौ घडी।" मोठों के घाटे मे सेठ के बेटे की सारी पूजी खत्म हो गई और सारा जेवर भी चला गया लेकिन घाटे की पूर्ति फिर भी नहीं हुई। तब सेठ का बेटा पश्चाताप करता हुआ बोला

> तिलडी तोड तिलां मे दीनी,
> मोहन माला मोठां मे।
> सीस फूल साई मे दीन्यो,
> औरूँ घाटो मोठां में॥

● लिछमी थिरकोनी रेवै

एक सेठ बहुत मालदार था। एक दिन सेठ को लक्ष्मी सपने में दिखलायी दी और उसने सेठ से कहा कि अब मैं तुम्हारे यहाँ से जाऊँगी। सेठ ने लक्ष्मी से प्रार्थना की कि तुम मेरे यहाँ अधिक नहीं तो छ महीने और ठहर जाओ। लक्ष्मी ने सेठ की बात मानकर उसके यहाँ छ मास और रहना स्वीकार कर लिया।

सेठ ने हरिद्वार में गंगा के किनारे एक हवेली बनवायी और अपने सारे धन को जवाहरातों में बदल कर जवाहरातों को लकड़ी के शहतीरों में भरवा दिया और फिर उन शहतीरों को हवेली में लगा दिया। अब सेठ निश्चित हो गया कि मेरा धन कहीं नहीं जा सकता। लेकिन छ महीने पूरे होने पर सेठ को फिर सपने में लक्ष्मी दिखलायी दी और उसने सेठ से कहा कि तुम्हारी माँग पूरी हो गई है अब मैं तुम्हारे यहाँ से अमुक हलवाई के यहाँ जाऊँगी।

दूसरे ही दिन वर्षा के साथ बड़ा भयंकर तूफान आया। गंगा का पानी बहुत दूर तक फैल गया। सेठ का मकान गिर गया और जवाहरातों से भरे शहतीर गंगा में बह चले। सेठ को बड़ा रंज हुआ। वह शहतीरों के पीछे पीछे दौड़ पड़ा। शहतीर बहते-बहते किनारे लगे और मछुवों ने शहतीरों को बाहर निकाल लिया। वहीं उक्त हलवाई ने अपनी दुकान कर रखी थी। मछुवों ने ये शहतीर हलवाई को बेच दिये। पीछे पीछे सेठ आया और उसने हलवाई को आदि से अन्त तक की सारी घटना कह सुनायी।

सेठ की बात सुनकर हलवाई बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने सेठ से कहा कि मैं आधा धन तुमको दे दूँगा। लेकिन सेठ ने उत्तर दिया कि अब यह धन मेरे पास नहीं रहेगा यदि रहता तो जाता ही क्यों। हलवाई सेठ को भोजन करवाने के लिए अपने घर ले गया। हलवाई ने प्रसन्न मन सेठ को भोजन करवाया और राह में खाने के लिए हलवाई ने सेठ को चार लड्डू भी दिये। हलवाई ने चारों लड्डुओं में चार कीमती लाल छुपा दिये, लेकिन सेठ को इसका कुछ पता नहीं था। सेठ लड्डू लेकर अपने घर

की ओर चला। नदी पार करने के लिए उसने एक नाव किराये पर ली और घर पहुँचा। घर पहुँचकर सेठ ने देखा कि यहाँ तो कुछ भी नहीं रह गया है। सारी चीजों को चोर उठा ले गये थे। सेठ के पास नाविकों को देने के लिए पैसे भी नहीं थे अतः उसने चारों लड्डू मजदूरी स्वरूप नाविकों को दे दिये। नाविकों ने सोचा कि लड्डू खाकर क्या होगा यदि इन लड्डुओं के बदले अनाज ले जाएँ तो सारे बाल बच्चों का पेट भर जाएगा। यों सोच कर उन्होंने चारों लड्डू लाकर उसी हलवाई को दे दिये और उनके बदले में अनाज ले गये। हलवाई ने सोचा कि यह लक्ष्मी मेरे भाग्य में लिखी है इसे दूसरा कौन ले सकता है?

● लग-लग घोटा धाम दड़ा-दड़

एक गाँव में दो भाई रहते थे। पहले तो दोनों में बड़ा प्रेम था लेकिन जब दोनों के विवाह हो गये तो देवरानी जेठानी में खटपट चलने लगी। फलतः दोनों भाई अलग-अलग रहने लगे। एक दिन छोटे ने अपनी स्त्री से कहा कि मैं कमाने के लिए जा रहा हूँ सो मुझे चूरमे के चार लड्डू बनादे।

चूरमे के लड्डू लेकर वह कमाने चला। चलते-चलते भूख लग आई तो वह एक कुँएँ पर बैठ गया। उसने चारों लड्डू अपने सामने रखे और फिर बोला कि एक खाऊँ, दो खाऊँ, तीन खाऊँ, या चारों को खा जाऊँ? उस कुएँ में चार भूत रहते थे। उन्होंने सोचा कि आज हम चारों का काल आ गया है। चारों भूत हाथ जोड़े उसके सामने आकर खड़े हो गये और उससे प्रार्थना करने लगे कि हमको मत खाओ, हम तुम्हें चार अलभ्य वस्तुएँ देंगे। छोटा पहले तो उनको देखकर डरा लेकिन फिर उसने हिम्मत कर ली। उसने भूतों को डाँटते हुए कहा कि जल्दी से लाओ, देखूँ तो क्या चीजें हैं।

भूतों ने उसे एक चलनी, एक कड़ाही, एक दरी और एक लग-लग घोटा दिया। चलनी से माँगने पर वह मनचाहा अनाज देती थी और कड़ाही माँगने पर मनचाही मिठाइयाँ दे देती थी। दरी पर बैठ कर दरी को हुक्म देने से वह अपने ऊपर बैठने वाले को चाहे जहाँ ले जाती थी और लग-

लग घोटे को आज्ञा मिलते ही वह चाहे जिसको पीट देता था। भूतों ने उसको सारी क्रिया बतला दी और फिर वे चारा कुएँ में चले गये।

चारो चीजें पाकर वह खुश होता हुआ घर की ओर चल पडा। रास्ते में वह एक बुढिया के घर ठहरा। बुढिया ने कहा कि मेरे पास खाने पीने को कुछ भी नही है। छोटे ने कहा कि तुम इसकी चिन्ता मत करो। छोटे ने चलनी से अनाज मांगा तो वहां अनाज का ढेर लग गया, कडाही से मिठाई मांगी तो मिठाइयो का ढेर लग गया। दोनों खा पीकर सो रहे लेकिन बुढिया को नींद नही आई। छोटे के सो जाने पर उसने कडाही और चलनी बदल ली। छोटा सवेरे उन बदली हुई चीजो को लेकर ही चल पडा। घर पहुँचने पर छोटे ने अपनी वहू से कहा कि मैं ऐसी चलनी और कडाही लाया हूँ जो मांगने पर मनचाहा अनाज और मिठाई देती हैं। लेकिन जब वह अनाज और मिठाई मांगने बैठा तो उसे कुछ भी नहीं मिला। छोटे की वहू खिलखिला कर हँस पडी। छोटा जान गया कि यह सब बुढिया की कारस्तानी है। वह लग-लग घोटा लेकर बुढिया के घर पहुँचा और उसे मार-पीट कर असली कडाही और चलनी ले आया। अब वह खूब आराम से रहने लगा।

एक बार छोटा अपनी दरी पर बैठकर हरिद्वार की सैर को गया तो बडे की वहू ने कोतवाल से शिकायत की कि मेरा देवर न जाने कहाँ से इतना धन मारकर लाया है। हरिद्वार से लौटते ही कोतवाल के आदमी छोटे को पकडकर कोतवाली ले गये। छोटे ने सारी बातें सचसच बतला दी लेकिन कोतवाल नही माना। तब छोटे ने लग-लग घोटे से कहा, "लग लग घोटा, धाम दडा दड" लग-लग घोटे ने कोतवाल की मरम्मत करनी शुरू की। अब कोतवाल को यह बात जँच गई कि यह आदमी वास्तव में ही भूतों से सब चीजें लाया है। कोतवाल ने छोटे से माफी मांगी और उसे घर जाने के लिए कह दिया।

● गुरू-चेलो

एक गुरु अपने शिष्य के साथ एक कमरे में सो रहा था। गुरु ने

चेले से कहा कि जरा बाहर देखकर तो आओ कि वर्षा हो रही है कि नहीं। लेकिन चेला आलसी था उसने कहा, "आयी थी विल्ली, पूंछ थी गीली" अर्थात् बिल्ली अभी यहां आयी थी सो उसकी पूंछ भीगी हुई थी, इससे यह मालूम होता है कि—बाहर वर्षा हो रही है। तब गुरु ने चेले से कहा कि दीपक बुझा दो। गुरु की आज्ञा सुनकर चेला बोला कि गुरुजी आँखें बंद कर लीजिए और दीपक बुझ गया समझ लीजिए। तब गुरु ने चेले से कहा कि अच्छा कमरे के किवाड तो बंद कर लो। गुरु का हुक्म सुन कर चेला तपाक से बोला, गुरुजी दो काम मैंने कर दिये, एक आप कर दीजिए।

● राणी कै घुचरियो जलम्यो

एक राजा के दो रानियाँ थी, लेकिन दोनों के कोई संतान नहीं हुई तो राजा ने तीसरा विवाह और कर लिया। तीसरी रानी गर्भवती हुई और यथा समय उसने एक सुन्दर राजकुमार को जन्म दिया। लेकिन दोनों रानियों को इससे बड़ी डाह हुई और उन्होंने पूर्व योजना के अनुसार छल से नवजात शिशु को उठवाकर घूरे पर फिकवा दिया और उसकी जगह कुतिया का एक पिल्ला लाकर सुला दिया। राजा को जब मालूम हुआ कि नयी रानी को पिल्ला जाया है तो उसे नयी रानी से बड़ी घृणा हो गई और उसने नयी रानी को दुहाग दे दिया।

उधर नयी रानी की दासी ने नन्हे राजकुमार को घूरे पर से उठाकर एक खाती के घर पहुँचा दिया। खाती के भी कोई संतान नहीं थी अत. वह राजकुमार को बड़े लाड से पालने लगा। जब राजकुमार तीन-चार साल का हो गया तो खाती ने उसे एक काठ का घोडा बना दिया। एक दिन दासी लडके को महल में ले गई। लडका अपने घोडे से कहने लगा कि मेरे प्यारे घोडे, मैं तुझ पर सवार होता हूँ, तू आकाश मे उड चल। राजा ने भी लडके की यह बात सुनी। बच्चे की नादानी पर उसने हँसते हुए कहा कि कहीं काठ का घोडा भी उडता है ? इस पर पास ही खड़ी दासी ने राजा से कहा कि पृथ्वीनाथ, जब रानी के पिल्ला जन्म ले सकता

है तो फिर काठ का घोड़ा क्यों नहीं उड़ सकता ? राजा को कोई बात याद आई और वह गंभीर हो गया। उसने दासी से पूछा कि सच-सच बतला यह क्या बात है ? दासी ने सारा रहस्य खोल दिया। राजा को बड़ी प्रसन्नता हुई। उसने राजकुमार को उठाकर अपनी गोद में ले लिया। बड़ी रानियों की दुष्टता पर उसे बड़ा क्रोध आया और उसने दोनों को दुहाग दे दिया। छोटी रानी को राजा ने अपनी पटरानी बना ली और फिर उसने दासी और खाती को भी बड़ा पुरस्कार दिया।

● राजा वीर विकरमादीत

एक साहूकार के चार बेटे थे। वे कमाने के लिए दिसावर जाने लगे तो अपनी माँ से कह गये कि बहुओं को घर से बाहर मत निकलने देना। सास बहुओं को घर से बाहर नहीं जाने देती थी। लेकिन कुछ दिनों बाद सावन की तीज आयी। मोहल्ले की सारी स्त्रियाँ नये कपड़े पहनकर और शृंगार कर के मेले में जाने लगी तो बहुओं का भी मन ललचाया और वे सास के मना करने पर भी मेले में चली गई। मेले में से एक राक्षस छोटी बहू को उठा ले गया। बेचारी सास बहुत रोयी कल्पी लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। बेटे घर आये तो सास ने बहाना किया कि छोटी बहू पीहर गई है लेकिन आखिर सारा रहस्य खुल गया। साहूकार का छोटा बेटा अपनी बहू को लाने के लिए राक्षस के घर पहुँचा लेकिन राक्षस ने उसे पत्थर का बना दिया। उसके तीनों बड़े भाई भी राक्षस से बदला लेने के लिए गये लेकिन वे भी पत्थर के बन गये। घर में अब चार स्त्रियाँ ही शेष रहीं। एक रात को साम घर में बैठी रो रही थी कि राजा विक्रमादित्य पहरा देता हुआ उधर आ निकला। पूछने पर साहूकार की स्त्री ने सारी बात आदि से अंत तक राजा को बतला दी। राजा ने साहूकार की स्त्री को धीरज बँधाया और फिर महल को लौट गया। सारा कार्य मंत्री को सम्हलाकर राजा राक्षस की खोज में चल पड़ा।

चलते-चलते वह एक दूसरे राक्षस के घर पहुँच गया। घर में उस वक्त राक्षस की युवा लडकी ही थी। उसने राजा से कहा कि तू यहाँ क्यो आया, मेरा बाप आते ही तुझे मारकर खा जाएगा। राजा ने कहा कि इसका उपाय तू ही कर। राक्षस की बेटी ने राजा को 'मोम की मक्खी' बनाकर दीवार पर चिपका दिया। राक्षस शाम को घर आया तो उसने अपनी बेटी से कहा कि आज तो मनुष्य की गन्ध आ रही है। बेटी ने तुनककर कहा कि यहाँ तो मैं बैठी हूँ सो मुझे खाले। तू ने बारह बारह कोस में जीवित मनुष्य को नही छोडा फिर मेरे पास कौन आता ? मैं विवाह योग्य हो गई लेकिन तेरे से इतना नही बनता कि एक आदमी को जीवित छोड देता और मेरा विवाह उसके साथ कर देता। राक्षस ने अपनी भूल स्वीकार की और फिर अपनी बेटी से बोला कि तू किसी आदमी को ले आ, मैं उसी के साथ तेरा विवाह कर दूँगा। राक्षस की बेटी ने अपने बाप से वचन लेकर राजा को प्रकट कर दिया। राक्षस का मन तो बहुत चला लेकिन वचनबद्ध होने के कारण उसने अपनी बेटी का विवाह राजा के साथ कर दिया। दूसरे दिन राक्षस बाहर गया तो राजा ने राक्षस की बेटी को अपने आने का प्रयोजन बतलाया। राक्षस की बेटी ने कहा कि वह राक्षस बडा बलवान है। फिर उसने राजा को बतलाया कि राक्षस के घर से थोडी दूर पर एक बुढिया की झोपडी है, तुम उस बुढिया के पास चले जाओ, वह तुम्हे सारी तरकीब बतला देगी।

राजा बुढिया के पास पहुँचा। बुढिया बडबडाने लगी तो राजा ने उसे सोने की एक मोहर दे दी। बुढिया राजी हो गई और उसने राक्षस के घर में जाने की युक्ति राजा को बतला दी। राक्षस सवेरा होने से पहले ही बाहर चला जाता था और शाम को घर आता था। दूसरे दिन राजा उस राक्षस के घर मे गया। साहूकार के बेटे की बहू आँगन में बैठी रो रही थी और चारो लडके पत्थर के बुत बने खडे थे। राजा ने बहू को धीरज बँधाया और कहा कि राक्षस जब आये तो उससे पूछना कि तेरी मृत्यु कैसे होगी। राजा फिर बुढिया के घर चला गया।

शाम को राक्षस आया तो उसने देखा कि साहूकार के बेटे की बहू आँगन में लोट-पोट हो रही है तथा हाय-तोबा कर रही है। राक्षस से पूछने पर उसने कहा कि मेरे पेट में बड़ा दर्द हो रहा है। राक्षस ने बहुत उपाय किये लेकिन दर्द नही गया।

साहूकार के बेटे की बहू ने राक्षस के कहा कि तुम सवेरा होते ही चले जाते हो, कहीं मर गये तो इस उजाड जगल मे मेरा रक्षक कौन होगा? राक्षस ने हँस कर कहा कि मेरी मृत्यु बाहर नही पड़ी है, तीन समुद्र पार एक बडा पर्वत है। पर्वत की एक बडी गुफा में एक पिंजडा टँगा है, पिंजडे में एक सुग्गा बैठा है, यदि उस सुग्गे को कोई मार डाले तो मैं मर सकता हूँ, लेकिन वहाँ कोई नही पहुँच सकता। यों कहकर राक्षस बड़े जोर से हँसा।

दूसरे दिन राजा आया तो बहू ने राजा को सारी बात बतला दी। बडी मुसीबतों को झेलता हुआ राजा उस पर्वत पर पहुँचा। उसने सुग्गे का पिंजडा अपने हाथ मे लिया और वहाँ से लौट पडा। जब से राजा के हाथ में पिंजडा आया था, राक्षस का मन डाँवाडोल हो रहा था। अब वह बाहर नहीं जाता था।

पिंजडा लेकर राजा उस राक्षस के घर पहुँचा। उसने राक्षस से कहा कि इन चारो मूर्तियो को फिर से आदमी बना दे अन्यथा तुझे अभी मार डालूँगा तेरी मृत्यु मेरे हाथ में है। राक्षस लाचार था, उसने चारो को आदमी बना दिया। अब राजा ने कहा कि इस स्त्री को इन चारो के साथ भज दे। मृत्यु के भय से राक्षस ने राजा के कह अनुसार सब काम कर दिये। तब राजा ने सुग्गे की गर्दन मरोड दी और राक्षस धड़ाम से जमीन पर गिर गया उसके प्राण पखेरू उड गये।

तब राजा विक्रमादित्य साहूकार के बेटो, छोटे बेटे की बहू और अपनी विवाहिता राक्षसी को लेकर घर आ गया और सब आनन्द-पूर्वक रहने लगे।

● गगा और जमना

गगा और जमुना दो बहने थी। एक दिन वे एक साहूकार के खेत से होकर गुजर रही थी कि जमुना ने गेहूँ की एक बाल तोड ली। गगा ने जमुना से कहा कि यह तुमने क्या किया? साहूकार से बिना पूछे उसके खेत में से बाल तोडली, तुम्हे इसका प्रायश्चित्त करना होगा। गेहूँ की बाल में बारह दाने गेहूँ के निकले। गगा ने कहा कि तुम साहूकार के घर जाकर बारह वर्ष उसकी नौकरी करो, तभी इस पाप का प्रायश्चित्त होगा।

जमुना साहूकार के घर गई और साहूकार से बोली कि मुझे नौकरानी रख लो लेकिन मैं चार काम नही करूँगी एक तो जूठे बरतन नही मलूँगी, दूसरे सेज नही बिछाऊँगी, तीसरे झाड़ू नही लगाऊँगी और चौथे दीपक नही जलाऊँगी। साहूकार ने चारो बातें मान ली और जमुना वहाँ नौकरी करने लगी।

बारह वर्ष बीतने पर कुभ का मेला आया तो साहूकार अपनी पत्नी के सहित कुभ स्नान को चला। जमुना ने कहा कि वहाँ मेले में मेरी बहिन गगा तुम्हे मिलेगी सो यह सोने का टका उसको दे देना, लेकिन जब वह गोरी-गोरी कलाइयों में हरे रग का चूडा पहने हाथ पसारकर ले तभी देना अन्यथा नही। यों कहकर जमुना ने सोने का टका साहूकार को दे दिया।

मेले में गगा ने गोरी-गोरी कलाइयों में हरा-हरा चूडा पहने हाथ पसारकर जमुना का दिया हुआ टका साहूकार से ले लिया और साथ ही साहूकार से कहा कि मेरी बहिन जमुना से कह देना कि बारह वर्ष पूरे हो गये है सो वह आ जाए। साहूकार ने घर जाकर सारी बात जमुना को कह सुनायी। जमुना उस वक्त पानी-घर में पानी भर रही थी। साहूकार की बात सुनकर जमुना वही सहस्र धारा होकर बहने लगी। अब साहूकार और उसकी स्त्री ने जाना कि जमुना कोई साधारण स्त्री न थी। वह तो साक्षात् जमुना जी थी अतः वे पश्चात्ताप करने लगे कि हे जमुना माता,

हमने तुम से बारह वर्षों तक सेवा करवायी तो हमारा प्रायश्चित्त कैसे उतरेगा। यों कहकर साहूकार दम्पति औंधे मुँह पड़ गये।

इधर जमुना गयी तो गंगा ने पूछा कि तू साहूकारदम्पति को धीरज देकर आयी है कि नहीं? जमुना ने कहा कि मैं तो जैसे खड़ी थी वैसे ही आ गई। इस पर गंगा ने कहा कि तू साहूकार दंपति को दिलासा देकर आ। तब जमुना माई ने साहूकार दंपत्ति को सपने में दर्शन दिये और कहा कि तुम दोनों उठो, तुम्हें कोई पाप नहीं लगा है, मैंने तुम्हारे खेत में से एक बाल तोड़ ली थी उसी का प्रायश्चित्त करने के लिए तुम्हारे यहाँ आयी थी, तुम दोनों की मुक्ति हो जाएगी। तब वे दोनों प्रसन्न मन से उठे और उनका घर धन-धान्य से भर गया।

● हणमान जी की सेवा

एक स्त्री नित्य हनुमानजी के मन्दिर जाया करती। वह सवा सेर आटे का रोटा पकाकर अपने साथ ले जाती और हनुमानजी से कहती

> "लाल लंगोटो, काँधै सोटो,
> ल्यो बालाजी, खाओ रोटो।
> मैं थांनै देऊँ तणापै में,
> थे मनै देयो बुढ़ापै मे॥

यों कहकर वह हनुमान जी को भोग लगा दिया करती। यों करते-करते बहुत वर्ष बीत गये। स्त्री बूढ़ी हो चली, घर में बहू आयी तो उसने सास से कहा कि सासजी, हम इस प्रकार नित्य सवा सेर का रोटा नहीं दे सकते। बहू ने सास को अलग एक झोंपड़ी में बिठला दिया। बेचारी बुढ़िया भूखी ही सो रही। दूसरे दिन हनुमानजी आये और बुढ़िया से बोले, बुढ़िया माई, क्यों सो रही है? "उठ! लाल लंगोटो, काँधै सोटो, हाथ में चूरमो रोटो, ले खाले। तू मनै दियो तणापै मे (तरुणावस्थामें) मैं तनै देऊँ बुढ़ापै में।" बुढ़िया उठ बैठी और उसने चूरमा खा लिया। अब हनुमानजी नित्य आते और बुढ़िया को रोटी मिल जाती। एक दिन बहू ने अपने खसम से कहा

कि जाओ, देखो तो सही कि बुढिया मर गई या जीवित है। बच्चों ने आकर अपनी माँ से कहा कि माँ, दादी तो मोटी ताजी बैठी है। बहू के घर में अन्नदाता बैर पड गये अर्थात् घर में खाने को अनाज का दाना भी नहीं रहा तो बहू सास के पास गई और सारी बात पूछने लगी। सास ने कहा कि तूने हनुमान जी महाराज का रोटा बद कर दिया तेरे घर में टोटा आ गया और मुझे तो हनुमानजी नित्य रोटा खिला जाते हैं।

तब बहू ने सास के पैर पकडकर माफी माँगी और बोली कि आप घर चलें, आप भी हनुमानजी को प्रसाद चढाएँ और हम सब भी चढ़ाया करेंगे।

● इल्ली-घुणियों

एक इल्ली थी और एक था घुन। इल्ली ने घुन से कहा कि आओ कार्तिक स्नान करें। घुन ने उत्तर दिया कि तू तो दाख, छुहारा में रहती है लेकिन मैं तो मोठों में ही रहता हूँ सो मैं तो हरे-हरे सिट्टे खाकर और वर्षा का पानी पीकर ही रह लूँगा, तुम कार्तिक स्नान का पुण्य लूटो।

राजा की लडकी हर प्रात कार्तिक स्नान को जाती थी सो इल्ली उसके पल्ले से चिपककर उसके साथ नित्य स्नान कर आती। कार्तिक का महीना पूरा हुआ और कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा को इल्ली और घुन दोनों मर गये। अगले जन्म में इल्ली तो राजा के घर लडकी हुई और घुन उसी राजा के यहाँ मेंढा बना। राजा की लडकी सयानी हुई। दूसरे राजा से उसका विवाह हो गया। जब राजा की लडकी विदा होने लगी तो उसके रथ के बैल अड गये। राजा ने राजकुमारी से पूछा कि बेटी तुम्हें क्या चाहिए ? राजकुमारी ने कहा कि यह मेंढा मुझे दे दीजिये। राजा ने सोने की साँकल से मेंढे को रथ से बाँध दिया।

नयी रानी महल में चली गई और मेंढे को महल के नीचे सीढियों के पास बाँध दिया। रानी जब महल से उतरती तो मेंढा रानी से कहता

रिमको झिमको श्याम सुन्दर बाई,
थोड़ो पाणीड़ो प्याई ये पाणीडो प्याई।

इस पर रानी उत्तर देती

> मैं कऊँ थी रे, तू सुणे थी रे
> न्हाई म्हारा धुणिया कातिकड़ो न्हाईरे
> कातिकड़ो न्हाई।

अर्थात् मैं तुमसे कहा करती कि तू कार्तिक स्नान कर, लेकिन तूने नहीं किया।

इस प्रकार उन दोनों में नित्य वार्तालाप होता। रानी की देवरानी—जेठानियों ने राजा के कान भरे कि राजाजी, आप रानी लाये हैं अथवा कोई जादूगरनी? मनुष्यों से तो बातें सभी करते हैं लेकिन यह तो जानवरों से बात करती है। राजा ने छुपकर रानी और मेंढे की बातें सुनीं फिर वह रानी से बोला कि सच-सच बतला यह क्या बात है अन्यथा तुझे जान से मारूँगा। रानी ने आदि से अंत तक सारी बात कह सुनायी। राजा ने पूछा कि क्या वास्तव में कार्तिक स्नान का इतना पुण्य होता है? रानी ने कहा कि हाँ। इस पर राजा बोला कि चलो हम दोनों भी जाड़े से कार्तिक स्नान करेंगे ताकि अगले जन्म में हमें और भी अधिक पुण्य मिलेगा।

●गाय को पुन्न

एक सेठ बड़ा कंजूस था। उसने अपने जीवन में कभी दान-पुण्य नहीं किया अलबत्ता उसने एक ब्राह्मण को एक गाय दान में दी जो सवा पहर जीने के बाद मर गई। मरने के बाद सेठ को यमराज के सामने पेश किया गया। यमराज ने खाते-बही देखने के बाद सेठ से कहा कि तुमने अपने जीवन में कोई पुण्य नहीं किया सिर्फ एक ब्राह्मण को एक गाय दान दी थी जो सवा पहर जीने के बाद मर गई सो वह गाय हाजिर है सवा पहर तक तुम इससे जो चाहो काम ले सकते हो।

यमराज की बात सुनकर सेठ ने गाय से कहा कि गऊ माता, तुम इस यमराज को अपने सींगों में उठाओ और पटको तथा सवा पहर तक

यही क्रम चलने दो। गाय धर्मराज की ओर लपकी तो धर्मराज भय के मारे भाग खडे हुए। आगे-आगे धर्मराज, पीछे-पीछे गाय और उन दोनो के पीछे सेठ भागा। भागते भागते धर्मराज विष्णु भगवान के पास पहुँचा, शेष दोनो भी वही पहुँच गये। विष्णु भगवान ने धर्मराज से पूछा कि आज यह क्या बात है? धर्मराज ने हाँफते हाँफते सक्षेप में सारी बात कह दी। तब विष्णु भगवान ने सेठ से कहा कि सवा पहर बीत गया, अब तुम वापिस नरक में जाओ। विष्णु भगवान की बात सुनकर सेठ ने हाथ जोड कर कहा कि प्रभो, आपके दर्शन से तो जन्म-जन्मान्तर के पाप कट जाते हैं तो क्या मेरे पाप नही कट गए? अब भला मैं किसलिए नरक में जाऊँगा। तब भगवान विष्णु ने सेठ को स्वर्ग में भेज दिया।

●चालाक गादडो

जगल मे एक ऊँट मर गया था। एक गीदड मास के लालच में ऊँट के मृत शरीर में घुस गया और वही बैठा-बैठा कई दिन तक मास खाता रहा। मास खा खाकर गीदड मोटा हो गया। अब उसन सोचा कि चलो बाहर निकलें, लेकिन ऊँट का चमडा धूप पडने से सिकुडकर बहुत सख्त हो गया था और लाख कोशिश करने पर भी गीदड बाहर नही निकल सका। गीदड न सोचा कि अब तो यही मरना पडेगा।

थोडी देर बाद गीदड ने देखा कि चार पाच आदमी उसी रास्ते से गुजर रहे हैं। गीदड ने उन्हे पुकारा और जब व पास आ गये तो उनसे बोला कि तुम सब मिलकर मुझे बाहर निकालो मैं तुम्हे एक बहुत ही जोरदार बात बतलाऊँगा। चारो पाँचो आदमियो न पानी क घडे लाकर मृत ऊँट पर डाले जिससे उसका चमडा कुछ भीग गया। फिर उन्होंने बडी कोशिश करके गीदड को बाहर निकाला। गीदड ने बाहर निकल कर चैन की सास ली और फिर बोला कि सुनो बात इतनी ही कहनी है कि भूलकर भी ऊँट के इस चमडे में मत घुस जाना अन्यथा तुम से निकला

नहीं जाएगा । या कहकर गीदड एक ओर को भाग गया और सब मुँह बाये ताकते रह गये ।

● भली याद दिराई

एक मियाँ जी अपनी बीवी के सामने बहुत शेखी बघारा करते थे । एक दिन मियाजी ने अपनी बीवी से कहा कि बीवी कभी कोई मरदानगी दिखाने का काम पड़े तो मुझे अवश्य बतलाना । मेरी मरदानगी देखकर तुम चकित रह जाओगी ।

दूसरे ही दिन बीवी ने मियाँजी की परीक्षा लेने की ठान ली । बीवी ने मियाँजी को पुकारा कि मियाँजी जल्दी से आओ, घर में साँप निकल आया है । मियाँजी साप का नाम सुनकर काँपने लगे, उन्होंने वहीं से कहा कि बीवी मुहल्ले में से किसी मर्द को बुलवाओ । मियाँजी की बात सुनकर बीवी बोली कि मियाँजी, यह क्या कहते हो, मर्द तो आप ही हैं । बीवी की बात सुनकर मियाँ ने वहीं से उत्तर दिया कि वाह भली याद दिलायी, साँप के सिर पर एक ऐसा सोटा लगाऊँगा कि साँप वहीं ढेर हो जाएगा ।

● दरजी की बेटी

एक दर्जी की बेटी विवाह योग्य हो गई तो उसने अपने बाप से कह दिया कि अपनी पसद का वर मैं स्वय ही चुन लूगी । कई आदमी आये लेकिन दर्जी की बेटी ने उन्हें सीने पिरोने के कार्य में अयोग्य सिद्ध कर दिया । एक दिन दो आदमी साथ आये, उनमें से एक आदमी दर्जी की बेटी के मन भा गया । उसने दोनो को एक एक चोली सीने के लिए दी और कहा कि जो पहले चोली सी देगा उसी के साथ मैं विवाह करूगी लेकिन एक शर्त यह है कि दोनो की सूई में धागे पिरोकर मैं दूंगी ।

दोनो चोलियाँ सीने के लिये बैठ गये । जो आदमी उसे पसन्द था उसकी सूई में वह छोटा धागा पिरोती और दूसरे की सूई में बड़ा । दूसरे

आदमी को बड़े धागे के कारण कपड़े में से सूई निकालने में देर लगती थी अत पहले ने चोली जल्दी तैयार कर दी। शर्त के अनुसार उसी के साथ दर्जी की बेटी का विवाह हो गया और इस प्रकार अपनी चतुराई से वह मनपसन्द वर पाने में सफल हो गई।

● चौधरण और मियाँ

एक जाट और मियाँ पडोसी थे। जाट सपन्न था लेकिन मियाँजी के घर फाके पडते थे। एक दिन भूख के मारे बेहाल होकर मियाँ जाट के घर गया। घर में जाट की स्त्री थी। मियाँ ने जाटनी से कहा कि मामी, सेर भर बाजरी तो दो कि जिसका आटा बनाकर बच्चा को कुछ खिला पिला दूँ, आज तीन दिन से फाके पड रहे हैं। लेकिन जाटनी सर्वथा नट गई। मियाँ मन मारकर अपने घर आकर पड रहा। बात आयी गयी हो गई।

एक दिन जाटनी का छोटा लडका घर में बडी ऊधम मचा रहा था। जाटनी तग आकर उसे मारने के लिए दौडी तो लडका घर से निकलकर गली में भाग चला, जाटनी भी उसके पीछे भागी। सामने से उसे मियाँ आता दिखलायी पडा। जाटनी ने घूँघट नीचा किया और मियाँ से पुकार कर कहा कि देवर, इस मुए को पकडकर इसके एक चाँटा जमाना, इस पाजी ने आज बडा तग किया है। मियाँ तो उधार खाये बैठा ही था,उसे पिछली बात भूली न थी। उसने आव देखा न ताव, लडके के गाल पर एक थप्पड इतने जोर से मारा कि लडका गश खाकर वही गिर पडा।

लडके की हालत देखकर जाटनी को बडा रज हुआ। उसने रोष-पूर्वक मियाँ से कहा कि यह क्या किया ? बच्चे को कहीं इस प्रकार मारते हैं ? मैंने तो यो ही ऊपर के मन से कहा था। लेकिन मियाँ तो जला-भुना बैठा था। उसने जाटनी को फटकारते हुए कहा कि क्या तुम सबको अपने जैसा ही समझती हो जो सेर भर बाजरे के लिए नट गई ? मैं तुम्हारी कही हुई बात थोडे ही जाने देता था, तुमने एक थप्पड

के लिए कहा मैं चार थप्पड लगा दूँ, मुझे भला क्या मालूम था कि तुम ऊपर और नीचे दो मन रखती हो ।

लाचार जाटनी ताव खाकर रह गई ।

● तेरा करम ई तन्नै कुटावै

एक डोम भूखा था । पास मे बाजरे के सिवाय अन्य कोई वस्तु न थी अत भूख के मारे सूखा बाजरा ही चबाने लगा । भख जोर से लगने के कारण डोम को बाजरा बडा स्वादिष्ट लगा और बाजरे की तारीफ करता हुआ बोला कि लोग खामख्वाह ही बाजरे को कूटते हैं, पीसते हैं और पोते हैं, इसे तो या ही खाया जाए तो बडा अच्छा है ।

सूखा बाजरा अधिक चबा जाने के कारण डोम को अतिसार हो गया और वह पाखाने फिरता फिरता तग आ गया और खीझकर बोला कि अरे बाजरे, तेरे करम ही तुझे कुटवाते हैं अन्यथा न तुझे कोई कूटे न कोई पीसे ।

● बहू नटण हाली कुण

एक स्त्री मोहल्ले की एक हवेली म छाछ मांगने के लिए गयी । घर की मालकिन घर मे नही थी । बेटे की बहू ने कह दिया कि आज छाछ नही है । वह स्त्री लौट गई । राह मे घर की मालकिन मिली तो स्त्री न कहा कि आज तो तुम्हारे घर छाछ लान के लिए गई थी लेकिन तुम्हारी बहू नट गई । सास ने कहा कि बहू नटन वाली कौन हाती है ? तुम मरे साथ घर चलो । वह स्त्री सास के साथ फिर उसके घर गई । घर जाकर सास ने बहू से कहा कि मरे हाते तू ना करने वाली कौन हाती है ? फिर उसने छाछ लेने के लिए अपने साथ आई हुयी स्त्री स कहा कि मरे रहते बहू नटने वाली कौन हाती है, अब मैं तुम्हें नटती हूँ जाओ अपने घर, छाछ नही है ।

● केई को खत फाटतो होसी

एक बनिया गाँव के ठाकुर के कुछ रुपये मांगता था । कई बार तकाजा

करने पर भी जब ठाकुर ने रुपये नहीं दिये तो सेठ ने ठाकुर को खरी-खोटी सुनायी। ठाकुर ने कहा कि आज शाम को अपना खाता लेकर कोटडी आ जाना। बनिया शाम होते ही खाता वही लेकर ठाकुर के घर जा पहुँचा। बनिये ने ब्याज जोडकर ठाकुर को कुल रकम बतला दी। उधर ठाकुर ने कुछ ढोलिनियो को बुला रखा था सो उसने ढोलिनियो से कहा कि ढोल बजाओ। ढोल बजने लगे तो ठाकुर ने अपने आदमियो को इशारा किया। उन्होंने सेठ की मरम्मत करनी शुरु कर दी। जब सेठ अधमरा हो गया तो ठाकुर ने कहा कि हमारा खत फाड दो अर्थात् कुल रकम पाने की फारखती दे दो। सेठ ने फारखती देकर अपना पीछा छुडाया और घर आ गया।

कुछ दिन बाद ठाकुर की कोटडी मे फिर ढोल बजे तो किसी न सेठ से पूछा कि आज ठाकुर के यहाँ किस बात के ढोल बज रहे हैं ? सेठ आप बीती को भूला न था अत खिसिया कर बोला कि किसी बनिये का खत फट रहा होगा।

● हिये को आँधो

एक सिंह जगल मे भूखा बैठा था, उसे कोई शिकार नही मिला था। गीदड ने सिंह के पास आकर कहा कि मैं आपके लिए शिकार ढूंढ कर लाता हूँ। गीदड गया तो उसन एक मोटे-ताजे गधे को चरता देखा। गीदड ने गधे से कहा कि यहाँ चरने को क्या धरा है, तुम मेरे साथ आओ मैं तुम्हे चरने के लिए हरी घास बतलाऊँगा, तथा एक बात और भी है, जगल के राजा केशरी का मन्त्री मर गया है अत मैं राजा से तुम्हे मन्त्री बना लेने के लिए भी सिफारिश कर दूंगा। हरी घास चरने और मन्त्री बनने के सपने देखता हुआ गधा गीदड के साथ चल पडा। शेर ने गधे को दूर से ही देखा और वह गधे की ओर दौडा। गधा प्राण बचाकर भागा। गीदड ने सिंह से कहा कि आपने व्यर्थ ही जल्दबाजी मे शिकार को खो दिया, गधा तो आपके पास आ ही रहा था। खैर, अब मैं दुबारा जाता हूँ, इस बार आप जल्दबाजी न करना।

गीदड फिर गधे के पास गया और ताना मारते हुए बोला कि तुम तो निरे गधे ही रहे, तुम राजाओ की रीति को भला क्या जानो। राजा तो तुम्हारी अगवानी के लिए आ रहा था। अब जगल का राजा मेरे ऊपर नाराज हो गया है कि तुम किस गँवार को ले आये, जिसे इतनी भी तमीज नहीं। मैंने किसी प्रकार राजा को शान्त कर दिया है, तुम चलो और राजा के पैरो पर गिर कर माफी माँगो, राजा तुम्हे अवश्य मत्री बना लेगा।

गधा फिर गीदड के साथ हो लिया। इस बार सिंह चुपचाप बैठा रहा लेकिन जैसे ही गधे ने झुक कर माफी माँगी शेर उस पर टूट पडा और गधे को चीर फाड डाला। तब गीदड ने सिंह से कहा कि महाराज, गधा एक अपवित्र जानवर होता है, दिन रात घूरो पर चरता रहता है अत आप पहले स्नान कर आइए। सिंह स्नान करने गया तो गीदड ने गधे की आँखें और कलेजा निकाल कर खा लिया। सिंह आया तो उसने गीदड से पूछा कि इसकी आँखें और कलेजा कहाँ हैं? गीदड ने उत्तर दिया कि महाराज, इसके हिया और दिया अर्थात् कलेजा और आँखें तो थी ही नहीं। यदि होती और यह हिया से सोचता और दिया से देखता तो एक बार बचकर भी दुबारा मरने के लिए क्या आता?

● स्याणी बहू

एक स्त्री अपनी बूढी सास को ठीकरे म भोजन दिया करती और उस ठीकरे को नित्य फोड डालती। जब उसके बेटे की बहू आयी तो सास उसे ठीकरे मे रोटी डाल कर दे देती और कहती कि जा अपनी 'दादस' (सास की सास) को रोटी दे आ। बहू रोटी दे आती और ठीकरे को लाकर रख देती। इस प्रकार बहुत से ठीकरे इकट्ठे हो गये। एक दिन सास ने बहू से कहा कि बहू, व्यर्थ ही इतने ठीकरे क्या इकट्ठे कर लिए हैं, इन्हें फेंक दिया कर। बहू ने कहा कि सासजी, दादसजी के मरने के बाद मुझे भी तो आपको रोटियाँ देनी हैं, मैं नित्य नये ठीकरे कहाँ से लाया करूँगी, इन्ही ठीकरो मे आपको खाना दे दिया करूँगी।

बहू की बात सुनकर सास की आँखें खुल गईं और वह अपनी सास से अच्छा व्यवहार करने लगी।

● मूरखाँ की सघगी

राजा भोज कवियों को बहुत पुरस्कार दिया करता था। चार मूर्ख भी इनाम पाने के लिए राजा के पास चले। उन्हें एक गांव के बाहर एक हाथी खड़ा दिखलायी दिया। हाथी को देखकर एक मूर्ख बोला, मेरी कविता तो बन गई है, यों कहकर उसने एक पंक्ति सुनाई—

बटोडो सो तो गुडतो जाय।
दूसरा बोला थापक थड़िया जेरा पाय।
तीसरे ने कहा आगे पाछे पूंछ हिलाय।

लेकिन चौथे से कुछ नहीं बन पड़ा। तीनों ने कहा कि हम तुझे पुरस्कार मे हिस्सा नही देंगे।

राजा भोज ने नाराज होकर कालिदास को निकाल दिया था सो कालिदास वेष बदले वहाँ बैठा था। उसने चारों की बातें सुनी और फिर बोला कि चौथा चरण मैं बना देता हूँ लेकिन इसको पुरस्कार मे हिस्सा अवश्य देना। यों कहकर कालिदास ने चौथा चरण कहा श्याम घटा मुख मूला खाय।

कविता पूरी हो गई और चारों मूर्ख दरबार मे उपस्थित हुए। राजा को कविता सुनाई गई

बटोडो सो तो गुडतो जाय।
थापक थड़िया जेरा पाय।
आगे पाछे पूंछ हलाय।
श्याम घटा मुख मूला खाय।

कविता सुनकर राजा ने कहा कि पहले तीन चरण तो ठीक हैं चौथा चरण ठीक नहीं है। चारों ने कहा कि चौथा चरण हमारा बनाया हुआ

नहीं है। राह में एक मूर्ख मिल गया था सो उसी ने हमारी कविता का सत्यानाश कर दिया है। राजा जान गया कि वह 'मूर्ख' कालिदास के अतिरिक्त और कोई नहीं है। कालिदास के बिना राजा को कल नहीं पड़ती थी। उसने मूर्खों से उसका पता ठिकाना पूछा। चारों मूर्खों से राजा को कालिदास का पता मिल गया था इसलिए वह उन पर बहुत प्रसन्न हुआ और उन्हें पुरस्कार देकर विदा किया।

●खाती और जाटणी

एक जाटनी चक्की की मायनी लगाने के लिए खाती को अपने घर बुलाकर लायी। खाती मायनी लगाने लगा, जाटनी पानी की 'दाघड़' (दो घड़े) लाने चली गई। खाती मूर्ख था, उसने मायनी जोर से ठोकी तो चक्की के पाट के दो टुकड़े हो गए। यह देखकर खाती हड़बड़ाकर उठा। छीके पर घी की हँडिया रखी थी और नीचे चूल्हे में दूध की 'कढ़ावनी' (हँडिया) रखी थी। खाती हड़बड़ाकर उठा तो घी की हँडिया से उसका सिर टकराया और घी की हांडी नीचे रखी हुई दूध की हांडी पर जा गिरी। दोनों हांडियाँ फूट गईं और दूध तथा घी राख में मिल गये। अब तो खाती और भी गड़बड़ा गया और उतावली में बाहर की ओर भागा। शीघ्रता में उसने बाड़े का 'फलसा' झटके के साथ अलग किया तो 'फलसा' पास ही रखे हुए पानी के घड़ों पर जा गिरा। घड़े फूट गये और खाती सिर पर पैर रखकर भागा लेकिन घर से निकलते ही उसे जाटनी मिल गई। उसने पूछा कि क्या चक्की में मायनी ठोक दी है? खाती ने हाँ भरी और भागने को हुआ। जाटनी ने कहा कि मेरे साथ आ तुझे अनाज दूँगी। लेकिन खाती क्या मुँह लेकर आता। वह किसी प्रकार अपना पीछा छुड़ाकर भागना चाहता था। जाटनी ने उसका पल्ला पकड़ा तो खाती ने झटके के साथ अपना पल्ला छुड़ाया और शीघ्रता से चल पड़ा। झटका लगने से जाटनी के सिर पर से दोनों घड़े उसके हाथों पर होते हुए जमीन पर गिर गये जिससे घड़े भी फूट गये और जाटनी का गया चूड़ा भी टुकड़े-टुकड़े हो गया। जाटनी ने ताव में भर कर खाती से

ही थी और कोई नहीं था सो सुनार ने ठकुरानी को अपनी बना ली। सुनार अब ठकुरानी के पास नित्य आने लगा।

उधर दो तीन साल बाद ठाकुर घर को लौटा। ठाकुर के पास एक ऊँट था और वह चार सौ रुपये कमाकर लाया था। रास्ते में प्यास लगी तो वह एक बावडी पर पानी पीने के लिए ठहरा। वहीं एक जाट पानी पीने के लिए आया। जाट के कपड़े अत्यन्त साधारण और मैले से थे। ठाकुर के पूछने पर जाट ने अपना परिचय दिया कि मैं फलां गाँव का जाट हूँ और एक जगह न्याय करके अपने गाँव को लौट रहा हूँ। जाट न्यायाधीश की पोशाक देखकर ठाकुर को हँसी आ गई। ठाकुर ने भी जाट को अपना परिचय दिया। ठाकुर ने जाट से कहा कि तुम मेरे साथ ऊँट पर चढ़ जाओ, राह मे तुम्हारा गाँव पड़ेगा सो वहीं तुम्हे उतार दूँगा। दोनों ऊँट पर सवार होकर चल पड़े। रास्ते मे ठाकुर ने जाट से कहा कि चौधरी, कोई बात कहो। जाट ने उत्तर दिया कि ठाकरां, बातां के पैसे लगते हैं, मैं एक बात कहने के सौ रुपये लेता हूँ। ठाकुर ने जाट को सौ रुपये दिये और बात सुनी, "स्त्री का विश्वास नहीं करना चाहिए।' ठाकुर ने जाट को दो सौ रुपये और देकर दो बातें और सुनी, एक यह कि काने आदमी से राम-राम नहीं करना चाहिए और दूसरी यह कि किसी से कोई काम करवाया जाए तो उसकी मजदूरी पहले तय कर लेनी चाहिए, या कहकर काम कदापि नहीं करवाना चाहिए कि तुम काम कर दो, मैं तुम्हे खुश कर दूँगा।

जाट का गाँव आ गया तो ठाकुर ने जाट को उतार दिया। जाट ने ठाकुर से आग्रह किया कि एक वक्त मेरे घर खाना खाकर जाओ। ठाकुर वहाँ ठहर गया। जाट ने ऊँट को 'पूस' डलवा दिया और ठाकुर को भी अच्छी तरह भोजन करवाया। दिन ढलने लगा तो ठाकुर ऊँट पर सवार होकर अपने गाँव को चल पड़ा। रास्ते मे ही ठाकुर का खेत पड़ता था। ठाकुर ने सोचा कि लगे हाथ खेत को भी सम्हालता चलें। ठाकुर के खेत मे एक बहुत ऊँची 'जांटी' (शमीवृक्ष) थी जो दूर से ही दिखलायी पड़ती थी। ठाकुर को 'जांटी' नहीं दिखलायी पड़ी तो वह खेत मे गया। खेत मे जाकर

ठाकुर ने देखा कि कोई आदमी जाँटी को जड मूल से उखाड कर ले गया है और जाँटी को उखाडने से जो गडा बन गया है उसमे मतीरे की एक बेल लगी हुई है और बेल पर एक अच्छा मतीरा लगा है।

ठाकुर अपने घर आ गया। ठाकुर को आया देख मुहल्ले के अन्य लोग भी आ गये, सुनार भी आया। सबने ठाकुर से कुशल क्षेम पूछी। ठाकुर के घर के आगे बैठ कर सब लोग चिलम पीने और बातें करने लगे। बातो ही बातो मे ठाकुर ने कहा कि आज तो मतीरा खाने की इच्छा है सो कोई मतीरा लाकर खिलाओ। सुनार ने ठाकुर से कहा कि जेठ के महीने मे भला मतीरा कहाँ मिल सकता है? ठाकुर और सुनार मे विवाद हो गया और दोनो मे शर्त लग गई। यदि ठाकुर सुनार को मतीरा खिला दे तो ठाकुर के पीछे से जितना खर्च ठाकुर के घर म लगा है वह सारा सुनार बरदाश्त करे अन्यथा ठाकुर के घर मे जिस चीज को सुनार हाथ लगा दे वह ठाकुर की हो जाए। शर्त लग जाने के बाद सब लोग इधर उधर चले गये।

मौका पाते ही सुनार ने सक्षेप मे सारी बात ठकुरानी से कही और यह भी कह दिया कि ठाकुर से मतीरे का भेद पूछकर मुझे बतला। ठकुरानी ने कहा कि रात को ठाकुर से पूछकर बतलाऊँगी तुम घर से बाहर खडे रहना। रात हुई तो ठाकुर और ठकुरानी खाना खाकर सो रहे। बाता बातो मे ठकुरानी ने ठाकुर से मतीरे का भेद पूछा। ठाकुर ने बहुत टाला लेकिन ठकुरानी नही मानी बोली कि मझे ही नही बतलाओगे तो और फिर किसको बतलाओगे? सबेरा होते ही तो तुम सुनार को मतीरा खिला ही दोगे, रात रात म क्या होता है, मैं किसे कहने जाऊँगी। ठाकुर ने मतीरे का रहस्य ठकुरानी को बतला दिया। ठाकुर हारा थका था सो गहरी नींद म सो गया। ठकुरानी उठी और पेशाब करने के बहाने बाहर जाकर मतीरे का रहस्य सुनार को बतला आई। सुनार राता रात ठाकुर के खेत मे गया और मतीरे को बेल सहित उखाडकर ले आया।

सबेरा हुआ तो ठाकुर, सुनार और गाव के बहुत से लोग ठाकुर के खेत पर गये लेकिन मतीरा तो पहले ही गायब हो चुका था। ठाकुर शर्त

हार गया। सुनार ने मूंछों पर ताव दिया। ठाकुर ने सुनार से दस दिन की मोहलत मांगी। वह उदास मुँह घर आया।

ठाकुर मन में जान गया कि ठकुरानी ने ही सारा काम बिगाड़ा है, लेकिन उसने ठकुरानी से कुछ नहीं कहा और ऊँट पर सवार होकर अपने दोस्त जाट के घर चल पड़ा। उस वक्त जाट घर पर नहीं था, कहीं न्याय करने के लिए गया हुआ था। जाट की स्त्री ने ठाकुर की आवभगत की। ठाकुर खाना खाकर गाँव में निकल गया। रास्ते में एक काना आदमी मिला तो ठाकुर ने उससे राम रमी की। काना बोला कि ठाकरां, मैंने सौ रुपये में आपके पास अपनी एक आँख गिरवी रखी थी सो आप अपने रुपये ब्याज सहित ले लें और मेरी आँख मुझे दे दें। काने की बात सुनकर ठाकुर चकराया। उसने फिर अपनी भूल महसूस की। काने को ठाकुर ने कह दिया कि मैं अमुक जाट के घर ठहरा हूँ तुम वहीं आ जाना। ठाकुर फिर आगे बढ़ा। उसने सोचा कि एक जूता फट गया है सो इसकी मरम्मत करवा लूं। जूते गाँठने वाले चमार को ठाकुर ने अपना फटा हुआ जूता दिया और कहा कि इस जूते की मरम्मत ठीक से कर दे, मैं तुझे खुश कर दूंगा। चमार ने जूता ठीक कर दिया तो ठाकुर ने एक रुपया चमार को देते हुए कहा कि लो अब तो खुश हो न ? ठाकुर ने सोचा कि मैं दो आने की मजदूरी के बदले चमार को एक रुपया दे रहा हूँ सो यह बहुत खुश होगा लेकिन चमार ने कहा कि नहीं, मैं खुश नहीं हुआ। तब ठाकुर उसे दो रुपये देने लगा लेकिन चमार खुश नहीं हुआ। अन्त में ठाकुर ने चमार को दस रुपये देकर खुश करना चाहा फिर भी चमार खुश नहीं हुआ। ठाकुर ने तीसरी बार अपनी गलती महसूस की। उसने चमार से कहा कि मैं अमुक चौधरी के घर ठहरा हूँ, तुम वहीं आ जाना, वहीं मैं तुमको खुश कर दूंगा।

ठाकुर लौटकर जाट के घर पहुँचा तो उसने देखा कि चौधरी आ गया है तथा काना और चमार भी वहीं बैठे हैं। ठाकुर ने जाट से राम रमी की और सारी घटना आदि से अन्त तक कह सुनाई। जाट ने ठाकुर को ढाढ़स बँधाया और कहा कि सब काम ठीक हो जाएगा। फिर काने आदमी

की बात सुनकर जाट ने कहा कि ब्याज सहित तुम्हारी तरफ एक सौ साठ रुपये बनते हैं सो रुपये दे दो और अपनी आँख ले लो। काने आदमी ने कहा कि इस वक्त मेरे पास एक सौ दस रुपये हैं सो वे तो ले लो बाकी रुपये अभी ला देता हूँ लेकिन पहले मेरी आँख तो मुझे दिखलाओ। काने की बात सुनकर जाट ने जाटनी से पुकार कर कहा कि 'हटडी' (पुराने ढंग की अलमारी जो दो दीवारों के जोड़ में जगह रख कर बनाई जाती थी।) के कुल्हड में बहुत सी आँखें पडी हैं सो उसमें से इसकी आँख निकालकर ला दो। जाटनी ने अपनी छोटी लड़की के हाथ कुल्हड में से हिरन की एक आँख निकालकर भेजी लेकिन काने ने कहा कि यह आँख मेरी नही है। जाटनी ने दूसरी आँख भेजी, लेकिन काने ने उसे भी स्वीकार नही की। इसी प्रकार जाटनी ने चार पाँच बार कुल्हड में से आँखें निकालकर भेजी लेकिन काना हर बार ना करता गया। तब जाटनी ने खीझकर अन्दर से ही पुकारा कि कुल्हड में तो बहुतेरी आँखें पडी हैं, तुम इसकी दूसरी आँख निकाल कर भेज दो तो उसकी जोडी मिलाकर आँख निकाल दूंगी, या कुछ पता नही चलता। जाटनी की बात सुनकर काना चकराया और वहाँ से नौ दो ग्यारह हो गया।

अब चमार की बारी आई। जाट ने चमार से कहा कि ठाकुर तुझे एक जूता गाठने की मजदूरी स्वरूप दस रुपये देता है फिर तू और क्या चाहता है? लेकिन चमार ने उत्तर दिया कि मैं खुश नही हूँ। तब जाट ने कहा कि बादशाह के शाहजादा हुआ है और आज मैं बादशाह को बधाई देने के लिए जा रहा हूँ, बोल तू खुश है कि नही। चौधरी की पहुँच दरबार तक थी, चमार भी इस बात को जानता था। चौधरी की बात सुनकर वह दुविधा में पड गया, उसने सोचा कि बादशाह के गुस्से से मुझे कोई बचाने वाला नही अत चमार ने कहा कि चौधरी मैं बहुत खुश हूँ। यो कहकर चमार भी चलता बना।

चमार के जाने के बाद चौधरी ने ठाकुर से कहा कि तुम घर पर जाकर घर के आँगन में एक बहुत ऊँचा चबूतरा बनवा लो लेकिन चबूतरे पर चढ़ने

के लिए सीढ़ियाँ मत बनवाना। जिस दिन सुनार की दी हुई अवधि पूरी होगी मैं स्वयं ही तुम्हारे घर आ जाऊँगा। फिर चौधरी ने ठाकुर को वे रुपये दे दिये जो उसने काने आदमी से लिये थे।

ठाकुर ने घर आकर एक ऊँचा चबूतरा बनवाया। यथा समय चौधरी भी आ गया। चौधरी ने ठकुरानी को चबूतरे के ऊपर बिठला दिया और एक बाँस की बनी सीढ़ी चबूतरे से सटाकर सीधी खड़ी कर दी। फिर चौधरी ने ठाकुर के घर की सारी चीजें निकलवा कर आँगन में रख दी। सुनार और गाँव के अन्य लोग भी ठाकुर के घर आ गये। सुनार ने आँगन में रखी सारी चीजें देखी और फिर उसने घर का कोना-कोना छान मारा लेकिन उसे ठकुरानी कहीं नहीं दिखलाई पड़ी। तब ठकुरानी ने ऊपर से खखारा किया। सुनार जान गया कि ठकुरानी ऊपर है। वह बड़ी सावधानी से बाँस की सीढ़ी के सहारे ऊपर चढ़ने लगा लेकिन वह थोड़ा ही ऊपर चढ़ा था कि सीढ़ी उलटने लगी। गिरने के भय से सुनार ने अपने दोनों हाथों से सीढ़ी को थाम लिया। तभी पास खड़े चौधरी ने सुनार का हाथ पकड़ा और कहा कि तुमने सीढ़ी को हाथ लगाया है अतः शर्त के अनुसार यह सीढ़ी अपने घर उठा ले जाओ। अन्य लोगों ने भी चौधरी की बात का समर्थन किया। लाचार सुनार सीढ़ी उठाकर अपने घर को गया।

सभी ने चौधरी के न्याय की प्रशंसा की। चौधरी ने वे तीन सौ रुपये जो उसने पहले बात कहने के बदले ठाकुर से लिए थे ठाकुर को लौटा दिये। ठाकुर ने कहा कि चौधरी वास्तव में ही तुम सच्चे न्यायकर्ता हो, तुम्हारे मैले कुचैले कपड़ों को देखकर उस दिन मुझे हँसी आ गई थी लेकिन अब मैं अपनी भूल के लिए तुमसे माफी माँगता हूँ।

● कालजो दे जिको बेटो भी दे देवै

एक साहूकार निस्संतान था। साहूकार दंपति इस बात से बड़े दुखी थे। वह साहूकार एक महात्मा की सेवा करने के लिए जाया करता था। महात्मा ने साहूकार को कह दिया था कि सात जन्म में भी तेरे पुत्र नहीं होगा। साहूकार का दुःख इस बात से और भी बढ़ गया था। साहूकार की

स्त्री अपने पति से भी अधिक दुखी रहती । एक रात को दोनो अपने घर मे सो रहे थे कि एक साधु गली मे से आवाज लगाता गुजरा, "एक-एक रोटी, एक-एक बेटा, दो-दो रोटी, दो-दो बेटा ।" साहूकार की स्त्री को सोच के मारे नीद नही आई थी । साधु की आवाज सुनकर वह उठकर रसोई घर मे गई । रसोई घर मे एक बची हुई रोटी पडी थी । साहूकार की स्त्री ने वह रोटी ले जाकर साधु को दे दी । उसी रात साहूकार की स्त्री गर्भवती हुई और नौ महीने बाद उसके घर पुत्र जन्मा । जिस महात्मा ने साहूकार से कहा था कि तेरे सात जन्म मे भी पुत्र नही लिखा है साहूकार उसके लिए नित्य रोटी लेकर जाया करता था । आज साहूकार देरी से पहुँचा तो महात्मा ने इसका कारण पूछा । साहूकार ने कहा कि महात्मन्, आपकी कृपा से मेरे घर लडके का जन्म हुआ है, इसी कारण आज देर हो गई । साहूकार की बात सुनकर महात्मा चौंका । उसने रोषपूर्वक कहा कि तेरे सात जन्म मे भी लडका नही लिखा है, फिर यह क्योंकर हुआ ? मैं तो झूठा पड गया । मैं भगवान विष्णु से इसका कारण पूछूंगा । साहूकार और महात्मा मे ये बातें हो ही रही थी कि इतने मे वहाँ नारदजी आ पहुँचे । महात्मा से पूरी बात सुनकर नारदजी ने कहा कि मैं विष्णु लोक को जा रहा हूँ सो भगवान से पूछकर मैं तुम्हे इसका उत्तर दूंगा ।

नारद विष्णु-लोक पहुँचे तो क्या देखते हैं कि भगवान विष्णु हाय-तोबा मचाये है, उन्होने नारदजी को देखते ही कहा कि नारद, मेरे पेट मे बडी पीडा है यदि तुम किसी मनुष्य का कलेजा ला सको तो मेरी पीडा दूर हो सकती है, अन्य किसी भी उपाय से यह पीडा नही जाएगी । नारदजी उलटे पैरो कलेजा लाने के लिए लौट पडे । पहले-पहल वे उसी महात्मा के पास गये लेकिन महात्मा ने कहा कि अपनी-अपनी जान सबको प्यारी है, भगवान का पेट दुखता है तो क्या मैं अपना कलेजा निकाल कर दे दू ? महात्मा के इन्कार करने पर नारद अन्यत्र गये लेकिन किसी ने कलेजा देना स्वीकार नही किया । घूमते-घामते रात हो गई । आधी रात को वही रोटी मांगने वाला साधु नारदजी को दिखलाई पडा । नारदजी ने उससे

ने भगवान के पेट दर्द की बात कही। भगवान के पेट मे दर्द है और वह मेरे कलेजे से जा सकता है, यह बात सुनते ही साधु ने अपने चिमटे से अपना वक्ष चीर डाला और कलेजा नारद को दे दिया। नारद भागे भागे विष्णु भगवान के पास पहुँचे तो क्या देखते हैं कि वे तो लक्ष्मी के साथ चौसर खेल रहे हैं। नारद को देखते ही भगवान ने पूछा कि नारदजी, कलेजा किसने दिया ? नारद ने कहा कि भगवन्, एक साधु रात को रोटी माँगता फिरता था, आपके पेट-दर्द की बात सुनते ही उसने तुरन्त अपना कलेजा निकालकर दे दिया। तब विष्णु भगवान ने नारद से कहा कि जो अपना कलेजा इस प्रकार द सकता है वह बेटा भी द सकता है। यह सही है कि साहूकार के भाग्य मे बेटे का मुँह देखना नहीं बदा था लेकिन बेटा मैंने नहीं उसी साधु ने दिया है।

नारद लौट पडे। जब उन्होंने सारी घटना उस महात्मा को आकर सुनाई तो उसने लज्जा से अपना सिर झुका लिया।

● लंका तो त्रेता में ही जलगी

एक सुनार के पास कुछ सोना था। उसने सोचा कि ससुराल म देवर या जेठ को गहना गढने के लिए सोना दूँगी तो वे कुछ खोट अवश्य मिला देंगे अत जब अपने मायके जाऊँगी ता अपने बाप से गहना बनवा लूँगी। या सोचकर जब वह पीहर गई तो सोने को अपने साथ लेती गई। अपने बाप को सोना देकर उसने कहा कि बापू, मुझे अमुक-अमुक गहने बना दो। बाप ने कहा कि हाँ बाई पहले तेरा काम होगा पीछे किसी और का। या कहकर उसने अपने बेटे को सोना दिया और कहा कि बहिन के गहने पहले बना दो। लेकिन फिर सुनार के मन मे यह बात आई कि भाई कहीं बहिन का लिहाज न रख जाए। इसलिए उसने बेटे को चेताने के लिए कहा कि राजा रामचन्द्र सबको एक बराबर समझते थे। लेकिन बेटे ने पहले ही जितना सोना निकालना था उतना सोना उडा लिया था अत बाप को संतोष दिलाने के लिए बोला कि लंका को तो हनुमानजी ने त्रेता मे ही जला डाला था। बेटे की बात सुनकर बाप ने सन्तोष की साँस ली।

● काठ की पुतली

चार दोस्त थे, खाती, दर्जी, सुनार और ब्राह्मण। एक बार चारो कमाने के लिए साथ साथ निकले। सध्या हुई तो चारो एक वृक्ष के नीचे ठहर गये। चारो ने तय किया कि प्रत्येक आदमी एक पहर जागकर पहरा दे। पहले पहल खाती पहरे पर बैठा और शेप तीनो सो गये। खाती को नींद सताने लगी तो उसने अपने औजार निकाले और काठ की एक पुतली बनाने लगा। अपना पहरा समाप्त होते होते खाती ने एक बहुत सुन्दर काठ की पुतली तैयार कर दी। फिर उसने दर्जी को जगाया और स्वय सो गया। दर्जी ने पुतली देखी तो उसके जी मे आया कि पुतली को कपडे पहना दिए जाएँ तो यह बहुत खूबसूरत लगने लगेगी। या सोचकर दर्जी ने एक सुन्दर पोशाक बनाकर पुतली को पहना दी। दर्जी का पहरा पूरा हो गया तो उसने सुनार को जगाया। सुनार ने अपने पहरे मे पुतली को गहने बनाकर पहनाये और फिर वह ब्राह्मण को जगाकर सो गया। ब्राह्मण ने पुतली को देखकर कहा कि कितनी सुन्दर पुतली है लेकिन यह बेजान है। यदि मैं इसमे प्राण डाल दूँ तो यह परी जैसी लगने लगेगी। ब्राह्मण ने अपनी मत्र विद्या के बल से पुतली म प्राण डाल दिये और अब वह पुतली एक सुन्दर युवती बन गई।

सवेरा हुआ तो चारो आदमी आपस मे झगडने लगे। प्रत्येक यही कहता था कि युवती पर मेरा अधिकार है और मैं इसके साथ विवाह करूँगा। झगडते झगडते जब काफी देर हो गई तो उधर से एक आदमी निकला। उसने चारो से झगडने का कारण पूछा तो उन्होंने सारी बात कह सुनाई और यह भी कहा कि हम तुम्हे पच बनाते हैं तुम जो फैसला करोगे वही हम मजूर होगा। चारो की बात सुनकर आगन्तुक ने कहा कि खाती ने पुतली बनाई और ब्राह्मण ने उसम प्राणो का सचार किया अर्थात् उन दोनो ने इस युवती का निर्माण किया अत खाती और ब्राह्मण इस युवती के जनक हैं। दर्जी ने इसे कपडे पहनाये सो विवाह के वक्त मामा अपनी भानजी

के लिए कपड़े लाना है अत दर्जी इसका मामा हुआ। विवाह के समय वर की ओर से वधू के लिए गहने लाये जाते हैं और सुनार ने उसे आभूषण पहनाये हैं अत वास्तव म वही इसको पत्नी रूप में पाने का अधिकारी है।

पंचों के अनुसार युवती का विवाह सुनार से हो गया।

● दूदो-दूदी

एक था दूदा, एक थी दूदी। एक दिन दूदा ने दूदी से कहा कि दूदी, बाज औरतें ऐसी सयानी होती हैं कि अपने घर म ही चिपकी बैठी रहती हैं और एक तुम हो कि दिन भर गाँव म हींडती (व्यर्थ घूमना) रहती हो। दूदी ने कहा कि कल से मैं भी ऐसा ही करूँगी। दूसरे दिन दूदी बाजार गई और बहुत सा गोद खरीदकर लाई। घर आकर उसने सारा गोंद पानी म घोला और फिर सारे बदन पर गोद का लेप करके खर्मे से चिपक गई। शाम को दूदा घर आया तो उसने दूदी को पुकारा कि दूदी किवाड़ खोलो। दूदी ने आवाज लगाई कि मैं तो यहाँ चिपकी बैठी हूँ। दूदा घर की दीवार फाँदकर अन्दर आया और दूदी से बोला कि यह तुमने क्या कर रखा है? दूदी ने उत्तर दिया कि तुम्हारे कहे अनुसार घर म चिपकी बैठी हूँ।

दूदे ने दूदी स कहा कि दूदी तूने इतना गोंद व्यर्थ खोया और नाहक परेशान हुई बाज स्त्रियाँ ऐसी होती हैं कि पानी पर मलाई जमा देती हैं। दूदी ने कहा कि उँह इसमे क्या है, ऐसा तो मैं भी कर सकती हूँ। दूदा बाजार गया तो दूदी ने पानी के सारे बरतन खाली कर दिये और परंडे (पानी घर) को पानी से भर दिया। फिर उसने रूई के तमाम कपड़े (रजाइयाँ आदि) उधेड़ कर उनकी रूई निकाली और रूई को पानी पर तैरा-तैराकर मलाई जमाने लगी। शाम को दूदा घर आया तो उसने दूदी को पुकारा कि दूदी किवाड़ खोलो। दूदी ने वहीं से उत्तर दिया कि मैं तो इस वक्त पानी पर मलाई चढ़ा रही हूँ बीच म नहीं उठ सकती। दूदा घर की दीवार लाँघकर अन्दर आया तो दूदी की करतूत देखकर बोला कि दूदी यह क्या कर रही हो? दूदी ने तपाक से उत्तर दिया कि पानी पर मलाई जमा रही हूँ न?

दूदा ठढी साँस लकर बोला कि दूदी यह ता अच्छा किया लेकिन इस जाडे की रात म क्या ओढकर सोएँग सारी रात ठिठुरते ही बीतेगा।

● कामदेव को बल

एक गाव में एक पडितजी कथा बाँचा करते थे। कथा समाप्त होने पर व कहा करते कि कामदेव में दस हजार हाथियो का बल होता है। एक दिन एक साधु न जो कि कथा सुन रहा था पडितजी को चुनौती दी कि या तो अपन कथन को सिद्ध करो अथवा कथा बाँचना बद करो। पडितजी बचार बडी दुविधा म पडे। उन्होन ता सुनी-सुनाई बात कह दी थी। घर आये तो बड उदास खाना पाना सब भूल गय। ब्राह्मणी मा सुनकर चिन्ता में डूब गई।

दूसरे दिन ब्राह्मण की युवा लडकी अपनी ससुराल से पीहर आ गई। उसने सारी बात अपनी माँ स जानकर अपने पिता स कहा कि आप खाना खाइय म इस बात को सिद्ध कर दूँगी। दूसर दिन लडकी ने खूब बढिया रसोई बनवाई। मिठाइयाँ केसर इलायची और विविध प्रकार के मेवा से युक्त करके चाँदी की वरको से सजाई गइ। उसन स्वय नहा धोकर खूब शृगार किया। साम हुई ता बन-ठनकर भोजन की थाली को सुगध मे सन हुए वस्त्र से ढाक कर तथा केवडा युक्त पानी की सुराही लकर बाबा की मढी की ओर चल पडी। वर्षा की ऋतु थी बादल उमड घुमड रहे थ। बिजलिया चमक रहा थी। वह मढी तक पहुँची तो कुछ बूदा-बाँदी शुरू हो गई। बिजली की चमक मे वह बाला एसी लगती थी मानो वर्षा के साथ इन्द्र की अप्सरा धरा पर उतर आई हो। लडकी न बाबा से कुछ क्षण मढी मे ठहरने की आज्ञा मागी तो बाबा न सहर्ष आज्ञा दे दी। बाबा न पूछा कि एसी अधेरी रात और वर्षा मे कहा जाओगी? लडकी न कहा कि मुझ एक साधु महात्मा की सेवा म जाना है और यह भोजन का थाल भी उन्ही के लिए ले जा रही हूँ अब तो मुझ जाना ही होगा व मेरी राह देख रहे होगे। बार बार बिजली की चमक म उस बाला को देखन से बाबा का मन

चलायमान होगया और वह लडकी से वहीं ठहरने का आग्रह करने लगा। बहुत अनुनय करने पर लड़की कमरे में चली गई। बाबा ने मिठाई का थाल और उस परी जैसी बाला को अपने कब्जे में जाना तो मस्त हो गया। लडकी ने भय प्रकट करते हुए कहा कि आप बाहर जाकर देख आइये कि कोई है तो नहीं ? बाबा ज्यों ही बाहर गया लडकी ने कमरे के किवाड बन्द करके अन्दर से सांकल लगा ली। बाबा आया तो उसने बहुत मिन्नतें की, बहुत डराया धमकाया, लेकिन लडकी ने किवाड नहीं खोले, तब क्रुद्ध होकर वह बोला कि रंडी ! आज मैं तुझे किसी भी हालत में नहीं छोडूंगा, और कमरे की छत पर जाकर चिमटे से छत में छेद करने लगा। चिमटा काफी बड़ा और मजबूत था फिर भी दीवार में छेद करते-करते बाबा पसीने से तर-बतर हो गया।

फिर भी बाबा का उत्साह निरंतर बढ़ही रहा था। अन्त में बाबा ने छत में सूराख निकाल ही लिया और अन्दर उतरने लगा। लेकिन सूराख कुछ कम चौडा रह गया था और बाबा का शरीर कंधों के पास आकर उसमें अटक गया। अब न वह नीचे ही उतर सकता था और न बाहर ही निकल सकता था, वहीं अधर में झूलने लगा। लडकी ने किवाड खोले और सरपट अपने घर की ओर भाग चली। घर जाकर उसने अपने पिता से कहा कि अब आप गाँव के लोगों को साथ लेकर मढी पर जाइये और बाबा से पूछिए कि 'काम' का बल कितना है ?

ब्राह्मण गाँव के बहुत-से लोगों को साथ लेकर मढी पर पहुँचा। बाबा की अजीब गति बनी हुई थी। ब्राह्मण ने पूछा कि बाबा ! अब बतलाइये कि कामदेव में दस हजार हाथियों का बल होता है या नहीं, तो साधु ने शर्म से गर्दन नीची कर ली और कहा कि मुझे बाहर निकालो, कामदेव में दस हजार हाथियों का ही नहीं असंख्य हाथियों का बल होता है।

● सेर पर सवा सेर

एक आदमी चोरी से दूसरे के बाग में से आम लाया करता था। आम

बे वृक्ष के पास पहुँचकर वह कहता कि अम्बसार, अम्बसार, ले लूँ दो चार। फिर अपने से ही कह देता "ले ले दस, बीस, यार।" मालिक ने एक दिन छुपकर उसे पकड़ लिया और अपने लट्ठ से कहा—"लट्ठसार, लट्ठसार! देऊँ दो चार" और फिर अपने से ही कहा—"दे दे दस बीस यार।" उसने ज्यों ही दो तीन लट्ठ उसके जमाये तो वह घिघियाने लगा और फिर कभी आमों की चोरी न करने की प्रतिज्ञा करके चला गया।

● लापरवाही दुखदाई

एक बार एक राजा शिकार खेलते-खेलते जगल मे बहुत दूर निकल गया। सगी-साथी सब पीछे छूट गये। प्यास के मारे राजा का दम निकलने लगा। तभी एक ग्वाले ने अपनी 'दीवडी' (पानी रखने का पात्र) से राजा को पानी पिलाया। राजा ने प्रसन्न होकर ग्वाले को एक पीपल के पत्ते पर ६० गाँव बक्सीस लिख दिए। ग्वाले ने पत्ता वहीं कहीं रख दिया। पत्ते को उसकी बकरी चर गई, तब वह रोने लगा और बोला—

काई कहूं कछु कयो न जाय,
कया बिना पण रह्यो न जाय।
मन की बात मन मे रही,
साठ गाव बकरी चर गई ॥

(क्या कहूं कुछ कहा नहीं जाता और बिना कहे रहा भी नहीं जाता। साठ गाँवों को बकरी चर गई और साठ गाँवों का मालिक बन कर ठाट से रहने की बात मन की मन में ही रह गई।)

● गगाजी जायेंगे

एक जाट के दो लडके घर मे सोये हुए थे। एक छत पर सोया था, दूसरा नीचे आँगन मे। चाँदनी रात मे सफेदी किया हुआ घर चमक रहा था, सो चार चोर घर मे घुस गये। ऊपर वाले ने चोरों को देख लिया और नीचे सोये अपने छोटे भाई नारायण को सम्बोधित करके पुकारने लगा—"नाराण्या भई नाराण्या, गगाजी तो जायेंगे।" नारायण ने समझ लिया

कि जरूर कोई खटका है, इसलिए उसने भी नीचे से पुकारा—गंगाजी तो जायेंगे पर घर किनको संभलायेंगे ? फिर ऊपर वाले ने कहा—"चरखो बेच्यो,पूणी बेची, घर को आग लगायेंगे।" फिर नीचे वाले ने पूछा—घर को आग लगायेंगे पर मारग में क्या खायेंगे ? तब ऊपर वाले ने कहा—मारग में क्या खायेंगे ? भाई ! चोरी करके खायेंगे। उस ठण्डी रात में जोर जोर से बार बार दुहराती जाने वाली उनकी ये आवाजें दूर दूर तक सुनाई पड रही थीं ! पुलिस कोतवाल ने 'चोरी करके खायेंगे' सुना तो झट उधर ही आ निकला, और उनकी आवाज में आवाज मिलाकर बोला—चोरी करके खाओगे तो जूत फडाफड पाओगे। कोतवाल को आया देख चोर और भी दुबक गये। तभी ऊपर वाले ने कहा कि आप भी जूते ही मारते हैं तो वे चारो उधर दुबके हुए हैं, उन्हें ले जाइये। कोतवाल ने चारों चोरों को गिरफ्तार कर लिया। तब चोरों ने सोचा कि ये तो गंगाजी नहीं गये, हमें ही गंगाजी भेज दिया।

● अन देखी, अन सुनी

एक सतरानी के घर पर चार बटाऊ आ गए। उन्होंने भोजन के लिए कहा तो सतरानी बोली कि पहले कोई अन देखी, अन सुनी बात सुनाओ तो भोजन मिलेगा अन्यथा नहीं। तब तीन तो कुछ नहीं बोले, चौथा बोला—

कुत्ता बैठ्यो हाटक तोलै ताकड़ी,
आक लाग्या आम, फराम्या काकड़ी,
कीड़ी करै सिणगार, हाथी परण कूं,
ऊंट फिरै बोकाल सलाह करण कूं,
पाणी लागी आग, बुझावै तुग तुगी,
सुण सतराणी बात, अण दखी अण सुणी।

कुत्ता दुकान पर बैठा तकड़ी से तोल रहा है, आक के पौधे में आम और फराम में ककड़ी लगी हैं। चींटी हाथी से विवाह करने के लिए शृंगार कर रही है और ऊंट सलाह करने के लिए बिचौलिया बनकर फिर रहा है।

पानी लगी आग तुनतुनी बुझा रही है। हे रतरानी, यह अनदेखी और अनसुनी बात सुनो।

तब उसने प्रसन्न होकर चारों को भोजन करा दिया।

● मतलब और सिद्धांत

एक बार बडा भारी तूफान आया तो खेत पर काम करते हुए जाट और जाटनी बिछुड गये। जाट ने मनौती मानी कि मुझे अपनी जाटनी मिल जाए तो मैं एक ब्राह्मण का भोजन करा दूगा। उधर जाटनी ने भी यह मनौती मानी कि यदि मेरा जाट मुझे मिल जाए तो मैं एक ब्राह्मण को भोजन करा दूँगी। लेकिन जब दोनों मिल गये तो जाटनी ने कहा कि चाहे मैं तुम्हे मिलू या तुम मुझे मिलो एक ही बात है, इसलिए एक ही ब्राह्मण को भोजन कराया जाएगा। निश्चयानुसार जाटनी रसोई बनाने लगी। इतने मे एक खाती वहाँ आ गया। खाती के पूछने पर जाटनी बोली कि आज ब्राह्मण देवता को जिमाऊँगी। खाती के मुँह मे पानी भर आया, बोला—'सौ पूर्जा एक पाती, सौ बामण एक खाती।' तब जाटनी खाती को जिमाने की तैयारी करने लगी। इतने मे एक तेली आ गया, सारी बात जानकर वह बोला—'सौ बटुआ एक थैली, सौ खाती एक तेली।' फिर पडा आ गया तो वह बोला—'सौ झडी एक झडा, सौ तली एक पडा।' फिर नाई आया तो वह बोला—'सौ खाडा एक खाई, सौ पडा एक नाई।' तब जाटनी ने कहा कि तुझे ही जिमाऊँगी, जा स्नान करके आजा। उधर नाई स्नान करने गया, इधर जाट आगया। जाट को पूछने पर जब सारी बात मालूम हुई तो वह बोला कि इतना तो सब ठीक है, लेकिन आगे और है—'सौ पीढा एक खाट, सौ नाई एक जाट।' तब दोनों बैठ कर जीम लिए और नाई मुँह धोया ही रह गया।

● मूरख बेटो

एक धनी सेठ का लडका मूर्ख था। कमाना कजाना कुछ जानता नही था। संगी साथियो के बार-बार टोकने पर घर से बहुत-सा धन लेकर

कमाने चला। उसकी मा ने उसे माडल गढ न जाने के लिए कहा था, लेकिन घूमता घामता वह वही जा पहुँचा और सारा धन खो दिया। उसकी स्थिति बहुत खराब हो गई, अब भीख माँगने के सिवा उसके पास और कोई उपाय नही था, किन्तु भीख मागना भी वह नही जानता था। तब किसी आदमी ने उसकी स्थिति जानकर उसे एक दोहा बना दिया —

घर घोडो दोय भैंमज दूजैं, घरे सुलखणी नार।
माता वरजै पूत नें बेटा माडलगढ मत जाय
क' बारै टामक बाजै॥

घर पर घोडी है, दो भैंसें दूध देती हैं, सुलक्षणा पत्नी है। माँ ने कहा कि बेटा मांडल गढ मत जाना।

यह दोहा बालकर घर-घर भीख माँगने लगा। घूमते फिरते वह एक दिन अपने ही घर आ गया। अपने पति की-सी आवाज सुनकर उसकी पत्नी बरतन माँजती हुई दौडी-दौडी बाहर आई। उसने पति को पहिचान लिया। उसकी सास ने कहा, "धणी घरे आयो हुवै ज्यू इत्ती काई उछाछली होगी?" (बहू, इतनी उतावली हो रही हो जैसे पति घर आ गया हो।

तब उसने कहा—जी हाँ यही बात है—

कसवो माजण हूँ गई, हसवो रह्या न जाय।
माडलगढ स्यू पूत पधारया, दाढी मूँछ मुडाय
क' बारै टामक बाजै॥

बरतन माँजती हुई मैं बाहर गई तो देख कर हँसे बिना नही रहा जाता। आपके सुपुत्र दाढी मूछ मुडवा कर मांडलगढ़ से पधारे हैं।

● सतराणी अर पाडियो

पर्व का दिन आया तो एक वैश्या ने एक ब्राह्मण को जिमाने की सोची। लेकिन कोई भी ब्राह्मण वैश्या के घर जीमने को तैयार नहीं हुआ। अतः यह सतराणी का वेष बनाकर एक ब्राह्मण को मंड का घर लिवा लाई।

जब वह जिमा चुकी तब उसने कहा कि ब्राह्मण देवता, मैं तो दरअसल एक वेश्या हूं, खतरानी नहीं, लेकिन कोई ब्राह्मण वेश्या के घर जीमना स्वीकार नहीं करता इसलिए वेष बदलकर आपको लिवा लाई थी। तब उस ब्राह्मण रूपी भांड ने कहा कि मैं भी ब्राह्मण नहीं हूं, भांड हू। भाड को कोई जिमाता नहीं,इसलिए मैंने सोचा कि आज पर्व का दिन है, ब्राह्मण बनकर ही जीमा जाए, अत तुम धोखा न करो

तू खतरानी मैं पाडियो, तू वेस्या मैं भाड ।
तेरै जिमाय, मेरै जीमे, पत्थर पडसी राड ।।

यद तू खतरानी है तो मैं ब्राह्मण हूं और तू वेश्या है तो मैं भाड हूं। तेरे जिमाने और मेरे जीमने में तो पत्थर ही पड़ेंगे ।

● सेठ और बामण

एक सेठ के घर के पडोस म एक ब्राह्मण रहता था। सेठ का कारोबार बहुत अच्छा चलता था। ब्राह्मण ने सोचा कि सेठ से पूछना चाहिए कि वह इतना धन कैसे कमाता है। अत वह सेठ के पास गया और सेठ से पैसा कमाने का उपाय पूछा तो सेठ ने कहा कि पडितजी ! मैं तो व्यापार करता हूं उसी से पैसा बढ़ता है आप भी व्यापार किया करें। ब्राह्मण ने पूछा कि किस चीज का व्यापार करूं तो सेठ ने कहा कि आप ब्राह्मण है अत पत्रे छपवा लीजिए। सेठ की सलाह मानकर ब्राह्मण ने पत्रे छपवा लिए। लेकिन जिन लोगो के पत्रे सदैव स चलते थे उनके आगे इन पत्रो को भला कौन पूछता ? उधर साल खत्म होने को आया तब ब्राह्मण ने रोते हुए कहा —

विणज करो रे वाणियो, म्हे विणजा सें धाया।
अबकै जै पत्तडा बिकै तो ओरू गगा न्हाया।।

हे बनियो, इस व्यापार को तुम्ही करो। हम तो इस व्यापार से अघा गए। यदि इस बार पत्रे बिक जाए तो बस गगा नहाये समझिये ।

● जाट और वाणियो

एक जाट एक बनिये के पास एक बाज लाया और उसे कौवा बतलाकर

चार आने में बेच गया। दूसरी बार कसूमा लाया और उसे फूस के भाव दे गया। बनिये ने सोचा कि जाट मूर्ख है, लेकिन जाट जान बूझकर बनिये को ठगने के लिए ऐसा कर रहा था। अत कुछ दिन बाद वह एक लोहे की छड पर सोने का पत्तर चढा कर लाया। बनिये ने सोना समझकर उसे ले लिया। अब जाट की बन आई। दूसरे दिन वह सारगी बजाता हुआ बनिये की दूकान के सामने से गाता हुआ निकला

काग कै साटै बाज दियो,
चारै कै साटै कसूमम।
पण खबर पडैगी ता दिनम,
लम लोट विकैगा जा दिनम।

काग के बदले तुम्ह बाज दे दिया और घास के बदले कसूमा दे दिया, लेकिन तुम्हें खबर उस दिन पडेगी जिस दिन लम लोट को बेचोगे।

लम लोट से उसका मतलब उसी लोहे की छड से था।

● वाणियो अर ठाकर

एक बार एक सेठ गेहूँ जमा करने के लिए गेहूँ का कोठा भर रहा था। सेठ का एक जाना-पहचाना ठाकुर वहाँ आ गया। ठाकुर ने आना दाना गेहूँ का कोठे मे डालते हुए कहा कि सेठजी! इसमें आधा गेहूँ मेरा भी है। सेठ ने हँसकर कह दिया कि हाँ—हाँ, आधा गेहूँ आपका भी है। तब ठाकुर ने सेठ की बही मे यह बात लिखवा दी और अपने गाँव चला गया। दो-तीन साल बाद अकाल पडा तो गेहूँ का भाव बहुत महँगा हो गया। सेठ ने गेहूँ बेचने के लिए कोठा खुलवाया तो ठाकुर भी आ बैठा और बोला कि सेठजी! कोठे मे आधा गेहूँ मेरा है और आधा आपका। सेठ ने आना-कानी की तो ठाकुर ने सबके सामने सेठ की बही मँगवाकर दिखला दी, जिसमें लिखा हुआ था कि आधा गेहूँ ठाकुर का है। निदान हारकर सेठ को आधा गेहूँ ठाकुर को देना पडा।

● बाणियों अर गीहूँ की खरीद

बात उस वक्त की है जब सिर्फ नक्द रुपयों का ही चलन था, नोटों का नहीं। एक सेठ गेहूँ खरीदने के लिए रुपये लेकर अनाज की किसी बड़ी मंडी मे गया। वहाँ जाकर किसी धर्मशाला मे ठहर गया। शौच के लिए जंगल जाने का विचार किया तो सोचा कि रुपयों को कहाँ रखा जाए। साथ ले जाने मे चोर-डाकुओं का भय था। धर्मशाला मे भी किसी अनजान के पास रुपया रखकर जाया जाए? अत. वह दुविधा मे पड़ गया। अन्त मे सोच-विचार कर रुपयो को अपने खाने की रोटियो के साथ लपेट कर आले मे रख गया। थोडी देर मे वापिस आया तो रुपये वहाँ नहीं मिले। सेठ के होश उड़ गये और इधर-उधर हडबडाया-सा देखने लगा। थोडी दूर पर देखा कि एक कुतिया रोटियाँ खा रही है और पास ही उसकी फटी गठड़ी पडी है और रुपये बिखरे पडे हैं। कुतिया रोटियों के लालच से सेठ की गठडी उठाकर ले गई थी। तब सेठ के जी मे जी आया और रुपयों को चुगता हुआ बोला—

> अक्कल नही ही फँमही,
> फँम सँ अक्कल लागी।
> दो रोटी अर सौ मण गीहू,
> गडकड़ी ले भागी॥

● जाट अर रींछ

एक जाट नदी के किनारे खडा था। दूर से उसे कोई काली चीज नदी मे तैरती दिखलाई दी। जाट ने सोचा कि कोई बढिया काले रग की कबल है अत. उसे निकालने के लिए नदी मे कूद पडा और तैरते-तैरते उसके पास पहुँचा। लेकिन जब उसने उस काली चीज को हाथ से कसकर पकड़ा तो उसे मालूम हुआ कि यह तो कदरू नही वाला रीछ है। रीछ जाट से लिपट गया तब जाट रोता हुआ कहने लगा—

पैर घाल्या जल जाणनै,
तळी निकल्यो तन।
जल ऊंडो थल है नहीं,
बीतै सो जाणै मन॥

मैंने तो पानी केवल समझ कर हाथ डाला था लेकिन यह तो और ही बला निकली, जल बहुत गहरा है पैर रखने को जगह नहीं है। जो मुझ पर बीत रही है उसे मेरा मन ही जानता है।

● धृतराष्ट्र का बेटा क्यू मर्‌या

राजा धृतराष्ट्र के एक सौ पुत्र महाभारत के युद्ध में मारे गए तो राजा बहुत विलाप करने लगा कि मैंने ऐसा कौन सा पाप किया था जिस के कारण मेरे सौ के सौ पुत्र मारे गए? तब लोगों ने समझाया कि राजन्! इस जन्म में तो नहीं लेकिन न जाने किसी पूर्व जन्म में आपसे ऐसा कोई पाप बन पड़ा हो जिसके कारण आपको यह सब देखना पड़ा है। तब धृतराष्ट्र ने कहा कि मुझे अपने पिछले सौ जन्मों का तो सारा हाल मालूम है, मेरे से तो सौ जन्मों में भी ऐसा पाप नहीं हुआ था। तब श्री कृष्णने कहा कि राजन्! यह सत्य है कि सौ जन्मों में भी तुमसे ऐसा पाप नहीं हुआ था लेकिन इससे एक जन्म पूर्व ही तुमसे एक ऐसा अपराध हो गया था कि जिस के कारण तुम्हारे सारे पुत्र मारे गए। उस जन्म में भी तुम राजा थे। एक हंस और हंसनी तुम्हें अपने सौ बच्चे सम्हला गए थे कि यहां वर्षा न होने के कारण हम किसी अच्छे स्थान की तलाश में जा रहे हैं और वापिस आकर अपने बच्चों को ले जायेंगे। तुमने उन बच्चों की सम्हाल अपने ऊपर ले ली थी। एक दिन तुम्हारे रसोइये ने हंस के एक बच्चे को तुम्हारे भोजन में पकाकर तुम्हें खिलाया तो तुमने रसोइये की बहुत बड़ाई की कि आज खाना बहुत स्वादिष्ट बना है और तब रसोइये ने एक-एक करके सारे बच्चे तुम्हें खिला दिए। जब वे खत्म हो गए तो तुम्हें खाना वैसा अच्छा नहीं लगता था। इसका कारण जब रसोइये ने तुम्हें बतलाया

तो हसने वच्चा नी रा जाने का तुमने बहुत पश्चाताप किया लेकिन तब क्या हो सकता था ? हम और हसनी जब आये और उन्हें सारी बात मालूम हुई तो उन्होंने बहुत दु खित होकर तुम्हे शाप दिया कि जिस प्रकार आज हम अपने एक सौ वच्चा को रो रहे है उसी प्रकार कभी तुम भी अपने एक सौ बेटा को राओगे। सो राजन् ! आज उनका वह शाप सत्य हो गया है।

● वामण अर संख

एक ब्राह्मण ने भगवान् की बहुत सेवा-पूजा की। भगवान् ने प्रसन्न होकर उसे एक छोटा-सा शख दिया और कहा कि इस शख की पूजा करके तुम जो भी चीज शख से मागोगे वही तुम्हे प्राप्त हो जायगी। ब्राह्मण शख पाकर निहाल हो गया। उसने अपने रहने के लिए अच्छा-सा मकान बनवा लिया, खाने पीने और पहिनने-ओढने की सभी मनचाही चीजें उसने शख से प्राप्त कर ली। अचानक उसकी बदली हुई दशा को देखकर उसके पडोसी को डाह हो गई। उसने अपनी स्त्री को ब्राह्मण के घर इसका भेद लाने के लिए भेजा। ब्राह्मण की स्त्री ने उसे सारी बात बतला दी। एक दिन मौका पाकर वह शख को चुरा ले गई। अब तो ब्राह्मण बडी मुश्किल म पड गया। उसने और कोई उपाय न देखकर फिर से भगवान की आराधना की। भगवान ने दुबारा दर्शन दिए और कहा कि ऐसी अलभ्य वस्तु का इस प्रकार लापरवाही से नही रखना चाहिए था, खैर, इस बार तुम्हे एक बडा शख देता हूँ जिससे तुम्ह मिलेगा तो कुछ नही लेकिन तुम्हारा वह शख वापिस आ जायगा। ब्राह्मण ने शख लाकर उसकी पूजा की और उससे सौ रुपये माँगे तो शख ने बडी जोरदार आवाज मे कहा, सौ ले, दो सौ ले, हजार ले, दस हजार ले। लेकिन दिया एक पैसा भी नही। इसी प्रकार वह ब्राह्मण जब कोई एक वस्तु उससे माँगता तो वह उसे कई वस्तुएँ देने की घोषणा करता, लेकिन देता कुछ भी नही। पडोसी ने देखा कि अपने पास वाला शख तो छोटा है और माँ गने पर सिर्फ एक ही वस्तु देता है और

ब्राह्मण जो शंख अब लाया है वह सौ रुपये माँगने पर दस हजार देता है। इसलिए उसने फिर अवसर पाकर बड़ा शंख चुरा लिया और छोटा वहाँ रख आया। घर आकर उसने शंख से एक घोड़ी मांगी तो शंख ने कहा, एक घोड़ी ले, दो घोड़ी ले, दस घोड़ी ले, ऊँट ले, हाथी ले। लेकिन देने को वहाँ क्या था? जब वह पछताने लगा तो शंख ने कहा—

वाही सखी साहनी, मैं हूं सख डपाल।
दण लण नै कुछ नहीं, हामल भरू निरोड॥

● लोभी पंडित

एक पंडित बड़ा लोभी था। एक दिन उसकी स्त्री ने बाजार से एक नारियल लाने के लिए उसे कहा। पंडित ने बाजार में जाकर एक दुकानदार से पूछा तो उसने एक नारियल की कीमत चार पैसे बताई। पंडित ने कहा कि चार पैसे तो बहुत हैं, तीन पैसे में देना हो तो दे दो। दुकानदार ने कहा कि तीन पैसे में आगे मिलते हैं। पंडितजी आगे चले। अगले दुकानदार ने नारियल की कीमत तीन पैसे बताई तो पंडितजी ने पूछा कि कहां दो पैसे में भी नारियल मिल सकता है क्या? दुकानदार ने कहा कि आगे मिलेगा। पण्डितजी फिर आगे गये तो वहाँ उन्होंने एक पैसे में नारियल मिलने का स्थान पूछा। दुकानदार ने कहा कि आगे नारियल के वृक्ष हैं उन पर चढ़कर नारियल तोड़ लीजिए, कुछ भी नहीं लगेगा। पंडितजी को यह बात बहुत अच्छी लगी और आगे जाकर नारियल के वृक्ष पर चढ़ गए। पंडितजी का पैर फिसला तो दोनों हाथों से वृक्ष की डाल को पकड़ लिया। जहाँ पंडितजी लटक रहे थे उसके ठीक नीचे एक बहुत बड़ा गड्ढा था, जिसमें गिरते ही उनका प्राणान्त हो जाता। पंडितजी को वहाँ लटके जब बहुत देर हो गई तो उधर से एक महावत अपने हाथी पर चढ़ा हुआ निकला। पण्डितजी ने उससे प्रार्थना करते हुए कहा कि मुझे नीचे उतार दो, मैं तुम्हें एक सौ रुपये दूंगा। महावत अपने हाथी को वहाँ ले गया, परन्तु उसने ज्योंही पंडितजी के पैरों को पकड़ा, हाथी नीचे से सरक कर अलग जा खड़ा

हुआ। अब दोनों लटक गए। फिर एक ऊँट वाला आया। दोनों ने उसे सौ-सौ रुपये देने की बात कहकर उन्हें उतारने की प्रार्थना की। लेकिन महावत की तरह ही वह भी लटक गया, फिर एक घुडसवार आया और उसकी भी वही गति हुई। अब चारो वृक्ष से लटकने लगे। घुडसवार ने पंडित से कहा कि पंडितजी! आप हाथ नही छोड देना, मैं आपको एक हजार रुपये दूंगा। पंडितजी ने सोचा कि एक हजार रुपये कितने होते हैं? उसने खुशी से दोनो हाथ फैलाकर ज्योंही कहा कि एक हजार रुपये तो इतने होते है, चारो खड्डे मे गिर पडे और मर गये। तभी किसी ने कहा--

अति लोभ न कीजिए, लोभ पाप की धार।
एक नारेल के कारणे पड्या कुवे मे च्यार।।

अधिक लोभ नही करना चाहिए लोभ पाप की धार है। इसी लोभ के कारण एक नारियल की खातिर चार मनुष्य कुए में गिर पडे।

● आखड्या पण पड्या कोनी

दो भाई थे। उनमे बडा प्रेम था, लेकिन घर मे स्त्रियो की नही बनती थी। इसलिए अलग-अलग रहते थे। एक बार बडे भाई के घर भोज हुआ। छोटे भाई को भी न्योता दिया गया, लेकिन उसकी भौजाई ने उसे बुलावा न देने दिया। (राजस्थान मे न्योता देने के बाद बुलावा न दिया जाय तो जीमने के लिए नही जाया जाता) लेकिन बडे भाई की मजबूरी को समझ कर वह जीमने के लिए चला गया। भोजन मे चावल और मूंग बनाये गए थे। जीमने के लिए पंगत बैठी तो चावल और मूंग परोसे गये। जब ऊपर से घी डालने की बारी आई तो बडा भाई घी का बरतन लेकर चला। औरो को घी डालते डालते जब वह छोटे भाई से कुछ ही दूरी पर रहा तो उसने सोचा कि भाई को घी डालने से पत्नी बहुत रुष्ट होगी अत उसने ठोकर खाकर गिर पडने का उपक्रम किया और गिरते गिरते घी का पात्र छोटे भाई की थाली मे थोडा औंधा दिया, जिससे काफी घी थाली मे परोसे हुए मूंगा मे जा गिरा। तब किसी ने कहा—

माई कै माई मन भाया, बिना बुलावै जीमण आयो।
आखडियो पण पडियो नाही, घी ड ल्या तो मूगा माही॥

भाई भाई में प्रेम था अत वह बिना बुलावा दिये भी जीमने के लिए आ गया। ठोकर खाने पर भी भाई गिरा नहा और घी ढुलका भा तो मूगा में ही पड़ा बाहर नहा गिरा।

● आपा दोनू एक

दो ठाकुर भाई थे। घर म बहुत अभाव था। सामने से पाहुने आते दिखलाई पड तो दोनो न विचारा कि घर म तो कुछ है नही इन्हें क्या खिलायेंगे? एक भाई न कहा—

तू उठा तरवारडी, मैं राख स्यू टेक।
पावणा आप कै घरा जामी आपा दोनू एक॥

अर्थात् तू तलवार उठाले और हम आपस में दिखावे के लिए लडने लगें। पाहुने हमें आपस में लडते देखकर लौट जाएगे। फिर अपने तो दोनो एक हैं ही।

सो आपस म दोनो लडने लगे। पाहुने दूर स ही इन्हें लडते देखकर लौट गये।

● डूमणी और टमकोर

एक डोम की स्त्री अपने यजमान की शादी म टमकोर गई थी। उसने अपना माखला (ओढने का वस्त्र) हवेली के बाहर ही चबूतरे पर रख दिया और अन्दर चली गई। वहां उसे कुछ मिला नही। खाली हाथ बाहर आकर देखा तो उसका माखला' भी गायब था। तब उसन कहा—

आई ही कुछ और नैं होय गई कुछ और।
बगल गमाया गाठ का दरा चली टमकोर॥

मैं तो यहां कुछ प्राप्ति की आशा से आई थी लेकिन यहां तो कुछ और ही हो गया। टमकोर का सूत देगा, गांठ का माखला भी गुम हो गया।

● ऊंघै ही बिछायो लाद्यो

एक ब्राह्मण के यहाँ एक हरहाई गाय थी। दूध कुछ देती नहीं थी। किसी को चाट पहुँचा देती, किसी का अनाज खा जाती। उस गाय के कारण ब्राह्मण बड़ी दुविधा में पड़ा हुआ था। मोल कोई लेता नहीं और ब्राह्मण होने के कारण कसाई को वह देना नहीं चाहता था। एक दिन गाय एक खाई में गिरकर मर गई। गाँव के किसी आदमी ने इसकी सूचना दी तो ब्राह्मण के सिर से मानो स्वतः ही बला टल गई। उसने कहा—

बागड गाय बिडै में बासो।
नित उठ रवै जीव नै सासो॥
दूध दही मैं कदे न खाद्यो।
ऊंघै ही बिछायो लाद्यो॥

अर्थात् गाय दूध कुछ देती नहीं थी और उसके मारे नित्य साँसत में फसा रहता था। यह अच्छा हुआ कि सहज ही गाय से पीछा छूट गया जैसे किसी निद्रालू व्यक्ति को बिछी बिछाई सेज मिल जाए।

● ओरू जाट चढसी जिको सीरणी बोलसी

एक बनिया जांट के वृक्ष पर सांगर तोड़ने के लिए चढ गया। वृक्ष पर बड़े-बड़े मकोड़े थे, जो बनिये को काटने लगे। वृक्ष पर से उतरना उसके लिए दूभर हो गया तब उसने देवता की मनौती मानी कि यदि इस वृक्ष पर से उतर जाऊँ तो तुम्हारी सवा पाँच आने की सीरनी (प्रसाद) बाँटूं। या कहकर वह वृक्ष पर से उतरने लगा। जब आधी दूर उतर आया तो देवता से कहा कि सवा पाँच आने की तो नहीं लेकिन अढाई आने की सीरनी जरूर बाँट दूंगा। या दूरी के साथ साथ सीरनी की रकम भी कम होती गई और अन्त में जब बनिया वृक्ष पर से उतर गया तो बोला—

ओरू जाट चढसी जिको सीरणी बोलसी।

अर्थात् फिर कभी जो जाँट पर चढेगा वह देवता का प्रसाद बोलेगा। न मैं फिर कभी जाँट पर चढूंगा और न प्रसाद बोलने की नौबत आएगी।

● कजूस जाटणी

एक जाटना एक बार पावरजी (पुष्करजी) स्नान करने के लिए गई। पडे ने दक्षिणा मागी तो जाटनी ने कहा कि इस वक्त तो कुछ नहीं है कभी घर आना तब दूँगी। अवसर पाकर पडा उसके घर गया तो वह उसे अपने बाडे के बाहर खडा होने के लिए कहकर खुद बाडे मे गई और एक छोटा सा मेड का बच्चा जो कि बहुत बीमार था और मरने वाला हो रहा था बाडे के ऊपर से पडे की ओर फेंक कर बोली कि लो यह दक्षिणा ले जाओ। पडा उस लेकर थोडी ही दूर गया था कि वह मर गया। जब वह लौट कर आया तो देखा कि जाटनी मेड के बच्चे को देखकर पश्चात्ताप कर रही है—

वयू मैं वाता मे आवू, वयू मैं पोकर जावू।
वयू मैं म-म करता लरडिया बाड पर कै बगावू।।

अर्थात क्या तो मैं किसी की बातो में आती और क्या पुष्करस्नान के लिए जाती और क्यों मुख में मैं करते हुए मेड के बच्चे को बाड के ऊपर से फेंकना पडता ?

● भूरी भैंस और कुम्मो वलद

एक जाट के पास एक बैल था और एक थी भैंस। भैंस का नाम भूरा था और बैल का नाम था कुम्मा। घी और दूध के लालच मे जाट भैस को खूब खिलाता पिलाता लेकिन बैल को भूखा रखता। जब वर्षा की ऋतु आई और खेत जोतने के लिए बैल की आवश्यकता हुई तो जाट बैल की खुशामद करने लगा। तब बैल न उत्तर दिया—

खल बाकडा भूरी खाती घी का देता लुम्मो।
इन्दरिया घरराया जद अब याद आया तन कुम्मा।।

भूरी भैंस तुम्हें घी का लोदा देती इसलिए खल और बिनौले तो तुम उसे खिलाया करते और मुझे भूखा रखते। अब जबकि इन्द्र गरजने लगा और खेत जोतने की आवश्यकता पडी तो तुम्हें कुम्मा बैल याद आया है।

● अंधेर नगरी

एक गुरु और चेला घूमते-घामते एक नगर मे पहुँचे। नगर का नाम पूछने पर एक आदमी ने कहा—

अंधेर नगरी अणबूझ राजा।
टके सेर भाजी, टके सेर खाजा॥

वे दोनों नगर मे गए तो उन्हें मालूम हुआ कि वास्तव में ही वहाँ हर चीज टके सेर बिकती है। हलवाई से पूछा तो, हलवाई ने कहा—

टके सेर लड्डू, टके सेर पेडा।
टके सेर हलुआ, टके सेर पेठा॥

सारी ही चीजें टके सेर देखकर चेले ने सोचा कि यहाँ रहकर मौज उडाई जाए, क्या दर-दर भटका जाए? इससे अच्छी जगह दुनिया म और नही हो सकती। गुरु ने उसे बहुत समझाया, लेकिन चेला वहाँ से जाने को राजी न हुआ। तब गुरु यह कहकर चला गया कि मुसीबत पडे तो याद कर लेना। इधर चेला माल खा-खाकर कुप्पा होने लगा। एक दिन एक चरवाहे की भेड एक दीवार के गिरने से मर गई। उसने राजा के पास पुकार की। राजा ने मालिक मकान को तलब किया तो उसने कहा कि महाराज, राज ने दीवाल कमजोर बना दी इसलिए वह गिर पडी, इसमें मेरा क्या दोष है? जब राज को बुलाया गया तो उसने कहा कि अन्नदाता, मजदूर ने गारे म अधिक पानी डाल दिया इससे दीवाल कमजोर रह गई सो कसूर उसीका है मेरा नहीं। तब मजदूर को बुलाया गया तो उसने कहा कि पृथ्वीनाथ, शहर कोतवाल का प्रबंध ठीक नही है इससे बडे-बडे जानवर मरते है। अब कोतवाल को याद किया गया तो उसने सारा दोष मन्त्री के सिर मढ दिया। मन्त्री कोई उचित उत्तर न दे सका, इसलिए राजा ने उसे फाँसी पर लटकाने का हुक्म दे दिया। मन्त्री दुबला पतला था, फाँसी का फँदा उसके गले मे फिट नही बैठा, तो राजा ने हुक्म दिया कि जिसके गले में यह फदा फिट बैठे उसीको फाँसी दे दी जाए।

ऐसे आदमी की तलाश में दौड़ धूप शुरु हुई तो हल्वाई की दूकान पर उसी चेले को पकड़ लिया गया। चेला बहुत घबरा गया। राजा के सिपाही उसे घसीटते हुए फांसी की ओर ले चले। तब चेले ने गुरु को याद किया। गुरु ने आकर सारा मामला पूछा और चेले के कान में कुछ कहा। तब दोनों फांसी पर लटकने के लिए आपस में लड़ने लगे। गुरु ने कहा कि मैं फांसी चढूंगा, चेले ने कहा मैं। जब उन्हें ऐसा करते-करते कुछ देर हो गई तो राजा ने पूछा कि क्या बात है? तब गुरु ने कहा कि महाराज, इस वक्त बहुत उत्तम मुहूर्त है। इस मुहूर्त में जो फांसी चढ़ता है वह सारी पृथ्वी का एकछत्र सम्राट होता है। यह सुन कर राजा ने कहा कि तुम सब लोग अलग हो जाओ। ऐसे उत्तम मुहूर्त में हम खुद फांसी पर चढ़ेंगे। गुरु और चेला तो वहां से चम्पत हो गए और राजाजी फांसी पर लटक गए।

● तन्नै कहगो जिको मन्नै भी कहगो

एक बुढ़िया अपने सामान की गठरी बांधे चली जा रही थी। पास से एक घुड़सवार निकला। बुढ़िया ने घुड़सवार से अपनी गठरी घोड़े पर रखने के लिए कहा। लेकिन घुड़सवार ने कहा कि बुढ़िया-माई और घुड़सवार का *भला क्या साथ? और यह कहकर वह आगे निकल गया। थोड़ी दूर जाने पर* उसने सोचा कि यदि बुढ़िया की गठरी घोड़े पर रखकर के भाग चलूं तो बुढ़िया क्या कर लेगी सारा माल अपना ही हो जायगा। यह सोचकर उसने लौट कर बुढ़िया से कहा कि माई! ला तेरी गठरी मैं अपने घोड़े पर रख कर ले चलता हूँ। लेकिन उधर बुढ़िया ने भी सोच लिया था कि यह घुड़सवार गठरी को घोड़े पर रखकर भाग जाता तो मैं क्या कर सकती थी? उधर घुड़सवार के मन में खोट आया इधर बुढ़िया के मन में, अतः उसने गठरी देने से इनकार करते हुए कहा—

तन्नै कहगो जिको मन्नै भी कहगो।

जिसने तुझसे कहा उसने मुझसे भी कह दिया।

● दूध का दूध पाणी का पाणी

गाँव की एक गूजरी शहर में दूध बेचने जाया करती थी। रास्ते में एक छोटी-सी नदी पड़ती थी। गूजरी जितना दूध घर से लाती थी उतना ही पानी और मिला लेती थी। दूध देते कई दिन हो गए तो हिसाब करवा के दूध के सारे रुपये एक दिन ले आई। नदी के किनारे आकर दूध का बरतन धोने लगी थी कि इतने में एक बन्दरिया आई और रुपयों की पोटली उठाकर भाग गई। गूजरी ने देखा तो चिल्लाने लगी। बन्दरिया पोटली लेकर एक वृक्ष पर चढ़ गई और पोटली से एक रुपया लेकर गूजरी की तरफ फेंका और दूसरा नदी में। इसी प्रकार वह एक रुपया गूजरी की तरफ फेंकती गई और दूसरा नदी में। गूजरी को उसके दूध के रुपये मिल गए थे और पानी के पैसे नदी में चले गए। इसी बात को लक्ष्य करके वहाँ खड़े किसी आदमी ने कहा —

बाँदरी भोली गूजरी स्याणी ।
दूध का दूध (अर) पाणी का पाणी।।

बन्दरिया भोली थी और गूजरी बहुत सयानी थी लेकिन फिर भी बन्दरिया ने सच्चा न्याय कर दिया अर्थात् गूजरी को उसके दूध के रुपये दे दिये और पानी के रुपये पानी में फेंक दिये ।

● जाट का बेटा

एक जाट के दो लड़के थे, एक था भोला दूसरा था चालाक। पिता के धन के नाम पर घर में सिर्फ एक भैंस थी और एक कम्बल। चालाक भाई की पंचों में चलती थी। अतः जब बँटवारा हुआ तो पंचों ने फैसला दिया कि दिन में कम्बल को भोला रक्खे और रात को सयाना। इसी प्रकार भैंस का अगला हिस्सा भोले का और पिछला सयाने का अर्थात् भोला भैंस को चराये और सयाना दूध निकाल ले। इस प्रकार कई दिन बीत गए। बेचारा भोला रात को ठिठुरता और दिन में भैंस को खिलाता पिलाता। एक दिन भोले ने किसी समझदार आदमी के आगे अपना दुखड़ा रोया तो

उसने कहा कि दिन मे तो कम्बल तेरे पास रहता ही है। अत शाम होने से पहले उसे भिगोकर रख दिया कर और जब सयाना दूध निकालने बैठे तो भैंस के सिर पर दो चार लट्ठ जमा दिया कर, क्योकि भैंस का अगला हिस्सा तो तेरा है ही। दूसरे दिन भोले ने वैसा ही किया तो सयाना बिगडा, लेकिन वह कुछ कर नही सकता था। फिर पचायत हुई और इस बार फैसला हुआ कि रात को दोनो भाई कम्बल ओढ ले और भैंस का आधा-आधा दूध बाँट लिया करें।

● जाट और घोडी

एक जाट के पास एक हजार भेडें और बकरियाँ थी। उन्हें बेचकर वह कुछ ऊँट ले आया और फिर उसने सब ऊँटो को बेचकर एक घोडी खरीद ली। एक दिन घोडी बीमार हुई और मरने लगी तो जाट चिल्ला चिल्लाकर रोने लगा कि मेरे एक हजार पशु मर रहे हैं। लोगबाग इकट्ठे हुए तो उन्होने कहा कि तू कितना झूठा है जो एक घोडी के बजाय एक हजार जानवर बतलाता है इस पर जाट ने रोते हुए कहा कि तुम्हे क्या मालूम? मैंने एक हजार भेड और बकरियाँ बेचकर यह घोडी खरीदी थी। अत इसके मरने का अर्थ उन एक हजार भेड बकरियो का मरना ही तो हुआ।

● सेठ और मोती

एक सेठ के पास एक जौहरी मोती बेचने के लिए लाया। मोती बडे सुन्दर और कीमती थे। सेठ का मन ललचा गया और उसने एक मोती छुपा लिया। जौहरी ने मोती गिने तो एक दाना कम हुआ। उसने सेठ से कहा तो सेठ ने उसे धता बतला दिया कि तेरे से कई गुने अधिक मोती मेरे पास हैं मैं क्या तेरा एक दाना चुरा कर रख लेता? लेकिन जौहरी न माना। उसने हाकिम के पास फरियाद की। हाकिम ने सेठ को बुलवाया तो सेठ ने मोती लेने से साफ इन्कार कर दिया। तब हाकिम ने पेशकार को अपने पास बुलाकर उसके कान मे कुछ कहा। पेशकार सेठ के घर गया और सेठानी से बोला कि हाकिम ने सेठ को चोरी के अपराध मे फाँसी

की सजा देनी निश्चित की है यदि आप वह मोती मुझ दे तो मैं सजा माफ करवा सकता हूँ। सेठानी ने तुरन्त मोती लाकर पनवार को दे दिया। पेशवार ने मोती लाकर चुपचाप हाकिम को दे दिया। हाकिम ने जौहरी से कहा कि क्या तुम अपना मोती पहिचान सकते हो? तब जौहरी ने कहा कि कितने ही मोतिया म वह दाना मिला हो मैं निकाल लूगा। तब हाकिम ने वह मोती अन्य बहुत से मोतिया के ढेर मे मिला दिया, लेकिन जौहरी ने कुछ ही समय म उसे ढूँढ निकाला। तब हाकिम ने सेठ से पूछा कि सेठजी! यह मोती आपके पास कहा से आया? सेठ का मुह शम से झुक गया और मोती जौहरी को दे दिया गया।

● साधु और सेठ के बेटे की बहू

एक दिन एक सेठ के घर मे एक साधु आया। उसने लडके की बहू से पूछा कि तुम्हारे कुल का आचार क्या है तो उसने कहा कि महाराज, सब बासी खाते हैं। फिर पूछा कि आपके पति पुत्र और श्वसुर की आयु क्या है? तब बहू न बतलाया कि पति की उम्र एक साल की है पुत्र की चार साल की है और श्वसुरजी तो अभी पालने म ही झूलते है। सेठ को दोना की बात सुनकर बडा आश्चय और क्रोध हुआ। वह साधु के पीछे पीछे गया और उसक निवास स्थान पर पहुँच कर उसन पूछा कि मेरी पुत्रवधू न जो आपसे निरथक बातें कही हैं उनका क्या प्रयोजन है? साधु ने सेठ को शात करते हुए कहा कि व बातें निरथक नही साथक है। उसने जो कहा कि सब बासी खाते है इसका मतलब यह है कि पिछले जन्म के किये हुए सत्कर्मों का फल ही भोग रहे हैं। अगले जन्म के लिए पुण्य-सचय नही कर रहे है। पति की उम्र एक साल की बतलान का तात्पर्य यह है कि एक साल से वह पुण्य कार्यों की ओर लगा है तथा पुत्र माँ की देख रेख मे रहन के कारण चार-पाच साल से पुण्य कार्यों म प्रवृत्त हो गया है। जब से पुण्य कार्यों म लगा जाए तभी से जीवन का आरम्भ समझना चाहिए। अस्तु और आप तो अभी पालने मे ही झूल रहे हैं। तब सेठ की आँखें खुल गई।

● हाथ कमाया कामड़ा

कोजाजी भक्त ने बुढ़ापे के कारण अपने गाँव पालड़ी में ही एक बावड़ी खुदवाई। वहीं तीर्थ-स्नान कर लेते। उनके चेलों ने वहाँ प्याजों की खेती की तो प्याज बहुत बड़े बड़े हुए। एक प्याज तो सवा मन का हुआ। उनके चेले ने मना करने पर भी वह प्याज जोधपुर दरबार को दिखाने के लिए भेज दिया। दरबारियों ने राजा के कान भरे और उनके कहने से राजा ने पालड़ी गाँव को 'खालसा' करने का हुक्म दे दिया। तब कोजाजी ने कहा—

हाथ कमाया कामड़ा, किण नें दीजै दोष।
कोजैजी री पालड़ी, कांदै लीन्ही खोस।।

हमने अपने हाथों से ही ऐसा काम कर लिया, किस को दोष दें। कोजा जी के पालड़ी गाँव को एक प्याज ने उनसे छीन लिया।

● पुरुष चिरत

राजा भोज एक बार घूमता-घामता जंगल में निकल गया। उसे भूख बड़े जोरसे लग आई तो राजा एक 'रायण' केघरभोजन करनेलगा। राजा के सुन्दर शरीर को देखकर वह कामातुर हो गई और उसने राजा से उसकी इच्छा पूरी करने की प्रार्थना की। राजा ने उसकी प्रार्थना अस्वीकार कर दी तो उसने हल्ला मचा दिया। बात बिगड़ती देखकर राजा ने हां भर ली, पर इतने में वहाँ लोग-बाग आ गए। पूछने पर 'रायण' ने कहा कि यह बटाऊ बड़े बड़े ग्रास ले रहा है, इसके गले में ग्रास अटक गया तो यह हत्या मुझे लगेगी। बस इसीलिए तुम लोगों को बुलाया, अब जाओ। तब राजा ने कहा कि भाइयो! ठहरो, कहीं फिर दुबारा आप लोगों को न बुलाना पड़े, इसलिए मैं भी साथ ही चलता हूँ। यों कहकर राजा उनके साथ हो लिया और वह ताकती ही रह गई।

● भैंस कै आगे बीण

एक जाट अपनी ससुराल गया। ससुराल वालों ने जँवाई के लिए नरम-नरम छोटे-छोटे फुलके बनाये। जाट जीमने बैठा तो एक-एक फुलके का एक-एक ग्रास करने लगा। पत्नी ऊपर बैठी देख रही थी, उसने पति की ओर दो उँगलियाँ करके इशारा किया कि एक फुलके के दो ग्रास तो करो। लेकिन पतिदेव ने समझा कि वह दो फुलके का एक ग्रास करने के लिए कह रही है, अतः उसने वैसा ही करना शुरू कर दिया। भोजन करके बैठा तो एक गाधी अतर बेचने के लिए वहाँ आ गया। उसने अतर की शीशी पेश की तो जँवाई ने समझा कि भोजन के बाद लेने की कोई हाजमा वस्तु है, अतः हथेली में भरकर पी गया, पर मुँह कड़वा हो गया, सो थू थू करने लगा। पत्नी मन ही मन बोली—

> रे गाधी मति अध तू अतर दिखावत काहि।
> करि फुलेल को आचमन कडवो कह बिसराइ॥

रात को पत्नी ने समझाया कि यह तो कपड़ों पर जरा-जरा सी लगाने की चीज थी, खाने की नहीं। दूसरे दिन गाधी ने शहद की शीशी सामने रक्खी तो उसने सारे शरीर और कपड़ों पर उसे चुपड़ लिया। तब सारी स्त्रियाँ हँसने लगी तो उसकी पत्नी ने कहा—

> रे गाधी मोरो मयो, पाच पुणी कहै अट्ठ।
> अतर मधु अतर किसो, मूल या ही दो घट्ट॥

इत्र का आचमन करके और उसे कडवा बतलाकर जो इत्र की बुराई कर रहा है, हे बुद्धि से हीन गधी तू उसे इत्र किसलिए दिखला रहा है ?

● कंजूस जाट-जाटणी

एक जाट और जाटनी बडे कजूस थे। आये हुए बटाऊ को खाना भी नहीं खिलाते थे। एक दिन एक बटाऊ आया तो जाटनी पानी लाने के बहाने घर से निकल गई और जाट मूँज कूटने के बहाने से बाहर चला

गया। लेकिन लेकिन बटाऊ भी बड़ा चालाक था। वह भी वहीं बैलों की 'ल्हास' में घुसकर सो रहा। जब जाटनी और जाट ने देखा कि अब काफी देर हो गई है और बटाऊ निराश होकर चला गया होगा तब दोनों घर आये। जाटनी ने कहा—

मैं सिनी, म स्याणी।
देख बटाऊ, चली गई पाणी।

मैं कितनी सयानी हूँ कि बटाऊ को आया देखकर पानी लाने चली गई।

तब जाट ने कहा—

मैं सिणो म स्याणो।
कूटूयो मूज पुराणो॥

मैं भी कैसा सयाना हूँ जो बटाऊ को देख कर पुराना मूज कूटता रहा।

बटाऊ ने तब दोनों की बात सुनकर कहा—

मैं सिनान कंदा, साया ल्हास में मूतो।
बात हामी स्याटी, पण खाकर जाम्यू रोटी॥

मैं भी कैसा शैतान हूं कि इतनी देर 'ल्हास' में औंधा सोया रहा। बात तो बुरी ही होगी लेकिन जाऊंगा रोटी खा कर ही।

● दोय सूती पड़ी रै दोय सूती पड़ी

एक चमार अपनी ससुराल गया तो जरूर में बंदूक [भी] साथ ले गया। ससुराल की स्त्रियां ने सोचा कि बन्दूक भरी हुई नहीं है अतः वे जंवाई को चिढ़ाने के लिए गाते गाने लगा—

तेरी रोनी पड़ी रै मरी रोनी पड़ी।

तेरी बन्दूक खाली पड़ी है।

चमार को गाना सुनकर रोष आया और उसने बन्दूक दाग दी, जिससे दो स्त्रियां मर गईं। तब चमार स्त्रियों की धुन में धुन मिलाकर गाने लगा—

दोय सूती पडी रै दोय सूती पडी।
देखो, दो सो गई हैं। (बन्दूक खाली नही है।)

● गगो चमार

एक चमार के बहुत ऋण हो गया तो गाव के लोगो ने सोचा कि चमार ऋण चुकाए बिना ही भाग जायगा। वे लोग उसके घर गए तो चमार ने कहा कि मैं ऐसे कभी नहीं जाऊँगा, सारे पचो से राम-राम करके जाऊँगा। दूसरे दिन होली थी। चमार ने उसी शाम को अपनी पत्नी और लडके को दूसरे गाँव भेज दिया। घर मे जो थोडा बहुत सूत था वह उसने अपनी कमर के चारो ओर लपेट लिया और होली के दिन पचो के पास जाकर बोला—

> साजी तो सज्या गई, साथ बसतो पूत।
> गगो तो अब जात है, बाध कड्या कै सूत।
> पचो राम राम।

उसका खुद का नाम गगा तथा पत्नी और पुत्र का नाम साजी और बसता था, लेकिन गाव वाले यही समझे कि इसने आज होली का स्वाँग बना रखा है और इसलिए उन्हें सन्देह नही हुआ।

● नाम भलो लैटूरो

एक जाटनी के पति का नाम लैटूरा था। साथ की स्त्रियाँ उसे चिढाया करती कि भला यह भी कोई नाम है? अपने पति से कहो कि कोई अच्छा सा नाम रखले। एक रोज वह जाटनी बाहर गई तो उसने देखा कि बहुत से लोग एक मुरदे की अरथी को ले जा रहे हैं। पूछने पर पता लगा कि अमरसिंह नाम का कोई व्यक्ति मर गया है। आगे चली तो देखा कि एक आदमी भागा जा रहा है पूछने पर पता चला कि यह सूरसिह है, दो आदमी इसका पीछा कर रहे है अत यह डर के मारे भागा जा रहा है। आगे चलने पर एक और आदमी मिला जिसकी 'चीवर' छिन गई थी और इस कारण यह दु खित हो रहा था। कुछ और आगे गई तो एक लक्ष्मी नाम

की स्त्री झाड़ू लगा रही थी। तब वह लौट आयी और अपने साथ की स्त्रियों से कहा कि मेरे पति का यही नाम उत्तम है। क्योंकि—

अमरो तो मैं मरतो देख्यो, भाजत देख्यो सूरो।
चोदर तो मैं खुसती देखी, लाछ बुहारै कूडो।
आगै हू पाछो भलो, नाम भलो लैंटूरो॥

अमर को मैंने मरते और शूर को भागते देखा। "चौधर" (न्याय करने का हक) मैंने छिनती हुई देखी और लक्ष्मी को झाड़ू लगाते देखा। आगे से पीछा ही भला है और मेरे पति का लैंटूरा नाम ही अच्छा है।

● नट विद्या आज्या, जट विद्या कोनी आवै

एक बार नटों ने राजा के यहाँ तमाशा किया तो राजा ने उन्हें खूब इनाम दिया। एक जाट भी वहीं बैठा था, उसने नटों से कहा कि जो काम मैं कर सकता हूँ वह तुम नहीं कर सकते। नटों ने कहा कि वाह क्या बात करते हो? भला बताओ तो ऐसा कौन सा काम है? जाट ने कहा कि दुबारा आओगे तब बतलाऊँगा। वर्षा की ऋतु आई तो जाट के खेत में मतीरियाँ लगने लगीं। उसने एक अच्छी सी मतीरी देखकर उसे नाल समेत एक घड़े में डाल दिया। वह अन्दर ही अन्दर बढ़ती रही और बढ़कर एक बड़ा मतीरा बन गया। दूसरी बार नट आये तो जाट ने वह घड़ा लाकर राजा के सामने रखा और कहा कि महाराज! यह मतीरा इस घड़े में मैंने डाल दिया है, अब आप इन नटों से कहें कि बिना घड़े को फाड़े यह मतीरा निकाल दें। नटों ने अपनी हार स्वीकार कर ली और कहा—

नट विद्या आज्या, पण जट विद्या कोनी आवै।

● गोड में फोड

एक गाँव में एक जगह ब्रह्म भोज हो रहा था। एक मिर्यां भी ब्राह्मण का वेष बनाकर भोजन कर आया। द्वार पर बैठे दक्षिणा देने वाले लोगों को सन्देह हुआ तो उन्होंने उससे पूछा कि तू कौन है? उसने कहा 'बामन'।

उन्होने फिर पूछा कि कौनसा बामन ? उत्तर मिला 'गौड बामन'। तब उन्होने पूछा कि गौड तो है लेकिन गोत्र क्या है? तब तो मियां चकराया और बोला, 'या खुदा गौड मे भी झोड है।'

तब उन लोगो ने उसे पहिचान लिया और मार-पीट कर बाहर निकाल दिया। आगे जाकर मियां ने अपने साथियो से कहा कि इन हिन्दुओ के यहाँ जीमना तो आसान है लेकिन दक्षिणा पाने में बडी मुश्किल पडती है।

● कुटार गाय को दान

एक यजमान ने ब्राह्मण को गाय दान मे दी। गाय के दूध तो कुछ था नही लेकिन खाने मे बहुत तेज थी। पडोसियो के बाडो मे भी घुस जाती थी। तब ब्राह्मण ने यजमान से कहा—

जिसी देई तू गाय, जिसो तेरो जिवडो जाणै।
जिसो पिवा म्हे दूध, विसो तनै मिलसी आगै।।

(जैसी गाय तू ने हमें दी है वह तू अपने दिल में जानता है। और जैसा दूध हम यहां पी रहे हैं वैसा ही आगे तुम्हें मिलेगा)

● पूरिया ही पूरिया है

कहते हैं कि एक बार सीकर दरबार ने ब्राह्मणो को ब्रह्म-भोज दिया। उनका चरवादार पूरिया नायक भी वेष बदल कर पगत म आ बैठा। जब दरबार भोजन परोसने के लिए स्वय आये तो उन्होने पूरिये को पहिचान लिया और कडककर पूछा कि अरे पूरिया ? पूरिये ने झुककर कहा कि अन्नदाता! यहा तो अधिकतर मेरी जाति के पूरिये ही पूरिये बैठे हैं। आपने मुझे पहिचान लिया है इसलिए भले ही दब दें। दरबार निरुत्तर हो गए।

● मियाजी खाई

एक मियाँ अधा था। एक बार किसी भोज मे भर पेट खीर खाकर अपने घर जा रहा था। रास्ते मे एक खाई पड़ी। दूर से किसी ने देखा तो

आवाज लगाई कि मियाँजी ! खाई, मियाँजी ! खाई। मियाँ ने कहा कि हाँ भाई, खूब खाई । इससे पहले कि वह आदमी फिर आवाज लगाकर समझाये, मियाँजी खाई में गिर पड़े और खत्म हो गये।

● सेठा, ऊट लेल्यो

एक बनिया थोड़ी सी पूँजी लगाकर अपना कारोबार करता था। एक दिन एक आदमी ऊँट लाया और बोला कि 'सेठा, ऊट लेल्यो'। बनिये ने कहा कि हाँ भाई ! ले रे ने इसे दुकान म घुसा दो। उसने कहा कि कहीं ऊँट भी दुकान मे घुसता है ? तब बनिये ने कहा कि जो चीज दुकान म ही नही घुस सकती उसका मैं लेकर क्या करूँ—

चारो चरै भागणा करै।
वीं को वाणिया के करै ॥

अर्थात् मैं ऐसे ऊँट को लेकर क्या करू जिसे नित्य खाने के लिए चारा चाहिए और जो चारा खाकर सिर्फ मेंगने कर दे। मैं तो ऐसी चीज खरीद सकता हूँ जो मुझे लाभप्रद हो ।

● विवाई की पीड

एक जाट अपनी ससुराल गया। उसके पैर म बिवाई फट गई थी। रात को बिवाई की पीडा के कारण वह रोने लगा। उसने बहुत चाहा कि वह न रोये क्योकि ससुराल वाले सुनेंगे तो क्या कहेगे ? लेकिन वह अपने को रोने स न रोक सका। तब उसने सोचा कि सवेरे ससुराल के आदमी जब यह जानेंगे कि मैं सिर्फ बिवाई के दद क कारण रो रहा था तो वे मेरी हँसी उडायेंगे। यह सोच कर उसने अपनी आँख फोड ली। सवेरे जब ससुराल वालो ने पूछा कि रात को क्या रो रहे थे तो उसने कहा कि आँख म बडी पीडा थी और पीडा के मारे आख भी चली गई है तो उन लोगो ने कहा कि हम तो यह समझे कि जँवाई साहब के पैर म बिवाई फट गई है तभी वे इतना रो रहे हैं। तब तो जाट व्यथ ही आँख फोड लेने का पछतावा करने लगा।

● फोग अर राजा रायसिंह

बीकानेर नरेश रायसिंह बादशाह अकबरकी आज्ञा से दक्षिण-विजय के लिए गए थे। वहाँ उन्हें अपने देश का 'फोग' वृक्ष दिखलाई पड़ा। वे फोग को देखकर तुरन्त घोड़े से उतर पड़े, उनकी आँखें अपने देश के वृक्ष को देखकर छलछला आईं। 'फोग' को उन्होंने गले लगाया और यह दोहा कहा—

तू सहदेसी रूखड़ो, म्हे परदेसी लोग।
म्हाँनें अकबर तेड़िया, तू कत आयो फोग ?

तू स्वदेश का रूख है और हम तो परदेशी हैं। हे भाई, हमें तो अकबर द्वारा बलात् भेजे जाने के कारण यहाँ आना पड़ा। लेकिन तू यहाँ कहाँ और कैसे आ गया ?

● दुनिया सुआरथ की है

जोधपुर महाराज जसवंतसिंह जी को बढ़िया पोशाकों और आभूषणों का बड़ा शौक था। व बहुत कीमती आभूषण अपने शरीर पर धारण किया करते थे। उन्होंने अपने प्रधान मंत्री को आदेश दिया था कि जब मैं मरूँ तो मेरे आभूषण वगैरह शरीर से उतारे न जाएँ। महाराजा श्वांस खींचकर समाधि लगाना भी जानते थ। एक बार वे परीक्षा लेने के लिए कुछ समय के लिए समाधिस्थ हो गए। सबने समझा कि महाराज स्वर्ग सिधार गए। अत मन्त्रियों ने उनके बहुमूल्य आभूषण वगैरह उतार लिए और देखने में वैसे ही किन्तु साधारण कीमत के आभूषण उन्हें पहिना दिये। इतने में महाराजा की समाधि टूटी और उन्होंने असलियत को भाँप लिया। सांसारिक स्वार्थ-परता से वे क्षुब्ध हो उठे और उन्होंने यह दोहा कहा—

गाया माई सरचिया दीन्या गोई सत्य।
जसवत पर पोतारिणया, माल बिरार्णं हत्थ॥

(आदमी जो खाता है वह खर्च कर लेता है और जो दूसरो को देता है वही साथ जाता है। जमा करने का कोई लाभ नही है। जसवत को जमीन पर लिटा दिया गया और सारा माल दूसरो के हाथों में चला गया)

● उतावलो सो बावलो

एक ब्राह्मणी ने एक नेवला पाल रखा था। एक दिन वह अपने छोटे बच्चे को सुलाकर पानी लाने गई और नेवले को बच्चे की रखवाली पर छोड गई। इतने में एक काला नाग वहाँ आया और बच्चे की ओर बढने लगा। नेवला उसपर झपटा और थोडी ही देर मे उसने साँप को मार डाला। फिर मालकिन को यह सूचना देने के लिए वह बाहर दरवाजे पर आ गया। मालकिन आई और उसने नेवले के मुह मे खून लगा देखा तो उसने समझा कि इसने बच्चे को मार डाला है। उसने क्रोध में आकर एक बडा पत्थर उस पर पटक दिया, जिससे वह वही मर गया। अन्दर जाकर उसने देखा तो बच्चा सोया पडा था और पास ही मरा हुआ एक काला नाग पडा था। वह सारी बात समझ गई और पछताने लगी लेकिन अब पछताने से क्या हो सकता था ?

● पढयो पण गुण्यो कोनी

एक पंडित का बेटा काशीजी से ज्योतिष पढकर आया। उसके पिता का दरबार में आना-जाना था। उसने राजा से इस बात की चर्चा की तो राजा ने उसे ससम्मान दरबार में बुलाया। राजा ने परीक्षा लेने के लिए उससे पूछा कि बतलाइये मेरे हाथ मे क्या है ? पंडित के लडके ने हिसाब लगाकर बतलाया कि आपके हाथ में कोई गोल वस्तु है, फिर कहा कि उसमें छेद भी है तथा वह पत्थर है। लेकिन राजा ने कहा कि उस चीज का नाम बतलाइये। पढाई से जितना जाना जा सकता था वह तो पंडित के लडके ने ठीक-ठीक बतला दिया। अब नाम बतलाने का काम तो उसकी सहज बुद्धि पर निर्भर करता था। उसने बहुत सोचा लेकिन कोई नाम ऐसा

ध्यान मे नही आया। अन्त मे चक्की के पाट पर उसका ध्यान गया। उसने सोचा कि चक्की का पाट, गोल भी होता है, उसमे छेद भी होता है और पत्थर तो वह है ही। अत झट से बोल उठा कि आपके हाथ मे चक्की का पाट है। राजा के साथ ही सारे दरबारी भी हँस पड़े। तब राजा ने उससे कहा कि आप पढ़े तो अवश्य है लेकिन अभी गुने नही हैं। आपने यह नही सोचा कि एक राजा के पास दरबार मे चक्की के पाट का क्या काम ? और वह हाथ की मुट्ठी मे आ ही कैसे सकता है ?

● गोदी हालो गेर कर पेट हालै की आस करै

एक स्त्री के एक बच्चा था। वह चाहती थी कि उसके और बच्चे हो। अत एक ढोंगी साधु के पास जो कि बडा महात्मा बन रहा था गई। साधु ने उसकी बात सुनकर कहा कि तू यदि इस बच्चे की बलि अमुक देवता को चढा दे तो तेरे दूसरा लडका हो जायेगा। उसके कहने पर जब वह बलि चढाने को तैयार हुई तो किसी दूसरी स्त्री ने उसे समझाया कि तू यह क्या मूर्खता कर रही है ? तेरी गोद म जो लडका है उसे तो तू मार रही है और दूसरे की आशा कर रही है। यदि साधु के कहने के अनुसार दूसरा बच्चा हो भी गया तो यह तो चला जाएगा ही और दूसरा न हुआ तब क्या करेगी ? तब वह मान गई।

● बाबै सै ईं बाई

एक जाट की लडकी बहुत वाचाल थी। लडने-झगडने म बहुत तेज थी। जाट ने सोचा कि ऐसी झगडालू लडकी के साथ शादी करना कौन पसन्द करेगा ? अत एक दिन जब पास के गाँव के एक जाट ने उससे शादी करने की बात कही तो वह बहुत खुश हुआ और उसने अपनी लडकी की शादी उससे कर दी। शादी होने के बाद जब वे लोग विदा होकर जा रहे थे तो जाट ने जो पापड व अन्य खाने-पीने की वस्तुओं से भरकर मटके दिये थे वे बैलगाडी म खडखडाने लगे। जाट दूल्हे ने कहा कि ये कौन खड-

बडा रहे हैं, इन्हे वह दो कि चुप हो जाएँ नहीं तो इन सब को मार डालूँगा। मुझे जरा भी बडबडाहटपसन्द नहीं है। लेकिन मटके भला क्या मानते? अत वह लाठी लेकर गाडी से उतरा और उसने सारे मटके भडामड फोड डाले। जाट की स्त्री आतकित हो गई। उसके मन म भय समा गया कि जरा भी बडबडाने स यह मेरी कमर तोड डालेगा। वह पति के आँख के इशारे स ही काम करने लगी। जब कोई पाहुना उसके घर आता तो जाट उसे आख के इशारे म समझा देता कि इस खिचडी में घी डालना है या तेल। दाहिनी आख से इशारा करने पर वह घी डाल देती और बाई आख से इशारा करने पर तेल डालती। एक दिन उसका पिता (बाबा) अपनी बेटी स मिलने आया। जब खाना खाने बैठा तो जाट ने बाईं आँख का इशारा किया। जाट की स्त्री को उसके इस व्यवहार से बडा दुख हुआ और वह बोल उठी—बावे सें ई बाई।

अर्थात् मेरे बाप क लिए भी तुम बाई आँख से इशारा करके उसे खिचडी में घी की बजाय तेल डालने को कह रहे हो।

● अनोखी पिछाण

एक राजा की कन्या बाल विधवा था। एकान्त महल म रहकर शास्त्र चिंतन करके समय काटा करती। एक दिन सोमवती अमावस्या को उसने नगर के सारे ब्राह्मणो को भोज दिया। जब सारे ब्राह्मण भोजन पाकर चले गए तो एक अधा ब्राह्मण बहुत दूर स राजकन्या के उस बाग म आ टिका, जहाँ ब्रह्म भोज हुआ था। वह एक मालती के वृक्ष के नीचे बैठ गया। उसी वृक्ष के फूल पर एक भौंरा गुजार कर रहा था। पंडित ने उसके गुजन को सुनकर कहा—

"मदोन्मत्त द्राक्ष-ध्वनि"

इसी पद को वह बार-बार दोहराने लगा। राजकन्या की दासी वहाँ आई तो उसने वह पद अपनी मालकिन को जाकर सुनाया। राजकन्या ने कहा कि इस पद का गाने वाला अवश्य ही जन्मान्ध है। दासी ने पूछा

कि आपने कैसे जाना तो राजकन्या ने कहा कि मालती का पुष्प शंख के आकार का होता है, ऊपर से पतला नीचे से मोटा। भौंरा पतले भाग पर बैठकर गुंजार करता है, लेकिन शंख उस तरफ से नहीं बजता। पंडितजी ने केवल सुना है कि मालती का पुष्प शंख के आकार का होता है, देखा नहीं। देखा होता तो वे यह पद नहीं कहते। दासी ने पंडितजी से जाकर पूछा तो पंडितजी ने कहा कि मैं अवश्य ही जन्मान्ध हूँ, लेकिन आपकी बाईजी भी निश्चय ही बाल विधवा है। उसे यह नहीं मालूम कि मदोन्मत्त पुरुष उलटा-सुलटा नहीं देखते।

● अनोखो न्याव

एक दिन शहर-कोतवाल ने राजा भोज के सामने चार चोरों को पेश किया। एक से राजा ने कहा कि भले आदमी, यह काम तेरे लायक न था और उसे दरबार से चले जाने को कह दिया। फिर दूसरे का हाथ पकड़कर उससे कहा दुष्ट, तुमने बहुत अनुचित किया और उसे भी छुट्टी दे दी। तीसरे को साधारण दण्ड देकर निकाल दिया। चौथे आदमी को उसके नाक कान कटवा कर, कालामुँह करके और गधे पर चढ़ाकर शहर में घुमाने का हुक्म दिया। एक ही अपराध के लिए भिन्न-भिन्न दण्ड देने पर दरबारियों को आश्चर्य हुआ तो राजा ने कहा— कल चारों की गुप्त रिपोर्ट मँगवाई जाए।" दूसरे दिन गुप्तचरों ने आकर बतलाया कि पहला आदमी तो घर पर जाकर विष खाकर मर गया। दूसरा नगर छोड़कर चला गया। तीसरा किसी को अपना मुँह नहीं दिखलाता और चौथे की कथा तो बड़ी विचित्र है। जब लगभग सारा शहर उसे घुमा चुके तो सामने उसकी स्त्री मिल गई। उसने अपनी स्त्री से कहा कि रासभ पर सवार होकर शहर के तीन दरवाजे तो नाप आया हूँ, थोड़ा शहर फिरना बाकी है। अभी इन मूंजियों से पीछा छुड़ाकर आता हूँ। जाकर पानी गरम कर और हलुआ बना। बहुत लोग मेरे पीछे हो गए, इन लोगों ने नीचे गिराने का बहुत प्रयत्न किया लेकिन गिरा नहीं, कदाचित् गिर जाता तो इज्जत

धूल में मिल जाती । चारों जनों की कथा सुनकर सारे दरबारी राजा के न्याय की प्रशंसा करने लगे।

● फकीर की सीख

एक साहूकार कमाने के लिए विदेश गया। घर पर केवल उसकी स्त्री और एक दासी थी। एक दिन साहूकार की स्त्री बड़ी कामातुर हो गई, वह छत पर गई और उसने दूर जंगल में शौच के लिए जाते हुए एक फकीर को दासी के द्वारा घर बुलाया। घर आ जाने पर उसने दासी को इशारा किया कि इन्हें ऊपर के कमरे में ले चल। फकीर ऊपर चढ़ने लगा तो उसका मिट्टी का बधना दीवाल से टकराकर टूट गया। फकीर रोने लगा तो सेठानी ने कहा कि साईं साहब! रोते क्या हो? मैं तुम्हें चाँदी का बधना बनवा दूंगी। तब फकीर ने कहा कि माई, मैं तो इसलिए रो रहा हूँ कि इसी बधने ने अब तक मेरे अदब को देखा था अब किसी दूसरे बधने को दिखलाना होगा। फकीर की बात सुनकर सेठानी को ज्ञान हो गया कि फकीर दूसरे बधने को भी अपना अदब नहीं दिखाना चाहता और मैं तो पर पुरुष को सब कुछ दिखलाने को तैयार हो गई। उसने फकीर को दूसरा बधना देकर विदा कर दिया।

● खिचड़ी अर खाचिड़ी

एक जाट बीमार था। वैद्य से दवा लेने के लिए शहर में गया तो वैद्य ने दवा दे दी और खाने के लिए खिचड़ी बतला दी। जाट खिचड़ी खिचड़ी करता हुआ अपने गाँव की ओर चला। थोड़ी दूर जाने पर खिचड़ी खिचड़ी के बदले खाचिड़ी-खाचिड़ी कहने लगा। रास्ते में एक किसान का खेत आया जिसमें फसल पकी खड़ी थी। किसान चिड़िया को उड़ा रहा था और उधर जाट बोला, 'खा चिड़ी खा चिड़ी'। किसान को गुस्सा आया और उसने जाट को दो चार थप्पड़ जमा दिए। तब जाट ने पूछा कि मुझे क्या कहना चाहिए तो किसान बोला 'उड़तो जाओ उड़तो जाओ' कहता चला जा। जाट यूँ ही कहते हुए आगे बढ़ा। थोड़ी दूर पर एक बहेलिये ने चिड़िया को फँसाने

के लिए जाल फैला रक्खा था। उसकी आवाज सुनी तो उसने भी जाट को पीटा और कहा 'आते जाओ फँसते जाओ, आते जाओ फँसते जाओ' कह। जाट वैसे ही कहता हुआ आगे बढ़ा। थोडी दूर पर चार चोर चोरी के माल का बँटवारा कर रहे थे। जाट की बात सुनकर उन्हें बड़ा क्रोध आया और उन्होंने उसकी खूब मरम्मत बनाई। फिर उससे कहा कि मूर्ख, ऐसा कह कि ऐसा दिन कभी न आए, ऐसा दिन कभी न आए। जाट वही मंत्र रटता हुआ आगे चला तो सामने से एक बारात आती दिखलाई दी। बारात वालों ने उसकी बात सुनी तो कहा कि अरे दुष्ट! ऐसा क्यों कहता है? फिर उसे खूब पीटा और कहा 'भगवान् ऐसा दिन सबको दिखाए' यों कह। जाट फिर उस नये मंत्र का जाप करता हुआ आगे बढ़ा तो सामने से एक शव को ले जाते हुए कुछ लोग दिखलाई पड़े। वह अपनी बात को दुहराता हुआ पास से गुजरा तो उन लोगों ने उसकी खूब पिटाई की। इस प्रकार रास्ते भर पिटते-पिटते वह घर पहुँचा। जाटनी ने पथ्य के विषय में पूछा तो जाट बोला कि उस पथ्य का नाम लेने से तो इतना पिटा हूँ, खाने पर क्या दशा होगी यह राम ही जाने।

● भूठ कोनी बोलै

एक सेठ बहुत मालदार था। उसके एक लड़का था जिसके हाथ कोहनी तक के थे, पैर घुटनों तक के। आँख में मोतियाबिन्द था। कानों से बहरा था। यदा-कदा उसे मिरगी आ जाया करती थी। लड़का बड़ा हुआ तो सेठ को उसकी शादी की फिक्र हुई। उसने अपने नाई को सगाई करने के लिए भेजा। नाई योग्य लड़की की तलाश में निकला। घूमते-घामते एक शहर में एक साधारण हैसियत वाले सेठ के घर ठहरा। बातचीत में नाई ने सेठ को बतलाया कि हमारा सेठ करोड़पती है तथा उसके यह एक ही लड़का है। उम्र १६–१८ के बीच है। सेठ ने अपनी लड़की की शादी उससे करनी स्वीकार कर ली तो नाई बोला कि सेठजी! मैं झूठ तो बोलता नहीं, आप सारी बातें जो मैं कहूँ लिख लीजिए। एक तो यह कि लड़का

पदत नहीं चलता है। तब सेठ ने कहा कि उनके बहुत रथ पालकी आदि सवारियाँ हैं फिर भला पैदल चलने की क्या बात है? तब नाई ने कहा कि लडका अपने हाथ से कोई काम नहीं करता है तब सेठ ने कहा कि उनके सैकडा नौकर हैं फिर हाथ से काम करने की आवश्यकता ही क्या है। फिर नाई ने कहा कि लडका सबको एक निगाह से देखता है तो सेठ ने कहा कि यह शील्वान की बात है। नाई ने आगे कहा कि लडका किसी की सुनता नहीं है। तब सेठ ने कहा कि यह दाना आदमी की बात है। नाई ने अंत में कहा कि लडका अपनी नीद सोता है और अपनी नीद ही जगता है। तब सेठ ने कहा कि यह मन-मौजी की बात है। जब सारी बातें लिख ली गई तब नाई वापिस अपने सेठ के यहाँ आ गया। बारात धूमधाम से चल पडी। वर-पक्षवाला ने बडी चतुराई से दूल्हे के ऐबो को छुपाए रक्खा। लेकिन जब पडित ने दूल्हे को हथलेवे के लिए हाथ बढाने को कहा तब सारी पोल खुल गई। कन्या-पक्षवाले बिगडने लगे तो नाई ने कहा कि सारी बातें लिखकर तय हुई हैं आप सब देख लीजिए। मैंने लिखवाया है कि लडका अपने पैरो से चलता नहीं हाथ से कोई काम करता नहीं आखो से देखता नहीं कानो से सुनता नहीं। इनमे कौन सी बात झूठ है? इतने में लडके को मिरगी आ गई और वह वहीं लुढक गया। तब नाई ने कहा कि अंतिम बात मैंने यह लिखाई है कि लडका अपनी नीद सोता है अपनी नीद उठता है। अब यह सो गया है कोई इसे उठा सके तो उठाए? जब स्वय उठेगा तभी उठेगा। लाचार कन्या-पक्षवाला ने अपनी हार मान ली और लडकी की शादी उसी से कर दी।

● कुण बडो ?

एक बार लक्ष्मी और सरस्वती में विवाद हो गया। लक्ष्मी ने कहा कि मैं बडी हू सरस्वती ने कहा कि मैं बडी हूँ। दोनो ने अपने-अपने करतब दिखलाने का निश्चय किया। सरस्वती ने एक ब्राह्मण के शरीर में प्रवेश किया तो ब्राह्मण महाविद्वान बन गया। एक नगर में जाकर उसने एक

स्थान पर व्याख्यान दिया तो लोग मत्र मुग्ध से हो गए। नगर भर म उसके वक्तृत्व की धूम मच गई। नगरसेठ ने सुना तो वह उसको अपने यहाँ सम्मानपूर्वक ले आया और उससे वही ठहर कर नित्य अपने अमृतमय भाषण से सबको तृप्त करने का आग्रह किया। ब्राह्मण ने कहा कि मैं जिस स्थान पर ठहरूँगा उसे छोडकर दूसरे स्थान पर नही जाऊँगा बस यही मेरी शत है। नगरसेठ ने बडी खुशी से ब्राह्मण की शत मान ली और उस एक बहुत ही सुविधाजनक स्थान म ठहरा दिया। नित्य दोपहर को ब्राह्मण का प्रवचन वहाँ होता और नगरसेठ और उसके परिवार के लोगो के साथ नगर के अन्य लोग भी एकाग्रचित्त होकर प्रवचन सुनते। चूकि ब्राह्मण के शरीर म स्वय सरस्वती विराजमान थी इसलिए उसके व्याख्यान म ऐसा माधुर्य और सम्मोहन था कि लोग अपने शरीर की भी सुध भूल जाते थे। एक दिन जब पडितजी का प्रवचन चल रहा था तो एक बडी बदसूरत सी बुढिया वहा चिल्लाती हुई आई कि मैं प्यास के मारे मर रही हूँ कोई ठडा पानी पिला दे। प्रवचन मे विघ्न किसी को सह्य नही था। नगरसेठ न अपने नौकर से कहा कि बुढिया को पानी पिलाकर शीघ्र दूर कर। नौकर वहा गया तो बुढिया न कहा कि मैं तो स्वय नगरसेठ के हाथ से पानी पीऊँगी और किसी के हाथ से नही। नौकर ने जाकर सेठ से निवेदन किया तो सेठ न अपनी पुत्र-वधू को भिजवा दिया। उसन जाकर बुढिया से निवेदन किया कि माजी आप पानी पीजिए मैं बहुत ठडा मीठा जल आपके लिए लाई हूँ। बहुत आग्रह करन पर बुढिया न अपन चोले से एक रत्न जटित सोने का प्याला निकाला और उसमे पानी लेकर पीने लगी। उसने प्याला होठो से लगाया और फेंक दिया। वह चिल्लान लगी कि अरे बाप रे मेरा तो कठ जल गए क्या सेठ क घर मे ठडा पानी भी नही है। सेठ की पुत्र वधू ने दूसरी बार जल लाकर पीने को कहा तो दूसरी बार भी बुढिया ने वैसा ही एक प्याला अपन झोले स निकाला और उसी प्रकार फेंक दिया। सेठ की पुत्र-वधू बडी चकित हुई कि इस बुढिया के पास एसे बहुमूल्य प्याले कहाँ से आए और किस लापरवाही से यह इन प्यालो को फेंक रही है।

उसने अपनी सास को जाकर सारी बात कही। वह आई और उसके साथ भी वही बात हुई। बुढ़िया ने दो तीन प्याले और अपने झोले से निकालकर फेंक दिये। तब उसने जाकर अपने पति से सारी बात कही। नगरसेठ विघ्न पड़ने से बड़ा भुंभलाया हुआ बुढ़िया के पास आया, लेकिन जब उसने धरती पर पड़े प्यालों की ओर देखा तो उस की सारी झुंझलाहट आश्चर्य में बदल गई। जमीन पर पड़े उस एक प्याले की कीमत सेठ की सारी दौलत से अधिक बैठती थी। नगरसेठ ने बड़ी नम्रता से बुढ़िया को शीतल जल पिलाया। बुढ़िया ने जल पीकर एक और प्याला फेंक दिया। सेठ ने बुढ़िया से कहा कि माजी! आप यहीं ठहर कर इस घर को पवित्र करें। यहाँ आपको किसी प्रकार का कष्ट नहीं होगा। बुढ़िया ने कहा कि मैं यहाँ ठहर तो सकती हूँ लेकिन उसी कमरे में ठहरूँगी जहाँ यह ब्राह्मण ठहरा हुआ है, अन्य किसी स्थान में नहीं। यदि मुझे ठहराना चाहते हो तो पहले इसे यहाँ से निकालो। नगरसेठ ब्राह्मण को वचन दे चुका था, लेकिन इधर बुढ़िया भी हठ पकड़े हुए थी। लाचार सेठ ने ब्राह्मण को किसी दूसरे कमरे में ठहरने को कहा। ब्राह्मण ने बहुत कुछ कहा पर सेठ ने नहीं माना तो ब्राह्मण अपना बोरिया बिस्तर लेकर वहाँ से चल दिया। नगरसेठ सपरिवार उस बदसूरत बुढ़िया की परिचर्या में लग गया। थोड़ी देर बाद बुढ़िया ने कहा कि मैं अब कुछ देर सोना चाहती हूँ तुम सब बाहर चले जाओ। सारे लोग बाहर चले गए। थोड़ी देर बाद नगरसेठ फिर अन्दर गया तो न तो वहाँ बुढ़िया थी और न एक भी प्याला था। लेकिन लक्ष्मी और सरस्वती के विवाद का फैसला हो चुका था।

● चाबी तो मेरे पास है

एक बुढ़िया ने अपने चार रुपये एक छोटे से डिब्बे में रखकर डिब्बे का ताला लगा दिया और चाबी अपने पास सम्हाल कर रखने लगी। एक दिन बुढ़िया सो रही थी कि एक उचक्का आया और बुढ़िया का डिब्बा उठा ले गया। बुढ़िया जग उठी और उसे सारी बात मालूम हुई तो उसने

बडे इतमीनान से कहा कि डिब्बा ले गया तो क्या हुआ, चाबी तो मेरे पास ही है।

● टीरी-टीरी, मटोरो-मटोरो

एक लडका तुतलाकर बोलता था। उसकी एक लडकी से शादी होनी तय हुई। सयोगवश लडकी भी तोतली थी। जब फेरे फिर रहे थे तो लडके के पास ही एक कीडी चलती हुई दिखलाई दी। लडका झट बोल उठा (कीडी कीडी) टीरी-टीरी। लडकी ने भी कीडी को देखा और उसने सोचा कि यह तो (बडी चीटी) मकोडा है अत वह भी बोल उठी, मटोरो मटोरो। बैठे हुए सारे लोग हँस पडे।

● कुत्तो अर साधु

राजा भोज के गगनमहल के फाटक पर एक कुत्ता पहरे पर नियुक्त था। वह साधु' को देखकर अधिक भौंका करता था। एक दिन एक साधु आया तो कुत्ता बडे जोर से उसकी तरफ भौंकने लगा। साधु ने कहा कि अरे ऐब दार! क्या भौंकता है? तब कुत्ता बोला कि महात्मन्! मेरे मे क्या एब है? तब साधु ने कहा कि एक तो रात्रि को भौंक भौंककर मालिक को जगाता रहता है दूसरे पैर ऊँचा करके पेशाब करता है तीसरे रास्ते मे रुटता है और चौथे साधु को देखकर विशेष भौंकता है। तब कुत्ते ने कहा कि महाराज! ये चारो तो मेरे दाप नही गुण हैं। रात्रि के समय मुझे यम के दूत दिखाई पडते हैं तब भौंक कर मालिक को जगा देता हूँ। मालिक जागता है तो ईश्वर का नाम लेता है और यम के दूत अन्यत्र चले जाते हैं। दूसरे यह धरती सबकी माता है इसलिए इसपर सारे पगाव न कर थाड रो पेशाब करता हूँ। रास्ते म इसलिए सोता हूँ कि अनगिनत साधु-सत राह से गुजरते हैं, किसी का भी पैर लग जाए तो मुक्ति हो जाए और साधु को देखकर इसलिए भौंकता हूँ कि साधु होकर भी तुम दर-दर मांगते फिरते हो। क्या ईश्वर तुम्हे खाने को न देगा? कुत्ते की बात सुनकर साधु का ज्ञान हो गया और वह भीख मांगना छोडकर बदरिकाश्रम को चल दिया।

● मगरमच्छ अर बांदरो

एक मगरमच्छ और बन्दर दोस्त थे। मगर नदी में रहता और बन्दर नदी किनारे एक जामुन के पेड़ पर। बन्दर हमेशा मगर को मीठे जामुन तोड़ कर दिया करता। एक दिन मगर कुछ जामुन अपनी स्त्री के लिए घर ले गया। मगर की स्त्री ने जामुन खाये तो उसे बड़े स्वादिष्ट लगे। उसने मगर से कहा कि तुम्हारा दोस्त इन मीठे जामुनों को रोज खाता है। जब ये जामुन ही इतने मीठे हैं तो उसका कलेजा न जाने कितना मीठा होगा? अब मुझे उसका कलेजा लाकर दो। दूसरे दिन मगर बंदर के पास गया और उससे कहा कि दोस्त, आज तुम्हें तुम्हारी भाभी याद कर रही है। तुम हमेशा मुझे जामुन खिलाते हो, आज वह तुम्हें अपने हाथ से खाना खिलायेगी। बन्दर उसकी पीठ पर बैठकर उसके घर चला। जब घर नजदीक आने लगा तो मगर ने बन्दर से कहा कि यार, सच तो यह है कि तुम्हारी भाभी ने तुम्हारा कलेजा मांगा है और इसीलिए मैं तुम्हें घर ले चल रहा हूँ। बन्दर उसकी बात सुनकर एक बार तो सिहर उठा, लेकिन फिर मुस्कराकर बोला कि दोस्त यार तुम भी निरे मूर्ख हो। यह बात तुमने मुझसे पहले ही क्यों न कही? तुम जानते हो कि हम तो एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष पर लम्बी लम्बी छलांगें लगाते हैं अतः कलेजे के गिर पड़ने का डर रहता है और इसलिए उस जामुन के वृक्ष पर ही सुरक्षित टांगे रखता हूँ। यदि कलेजा ही चाहिए तो वृक्ष तक वापिस चलो। मगर उसकी बातों में आ गया और उस जामुन के वृक्ष तक आ गया। बन्दर ने एक छलांग लगाई और वृक्ष पर जा बैठा और मगर से कह दिया कि जाओ भाभी से कह दो कि दोस्त का कलेजा इतना सस्ता नहीं है। मगर खाली हाथ घर लौटा और अपनी स्त्री से उसने सारी बात कही। पति की सूचना पर वह बड़ी क्रुद्ध हुई लेकिन फिर दूसरी तरकीब सोचने लगी। उसने एक योजना बनाई और पांच सात दिन बाद योजनानुसार मगर नदी के किनारे जाकर चुपचाप मुर्दे की तरह लेट गया। मगर की स्त्री पति की मृत्यु पर जार-जार

से विलाप करने लगी। मगर की स्त्री ने सोचा था कि बन्दर अपने दोस्त की स्त्री के पास उसे धीरज बँधाने अवश्य आयेगा और तब उसे पकड़ लूंगी। बन्दर आया मगर पेड की डाल पर से ही बोला कि मामी! बड़े अफसोस की बात है कि भाई की असमय ही मृत्यु हो गई और मृत्यु भी बड़े अजीब ढग से हुई है। जब मगर की स्त्री ने पूछा कि अजीब ढग से कैसे, तो बन्दर बोला कि जब कोई मगर मरता है तो और तो उसके सारे शरीर से प्राण निकल जाते हैं लेकिन पूंछ में अटके रहते हैं, इसलिए वह पूंछ को बहुत देर तक पटकता रहता है। लेकिन मगर भाई तो पंछ को जरा भी नही हिलाता। बन्दर की बात सुनकर मगर ने अपनी पूंछ थोडी सी हिलाई और तब बन्दर ने हँसकर कहा कि मामी, क्या इतने फरेब करती हो, देवर का कलेजा या हाथ नही आने का। इतना कहकर बन्दर दूसरे वृक्ष पर छलांग लगा गया।

● गादडै की उगाई

एक ठाकुर एक तेली से रुपये मागता था। ठाकुर ने तेली को कई बार कहलवाया कि रुपये भिजवा दो लेकिन जब तेली ने रुपये नही भेजे तो ठाकुर स्वय घोडी पर चढकर तेली के घर चला। रास्ते में एक टीले पर एक गीदड बैठा था। उसने कहा, ठाकराँ! जै रामजी की, आज किनै चाल्या, आओ चिल्म तमाखू तो पील्यो।' ठाकुर ने कहा कि अमुक तेली के रुपये मागता हूं सो उसके घर जा रहा हूं। लौटते वक्त तुम्हारे पास ठहरूंगा। ठाकुर तेली के घर पहुँचा तो शाम हो गई। ठाकुर ने घोडी वही बांध दी और खुद सो रहा। घोडी गर्भवती थी और रात को उसने एक सुन्दर बछेडे का जन्म दिया। ठाकुर तो सो रहा था अत तेली ने बछेडे को ले जाकर अपनी घानी से बाध दिया। सवेरे ठाकुर उठा तो तेली ने पाच-सात दिन मे रुपये देने का वायदा कर उसे विदा कर दिया। ठाकुर घोडी पर सवार होकर चलने लगा तो घोडी अँटने लगी। वह बछेडे को छोडकर जाना नही चाहती थी। लेकिन ठाकुर को इस बात का पता नही था अत वह उसे चाबुक मार-मार कर चलाने लगा। ठाकर टीले पर बैठे

गीदड के पास पहुँचा तो गीदड ने कहा, "ठाकरां ! घोडी अटै किया है ? घोडी तो ब्यागी दीखै। ई को बछेरियो कठै है?" घोडी अट क्यों रही है, लगता है घोडी ब्या गई है लेकिन इस का बछेड़ा कहाँ है? तब ठाकुर को अपनी भूल मालूम हुई और वह फिर तेली के घर चला। तेली के घर की तरफ रुख करते ही घोडी सरपट दौड चली। ठाकुर ने तेली के घर जाकर देखा तो बछेडा घानी के पास बंधा हुआ था। ठाकुर ने तेली से बछेडा मांगा तो तेली बोला कि ठाकुर ! आपका दिमाग तो नहीं फिर गया है? यह बछेडा तो मेरी घानी ने जन्मा है। मेरी घानी हर साल एक बछेडा प्रसव करती है। तेली ने दो गवाह भी बना रक्खे थे, उन्होंने भी तेली की हाँ में हाँ मिलाई। लाचार होकर ठाकुर वहाँ से लौट पड़ा और फिर गीदड के पास आया। गीदड ने सारी बात सुनकर कहा कि तुम हाकिम के पास फरियाद करो। हाकिम गवाह माँगे तो मुझे पेश कर देना। ठाकुर ने वैसा ही किया। हाकिम ने तेली को तलब किया तो तेली ने बछेडे को घानी से पैदा हुआ बतलाया। अपने कथन की पुष्टि मे उसने दो गवाह भी पेश कर दिए। तब हाकिम ने ठाकुर से अपना गवाह पेश करने के लिए आज्ञा दी। ठाकुर ने कहा कि हुजूर आदमी तो कोई है नहीं, लेकिन एक गीदड सारी बात को सही-सही जानता है। तब हाकिम ने दूसरे दिन गीदड का पेश करने का हुक्म दिया। ठाकुर ने आकर गीदड से सारी बात कही। दूसरे दिन गीदड चलने को हुआ तो उसने कीचड में लेट लगाकर अपने शरीर को कीचड से लथपथ कर लिया और फिर रास में लोट गया। इस प्रकार अजीब सूरत बना कर गीदड कचहरी मे हाजिर हुआ और वहाँ बैठकर ऊँघने लगा। हाकिम ने जब दो तीन-चार पुकारा कि गीदडसिंह ! अपनी गवाही दो, तब गीदड उठा, लेकिन फिर ऊँघने लगा। तब हाकिम ने कडक कर कहा कि गीदड सिंह ! यह क्या स्वांग बना रक्खा है तुमने ? इस वक्त भी क्या नींद सता रही है ? तब गीदड ने सम्हलते हुए कहा कि हुजूर ! रात को समुद्र में आग लग गई थी और रात भर उसे बुझाता रहा तब जाकर वह काबू मे आई। नींद और थकावट के कारण

वदन टूट रहा है। हाकिम ने उसकी बात सुनी तो हँसने लगा और बोला कि कहीं समुद्र मे भी आग लग सकती है ? तब गीदड गंभीर हो गया और बोला कि हुजूर ! समुद्र मे आग नही लग सकती तो क्या घानी भी बछेडा प्रसव कर सकती है ? हाकिम गीदड की चतुराई पर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने तेली को दंड दिया और बछेड़ा ठाकुर को दिलवा दिया।

● पढ्यो पण गुण्यो कोनी

एक वैद्य अपने लडके को वैद्यक सिखाया करता था। उसने अपने लड़के को बहुत-से चिकित्सा-ग्रन्थ पढाये और तब एक दिन एक रोगी के घर उसे भी साथ ले गया। रोगी की हालत पहले दिन से बहुत खराब थी। वैद्य ने उसकी नाडी देखी और साथ ही रोगी के पलग के नीचे पडे नारंगी के छिलकों को भी देख लिया। तब उसने रोगी के घर वालों से कहा कि इसे वात-प्रकोप हो गया है। मालूम होता है कि तुम लोगो ने इसे खाने के लिए नारगी दी है। घर वालो पर इस बात का बडा असर हुआ कि वैद्यजी नाडी देखकर खाई हुई चीज बतला देते है। उन्होंने अपनी भूल स्वीकार कर ली तब वैद्यजी कुछ दवा देकर चले गए। घर जाकर वैद्यजी ने अपने लडके को बतलाया कि नारगी का अनुमान तो पलँग के नीचे पडे छिलकों को देखकर लगाया गया था। दूसरे दिन उन्होंने अपने लड़के को उक्त रोगी के यहाँ भेजा। वैद्य के लडके को कल जैसी कोई चीज आज दिखलाई नही दी। हाँ, रोगी के पलँग से थोडी दूर पर ऊँट की कूची (ऊँट पर कसने की जीन) और गद्दे रखे हुए थे और ऊँट वहाँ नही था। तब वैद्य के लडके ने सोचा कि ऊँट के गद्दे और कूँची तो यहाँ रक्खे है लेकिन ऊँट नही है लगता है कि रोगी आज ऊँट को खा गया है। इसलिए वह रोगी की नाडी देखकर बोला कि मालूम होता है आज यह ऊँट खा गया है। सुनकर पास खडे हुए सारे लोग हँसने लगे।

● दया-मया भाजगी

एक स्वामीजी के कृपानाथ नाम का एक चेला और दया तथा मया

नाम की दो चेलियाँ थीं। स्वामीजी वृद्ध हो चले थे और चेला नवयुवक था, अतः एक दिन मौका पाकर वह दया मया को ले उड़ा। अब स्वामीजी अकेले रह गये। एक दिन स्वामीजी का एक श्रद्धालु भक्त स्वामीजी के पास दर्शनार्थ आया और उसने सहज भाव से ही पूछा कि महाराज! दया मया हैं न? स्वामीजी दुःखित तो थे ही अतः कुछ बोले नहीं। तब आगन्तुक ने फिर कहा क्या महाराज! कृपा तो है न? तब स्वामीजी चल्लाकर बोले कि उस दुष्ट कृपल ने ही तो सारा खलखराब कर दिया, वही उन दोनों को ले भागा।

● भरग्या अर डूबग्या

एक जाट और मियाँ पड़ोसी थे। एक दिन बहुत तड़के दोनों साथ-साथ हल जोतने घर से चले। अंधेरा तो था ही जाट का पैर राह में पड़े गोबर पर पड़ा और उसका पैर गोबर में लिपट गया। तब जाट ने कहा कि अरे हम तो भर गये। फिर दोनों आगे बढ़ गये। उस साल जाट के बहुत अन्न हुआ और मियाँ के बहुत थोड़ा। बातचीत के सिलसिले में मियाँ ने जाट का पैर गोबर में भरे जाने की बात बीबी से कही। तब बीबी ने सोचा कि जाट को अच्छे शकुन हुए थे इसलिए उसका घर अन्न से भर गया। दूसरी बार जब दोनों घर से निकले तो उसके पहले ही बीबी ने बहुत सारा गोबर अपने घर के आगे डाल दिया। मियाँ का पैर गोबर पर रपटा तो बोला, या खुदा डूब गये। तब जाट ने कहा कि इस बार तुम्हारे मुँह से 'डूब गये' निकला है तो वास्तव में तुम अपने को डूबे गये ही समझो।

● काकोजी अटी में हैं

एक आदमी एक बनिये की दुकान पर एक रुपये का बाजरा लेने के लिए गया। दुकान पर बनिये का लड़का था। उसने सोचा कि यह आदमी बाजरा तुलवाकर रुपया उधार लिखवायेगा।

उसने उसे टालने की नीयत से कहा कि दुकान पर 'काकोजी' नही हैं वे आयें तब आना। तब उसने अटी से रुपया निकालकर लडके को दिखलाया और कहा कि यह रह काकोजी, ला बाजरा दे।

● एक जोर अर दो जोर

एक आदमी ने एक बनिये की दुकान से एक रुपये का बाजरा उधार लेना चाहा। तब बनिये ने कहा कि ऐसा नही होगा क्योंकि इस वक्त तो जोर (बल) म अपने दोनो बराबर है। इधर मैं और मेरा बाजरा तथा उधर तुम और तुम्हारा रुपया। मैं बाजरा दे दूँ तो मेरे पास सिर्फ एक जोर रह जायेगा और तुम्हारे पास तीन जोर अर्थात् तुम रुपया और बाजरा होंगे। फिर मैं तुम्हे नही जीत सकूगा। अत बाजरा लेना हो तो रुपया दो और बाजरा लो।

● कुण सो घणो चतर है ?

चार दोस्तो मे विवाद हो गया कि उनमे कौन अधिक चतुर है। इसका फैसला करवाने के लिए चारो नवाब के पास चले। रास्ते म उन्हे एक पद चिन्ह दिखलाई दिया तो एक ने कहा कि यह स्त्री के पैर का चिन्ह है थोडी दूर जाने पर दूसरा बोला कि यह स्त्री अवश्य घर वालो से लड झगड कर आई है। तब तीसरा बोला कि यह स्त्री गर्भवती है और चौथा बोला कि यह स्त्री मुरीद जाति की है। फिर चारो आगे बढे तो उन्हे एक जानवर का पद चिन्ह दिखलाई पडा। एक ने कहा कि यह पद चिन्ह ऊँट का है दूसरे ने कहा कि इस पर काफी बोझ लदा होना चाहिए तीसरे ने कहा कि अवश्य ही इस पर गुड लदा होगा तब चौथा बोला कि यह ऊँट बाई आख से काना होना चाहिए। इस प्रकार वे बात करते चले जा रहे थे तो दो आदमी उनके पास पीछे से दौड-दौडे आये और उनमे से एक ने पूछा कि क्या कोई स्त्री इधर से गुजरी है ? तब उन्होने कहा कि स्त्री को तो नही देखा, उसका पद चिन्ह अवश्य देखा

है। फिर उन्होंने पूछा कि क्या वह स्त्री घर से लड़कर आई थी? क्या वह गर्भवती है और क्या वह मुरीद जाति की है? उनकी बातें सुनकर आगन्तुक को पूरा विश्वास हो गया कि इन लोगों ने मेरी स्त्री को अवश्य छिपा रक्खा है। अतः वह भी उनके साथ हो लिया। तब एक दूसरे आदमी ने अपने ऊँट के विषय में पूछा और उन चारों के द्वारा उपरोक्त जानकारी देने पर उसे भी विश्वास हो गया कि इन्हीं लोगों ने ऊँट को भी छिपा लिया है। अब छहों आदमी नवाब के पास चले। दोनों आदमियों ने नवाब से स्त्री और ऊँट दिलवाने की प्रार्थना की। तब उन चारों ने कहा कि सरकार! हमने न स्त्री को ही देखा है और न ऊँट को ही। हम चारों आदमी आपके पास इस बात का फैसला करवाने के लिए आ रहे थे कि हम चारों में कौन अधिक चतुर है। रास्ते में हमने एक पद-चिन्ह देखा तो एक ने कहा कि यह स्त्री के पैर का निशान है। दूसरे ने कहा कि यह स्त्री घर वालों से लड़कर आई है, क्योंकि उन पद-चिन्हों को देखने से मालूम होता था कि थोड़े-थोड़े कदम चलकर स्त्री मुड़-मुड़कर पीछे की ओर देखती रही है कि पीछे से कोई आ तो नहीं रहा है। आगे उस स्त्री के टीले पर बैठने के निशान थे और जब वह वहाँ से उठी तो दोनों हथेलियाँ जमीन पर रखकर उठी है। इससे हमने अनुमान लगाया कि वह अवश्य ही गर्भवती है। जहाँ वह बैठी थी वहीं एक नीले रंग का धागा भी मुँह से थूका हुआ पड़ा था और इसी कारण हमने सोचा कि वह मुरीद जाति की स्त्री है। फिर उन्होंने ऊँट के बारे में बतलाया, कि ऊँट के पैर के निशान बालू में काफी धँसे हुए थे इसलिए हमने सोचा कि ऊँट पर काफी वजन लदा हुआ है। ऊँट के पद चिन्हों के पास यहीं-वहीं गुड़ के छोटे-छोटे टुकड़े पड़ गये थे जिन पर चींटियाँ लगी हुई थीं इसलिए हमने सोचा कि ऊँट पर गुड़ लदा हुआ होगा। रास्ते के दाहिने हाथ की तरफ के वृक्ष ऊँट के द्वारा चरे हुए थे लेकिन बाईं ओर के वृक्षों को उसने मुँह भी नहीं लगाया था, बस इसी बात से हमने यह अन्दाज लगा लिया कि ऊँट एक आँख से काना

है। नवाब ने उन सबको दूसरे दिन हाजिर होने के लिए कहा। दूसरे दिन दरबार लगा तो नवाब ने एक बन्द मुँह का बरतन उन चारों को दिखलाया और उनसे पूछा कि बतलाओ इसमें क्या है? तब उन चारों में से एक ने कहा कि गोल है, दूसरे ने कहा लाल है, तीसरे ने कहा दानेदार है और चौथे ने कहा कि अनार है। बरतन को खोला गया तो उसमें से अनार ही निकला तब नवाब ने उन दोनों आदमियों से कहा कि तुम जाकर अपनी खोई चीजों को अन्यत्र तलाश करो, इनके पास नहीं है। फिर नवाब ने उन चारों को अपने यहाँ भोजन करने के लिए कहा। शाम को चारों भोजन करने बैठे तो एक ने कहा कि यह तो कुत्ते का मांस है, दूसरा बोला कि वह भी मरे हुए कुत्ते का, तीसरा बोला कि ये चावल भी श्मशान भूमि में पैदा हुए हैं तब चौथा बोला कि नवाब भी कुत्ते का मूत है। नवाब उनकी बातों को सुनकर बड़ा हैरान हुआ। जांच करवाने पर तीनों की बातें सत्य निकली तो चौथे की बात की सत्यता मालूम करने के लिए वह अपनी माँ की छाती पर कटार निकालकर बैठ गया और उससे सारी बात सच-सच बतलाने को कहा तो उसकी माँ ने कहा कि जब मैं ऋतुमयी थी तब लेटी हुई थी और एक कुत्ता मेरे पेट पर पेशाब कर गया था। तब नवाब ने उन चारों के पास आकर कहा कि तुम मेरे जन्म से पहले की बात बतला रहे हो अब मेरे से तुम्हारा फैसला नहीं होने का।

● धन बिना कदर कोनीं

मियाँ नूरमुहम्मद के पास पहले बहुत धन था लेकिन धीरे-धीरे वह गरीब हो गया। अब उसकी बीबी भी बात-बात पर उसका निरादर कर दिया करती थी। एक दिन उसकी बीबी ने कहा कि अरे, बैठा क्या करता है जाकर भैंस को जंगल में चरा ला। इस बात से वह बहुत दुखित हुआ और कहने लगा—

कभी क कहती नूर महम्मद, कभी क कहती है नूरा।
अब तो रंडो यूं उठ बोली, भैंस चराल्या बे नूरा॥

अर्थात् जब मेरे पास धन था तब तो मेरी स्त्री मुझे नूर मुहम्मद आदि सम्मान सूचक संबोधन से पुकारती थी लेकिन आज जब कि मैं गरीब हो गया हूँ तो यह रंडी मुझे बे नूरा कहकर सम्बोधित करती है।

● भान समुरो—भान जवाई

'भान' नाम के एक आदमी ने अपनी लड़की की शादी जिस लड़के से की संयोग से उसका भी नाम 'भान' ही था। तब किसी मसखरे ने कहा—

> भान ई सुसरो भान जवाई।
> भान की बेटी भान नैं ब्याई॥

अर्थात् भान ही श्वसुर है और भान ही दामाद है, भान ने अपनी बेटी का विवाह भान (स्वयं) से ही कर लिया है।

● बकरी की चतराई

एक बकरी ने किसी तरह एक जंगल में अपना राज्य जमा लिया और वह उस जंगल की रानी बनकर रहने लगी। अपने रहने के लिए उसने एक बहुत ऊँची कांटों की बाड़ बना ली। एक दिन उसके पास दो गीदड़ आये और उन्होंने बकरी से कहा कि मौसी! हम थोड़ा धरती खेती करने के लिए दे दो, उपज का आधा भाग हम तुम्हें दे देंगे। गीदड़ों ने सोचा कि बकरी जब लगान वसूल करने आयगी तब उसे चीर फाड़ डालेंगे। लेकिन उनका यह बात किसी तरह बकरी को मालूम हो गई और वह लगान लाने के लिए नहीं गई। अगले साल दो जिनावर' बकरी के पास आये और उन्होंने खेती के लिए जमीन मांगी। बकरी ने उन्हें जमीन तो दे दी लेकिन उसने सोचा कि ऐसे क्या कर निभेगा? अतः वह एक कुतिया के दो बच्चों को उठा लाई और उन्हें अपना दूध पिला-पिलाकर खूब होशियार बना लिया, जब लगान देने की बारी आई तो जिनावरों' ने बकरी को कहला भेजा कि आकर अपना लगान ले जाओ। लेकिन उनकी योजना यही थी कि बकरी के आते ही उसका काम तमाम कर

देंगे। बकरी भी दोनों कुत्तों को साथ लेकर बड़ी शान से लगान वसूल करने के लिए चली। गीदड़ों और 'जिनावरों' ने बकरी के साथ दो बड़े बड़े कुत्तों को आते देखा तो वे जान बचाकर भागे और सारा अन्न बकरी ने अपने कब्जे में कर लिया।

● दसखत डागलै सूकै है

एक सेठ का लड़का कुछ पढ़ा लिखा न था। गोबर के उपले पाथ कर छत पर सुखा दिया करता था, बस, वह इतना ही जानता था। सेठ का बड़ा नाम सुनकर कोई लड़की वाला उसकी सगाई करने के लिए आया तो उसने पूछा कि कंवरजी कितने पढ़े हुए हैं तो घर वालों ने कहा, "कंवरजी का दसखत तो डागलै सूकै है।" लेकिन आगन्तुक छत पर देखने के लिये गया तब (पहले राजस्थान में काठ की पाटी पर हरूफ जमाये जाते थे। काठ की पाटी को मुल्तानी मिट्टी से पोत कर सुखा लिया जाता था और तब उस पर हरूफ जमाये जाते थे) उसे असलियत मालूम हुई और वह चुप-चाप अपने घर चला गया।

● जाट की वैदंग

एक जाट अपने खेत में काम कर रहा था। थोड़ी दूर पर उसका ऊँट चर रहा था। चरते-चरते एक तूँबा ऊँट के गले में अटक गया। न वह तूँबा गले से नीचे उतरता था और न बाहर ही निकलता था। ऊँट की हालत बहुत खराब हो गई। जाट ने देखा कि अब ऊँट अवश्य मर जायेगा। तभी संयोग से एक आदमी उधर से निकला और उसने सारी स्थिति को समझ लिया। उसने एक पत्थर लिया और जिधर तूँबा अटका हुआ था वहाँ जोर से मारा। तूँबा फूट गया और ऊँट के पेट में चला गया। ऊँट स्वस्थ हो गया। जाट ने सोचा कि वैद्यक तो बस इतना ही है। वह खेती छोड़कर वैद्य बन गया। पास के गाँव में गया तो वहाँ एक बुढ़िया बीमार थी। उसके गले में एक बड़ी गाँठ निकली हुई थी और इस कारण उसकी हालत चिन्ताजनक बनी हुई थी। जाट ने कहा कि मैं वैद्य

हूँ और इसे अभी ठीक कर दूंगा। घरवालों ने उसे चिकित्सा करने की अनुमति दे दी। तब वह एक बड़ा-सा पत्थर उठाकर लाया और उसे बुढ़िया के गले पर दे मारा। बुढ़िया एक चीख के साथ वहीं ढेर हो गई। घर वाले उसकी मूर्खता पर बहुत क्रोधित हुए लेकिन अब क्या हो सकता था? सारे लोग अरथी लेकर श्मशान घाट की ओर चले। आग की हँडिया उस जाट के गले में लटका दी गई। (राजस्थान मे चिता प्रज्वलित करने के लिए आग हँडिया मे डलाकर ले जाने की प्रथा है) आग की गरमी से उसकी छाती पर दाग पड़ गए। वह किसी तरह वहाँ से पिंड छुड़ाकर दूसरे गांव में गया तो वहाँ भी एक आदमी बीमार था। वैद्य ने कहा कि इसका इलाज तो मैं अभी कर दूंगा लेकिन आग की हँडिया मैं कदापि गले में नहीं डालूंगा।

● बे रुत की चीज

एक जाट का लड़का अपनी ससुराल गया। यद्यपि जेठ का महीना था तथापि ससुराल वालों पर रौब जमाने की नीयत से वह गरम कोट पहनकर गया और साथ में एक कीमती कम्बल भी ले गया। ससुराल वाले उसका तात्पर्य समझ गये और उन्होंने एक बड़े अँगीठे मे बहुत सारे दहकते हुए कोयले लाकर उसके आगे रख दिये। जब उसने पूछा कि यह क्या करते हो तो ससुराल वालों ने कहा कि कवर जी! आपको जाड़ा बहुत लगता है इसलिए आग तापने के लिए यह अँगीठा आपके सामने रक्खा गया है। तब उसे अपनी भूल मालूम हुई और वह लज्जित हो गया।

● हर कठै, मन कठै

एक मौल्वी नमाज़ पढ़ने के लिये अपनी चादर बिछाकर उस पर खड़े थे। शाम हो चली थी। उसी वक्त एक कामातुर युवती जो कि अपने उपपति के पास जा रही थी, उधर से गुजरी। उसने मौल्वी की चादर को नहीं देखा और उस पर पैर रखती हुई चली गई। इससे

मौलवी को बड़ा क्रोध आया और उसने सोचा कि लौटते वक्त उस दुष्टा की खबर लूँगा। गुस्से के मारे उसने नमाज भी नहीं पढ़ी। बहुत देर बाद जब वह लौटी तो मौलवी उस पर बरस पड़ा और उसे पीटने के लिये उतारु हो गया, तब उस युवती ने कहा—

नर रांची जान्यो नहीं, तं कस लख्यो सुजान।
पढ़ि कुरान बोरो भयो, नहि रांच्यो रहमान॥

(हे सुजान, मैं तो मनुष्य मे अनुरक्त थी इसलिए मेरा ध्यान तुम्हारी चादर की तरफ नही गया, लेकिन तुम तो खुदा से लौ लगाए थे फिर भला तुमने कैसे जाना कि मेरा पैर चादर पर पड गया है। तुम तो बस कुरान पढ़कर घमड मे भूल हुए हो, वास्तव मे तुम्हारा मन ईश्वर मे लगा नही।)

दोहा सुनकर मौल्वी के ज्ञाननेत्र खुल गये, उसने स्त्री से क्षमा माँगी और फिर सच्चे मन से खुदा की इबादत करने लगा।

● कदरदान ई कदर करै

एक बार एक चित्रकार एक चित्र बनाकर राजा के पास ले गया। राजा ने उसे पचास रुपये दिये। तब चित्रकार ने पूछा कि महाराज, आपने चित्र की कीमत दी है या मुझे गरीब जानकर रुपये दे दिये हैं। तब राजा ने कहा कि चित्र मे क्या धरा है? हमने तो तुमको गरीब जानकर ही रुपये दिये हैं। तब चित्रकार अपना चित्र लेकर वहाँ से चला आया। रास्ते मे उसे एक गरीब सा आदमी मिला। उसने चित्र देखा तो वाह-वाह कर उठा। उसने कहा कि इस चित्र की कीमत दस हजार रुपये भी कम है। तब चित्रकार ने पूछा कि भला ऐसी इसमे क्या बात है? तब वह बोला कि चित्र म एक गूजरी सिर पर पानी का घडा लिये चली जा रही है, उसके पैर मे काँटा लग गया है सो उसके दर्द से उसके नाक मे बल पड गया है। वह दाँतो से आठों को दबाये सीत्कार करती भी चली जा रही है। पीडा के कारण इसके रोम रोम म बल पडा हुआ है।

बस इसी बात पर मैं रीझ गया हूँ। चित्रकार उसकी कद्रदानी पर बहुत खुश हुआ। उस आदमी के पास सिर्फ एक रुपया ही था, वही चित्रकार ने चित्र की कीमत स्वरूप ले लिया और सन्तुष्ट होकर चला गया।

● मायलाजी, म्हानें भी खिलाओ

एक जगह बहुत से चूहे खेल रहे थे। वहाँ एक चूहा और आया, उसने कहा कि 'मायलाजी, मायलाजी, मनें ई खिलाओ'। (मित्रो मुझे भी अपने साथ खेलने दो) तब अन्य चूहों ने कहा कि तुम्हारी पूंछ बहुत लम्बी है, पहले इसे कटवाकर आओ तब खिलायेंगे। चूहा नाती के पास अपनी पूंछ कटवा कर आया और फिर उन चूहों से अपने साथ खिलाने की प्रार्थना की। चूहों ने कहा कि तुम्हारी पूंछ में तो खून टपक रहा है, जा अपनी पूंछ फिर से जुड़वाकर आओ तब खिलायेंगे। चूहा फिर नाती के पास गया और उसने नाती से कहा कि या तो मेरी पूंछ जोड़ दो अन्यथा मैं तुम्हारी करौती उठा ले जाऊँगा। नाती ने कहा कि पूंछ नहीं जुड़ सकती तब चूहा उसकी करौती ले भागा। आगे गया तो चूहे ने देखा कि एक स्त्री हाथों से घास काट रही है। उसने कहा कि हाथों से क्या घास काटती है, यह मेरी करौती ले ले। वह करौती से घास काटने लगी तो करौती टूट गई और तब चूहा करौती के बदले उसकी हँडिया ले भागा। चूहा आगे गया तो उसने देखा कि एक स्त्री चूल्हे में दूध दुह रही है। चूहे ने अपनी हँडिया उस दूध दुहने के लिये दे दी। लेकिन भैंस ने एक लात फटकारी और हँडिया फूट गई। तब चूहे ने कहा कि या तो मेरी हँडिया दे नहीं तो तेरी भैंस ले जाऊँगा। स्त्री के पास हँडिया थी नहीं, इसलिए चूहा भैंस को ले भागा। चूहा भैंस को लेकर आगे चला तो उसने देखा कि एक दूल्हा अपनी बहू को पैदल लिए जा रहा है। चूहे ने दूल्हे से कहा कि अपनी लाडी (बहू) को पाडी (भैंस) पर चढ़ा ले। बहू भैंस पर चढ़ गई। आगे नदी आई। भैंस नदी में बह गई और चूहा पाडी के बदले लाडी

लेकर घर आया। घर आकर उसने अपनी माँ को पुकारा, माँ जल्दी किवाड खोल, मैं यह लाया हूँ।

● जै होता मैं घडा घड़ूला

एक गडरिया जगल म बकरियाँ चराया करता था। गडरिये की स्त्री वही कुएँ पर पानी भरने आया करती । गडरिये की स्त्री तो अपने पति का जानती थी, लेकिन गडरिया उसे नही पहचानता था। जब वह पानी भरने आती तो वह भी अपनी बकरिया को पानी पिलाने वही आ जाता और उसकी तरफ देखकर यह दोहा बोला करता—

> **आम का जोबन आम निमोली नीम का जोबन सूवा।**
> **मरद का जोबन पान फूल, पणिहार का जोबन कूवा॥**

आम का यौवन तभी सार्थक है जब उसमे आम लगें। नीम का यौवन तभी है जब उसमे निमोलिया लगें और सुग्गे वृक्ष पर आ आ कर बैठें। मरद अपने यौवन को तरह तरह के पान फूलो से सजाता है लेकिन पनहारी का यौवन तो कुआँ ही है।

एक रात गडरिया जगल मे ही अपनी कम्बल ओढे सोया था, तब वह स्त्री उसके पास गई और उसकी कम्बल के एक कोने को पकड कर उसे उघाडना चाहा तो गडरिये ने सोचा कि कोई बकरी होगी, अत वह बोला, 'चै भूरती' और उसने कम्बलको कसकर दबा लिया। फिर उसने दूसरी तरफ से कम्बल उतारना चाहा तो फिर गडरिये ने, 'चै कालती' कहकर कम्बल कसकर लपेट लिया। इस प्रकार करते करते सबेरा होने को आया तो गडरिये की स्त्री चली गई। दूसरे दिन जब दोना कुएँ पर मिले तो गडरिये ने अपना वही दोहा कहा—

> **आम का जोबन आम निमोली नीम का जोबन सूवा।**
> **मरद का जोबन पान फूल, पणिहार का जोबन कूवा॥**

तब उस औरत ने कहा—

अर्थ—अरे जंगल में बसने वाले हिजड़े रसिक तुम ने चोरी करना नहीं जाना। रात भर गोरी तुम्हारे इर्द गिर्द घूमती रही और तुमने चैं चैंन करके रात बिता दी।

> घोडू रसिया जंगल बसिया, न कर जाणी चोरी।
> चैं चैं करतां रात बिताई, रात्यू घूमी गोरी॥

इस दोहे को सुनकर गडरिये को अपनी भूल मालूम हुई और तब अपनी झेंप मिटाने के लिये उसने कहा—

> "कुवा रे तू धक्कम धक्को, बैल जुरैंगा धोरी।
> जे कूवें का लक्कड होता, तो लिपटती गोरी॥"
> जे होता मैं घडा घडूला, गोडे चढ़, छातियां पर चढ़ता
> सिर पर चढता लड्या लड्या।

अर्थ—अरे कुए, मजबूत बैल तुम्हारे जुतेंगे लेकिन यदि लक्कडे की जगह मैं तुम्हारे ऊपर लगा होता तो गोरी मेरे से लिपटती। और यदि मैं घडा होता तो घुटनों, और वक्ष का स्पर्श करता हुआ गोरी के सिर पर चढ़ता।

तब औरत ने कहा—

> जे तूं होता घडा घड्ला, गोडे चढ़, छातियां पर चढ़ता
> सिर पर चढ़ता लड्या लड्या।
> पकड़ कान चूल्हें पर धरती,
> जद तू बलता पड्या पड्या।

यदि तू घडा होता तो घुटनों और वक्ष का स्पर्श करता हुआ सिर पर चढता। लेकिन जब मैं कान पकड कर चूल्हे पर चढाती तब तू चूल्हे पर पडा पडा जलता भी तो!

तब गडरिये ने फिर कहा—

पकड़ कान चूल्हे पर धरतो,
जद मैं बलता पड़्या पड़्या।
पण जद तू न्हावण नें जमती
यार देखता अड़्या अड़्या।

यह सही है कि मैं चूल्हे पर पड़ा जलता लेकिन जब तू कपड़े उतार कर स्नान करने बैठती तब तेरे सौन्दर्य को देखने का आनन्द भी तो मैं ही उठाता।

यह सुनकर गड़रिये की औरत लज्जित होकर घर चली गई।

● दुनिया टिकण दे कोनी

एक साधु रास्ते से कुछ हटकर सोया हुआ था। अपने सिरहाने के लिए उसने बालू का एक तकिया-सा बना लिया था। पानी भरने के लिये उधर से कुछ पनिहारिनें गुजरी तो उनमें से किसी ने कहा कि यह साधु हो गया, लेकिन फिर भी ऐश करना चाहता है। साधु ने यह बात सुनी तो मिट्टी को समतल कर दिया और पड़ रहा। पनिहारिनें लौटी तो फिर उनमे से एक ने कहा कि साधु हो गया लेकिन गुस्सा नही गया कितना तुनक मिजाजी है ? तब बेचारा साधु वहाँ से उठकर किसी निर्जन स्थान मे चला गया।

● राजा सासण नें ब्याही

एक राजा एक सांसी जाति की स्त्री पर मोहित हो गया और उसे अपनी रानी बनाकर अपने नगर मे ले आया। राजा की आज्ञा से उसके लिये विविध प्रकार के भोज्य पदार्थ बनाये जाते थे लेकिन वह सब सुखों के होते हुए भी सूख-सूख कर कांटा बनती जा रही थी। राजा के पूछने पर एक दिन उसने कहा कि मेरे लिये एक अलग महल बनवा दीजिए। राजा ने महल बनवा दिया तो वह अकेली ही उसमे रहने लगी। दासियाँ भोजन के थाल महल में रख जाती लेकिन उन्हे वहाँ ठहरने की

आता नहीं थी। थोड़े ही दिनों में रानी खूब हृष्ट-पुष्ट हो गई। इसका कारण यह था कि उसे घर-घर माँगने की आदत थी और रानी बनने के बाद उसका यह काम छूट गया था और फलतः वह दुबली होने लगी थी। यहाँ एकान्त में उसे अपनी इच्छा पूरी करने का अवसर मिल गया। वह खाने की चीजों को महल के आलों में रख देती थी और फिर एक आले के पास जाकर कहती, 'माई' तेरा बचिया जीवे, एक ठंडी बासी रोटी का टुकड़ा दिना।' फिर उस आले से रोटी लेकर खा लेती थी। तब दूसरे आले के पास जाकर उसी क्रिया को दुहराती। एक दिन राजा के कहने से एक दासी ने छुपकर सारी लीला देख ली तब सारा रहस्य प्रकट हो गया।

● खुदा की खुदाई

एक दिन एक मियाँ नमाज पढ़कर कह रहा था कि या खुदा तेरी खुदाई को कोई नही जानता। वहीं एक जाट खड़ा था। उसने कहा कि खुदा की खुदाई को मैं जानता हूँ। मियँ ने कहा कि तू निरा बेवकूफ है, बड़े-बड़े पैगम्बर भी उसकी खुदाई को नहीं जानते तू देहाती जट्ट भला क्या जाने ? लेकिन जाट ने कहा कि शर्त बद ले। यदि तू हार गया तो तेरे घर का सारा सामान मैं ले लूंगा अन्यथा मेरे घर का सारा सामान तुम ले लेना। दोनो मे शर्त लग गई। तब दोनो दिल्ली के बादशाह के पास फ़ैसला करवाने के लिये गये। जाट ने कहा कि बादशाह सलामत यमुना किनारे चलिए, मै वहीं आपको खुदा की खुदाई दिखलाऊँगा। जब वे तीनों यमुना किनारे पहुँचे तब जाट ने नदी की ओर हाथ करके कहा कि यह खुदा की खुदाई है या मियाँ के बाप की। जाट की चतुराई देख कर दोनों हैरान हो गए। बादशाह ने जाट के हक मे फैसला दिया और जाट को मियाँ के घर का सारा सामान मिल गया।

ने लडकियो से कहा कि मैं तुम्हारी सगाई करने के लिए बाहर जा रहा हूँ। मेरे पीछे मे कोई मेहमान आये तो उम खाना खिला देना लेकिन बोलना नहीं। ब्राह्मण गया तो पीछे से दो आदमी अपने लडको की सगाई करने के लिए उस ब्राह्मण के घर आये। ब्राह्मण घर म था नही। लडकियो ने दाल भात बनाकर उन्हे भोजन करने के लिए बिठला दिया। जब व खाना खाने लगे तो बडी लडकी ने पूछा, "क्यू दाल सोखी होई हैनी ?' तब दूसरी ने कहा, "सोखी क्यू कोनी होती ?' तब तीसरी ने कहा, 'बाई बापूजी बरजग्या हा नी क थे बोया मतना।' तब चौथी ने कहा, बाई देखले मैं तो कोनी बोई हूँ।' आने वाला ने जान लिया कि चारा ही तोतली हैं और उन्होने खाना खाकर अपना रास्ता लिया।

(पहली न पूछा, 'क्यो दाल अच्छी बनी है न ?' इस पर दूसरी ने कहा, 'अच्छी क्या न बनती ?' तीसरी बोली, 'बापू मना कर गये थे न कि बोलना मत।' इस पर चौथी ने कहा 'देख लो मैं तो नही बोली हूँ।')

● सी--चरी

एक ठाकुर ने एक चारण को एक बकरी दी। चारण बकरी लेकर किसी दूसरे ठाकुर के यहाँ कुछ और पाने की आशा से गया। लेकिन वह ठाकुर बहुत कृपण था। उसने सोचा कि इस चारण की बकरी चुरानी चाहिए, इसलिए उससे बोला कि बारहट जी बकरी उधर बाँध दीजिए। चारण ठाकुर की चाल को समझ गया था इसलिए उसने कहा कि ठाकराँ, मैं तो बकरी को रात-दिन अपने पास ही रखता हूँ। शाम हुई तो ठाकुर ने चारण को सोने के लिए एक कमरा बतला दिया। माघ का महीना था और कमरा बहुत ठडा था। ठाकुर ने उसे ओढने बिछाने के लिये कुछ दिया नही था। कमरे के बाहर दरवाजे मे उसने इस नीयत से कुडा लगवा दिया कि रात को जाडे के मारे बारहट मर जायेगा तो बकरी अपने रह जाएगी। बारहट के पास ओढने के लिये सिर्फ एक साधारण सी चादर थी। जब वह जाडे के मारे ठिठुरने लगा तो उसने कोने म पडी

हुई चक्की के पाट को सिर पर रख लिया और कमरे में चक्कर काटने लगा। रात भर वह इसी प्रकार चक्कर लगाता रहा जिससे जाडा भाग गया और उसके शरीर से पसीना चूने लगा। सवेरा होने को हुआ तो बारहट अपनी चादर तानकर सो गया। सबेरे ठाकुर ने किवाड खोले और बारहट को ठाठ मे सोया देखा तो उसे बडा आश्चर्य हुआ। ठाकुर ने झूठी समवेदना प्रकट करते हुये कहा कि हम तो रात आपको कम्बल देना भूल गये। इस पर चारण ने कहा कि कम्बल की आवश्यकता ही क्या थी? यह बकरी बडी करामाती है, रात भर यह मेरे जाडे को चरती रही और मैं आनन्द पूर्वक सोया रहा। तब ठाकुर ने कहा कि यह बकरी हमे दे दीजिये और इसकी जो कीमत आप लेना चाहें हमसे ले लीजिये। बारहठ ने पहले तो बहुत ना-नुकर किया लेकिन फिर ठाकुर को दो सौ रुपये लेकर बकरी दे दी। बारहठ रुपये लेकर चलता बना। शाम को ठाकुर ने बकरी को अपने पास बांध लिया और कम्बल रजाई सब अलग रखवा दिए। लेकिन ठाकुर सोया तो थोडी ही देर म उसे ठंड बहुत सताने लगी। तब उसने रजाई और कम्बल मगवाकर ओढे, लेकिन चारण की चालाकी पर उसे बडा क्रोध आया। सवेरा होते ही वह घोडी पर चढकर चारण की खोज मे चल पडा। चारण पास के ही किसी गाँव मे रात भर ठहर गया था, सबेरा होते ही वह भी वहाँ से चल पडा। उसे आशका थी कि ठाकुर जरूर आयेगा अत जल्दी-जल्दी चला जा रहा था, लेकिन ठाकुर जल्दी ही चारण के नजदीक आ पहुँचा। उसने दूर से ही बारहठ को आवाज दी। बारहठ को और तो कोई उपाय नहीं सूझा, नजदीक ही झाडी मे एक रीछ छुपा हुआ था सो उसके ऊपर जा बैठा और लगा उसे दौडाने। इस भागा-दौडी मे उसकी न्योली फट गई और उसमे निकल-निकलकर रुपये जमीन पर गिरने लगे। इतने मे ठाकुर ने बारहठ को आ पकडा और बिगडकर बोला कि तूने मेरे साथ धोखा किया है। तब बारहठ ने कहा कि ठाकुर साहब मैंने तो आपके बहुत कहने से बकरी आपको दे दी अन्यथा मैं किसी हालत मे बकरी आपको नही देता। आपने सोते वक्त

बकरी को धूप सेंधा था या नहीं, यदि नहीं तो बकरी ने भी अपना काम नहीं किया होगा। ठाकुर ने सोचा कि भूल हमारी ही है अतः वह नम्र हो गया। फिर उसने रींछ के बालों में रुपये गिरते देखे तो पूछा कि बारहठजी ! यह क्या तमाशा है ? तब बारहठ ने कहा कि ठाकुर साहब, मैं इस रींछ के दस हजार रुपये मांगता हूँ और यह हर साल मुझे एक हजार रुपये देता है। रुपये लेने के लिए ही तो मैं यहाँ आया था। तब ठाकुर ने कहा यह रींछ मुझे दे दो और बदले में घोड़ी ले लो। बारहठ ने बहुत आनाकानी की लेकिन ठाकुर के बहुत कहने-सुनने पर उसने घोड़ी ले ली और ठाकुर को रींछ पर बैठा दिया। बारहठ ने धरती पर गिरे हुए रुपये उठाये और घोड़ी पर चढ़कर नौ दो ग्यारह हो गया। इधर रींछ ठाकुर से लिपट गया और उसके सारे कपड़े फाड़ डाले। बड़ी मुश्किल से ठाकुर उससे पीछा छुड़ाकर अपने घर आया।

● बलगड को जेवडो, खोसी को मूसल

एक जाट और ठाकुर मित्र थे। जाट के पास काफी पैसे थे, लेकिन ठाकुर बिलकुल भूखा था। ठाकुर के गाँव से जाट का गाँव कोई दो कोस की दूरी पर था। ठाकुर प्रायः एक दो दिन से जाट के घर चला जाता और वहीं दो जून खाना खा लिया करता। जाटनी को यह बात बड़ी बुरी लगती, लेकिन जाट उसकी एक न सुनता। एक दिन जाटनी ने जाट से कहा कि ठाकुर तो हमेशा ही तुम्हारे घर आता है, एक दिन तो तुम भी उसके घर जाओ। बहुत कहने-सुनने पर जाट ठाकुर के घर गया। जाट को आया देखकर ठाकुर बहुत सकोच में पड़ गया कि इसे क्या खिला-येंगे ? और यदि नहीं खिलायेंगे तो हमेशा के लिये इसके घर जाना बन्द हो जायगा। फिर ठाकुर ने शिष्टाचार दिखलाते हुए जाट का स्वागत किया और उसे हुक्का भरकर दे दिया। जाट हुक्का पीने लगा, तब ठाकुर ने कहा कि मैं एक जरूरी काम से बाहर जा रहा हूँ, थोड़ी देर

में आ जाऊँगा। घर से बाहर निकलकर ठाकुर दो चार दुकानदारों के पास गया और उनसे कहा कि मुझे रसोई का थोडा सामान दे दो, पैसे फिर दे दूँगा अन्यथा मेरी रोटी सदैव के लिये बन्द हो जायेगी। तब उन लोगों ने कहा कि तुमने पहले वाले पैसे भी अभी तक नही दिये है अतः हम कोई चीज उधार नही देंगे। लेकिन तुम्हे एक तरकीब ऐसी बता देते है कि जिससे साँप भी मर जाय और लाठी भी न टूटे। उन्होंने ठाकुर से पूछा कि जाट और उसके बाप का नाम क्या है? ठाकुर ने बतलाया कि जाट का नाम हेमा है और इसके बाप का नाम खेमा था। तब उन लोगो ने कहा कि तुम चलो, और थोड़ी देर मे हम लाठियाँ लेकर आ रहे हैं। हम कहेंगे कि इसके बाप ने हमारे बाप को मारा था। अत आज इसे मारकर बदला लेंगे। तुम हमे रोकने के लिये लाठी लेकर हमारा सामना करना और जाट को पीछे से भगा देना। ठाकुर को यह सलाह पसन्द आई और वह जाट के पास आकर गप मारने लगा। थोड़ी देर मे वे लोग लाठियाँ लेकर आये और उन्होने ठाकुर से कहा कि तुम्हारे घर मे हमारा शत्रु हेमला जाट छुपा हुआ है, उसे बाहर निकाल दो, इसके बाप खेमले ने हमारे बाप को मारा था, आज इसे मारकर भरपूर बदला लेंगे। तुमने कुछ गडबड की तो आज तुम्हारी भी खैर नहीं है। यों कहकर उन्होंने दो चार लाठियाँ इधर-उधर पीटी। जाट ने सोचा कि हो सकता है मेरे बाप ने इनके बाप को मारा हो। तब ठाकुर ने जाट से कहा कि मेरे जीते जी ये लोग तुम्हारा बाल भी बाँका नही कर सकेंगे। लेकिन ये लोग सात आठ आदमी है और मैं अकेला हूँ इसलिये अच्छा होगा कि जब तक मैं इन्हे रोकूँ तुम पीछे बाड पर से भाग जाओ। जाट को यह बात जँच गई और तब ठाकुर अपनी लाठी लेकर उन्हें ललकारता हुआ फलसे के पास आ गया। उन्होंने दो चार लाठियाँ आपस मे बजाईं और जाट पीछे से कूदकर अपने घर भाग गया। उसने पीछे मुडकर भी नहीं देखा। जाटनी ने पूछा तो जाट ने कहा कि आज ठाकुर न होता तो वे लोग मुझे जान से मार डालते। दोस्त हो तो ऐसा हो। अब कभी आये

तो उसकी और अधिक आव-भगत करना। जाटनी ठाकुर की चाल को समझ गई, लेकिन कुछ बोली नहीं। उसने सोचा कि अब तरकीब से काम लेना चाहिये। अगली बार ठाकुर आया तो जाटनी ने उसका अधिक सत्कार किया और उसे पलग पर बैठाकर स्वय भी पलग से नीचे बैठ गई। थोडी ही देर मे जाटनी सिसक-सिसककर रोने लगी तो ठाकुर ने पूछा कि भाभी! आज क्या बात है? जाटनी ने कहा कि देवर! बात यह है कि जिस दिन तुम्हारा भाई तुम्हारे गाँव गया था, उसी दिन से न जाने उसे क्या हो गया है कि अपने पराया को भी पहचानता नहीं है। वह एक रस्सा और एक मूसल लिये दिन भर घूमता रहता है और जो भी उसके सामने आ जाता है उसे रस्से से बाँधकर मूसल से मार डालता है। ठाकुर ने यह बात सुनी तो बहाना बनाकर वहाँ से भाग निकला। जाटनी ने कहा कि तुम्हारे लिये खाना बना देती हूँ, लेकिन ठाकुर वहाँ नही रुका। थोडी देर बाद जाट आया तो जाटनी ने कहा कि आज तुम्हारा दोस्त नाराज होकर चला गया है वह मुझसे "एक बलगड का जेवडा और खीसी का मूसल" माँगता था, लेकिन मैंने दिये नहीं। तब जाट बहुत क्रोधित हुआ और एक मजबूत रस्सा और मूसल लेकर ठाकुर को देने के लिए उस के पीछे दौडा। ठाकुर ने उसकी आवाज सुनी और उसे पीछा करते देखा तो और भी तेजी से भागा। इधर जाट बहुत दूर तक तो उसके पीछे दौडता रहा लेकिन जब ठाकुर का गाँव नजदीक आने लगा तो यह सोचकर कि वहाँ उस दिन वाले बैरी तैयार है, अपने घर लौट आया।

● मूलोजी

एक बार एक सेठ ने कुछ आदमियो को बहुत से ऊँट देकर सामान भर कर लाने के लिये कामरूप देश भेजा। सेठ ने उन्हे यह बात भी समझा दी थी कि वहाँ जादू टोना करने वाले बहुत होते हैं इसलिए सावधान रहना। वे लोग चले गये और जब सामान ऊँटो पर लादकर लौट रहे थे तब विश्राम करने के लिये एक गाँव मे ठहरे। वहाँ के लोग जादूगर थे। उन्होंने बना-

रियो को मत्रित मूलियाँ लाकर दी और वे सब बडे चाव से मूलियाँ खाने लगे। उनमे से सिर्फ एक आदमी ने आंख बचाकर मूली फेंक दी और बाकी सब आदमियों न मूलियां खा ली। मत्रित मूलियाँ खाने से वे सब (एक को छोडकर) मोहित हो गये। मूली खिलाने वालो ने जब देखा कि मूली अपना असर कर चुकी है तब उनमे से एक ने कहा, 'मूलोजी' तब सब वतारिया ने एक साथ कहा, 'हाँ-सा' तब उन्होंने कहा कि ऊँटो पर से सामान उतार दो। सबने सामान उतार दिया। फिर उसने कहा, 'मूलोजी' सबने कहा, 'हां-सा', तब आदेश मिला कि सब यहीं सो जाओ। सब सो गये, तो गाँव वालो ने देखा कि जादू इन पर पूरा असर कर चुका है। सबेरे आकर सारे सामान को बाँट लेगे, अत सब चले गये। आधी रात होने पर वह आदमी जिसने मूली नही खाई थी उठा और बोला, 'मूलोजी' सबने कहा, 'हां-सा, तब उसने कहा कि ऊँटो पर सामान लादो। सबने सामान लाद लिया, तब उसने फिर कहा, 'मूलोजी' सबने कहा, 'हां-सा', हुक्म मिला, अब जल्दी-जल्दी यहां से ऊँटो को लेकर चलो। सारे लोग अपने-अपने ऊँटो को लेकर चलने लगे। सबेरे गाँव वाले आये तो वहाँ कोई नही था। तब उन्होंने जान लिया कि अवश्य ही उन आदमिया मे से किसीने मूली नही खाई थी और वही उन्ह हाँक ले गया है। लेकिन अब क्या हो सकता था, क्योंकि वे अब तक उनकी सीमा को पार कर चुके थे। वे लोग जब सेठ के यहाँ पहुँचे तो सेठ ने कहा कि सकुशल वापिस आ गये, अच्छा हुआ, अब सामान उतार दो। लेकिन किसी ने सेठ की बात पर ध्यान नही दिया। तब जिस आदमी ने मूली नही खाई थी वह बोला कि सेठजी, ये लोग ऐसे कुछ नही करते, देखो, मैं इन्हे समझाता हूँ। तब उसने कहा, 'मूलो-जी', सबने उत्तर दिया, 'हाँ-सा' तब उसने आदेश दिया कि ऊँटो पर से सामान उतारकर उपर रख दो। सब सामान उतारने लगे। तब उस आदमी ने सारी स्थिति सेठ को समझाई और तब सेठ ने अपने एक योग्य आदमी को बागरूप भेजा। वह वहाँ से एक जादूगर को लाया और उसने आकर सबको जादू से मुक्त किया।

● आंधो अर भैंसो

एक अन्धा आदमी रात को अपने घर से बाहर निकला। घर के दरवाजे के पास ही एक भैंसा बैठा था। अन्धा ठोकर खाकर भैंसे पर गिर पड़ा। भैंसा बिदका और अन्धे को लिये-दिये ही उठकर तड़बड़-तड़बड़ करता हुआ भाग चला। सामने से भी दो अन्धे आदमी आ रहे थे, उन्होंने भागने की आवाज सुनी तो बोले, "भाई! बचाना, बचाना।" अन्धे सवार ने पूछा कि मैं किस चीज पर चढ़ा हुआ हूँ, यह तो मुझे बतलाओ? तब उन्होंने कहा कि हम तो अन्धे हैं क्या तुम भी अन्धे हो? इतना कहते-कहते भैंसा उन दोनों से जा टकराया और सबको पटक पछाड़कर भाग गया।

● मांगै कुण था?

एक बार गाँव में अकाल पड़ा तो मियाँ जी के घर में कुछ खाने को न रहा। उसने एक साधु को मांगते देखा तो सोचा कि इस वक्त यह धंधा ही अच्छा है। तब उसने लाठी के सिरे पर एक हँडिया बाँध ली और माँगने के लिए चल पड़ा। जब जिस घर में वह साधु जाकर कहता, 'अलख जागे' तब मियां लाठी के बँधी हँडिया को आगे करके कहता 'तेरी न मरी आगे।' घर वाले उसकी हँडिया में अनाज डाल देते। और साधु यों ही रह जाता। एक दिन साधु को क्रोध आया और उसने अपने चिमटे से हँडिया को फोड़ दिया। मियाँ का उन घरों में आना-जाना तो हो ही गया था, इसलिए रोज उन घरों में चला जाता और पीठ पीछे हाथ करके खड़ा हो जाता। घर की कोई स्त्री रोटी देती तो मियाँ पीछे हाथ किये ही ले लेता। दूसरी साल वर्षा अच्छी हुई और मियाँजी के यहाँ भी खूब अन्न पैदा हुआ। तब मियाँ एक दिन मस्त बना, मलार गाता हुआ खेत से आ रहा था। सामने से एक जाटनी और उसकी लड़की आ रही थी। मियाँ को पहचानकर लड़की ने कहा कि माँ, जो अपने घर रोटी माँगने आया करता था यह वही आदमी है। सुनकर मियाँ को तैश आ गया और बोला कि माँगता कौन था? लोग पीछे पड़-पड़ कर घालते थे।

● गांगियासर की राय

एक बार एक मीना किसी गाँव से एक बैल चुराकर ले आया। गाँव के कुछ आदमियो ने हथियार लेकर उसका पीछा किया। चोर ने सोचा कि ये लोग बैल को तो ले ही जायेंगे साथ ही मुझे भी मार डालेंगे। डर के मारे वह थर-थर काँपने लगा। तब तक वह गागियासर की सरहद मे प्रवेश कर चुका था और उसने गागियासर की राय माता से बडे आर्त स्वर मे प्रार्थना की—

गागियासर की राय, करो बलद सं गाय।

(हे गा गिया सर की राय माता, इस बैल को गाय बना दीजिए।)

राय माता ने उसकी प्रार्थना सुन ली और बैल गाय मे बदल गया। पीछा करने वालो ने जब कहा कि तू हमारा बैल चुरा लाया है तब चोर ने कहा कि भाई लागो ! मेरे पास बैल है ही कहाँ ? मैं तो अपनी गाय लिये जा रहा हूँ। बैल की जगह गाय को देखकर वे लोग भी निरुत्तर हो गये।

● हां अर् ना

दो जाट, भाई थे। बडा समाना था, छोटा भोला। एक बार बडे भाई ने कहा कि मुझे तो आजकल खेत म बहुत काम है, तू जाकर अपनी भाभी को उनके पीहर से ले आ। छोटे ने कहा कि मैं भाभी को लेने नही जाऊँगा क्योंकि वहाँ स्त्रियाँ मुझ से तरह-तरह की बातें पूछेंगी, उन सबका मरे से उत्तर नही दिया जा सकेगा। तब बडे भाई ने समझाया कि तुम अधिक कुछ न कहकर सिर्फ हाँ—ना म उत्तर द देना। बडे भाई की सीख उसे पसन्द आई और वह अपनी भाभी को लाने के लिये चला गया। वहाँ स्त्रियो ने उससे पूछा कि क्या तुम लेने के लिये आये हो ? तब उसने कहा कि हाँ। फिर उन्होंने पूछा कि वे स्वय नही आये ? तब उसने कह दिया कि ना। फिर उनसे पूछा गया कि क्या वे बीमार है ? तब

उसने सोचा कि भाई बीमार तो नही हैं लेकिन अब हाँ कहने की बारी है, इसलिये उसने कह दिया कि हाँ। फिर स्त्रियो ने पूछा कि क्या चल फिर नही सकते ? तब उसने कहा, 'ना'। फिर स्त्रिया ने पूछा कि क्या वैद्यो ने बिल्कुल उत्तर दे दिया है ? तब उसने कहा कि हाँ और जब उन्होने पूछा कि क्या उनके बचने की कोई आशा नहीं है ? तब उसने जवाब दिया कि ना। अन्त मे स्त्रियो ने पूछा कि क्या जँवाईजी मर गये ? तब उसने कह दिया कि हाँ। इतना सुनना था कि घर मे रोना धोना मच गया। जाट की स्त्री की चुड़ियाँ वगैरह तोडकर उसे विधवा का बाना पहना दिया गया और वह मूर्ख अपना-सा मुँह लेकर अकेला ही घर चला आया। जब उसके भाई ने पूछा तो उसने उत्तर दिया कि भाभी तो विधवा हो गई है। उसके भाई को बडा दुःख और क्रोध हुआ कि यह मर्ख क्या बकवास करता है ? उसने कहा कि जब मैं मौजूद हूँ तब भला वह विधवा कैसे हो सकती है ? तब छोटे ने कहा कि भला हा क्या नही सकती, तुम्हारे मौजूद होते हुए माँ विधवा कैसे हो गई है ?

● जाट और कमेडी

डूगर (पहाड)मे एक कमेडी रहा करती थी। अपने पति के मना करने पर भी वह जाट के खेत मे ज्वार खाने के लिए हमेशा जाया करती। जाट ने भी उसे मना किया पर वह न मानी। तब उसने एक दिन ज्वार के बूटा पर गुड चिपका दिया। ज्योही कमेडी उन पर आकर बैठी उसके पैर चिपक गए। तब जाट ने उसे एक जॉटी (वृक्ष विशेष) म लटका दिया। थोडी देर मे उधर से गायो का एक झुड गुजरा, कमेडी ने गाया के झुड के मालिक से प्रार्थना की—

"गायां का गुवालिया रै बीर, टमरक टूं।
बधी कमेडी छुटाई मेरा बीर, टमरक टू।
डूगर मे मेरा बचिया रै बीर, टमरक टू।
आधी आया उडज्या रै बीर, टमरक टू।

मेह आया गल ज्यासी रे बीर, टमरक टू।
बंधी कमेडी छुड़ाई मेरा बीर, टमरक टू।

(हे गायो के ग्वाले, हे भाई, इस बँधी हुई कमेडी को छुडाना। पहाड मे मेरे बच्चे हैं, आँधी आयेगी तो वे उड जाएगे और वर्षा आएगी तो वे गल जाएगे। हे भाई, तुम बँधी हुई कमेडी को छुडाना।)

तब उसने जाट से कहा कि भाई! इस कमेडी को छोड दे और इन गायो मे से एक गाय जो तुझे अच्छी लगे वह ले ले। लेकिन जाट ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया। फिर भैंसो का झुड आया, बकरियो का रेवड आया और ऊँटो का टोला आया। कमेडी की प्रार्थना पर उनके मालिको ने भैंस, बकरी और ऊँट के बदले मे कमेडी को छोड देने की बात जाट से कही। पर जाट टस से मस न हुआ। उसी वृक्ष के नीचे एक चूहे का बिल था। उसने कहा कि कमेडी बहन, मैं तुम्हे इस दुष्ट के पजे से छुडवा दूँगा, तू रो मत। वह अपने बिल मे गया और एक बहुत सुन्दर सोने की माला लाया। उसने जाट को माला दिखला कर कहा कि चौधरी, इस कमेडी को छोड दे तो मैं तुझे यह सोने की माला दे दूँगा। माला देखकर जाट का मन ललचा गया और उसने कमेडी को बन्धन मुक्त कर दिया। जैसे ही कमेडी उडी, चूहा माला लेकर अपने बिल मे घुस गया और तब जाट पछताने लगा कि इससे तो यही अच्छा था कि मैं एक गाय, भैंस या ऊँट ले लेता। जाट हाथ से निकले हुए शिकार की आकाश की ओर मुँह बाये देख रहा था कि कमेडी उसके मुँह मे बीट करके उड गई।

● सोनलदे बाई

सात भाइयो के बीच 'सोनलदे' एक ही बहिन थी। एक दिन सातो भाभियो के साथ वह मिट्टी लाने के लिए गड्ढे पर गई। जिस जगह वह जमीन खोदती थी वहाँ मोती, सोने और हीरे निकलते थे और जिस जगह उसकी भावजें खोदती थी, वहाँ मिट्टी ही मिट्टी निकलती थी।

सभी अपनी ननद से कहती कि बाईजी, अपनी जगह हमे खोदने के लिए दो, लेकिन ज्योंही वे खोदने लगती वहाँ भी मिट्टी ही निकलने लगती। खोदते खोदते 'सोनल्दे' थक गई और उसकी आँख लग गई। सातो भौजाइयाँ उसे वही छोड उसके द्वारा खोदे हुए सोने और हीरे मोतियो को लेकर चलती बनी। जब उसकी आँख खुली तब उसने और जमीन खोदकर सोना और हीरे मोती निकाले लेकिन उस बोझ को वह अकेली सिर पर नही उठा सकती थी। थोडी ही देर मे एक साधु उधर से गुजरा तो उसने कहा कि बाबाजी! यह बरतन मेरे सिर पर उठवा दीजिए। साधु ने सोनलदे को अपने झोले मे डाल लिया और अपनी मढी मे ले गया। दूसरे दिन उसने गाँव मे से भिक्षा लाने के लिए 'सोनल्दे' को आदेश दिया और जिधर उसका घर था उस दिशा मे न जाने के लिए भी कह दिया। तीन दिन तक वह अन्य दिशाओ मे जाकर भिक्षा ले आई। लेकिन चौथे दिन अपनी छोटी भौजाई के घर पहुँची और बोली—

> "सात भायाँ बिच एक सोनल बाई,
> मोतीडा सा चुगै, थाने जोगीडो उठाई
> घालो ए माई बिच्छा (भिक्षा)
> जोगी मारै लो।

सात भाइया के बीच मे एक सोनल दे बाई थी, मोती चुगती हुई सोनल्दे को जोगी उठा कर ले गया। हे माई, भिक्षा दे दो अन्यथा मुझे मारेगा।

इस प्रकार भिक्षा माँगते माँगते साता भौजाइया के घर घूम आई और अन्त मे अपनी माँ के घर गई और उसी प्रकार कहा। उसकी माँ ने देखा कि यह तो उसकी लाडली बेटी सोनल्दे है। तब उसने उसे अन्दर बुलाया। उसकी सारी बातें पूछ ली और उसे अपने घर मे छुपा लिया। थोडी देर बाद वह जोगी धमधम करता आया और घर घर मे पूछने लगा कि "बाई, म्हारी चेल्को भी देखी के?" जब वह जोगी पूछता-पूछता वहाँ आया जहाँ सोनल्दे थी तब उसकी माँ ने कहा कि बाबाजी, सोनल्दे बाहर

गई है, आप बैठो खाना खाओ, इतने में आ जाएगी। जोगी जीमने लगा तो उसकी माँ ने दालान में एक गड्ढा खोदा और उसे घास फूस से भर दिया। फिर उस गड्ढे पर एक टूटा पलंग डाल दिया और उस पर एक चादर बिछा दी। जोगी आकर पलँग पर बैठा तो सोनलदे की माँ ने चुपके से गड्ढे में आग लगा दी। बाबाजी के नितंब जल गए और वह वहाँ से उठकर भागता बना।

● चँवर न भल्लै साह पर

भिणाय का राजा कर्मसेन अकबर बादशाह का दरबारी था। अन्य दरबारियों के कहने-सुनने और स्वयं बादशाह द्वारा एक बड़े राज्य का प्रलोभन दिये जाने पर कर्मसेन बादशाह के हाथी पर खवासगी पर बैठने और बादशाह पर चँवर डुलाने के लिए राजी हो गया। राजपूत सरदारों में इस बात को लेकर बड़ा क्षोभ था लेकिन वे निरुपाय थे। सवारी तैयार हो गई और कर्मसेन चँवर लेकर हाथी पर बैठ गया। अभी बादशाह के आने में देर थी। तभी एक चारण ने यह दोहा कहा—

> कम्मा उगर सेन रा तो जननी बलिहार।
> चवर न झल्लै साह पर तू झल्लै तलवार।।

सुनकर कर्मसेन हाथी से कूद पड़ा और इस प्रकार उसने राजपूतों की शान को बचा लिया।

● लाडू भी चाखो

एक स्त्री बड़ी बदचलन थी लेकिन अपने पति से बनावटी प्यार बहुत जताया करती। एक दिन परीक्षा लेने के लिए उसका पति आधी रात को मर जाने का बहाना करके पड़ रहा। उसकी स्त्री ने देखा कि जब लोग-बाग इकट्ठे हो जाएँगे तो कुछ खाना-पीना न हो सकेगा इसलिए उसने बहुत सारी खीर बनाई और चट कर गई। फिर उसने सोचा कि पति की मृत्यु के दुख में जितना शोक प्रदर्शन किया जायेगा उतनी ही मरी

असमा होगी। अन कुछ लड्डू बनाकर रख दूँ और मौका पाकर वे ही खा लिया करूँगी। सब यही जानेंगे कि पति शोक में इसने खाना पीना छोड़ दिया है। ऐसा सोचकर उसने दस-बारह दिन तक खाने के लिए पर्याप्त लड्डू बनाये और उन्हें छुपाकर रख दिया। अब सवेरा होने में थोड़ी ही देर थी अतः उसने पति की मृत्यु सूचक दुखभरी बाँग दी। सुनकर पड़ोस के सारे स्त्री-पुरुष वहाँ आ गये और सहानुभूति प्रकट करने लगे। वह स्त्री बहुत जोर जोर से और छाती पीट-पीटकर रो रही थी। लोगों ने बहुत धीरज बँधाया पर उसका रोना रुकता ही न था। फिर वह पति के 'शव' के पास जाकर और उसके चेहरे पर से कपड़ा उघाड़ कर बोली—

स्वामी सुरग सिधारग्या, कुछ म्हानैं भी भालो।

("हे स्वामी, तुम स्वर्ग सिधार गये मुख से एक बार तो मुंह से बोलो " ।)

तब उसका पति सहसा उठ बैठा और बोला—

खीर सबडका मारिया अब लाडू भी चाखो ॥

'खीर तो तुमने खूब मजे से खाली है, अब जरा लड्डू भी तो चख देखो' ।)

यह सब देखसुन कर औरतें सकते में आ गई। लोगों पर जब सारा भेद खुला तो वे भी उसे धिक्कारने लगे।

● के दड में मेह बरस्यो है ?

एक जाट की स्त्री के पुत्र हुआ। घर में पुत्र-जन्म बहुत दिनों बाद हुआ था लेकिन जब बच्चे के दादा को यह बात मालूम हुई तो उसने साधारणतया सन्तोष प्रकट कर दिया और कहा, "पातो होया है ता चोखी बात है, पण के दड में मेह बरस्यो है ? ' जाट की बहू ने यह बात सुनी तो उसे बड़ा बुरा लगा। वह अपने पति से कहकर ससुर से अलग हो गई। संयोग से अगले दो-तीन साल लगातार अकाल पड़ा और जाट

दम्पति के पास खाने को एक दाना भी न रहा। दोनों घर के ताला लगाकर और बच्चे को साथ लेकर रोटी की तलाश मे निकल पडे। दो तीन कोस जाने पर एक स्वामी जी का मठ आया। जाट और जाटनी ने बच्चे को कुछ अनाज के बदले मे स्वामीजी को दे दिया और आगे चल पडे। स्वामीजी ने सोचा कि इस लडके को चेला बना लेंगे। लेकिन लडके का दादा पीछे-पीछे आ रहा था। उसने स्वामी को दुगना अनाज देकर बच्चे को वापिस ले लिया और उसे घर लाकर अच्छी तरह खिलाने पिलाने लगा। दूसरे साल वर्षा अच्छी हुई तो जाट जाटनी अपने घर वापिस आ गए। दोनों की बडी दुर्दशा हो रही थी। जाट की स्त्री सूखकर काँटा बन गई थी। जाट के बाप ने पूछा कि बच्चा कहाँ है, तो जाट ने बहुत उदास होकर कहा कि बच्चे को परदेश का जलवायु जँचा नही, वह बीमार हो गया और चल बसा। जाटनी भी सिसक-सिसककर रोने लगी। तब बुड्ढे जाट ने अपने पोते को पुकारा। पोता हँसता-खेलता वहाँ आया तो बुड्ढे ने कहा कि यह क्या नही कहते कि इसको पाँच सेर अनाज के बदले फलां स्वामी को बच गए थे। अब समझे कि नही कि दड मे मेह न बरसने से ऐसा हाल होता है। तब जाट की स्त्री ने ससुर के पैर पकड लिए और अपनी भूल पर पछताने लगी।

● नाव लिया रोटी कोनी मिलै

एक बारहठ एक ठाकुर के यहाँ गया और उसने ठाकुर के पुरखो का यशागान किया, लेकिन ठाकुर के बाप का नाम नहीं लिया। ठाकुर ने पूछा तो बारहठ ने बहुत आनाकानी की लेकिन ठाकुर ने जिद की तो बारहठ ने कहा कि आपके पिता का नाम लेने से रोटी नसीब नही होती है, बस इसीलिए उनका नाम नही लिया। ठाकुर ने कहा कि यह सब झूठ बात है, तुम उनका यशोगान करो, मैं देखूँगा कि तुम्हे रोटी कैसे नहीं मिलती? बारहठ ने वैसा ही किया तब ठाकुर ने अपनी दासी से कहा कि मैं एक बहुत आवश्यक काम से बाहर जा रहा हूँ, तुम बारहठजी को

खूब अच्छी तरह से खिला-पिला देना, कोई कमी न रखना। ठाकुर बाहर चला गया और दासी रसोई बनाने लगी। भोजन बन गया तो थाल सजाकर बारहठ को जिमाने चली। संयोग से उसी वक्त एक दूसरा बारहठ घर में घुसा, दासी ने समझा कि यही वे बारहठ जी हैं जिनके लिए ठाकुर साहब कह गए हैं। इसलिए उसने वह थाल उस बारहठ के सामने रख दिया। बारहठ ऐसा अच्छा खाना पाकर निहाल हो गया और खाना खाकर चलता बना। शाम को ठाकुर आया तो उसने बारहठ से पूछा कि क्या बारहठजी !! भोजन कर लिया न? बारहठ ने कहा कि ठाकुर साहब, मैंने तो सवेरे ही कह दिया था कि आज भोजन नहीं मिलने का। इतना सुनते ही ठाकुर आवेश में आ गया और उसने दासी को आवाज दी तो वह घबड़ाई हुई वहाँ आई। ठाकुर ने गुस्से में भरकर कहा कि हरामजादी, मैंने कहा था न कि इन बारहठजी को भोजन अच्छी तरह से करवा देना। तब उसने कहा कि अन्नदाता! मैंने भोजन तो अवश्य करवाया था, लेकिन वे तो कोई और ही आदमी थे। इनको मैंने देखा नहीं था और इसलिये गलती होगई। बारहठ हुक्का पी रहा था। ठाकुर ने दासी को मारने के लिये हुक्का उठाया तो उसका निचला हिस्सा अलग होकर बारहठ के सिर में जा लगा जिससे उसके सिर से खून बहने लगा। तब बारहठ ने बीच बचाव करते हुए कहा कि ठाकुर साहब अब शान्त हूजिये, अब मुझे भोजन मिल जायेगा। आपके पिता श्री का नाम लेने से, बिना खून-खच्चर हुये रोटी नहीं मिलती। यह बात तो मैंने सकोचवश कही ही न थी। अब मेरे सिर से खून गिरा है तो अब रोटी भी मिल जायेगी।

● बाप बेटै से भी गयो बीत्यो

एक पंडित जी ने राह से गुजरते समय देखा कि एक लड़का खड़ा-खड़ा पेशाब कर रहा है। लड़के का पिता पंडितजी का जानकार था। पंडितजी ने सोचा कि चलकर इसके बाप को कहना चाहिए कि अपने लड़के को पेशाब करने का सलीका तो सिखलाओ। पंडितजी उसके

बाप के पास गये तो क्या देखते हैं कि वह भला आदमी चवार काटता जाता है और पेशाब करता जाता है। तब पंडित जी ने सोचा कि भला लड़के का क्या दोष है ? उन्होंने सोचा कि ऐसे बाप को उपालम्भ देना व्यर्थ है और बिना कुछ कहे-सुने वहाँ से लौट गये।

● आन्धै हाली लूट

एक अन्धा ब्राह्मण एक बार एक ब्रह्म-भोज में जीमने गया। जब वह भरपेट खा चुका तो उसने अपने सारे जेब लड्डुओं से भर लिये। फिर उसने धोती की लांग की झोली सी बनाकर उसमें बहुत सारे लड्डू भर लिये। लोगों ने सोचा कि अन्धा आदमी है, ले जाने दो। लेकिन अन्धे ने सोचा कि मेरी करतूत को कोई नहीं जानता तथा और सब लोग भी लड्डू चुरा-चुराकर ले जा रहे होंगे। अतः अपने को साहूकार बनाने के लिये चिल्लाने लगा कि लोगों दौड़ो-दौड़ो, ये ब्राह्मण लोग देखो किस प्रकार लड्डू चुरा-चुराकर ले जा रहे हैं, इन्हों ने कैसी लूट मचा रखी है।

● दोई है

एक बार चार आदमी कमाने जा रहे थे। रास्ते में प्यास लगी तो वे चारों एक कुएँ पर गये जहां एक नवयुवती पानी भर रही थी। उनमें से एक ने नवयुवती के पास जाकर कहा कि मुझे पानी पिलाओ तो औरत ने पूछा कि तुम कौन हो ? तब उसने कहा कि मैं गरीब हूँ। इस पर उस स्त्री ने कहा कि गरीब तो दो ही हैं, तुम तीसरे कहाँ से आ गये ? ठीक से बतलाओगे तो पानी पिलाऊँगी अन्यथा नहीं। उसकी बात सुनकर वह प्यासा ही लौट गया। फिर दूसरा गया, उसने कहा कि मैं मुसाफिर हूँ, तीसरे ने कहा कि मैं जबरदस्त हूँ और चौथे ने कहा कि मैं बेवकूफ हूँ। लेकिन औरत का सबको एक ही उत्तर था कि मुसाफिर भी दो हैं, जबरदस्त भी दो हैं और बेवकूफ भी दो ही हैं। फिर वह औरत उनको वहीं बिठलाकर घर से मिठाई का थाल भरकर लाई। इतने में किसी ने

उसके पति को कह दिया कि तुम्हारी औरत को चार आदमी भगाकर ले जा रहे हैं। उसने तुरन्त राजा के पास फरियाद की और राजा ने उन सबको पकड़ बुलवाया। फिर राजा ने उस स्त्री को सारी बात स्पष्ट करने के लिये कहा तो औरत ने सारी बात सही-सही बतला दी और कहा कि गरीब दो ही हैं, बेटी और बैल, मुसाफिर दो ही हैं चांद और सूरज, जबरदस्त दो ही हैं दाना और पानी तथा बेवकूफ भी दो ही हैं राजा और मेरा पति जिन्होंने कोई विचार नहीं किया और मुझे बुलवा लिया। तब राजा शर्मिन्दा हुआ और उसने सबको छुट्टी दे दी।

● आसू वेचता आसी

एक बार एक पसारी ने अपने बेटे को हींग खरीदकर लाने के लिये भेजा। और उससे कहा, हींग इतनी तेज होनी चाहिये कि उसे सूंघते ही आंखों में आंसू आ जाएँ। लड़का हींग खरीदने गया। उसने हींग की डलिया को उठा-उठाकर सूंघना शुरू किया। तब दूकानदार ने पूछा कि तुम इस प्रकार क्या सूंघते हो? पसारी के लड़के ने कहा कि मेरे बाप ने कहा था कि हींग ऐसी होनी चाहिये कि जिसे सूंघते ही आंखों में आंसू आ जाएँ। दूकानदार ने समझ लिया कि लड़का बेवकूफ है और उसने उसे घटिया किस्म का हींग दे दी और कहा कि आंसू इस वक्त नहीं आते, जब इसे बेचोगे तब आयेंगे अर्थात् यह घटिया हींग बेचने में जब नुकसान लगेगा तब अपने आप आंसू आने लगेंगे।

● इत्ती तो मरदा की छूट ई है

एक जाट अपने समधी के घर उससे मिलने के लिये गया। जाटनी जाट को अपने नीचे पटके हुए थी और उसकी पीठ पर बैठी चक्की चला रही थी। नीचे पड़ा हुआ भी जाट बाजरी के दाने लेकर चबा रहा था। समधी को देखा तो वह सकुचाने लगा। तब आगन्तुक ने कहा कि समधाजी! शर्माते क्या हो? तुम दाने तो चबा रहे हो लेकिन अपने यहाँ तो यह

बात भी नही है। तब जाट ने नीचे पडे-पडे ही मूंछो पर ताव देते हुए कहा कि इतनी तो मर्द की छूट ही है।

● साप अर साहूकार की वहू

एक साहूकार के कोई संतान न थी। इसलिये पति-पत्नी बहुत चिंतित रहते थे। एक दिन साहूकार ने उदास होकर कहा कि जब इस धन को भोगने वाला ही कोई नही है तब इसे रखने से फायदा ही क्या है ? अच्छा है इसे लुटा दिया जाये। लेकिन उसकी पत्नी ने कहा कि ऐसी क्या बात है ? पंडितो से पूछना चाहिए। साहूकार की स्त्री ने पंडितो को गुप्त रूप से बहुत धन दिया और पंडितो ने साहूकार को कह दिया कि तुम्हारे पुत्र होगा, लेकिन तुम नौ महीने तक अपनी पत्नी का न देखना। साहूकार ने हाँ भर ली। नौ महीने बाद साहूकार की पत्नी ने झूठ-मूठ पुत्र जनने का बहाना किया और अपने पति को पंडितो द्वारा कहला दिया कि बारह वर्ष तक पुत्र का मुंह न देखना। साहूकार ने लाचार होकर यह बात भी मान ली। इन बातो को दस बरस हो गए तो लडकियो वाले साहूकार के लडके से अपनी लडकी की सगाई करने के लिए आने लगे। सेठ ने बहुत आना-कानी की लेकिन बारह वर्ष पूरे होते न होते सेठ के लडके की शादी एक दूसरे गाँव के साहूकार की लडकी से होनी तय हो गई। जब बारात चलने को हुई तो सेठ ने दूल्हे का मुंह देखने की इच्छा प्रकट की लेकिन साहूकार की स्त्री ने कहा कि अभी नही आधा रास्ता तय करने पर देख लेना। दूल्हे की पालकी चारो ओर से बंद कर दी गई। उधर बारात चली और इधर साहूकार की स्त्री विष का प्याला लेकर छत पर चढ गई। उसने सोचा कि थोडी देर बाद ही सारा भडाफोड हो जाएगा अत ज्यो ही बारात को आधे रास्ते से लौटती देखूगी, विष का प्याला पीकर प्राणान्त कर लूंगी। उधर बारात ने एक पीपल के वृक्ष के पास पडाव डाला। पीपल के नीचे एक बिल मे एक नाग और एक नागिन रहते थे। नागिन ने कहा कि बारात तो बहुत सुन्दर सजी है लेकिन दूल्हा नही है। तब नाग

ने कहा कि यदि तू कहे तो मैं दूल्हा बन जाऊँ लेकिन शर्त यह है कि वधू की आयु पूरी होने से पहले मैं नहीं लौटूँगा। नागिन ने शर्त मंजूर कर ली। नाग बाल्वी में घुस गया और वहाँ जाकर एक बहुत स्वस्थ और सुन्दर युवक बन गया। थोड़ी दूर जाने पर जब साहूकार ने दूल्हे को देखा तो फूला न समाया और उसने अपनी पत्नी को संदेश-वाहक के साथ बधाई भेजी। वह बेचारी तो विष का प्याला लिये खड़ी थी, संदेश सुनकर उसने परमात्मा को बहुत बहुत धन्यवाद दिया। इधर जिस किसी ने भी दूल्हे को देखा वही मोहित हो गया। खूब धूमधाम से शादी करके बारात वधू को लेकर लौटी। वर-वधू के दिन चैन से कटने लगे। उधर नागिन को नाग का बिछोह खलने लगा और उसने सोचा कि नाग को वापिस लाना चाहिये। एक दिन वह इत्र बेचने वाली का वेष बनाकर साहूकार के घर गई। साहूकार की स्त्री ने उसे पुत्र-वधू के पास भेज दिया। उसने कई तरह के इत्र दिखलाये लेकिन साहूकार की पुत्र-वधू को कोई भी इत्र पसन्द न आया। तब उसने चिढ़कर कहा कि इतने नखरे करती हो अपने पति की 'जात' का भी तुम्हें पता है? या कहकर वह चल दी। शाम को पति जब घर आया तो उसने पति से उसकी 'जात' पूछी। उसने बहुत टालने की कोशिश की लेकिन वह न मानी। तब वह समझ गया कि नागिन इसे बहका गई है। तब उसने कहा कि यदि किसी तरह नहीं मानती तो उस बरतन में जो कच्चा दूध पड़ा है, उसका एक छींटा मुझे मार दे, तब बतलाऊँगा। ज्यों ही उसकी स्त्री ने दूध का छींटा दिया उसका पति नाग बनकर चला गया। अब वह बहुत पछताने लगी लेकिन अब क्या हो सकता था? सवेरे जब उसकी सास ने पूछा तो उसने कह दिया कि वे तो कमाने के लिए रातों रात दिसावर चले गए।

अब साहूकार की पुत्र-वधू ने यह नियम कर लिया कि जो कोई भी उसे नई कहानी सुनायेगा उसे ही वह एक सोने का टका और मन भर का सीधा देगी। इस प्रकार वह रोज नई कहानी सुनने लगी। एक रात एक ब्राह्मण उसी पीपल के वृक्ष पर आश्रय लिये हुए था तो उसने देखा कि

एक नाग और नागिन में तकरार हो रही है। नाग कह रहा था कि तुमने साहूकार को पुत्र-वधू की आयु पूर्ण होने तक की अवधि मुझे दी थी। अब उसकी जिन्दगी कैसे कटेगी ? पहले जो पाप किये थे उनके कारण तो यह सर्प-योनि मिली ही है, अब इससे भी नीच योनि मिलेगी। लेकिन नागिन राजी न होती थी। अन्त में नागों की सभा में इस बात का फैसला करवाने की बात तय हुई। ब्राह्मण ने सोचा कि यह नई बात है और साहूकार की पुत्र-वधू को यह बात कहकर सोने का टका और सीधा लेना चाहिए। उसने जाकर साहूकार की पुत्र-वधू को यह बात कही तो वह बडी प्रसन्न हुई और उसने ब्राह्मण को खूब इनाम दिया। फिर ब्राह्मण से कहा कि क्या तुम वह स्थान मुझे दिखला सकते हो ? ब्राह्मण के हाँ करने पर उसने अपनी सास से कहा कि मैं तीर्थ करने के लिए जाऊँगी अत इसका प्रबन्ध करवा दीजिए। साहूकार की स्त्री ने अपने पति से कहकर सारा प्रबन्ध करवा दिया। शाम को वे लोग उस पीपल के पास पहुँचे तो ब्राह्मण ने दूर से ही पीपल का वृक्ष दिखला दिया। उन सबको वही छोड वह स्वय उस पीपल के पास गई और वृक्ष पर चढकर बैठ गई। आधी रात को पहले वहाँ झाड देने वाला आया, फिर भिश्ती छिडकाव कर गया और फिर वहाँ नागो की सभा हुई। पाँच नागो ने यह फैसला दिया कि वह नाग फिर साहूकार का पुत्र बनकर जाये और अपनी पत्नी की आयु पूर्ण होने तक वही रहे। इस फैसले को सुनकर उसकी पत्नी वृक्ष से नीचे कूद पडी और बोली कि मैं हाजिर हूँ और अपने पति को ले जाती हूँ। नाग फिर उसका पति बनकर उसके साथ चला गया। सारे लोग लौट गये और वे आनन्द पूर्वक रहने लगे।

● छया छयां जाई—छया छया आई

एक सेठ मरते वक्त अपने पुत्र को यह शिक्षा दे गया था कि बेटा ! दूकान पर छाया-छाया जाना और छाया-छाया ही आना। लडके ने घर से लेकर दूकान तक का सारा रास्ता पालो से छवा दिया, जिससे चाहे वह

दोपहर को भी जाये तो भी वहां छाया ही रहे। लड़का दोपहर तक घर में पड़ा रहता और फिर कुछ देर के लिये दुकान जाकर वापिस घर चला आता। दुकान न सम्भालने से सारा काम ठप्प हो गया, तब बूढ़े मुनीम ने समझाया कि तुम्हारे पिता की सीख का आशय यह था कि छाया रहते रहते अर्थात् सूर्योदय होने से पहले दुकान जाना और छाया हो जाने पर अर्थात् सूर्यास्त के बाद घर आना। तब लड़के ने वैसा ही करना शुरू कर दिया और उसका कारोबार फिर ठीक से चलने लगा।

● गगू भांड

एक राजा के यहाँ गगू नाम का भांड था। एक दिन राजा ने कहा कि गगू! अब हम तुम्हें तभी इनाम देंगे जबकि स्वांग भर कर आने पर तुम्हें पहिचान नहीं सकेंगे। दरबार के दो बड़े मालदार सेठों ने भी राजा की बात का समर्थन किया कि तुम्हारे सब स्वांग पुराने पड़ चुके हैं। दरबार की ओर से जब सहायता बन्द हो गई तो गगू के घर में फाके पड़ने लगे। एक दिन गगू ने अपने लड़कों से कहा कि मैं परदेश जा रहा हूँ। तुम लोग मुझे मृत घोषित कर देना और मेरी अरथी ले जाकर जला देना। लड़कों ने वैसे ही किया और सबने यह जान लिया कि गगू मर गया है।

चार-पांच वर्ष बाद एक दिन गगू अपने गाँव आया। रात को वह शंकर के उस मंदिर में गया जहाँ एक पड़ाइन शंकर की पूजा किया करती थी तथा जहाँ राजा और वे दोनों सेठ भी दर्शन करने नित्य आया करते थे। गगू बैल पर चढ़ा था और शिव का स्वांग बनाये हुए था। पड़ाइन ने समझा कि साक्षात् भगवान् शंकर ही प्रगट हुए हैं। अतः उसने भक्ति पूर्वक नमस्कार किया। शिव रूपी गगू सन्तुष्ट हो गया तो पड़ाइन ने कहा कि महाराज! मुझे स्वर्ग में स्थान दीजिये। तब गगू ने कहा कि आजकल स्वर्ग की चाबी स्वर्गीय गगू भांड के हाथ में है। वही आजकल स्वर्ग का द्वारपाल है, यदि उसे राजी कर लोगी तो स्वर्ग में सहज ही प्रवेश पा सकोगी। पड़ाइन के पूछने पर गगू ने कहा कि सबेरे ही अपना आधा धन तो गगू

के लल्ला को दे देना और शेष आधा भूखे नंगों को बाँट देना। आज से आठवें दिन मैं स्वर्ग ला जाऊँगा और तुम्हें भी वहाँ पहुँचा दूँगा। सवेरा होते ही पडाइन ने वही काम किया। सेठ ने पूछा तो उसने कहा कि रात को भगवान शंकर आये थे और उन्होंने स्वर्ग प्राप्ति के लिये यह उपाय बतलाया है। सेठ ने भी स्वर्ग जाने की इच्छा प्रकट की तो पडाइन ने कहा कि आज रात को वे फिर दर्शन देंगे तो पूछूँगा। रात को गगू उसी वेष में फिर आया और सेठ के लिए भी वही उपाय बतला गया। दूसरे दिन उसने भी अपना सारा धन उसी प्रकार आधा-आधा करके लुटा दिया। तीसरे दिन दूसरे सेठ ने और उनकी देखा-देखी राजा ने भी आधा धन गगू के लल्लो को दे दिया और आधा गरीबों में बाँट दिया। जिस रात को स्वर्ग जाना था उस रात को गगू फिर उसी वेष में मन्दिर में आया। चारों उसकी प्रतीक्षा कर ही रहे थे। उसने आदेश दिया कि एक लँगोटी के सिवाय शरीर पर कोई वस्त्र न रखो और आँखों पर पट्टा बाँध लो। स्वर्ग के पहले नरक आयेगा जो कदाचित उसकी विभीषिकाओं से सिहर कर वहीं गिर पड़े तो फिर वहीं के हो जाओगे। स्वर्ग का मार्ग बड़ा बीहड़ है कांटों के चुभन से कोई सीत्कार भी कर देगा तो वह वहीं रह जाएगा। तब पडाइन ने गगू के महल से बैल की पूँछ पकड़ ली और अन्य तीनों ने एक दूसरे के हाथ पकड़कर पडाइन को पकड़ लिया। अब चारों जन बैल के लटके हुए से चलने लगे। गगू उनको जंगल में ले गया और रात भर घुमाता रहा। कटीले झाड़ों में उलझ उलझ कर उनके शरीर लहू लुहान हो गये। जब सवेरा होने को आया तो नगर के चौराहे पर लाकर गगू ने उनसे कहा कि अब स्वर्ग का दरवाजा आ गया है मैं गगू को बुलाकर लाता हूँ तुम सब यहीं ठहरो। यों कहकर वह तो चलता बना। इधर सवेरा होने लगा और लोग इधर उधर आने जाने लगे। जो भी इन्हें देखता आश्चर्य चकित होकर कहता कि यह क्या तमाशा है? आखिर गगू जब स्वर्ग की चाबी लेकर नहीं आया और बहुत आदमी वहाँ जमा हो गये तब पडाइन ने दाएँ तीनों

से कहा कि आंखो की पट्टी उतारकर देखना चाहिये कि आखिर बात क्या है। पट्टी खोलने पर उन्होंने अपने को चौराहे पर लोगों से घिरा देखा तो अवाक् रह गए। वे झेंपते हुए किसी प्रकार अपने-अपने स्थानो को गए। घर जाकर सबने सोचा कि बुरे ठगे गए। लेकिन अब क्या हो सकता था ? कुछ ही दिन बाद गगू ने सेठ के पास जाकर सलाम किया तो सेठ ने आश्चर्य मे भर कर पूछा अरे गगू ! तू तो मर गया था न ? तब गगू ने कहा कि मरता नही तो स्वर्ग की चाबी कैसे हाथ लगती ? सेठ को काटो तो खून नहीं। फिर वह दूसरे सेठ के पास गया और फिर राजा के पास गया। उसने राजा से कहा कि सरकार, अब मुझे इनाम दिलवाइये, क्योंकि आपने यह वचन दिया था कि जब तुझे नही पहिचानेंगे तो इनाम देंगे। राजा ने कहा कि अब हमारे पास इनाम देने के लिए रह ही क्या गया है ? गगू ने कहा कि हुजूर, जो आधा धन गरीबो मे बँट गया है, वह तो गया और शेष आधा आपका और दोनो सेठो का मेरे घर सुरक्षित रक्खा है, वह सब आप अपना अपना ले ले, लेकिन मुझे मेरा इनाम अवश्य दिलवा दें।

● चमारी बामणी बणी

पहाड की घाटी म एक बुढिया ब्राह्मणी रहा करती थी। पहाड पर स्थित मन्दिर म दर्शन करने जाने वालो के लिए वह खाना बना दिया करती थी। चूंकि आस-पास और कोई गाँव न था इसलिए भक्त जन वहीं भोजन करते थे। इससे होने वाली आमदनी से बुढिया का काम चल जाता था। बुढिया मर गई तो एक चमारी ने सोचा कि क्या न मैं बुढिया का स्थान ले लूं ? अच्छी आय के साथ-साथ सम्मान भी मिलेगा। ऐसा विचारकर वह बुढिया की झोपडी म रहने लगी और यात्रियो के लिए भोजन बनाने लगी। एक दिन दो दर्शनार्थी आये तो उनके लिए उसने काचरो का साग और रोटियां बनाईं। यात्रियो ने सराहना करते हुए कहा कि ब्राह्मणी माई ! तू ने साग तो बहुत ही स्वादिष्ट बनाया

है, पहले वाली बुढ़िया ऐसा साग नही बना सकती थी। तब उसने बडी शान के साथ कहा कि आज मुझे मेरी रांपी (चमारो का एक औज़ार) नही मिली इसलिय काचरो को दांत से काटकर साग बनाना पडा, अन्यथा मैं और भी अधिक स्वादिष्ट साग बनाती। उसकी बात सुनकर यात्री मन रह गये और उन्हे निश्चय हो गया कि यह औरत ब्राह्मणी नही चमारी ही है।

● गगाजी की मीडकी

एक जाट एक बार गगा-स्नान करने के लिए गया। नहाकर पडे के पास तिलक करवाने के लिये गया तो पडे ने देखा कि चन्दन तो खत्म हो गया है, अत उसने गगाजी की बालू लेकर जाट के तिलक लगा दिया और कहा—

गगाजी के घाट पर, बामण बचन परवाण।
गंगाजी की रेणका, तूं चदन करके जाण ॥

गगाजी के घाट पर तुम ब्राह्मण के बचनों को प्रमाण मानो और गगाजी की बालुका को ही चदन समझो।

तब जाट ने पास ही फुदकती हुई एक मेंढकी को पकड लिया और पडे से कहा कि लो मैं तुम्हे गऊ का दान देता हूँ। पडे ने गुस्से में कहा कि गऊ है कहाँ ? तब जाट ने उसे मेंढकी को दिखलाते हुये कहा—

गंगाजी के घाट पर जाट बचन परवांण।
गंगाजी की मींडकी, तू गऊ करके जाण ॥

गगाजी के घाट पर तुम जाट के बचनो को प्रमाण मानो और गगाजी की मेंढकी को गाय करके ही जानो।

● समरथ नै दोस कोनी

एक सेठ के यहाँ एक मुनीम गद्दे पर बैठा बही-खाता कर रहा था। सेठ आया और उसकी ठोकर दवात को लगी तो सारे गद्दे पर स्याही

फैल गई। सेठ ने झुंझलाकर कहा कि मुनीमजी, यहाँ रास्ते में ही दवात क्यों रख दी थी ? दूसरी बार सेठ वहीं बैठा कुछ लिख रहा था कि संयोग से मुनीम के पैर की ठोकर से दवात उलट गई, तब सेठ ने गुस्से से कहा कि अंधे हो रहे हो क्या ? इतनी बड़ी दवात भी दिखलाई नहीं पड़ती।

● बेगम भाई नै वज़ीर बणायो

एक बार बादशाह की बेगम ने बादशाह से कहा कि आप मेरे भाई को वज़ीर बनाइये और इस वज़ीर को हटा दीजिये। बेगम ने बहुत हठ किया तो बादशाह ने कहा कि तेरा भाई कुछ जानता-बूझता तो है नहीं उसे किस प्रकार वज़ीर बनाया जाये ? लेकिन बेगम न मानी तो बादशाह ने उसके भाई को वहीं बुलवाया और उससे कहा कि यह एक पैसा ला और इसके सब तरह के मसाले ले आओ। वह गया और सारे बाजार में घूम आया लेकिन किसी ने एक पैसे में सब तरह के मसाले नहीं दिये। तब बादशाह ने फिर उससे कहा कि इसी पैसे से एक लाख रुपये कमा लाओगे तो तुम्हें वज़ीर बना दिया जाएगा। वह फिर घूमघाम कर आ गया, लेकिन किसी ने एक पैसे के बदले एक लाख रुपये नहीं दिये। तब बादशाह ने बेगम से कहा कि देख ली न अपने भाई की होशियारी ? अब बादशाह ने वज़ीर को बुलवाया और उसे वही पैसा देकर कहा कि एक पैसे में सब तरह के मसाले ले आओ। वज़ीर गया और हलवाई की दुकान से एक पैसे के बड़े ले आया। बादशाह के पूछने पर वज़ीर ने स्पष्ट किया कि इन बड़ों में सब तरह के मसाले मौजूद हैं। तब बादशाह ने उसे एक पैसा और दिया और कहा कि इससे एक लाख रुपये कमा कर लाओ। वज़ीर ने एक मुरोद में घर से एक पैसे का सूत लिया और उसकी सूत की एक रस्सी बना ली। फिर वह उस रस्सी को लेकर एक सेठ के मुहल्ले में गया और रस्सी से एक हवेली के कोने नापने लगा। सेठ ने इसका कारण पूछा तो वज़ीर ने कहा कि आपकी हवेली का कोना बहुत आगे निकला

हुआ है अत इसे तुडवाना होगा क्योंकि बादशाह सलामत की यह इच्छा है कि रास्तों को अधिक चौडा बनाया जाये। सेठ ने बहुत मिन्नत की तो वजीर ने बीस हजार रुपये उसी वक्त बादशाह के पास महल मे भेजने को बात कही। सेठ ने बीस हजार रुपये उसी वक्त थैलियों मे भरवाकर महल मे भेज दिये। फिर दूसरे सेठ की बारी आई और फिर तीसरे की। इस प्रकार वजीर ने कई लाख रुपये महल मे भिजवा दिये, तब बादशाह ने वजीर को कहलवाया कि अब बस करो। तब वजीर बादशाह के पास चला गया तो बादशाह ने रुपयो के ढेर की ओर इशारा करके बेगम से कहा कि मैंने इसलिये इसे वजीर बनाया है और तुम्हारे भाई को नही बनाया। बेगम निरुत्तर हो गई।

● कुरुंख पर कुमाणस चढ्यो

एक बार एक राजा से उसके दरबारियों ने कहा कि मत्रीजी गधे, ग्वार, कुम्हार और अरड का नाम नहीं लेते हैं। तब राजा ने एक कुम्हार से कहा कि वह अपनी बाडी मे ग्वार बोये और एक अरड का पेड लगाये। कुछ दिनों बाद राजा मत्री के साथ बाडी मे पहुँचा तो कुम्हार अरड के वृक्ष पर चढा था और गधा ग्वार खा रहा था। तब राजा ने कहा कि कुम्हार का नुकसान हो रहा है, उसे आवाज दो कि वह गधे को बाहर निकाल दे। तब मत्री ने जोर से पुकारा—"कुरुख पर कुमाणस चढ्यो अर कुअन्न नें कुधन खावै है।" मत्री की चतुराई पर राजा बहुत प्रसन्न हुआ।

● गोह कै कित्ता बच्चिया होवैं ?

एक बार एक राजा अपने मत्री सहित जगल मे जा रहा था। वर्षा बहुत अच्छी हुई थी और एक बूढा किसान अपने खेत मे हल चला रहा था। राजा ने पूछा कि चोधरी ! वर्षा कैसी हुई ? तब किसान ने कहा कि बर्षा पूरे पर ही हुई। यह उत्तर सुनकर राजा ने उसे दो सौ रुपये

इनाम के दिये। मत्री को बडा आश्चर्य हुआ कि किसान ने बडा बेहूदा उत्तर दिया है और फिर भी राजा ने उसे इनाम दिया है। उसने राजा से इसका कारण पूछा तो राजा ने कहा कि फिर कभी बतलायेंगे। कुछ दिन बाद राजा ने मत्री से पूछा कि 'गाह' के कितने बच्चे होते है? मत्री की समझ में कुछ नही आया तो उसने उत्तर देने के लिए मोहलत माँगी। मत्री उसी किसान के पास गया तो किसान ने उससे पाच सौ रुपये लेकर कहा कि गाह के बारह बच्चे होते है। मत्री ने राजा को वैसे ही कह दिया। तब राजा ने फिर पूछा कि उनमे से कितने कमाने हैं और कितने खाते हैं? तब मत्री फिर किसान के पास गया और किसान ने उससे एक हजार रुपये लेकर कहा कि चार कमाते है और आठ खाते है। मत्री ने आकर राजा से वैसे ही कह दिया तो राजा ने फिर पूछा कि कौन-कौन से कमाते हैं और कौन-कौन-से खाते है? तब मत्री फिर उसी किसान के पास गया और किसान ने उससे दो हजार रुपये लेकर बतलाया कि आषाढ, श्रावण भादो और क्वार कमाने वाले हैं और कातिक माग शीष, पौष, माघ फाल्गुन चैत्र वैशाख और ज्येष्ठ खाने वाले हैं। मत्री ने कहा कि ये तो महीनो के नाम है तब किसान ने कहा कि तुम्हारे प्रश्न का यही उत्तर है। तब मत्री ने राजा के पास आकर वैसे ही कह दिया। राजा जानता था कि मत्री उसी किसान से बार-बार पूछकर आता है तब उसने मत्री से कहा कि सच-सच बतलाओ कि तुमने किसान को कितने रुपये दिये हैं? मत्री के बतलाने पर राजा ने कहा कि उस दिन किसान ने ठीक ही तो कहा था कि मेह धूर पर बरसा है अर्थात् मेरे सब पुत्रियाँ ही पुत्रियाँ है, पुत्र एक भी नही, अत मुझे इस बुढापे मे भी हल चलाना पडता है और मैंने उसे दो सौ रुपये दिये थे तो तुम्हे यह बात बहुत अखरी थी लेकिन अब तुमने उसे इतने रुपये क्यो दिए?

● बेटी ने टीबडी चढाई

एक सुनार कुछ कमाता-धमाता न था। भाइयो से उसकी बनती न

थी। अलग रहता था। खाने के लिए घर म रोटी न थी, लेकिन लडकी सयानी हो गइ थी, अत उसकी शादी करनी आवश्यक थी। सुनार की स्त्री जब उसे बहुत तग करने लगी तो सुनार पास के किसी गाँव म जाकर अपनी लडकी की सगाई कर आया। शादी के दो दिन पहले उसने एक पडोसी सेठ से कहा कि लडकी की शादी है, सो मुझे एक कडाही दे दो और घर म एक भट्टी चिनवा दो, बस तुम्हारी इतनी ही मदद काफी है। सेठ ने उसके घर म एक भट्टी चिनवा दी और एक कडाही उसके यहा रखवा दी। बारात आई तो सुनार ने भट्टी पर कडाही चढा दी और थोडा-सा बेसन घोलकर कडाही के पास इस तरह छिटक दिया कि मानो भट्टी पर बहुत मिठाई बनाई गई हो। उस वक्त की प्रथा के अनुसार फेरे होने के पहले का भोजन वर पक्ष की तरफ से ही होता था अत वर-पक्ष वालो ने अपना भोजन बनवा कर खा लिया। फेरे हो चुके तो अब सुनार की बारी आइ। सुनार न अपने रूठे हुए भाइयो से कहा कि भाइ इस वक्त तो कुछ काम आओ, मेरी लडकी का ब्याह बिगडेगा तो तुम्हारी भी नाक कटेगी मैं तुमसे कुछ मागता भी नही, सिर्फ थोडी देर के लिये आ जाओ। जब वे आ गये तो उसने बारात वालो को भोजन के लिये बुलावा दिया और कहा कि रसोई तैयार होने म देर हो गई है अत सब-सब साथ ही शीघ्रता से आ जाओ। अपने भाइयो को उसने दरवाजे पर खडा कर दिया और कह दिया कि बारातियो के सिवा और कोइ अदर न आने पाये। और सारे बाराती तो घर म घुस गये लेकिन दूल्हे का बाप अपने डेरे की सार-सम्भाल करने के लिये पीछे रह गया था अत वह देरी से पहुँचा। दरवाजे पर खडे लोगो ने उसे टोका कि तू कौन है? हम तुझे अदर नही जाने देंगे। बातो-बातो म बात बढ गई और दूल्हे के बाप ने कहा कि इस घर म कोई पैर रक्खे तो उसके सौ बाप, उसने सारे बारातियो को बाहर बुलवा लिया और सब अपने डेरे पर चले गये। लडकी का बाप उसे मनाने के लिये पहुँचा कि पहरेदारो की गल्ती से ऐसी बात हो गइ है अब कसूर माफ होना चाहिए। लेकिन दूल्हे

का बाप तना हुआ था, उसने कहा कि चुपचाप वधू को भेज दे और अधिक बात करने की आवश्यकता नहीं है। वह तो यह चाहता ही था। उसने लड़की को उनके साथ विदा कर दिया और तब संतोष के साथ बोला कि लड़की टीबड़ी चढ़ गई।

● चारण की गलती

एक बार किसी ठाकुर ने एक चारण पर प्रसन्न होकर उसे सौ गज लम्बा और सौ गज चौड़ा जमीन का टुकड़ा दिया और उससे कहा कि *मुंशी के पास जाकर अपनी जमीन का पट्टा बनवा ले।* चारण मुंशी के पास गया तो मुंशी ने अपना इनाम मांगा। चारण ने कहा कि भला तुझे किस बात का इनाम दूं? यह जमीन तो ठाकुर साहब ने प्रसन्न होकर दी है। मुंशी थोड़ी देर अपने काम में लगा रहा और फिर उसने चारण से कहा कि बारहठजी, आपको जमीन का एक टुकड़ा १०० गज लम्बा और १०० गज चौड़ा क्या करना है? पच्चीस गज लम्बे और पच्चीस गज चौड़े चार टुकड़े लिख दूँ तो आपको कोई एतराज तो नहीं है? चारण ने सोचा कि एक की बजाय चार टुकड़े अच्छे रहेंगे, लड़कों में भी आपस में झगड़ा नहीं होगा और किराये पर देने में भी आसानी रहेगी। बारहठ ने एक की जगह चार टुकड़े लिख देने की स्वीकृति दे दी और मुंशी ने वैसा ही लिखकर ठाकुर के दस्तखत करवा दिये। लेकिन जब वह बाहर आया तो किसी सयाने आदमी ने बताया कि तू ठगा गया है। दस हजार वर्ग गज की जगह तुम्हें अढ़ाई हजार वर्ग गज जमीन ही मिली है।

● अनोखी बात

एक ठाकुर का यह नियम था कि वह किसी बारहठ को तभी खाना खिलाता था कि जब वह उसे कोई बड़ी अनोखी बात सुनाता। एक दिन एक बारहठ उसके यहाँ आया, वह ठाकुर की आदत को जानता था, अतः उसने तरकीब से खाना खाने की बात सोची। ठाकुर ने जब पूछा कि कहो, कहाँ

से आये तो बारहठ ने कहा कि आज सवेरे ही दिल्ली से चलकर सीधा यहाँ आया हूँ। ठाकुर ने चकित होकर पूछा कि इतनी देर मे दिल्ली से यहाँ कैसे आ गये ? इस पर बारहठ ने कहा कि मेरे पास एक ऐसा वृक्ष है जो सौ कोस प्रति घटे की रफ्तार से चलता है, उसी पर चढ़कर आया हूँ। ठाकुर ने वृक्ष को देखने की इच्छा प्रकट की तो बारहठ ने कहा कि जगल म अमुक स्थान पर वृक्ष कोछोड कर आया हूँ। इतने म बादी ठाकुर के लिए भोजन का थाल लेकर आई। ठाकुर वृक्ष देखने के लिये उतावला हो रहा था। इसलिए उसने बाँदी से कह दिया कि थाल एक तरफ रख दे और स्वय घोडे पर चढकर जगल मे निकल गया। बारहठ भूखा तो था ही उसने थाल पर हाथ साफ कर दिया। उधर बादी ने ठकुरानी से जाकर कहा कि ठाकुर साहब ने भोजन नही किया और घोडे पर सवार होकर बाहर निकल गये ता ठकुरानी बारहठ के पास इसका कारण पूछने के लिए आइ। बारहठ ने कह दिया कि ठाकुर साहब तुमसे नाराज हो गये हैं और दूसरी पत्नी लाने के लिये गये हैं। ठकुरानी ने तुरत ही रथ जुडवाया और ठाकुर की खोज म चली। उधर ठाकुर लौटा और उसने रथ के पहियों के निशान देखे तो पूछा कि ठकुरानी कहा गई है ? बारहठ ने कह दिया कि पास के गाव का ठाकुर आया था और वह ठकुरानी को रथ मे बिठाकर ले गया। ठाकुर न सुना तो उसे तैश आ गया और उसने घोडे की बाग मोड दी। पीछे से ठाकुर का साला परदेश से आया तो बारहठ ने कह दिया कि तुम्हारी बहिन मर गई है और ठाकुर साहब उसे जलाने के लिये गये है। आगन्तुक ने यह सुना ता उसने सोचा कि मुझे भी तालाब पर चलकर मुण्डन करवा लेना चाहिये। अत वह अपने घोडे को वही बाँधकर मुण्डन करवाने के लिए चला गया। पीछे से ठकुरानी आइ और उसने घाडा बँधा देखा ता बारहठ से पूछा कि यह नया घाडा किसका है ? तब बारहठ ने कहा कि तुम्हारा भाइ आया था और कह रहा था कि तुम्हारी माँ मर गई है। ठकुरानी ने सुना तो रोना धोना शुरु कर दिया। पास पडौस की और भी बहुत-सी स्त्रियाँ आ गई। ठाकुर का साला

खींच और उसने ठाकुर की ओर फेंका। ठाकुर ने साले का सिर सुन्न हुआ देखा तो पूछा क्या बात हुई? उधर उसने पूछा कि बाई को क्या नमस्कार हुआ था? जब सारा भेद सुना तो ठाकुर ने कहा कि मैं इस दुष्ट बारहठ को तो जान से मारूंगा। इस पर बारहठ ने कहा कि सरकार! आपने ही तो यह निश्चय कर रखा है कि कोई अनोखी बात सुनाये तो मैं उसे साबत कराऊँगा अन्यथा नहीं। अब बतलाइये कि यह अनोखी बात है या नहीं? तब ठाकुर ने साबत बनवाकर उस बारहठ को रिझाया।

● वा देवै वा ले कोनी

एक सेठ अपने साथ नाई को लेकर दिसावर चला। नाई ने सेठ से यह बात तय कर ली कि जिस गाँव में हम जायेंगे उस गाँव में यदि कोई नई बात देखी तो उसका मतलब तुम्हें बतलाना होगा। दोनों अगले गाँव में पहुँचे तो सेठ तो सराय में रुक गया और नाई बाजार चला गया। जब वह एक घर के सामने से गुजर रहा था तो उसने देखा कि एक स्त्री एक आदमी को दो हजार रुपये दे रही है और वह किसी प्रकार लेना नहीं चाहता। नाई को यह बात अजीब सी लगी और उसने सराय में जाकर सेठ से पूछा कि इस बात का मतलब मुझे समझाइये। सेठ ने बहुत टालना चाहा लेकिन नाई ने हठ पकड़ लिया तो सेठ ने कहा—

एक साहूकार के सात लड़कियाँ थीं। बाप के पूछने पर छः ने तो कह दिया कि हम आपके भाग्य का ही खा रही हैं। लेकिन सातवीं ने कहा कि मैं तो अपने भाग्य का खाती हूँ। उसके उत्तर से साहूकार बहुत रुष्ट हुआ और उसने नाई और ब्राह्मण को बुलाकर कहा कि इस लड़की की सगाई किसी ऐसे घर करके आओ कि जो पहले तो बहुत ही सम्पन्न रहा हो, लेकिन अब उस घर के लोग दाने-दाने को मुहताज हों। तलाश करने पर उन्हें एक ऐसा घर मिल गया। एक माँ अपने दो बेटों के साथ एक गंदी सी कोठरी में रहती थी। यद्यपि लड़कों का पिता किसी समय गाँव

का सबसे बडा धनी व्यक्ति था, लेकिन अब उसके दोनों लडके मजदूरी करके पेट पालते थे। वे दोनों आदमी (नाई और ब्राह्मण) जब पता लगाते हुए वहाँ पहुँचे तो घर में उन लडकों की माँ ही थी। जब उन्होंने अपना मतव्य बुढिया से कहा तो उसे हर्ष भी हुआ और आश्चर्य भी। उन दोनों ने बुढिया को एक सोने का टका और नारियल दे दिया और कह दिया कि अमुक दिन अपने बडे लडके को शादी के लिए भेज देना। जब दोनों लडके घर आये तो उन्हें भी यह बात सुनकर बडा आनन्द हुआ। शादी का दिन नजदीक आ गया। लेकिन उनकी बिरादरी में से कोई भी उनके साथ जाने को तैयार न हुआ। बुढिया ने सोने का टका भुनवाकर उन दोनों के लिए अच्छे वस्त्र बनवा दिये और उन्हें बिदा कर दिया। दोनों जाकर गाँव के बाहर तालाब पर ठहर गये। शाम को वही सेठ के आदमी आकर उन्हें लिवा ले गए और रातो रात गागूली तौरसे शादी की रस्म अदा करके उन्हें बिदा कर दिया। लडकी को कुछ भी दहेज नही दिया गया, उल्टे उसके बाप ने कहा कि जब तू पैदा हुई थी तब तेरे जन्मोत्सव पर मेरे दो हजार रुपये खर्च हुए थे। लडकी को बडा रंज हुआ और उसने कहा कि यदि मैं लडकी के बजाय लडका होती तो शरीर पर के वस्त्र भी यही डाल जाता। निदान तीनों घर आ गए। बहू ने देखा कि जिस कोठडी में वे लोग रह रहे थे, वह बहुत गदी हो रही है चारो ओर कोनो मे फटे चिथडे पडे है। दूसरे दिन उसने सारे चिथडे बाहर फेंक दिये कोठडी को झाड-बुहार के साफ किया और मिट्टी मँगवाकर उसे अच्छी तरह लीप-पोत दिया। अगले दिन उसने अपने पति और देवर से कहा कि तुम दोनों जगल से लकडियाँ ले आया करो और मजदूरी करने मत जाया करो। दोनों जगल से बहुत सारी लकडियाँ तोडकर ले आये तो उसने उन लकडियों को दो की बजाय चार भारो में बाँध दिया और उन चारो को बेचने से उन्हें दो रुपये मिल गए। उन दोनों को दिन भर मजदूरी करने पर एक रुपया मिला करता था और आज दो रुपये मिल गये थे। इसलिए वे खुशी-खुशी घर आये और फिर हमेशा लकडी ही लाने लगे। इस प्रकार कुछ रुपये जुट गये तो बहू

ने उन्हें एक गधा ले दिया। जिससे वे अधिक लकड़ियाँ लाने लगे और उनकी आमदनी भी बढ़ गई। तब उसने बाजार से कुछ कपड़े मँगवाये और उन पर बेल-बूटे काढ़कर उन्हें फिर बाजार में बेच दिया, इससे उसे अच्छे पैसे मिले और अब वह नित्य यही काम करने लगी। इस प्रकार बहू ने काफी पैसे जोड़ लिए तब एक दिन उसने अपनी सास से पूछा कि ससुरजी हमारे लिए क्या यही कोठरी छोड़ गए हैं? तब सास ने ठंडी सांस लेते हुए कहा कि बहू, क्या कहूँ, वह सामने जो हवेली देख रही हो वह हमारी ही है लेकिन तुम्हारे ससुर के भाइयों का कुछ कर्ज हम पर है सो उन्होंने हवेली दबा रक्खी है। बहू ने सोचा कि अब इन दोनों भाइयों को कुछ पढ़ाना चाहिए सो उसने उनके लिए एक गुरु रख दिया। लकड़ी बेचकर आने के बाद दोनों खूब जी लगाकर पढ़ने लगे। एक दिन बहू ने अपने पति से कहा कि अब तुम लकड़ियाँ मत लाया करो, तुम राज दरबार में जाया करो। तुम्हारा पिता नगर का प्रथम धनी सेठ था, उसकी कुर्सी दरबार में अवश्य होगी, तुम उसका पता लगाओ। उसका पति अब दरबार में आने-जाने लगा। उसका देवर अभी लकड़ियाँ ही लाया करता, सो एक दिन लकड़ियों में एक मरे साँप को भी ले आया। घर आकर उसने साँप को देखा तो कोठरी की छत पर फेंक दिया। संयोग से उसी दिन एक चील रानी का नौलखाहार उठा लाई। जब वह उस छत पर से गुजर रही थी तो उसने मरे साँप को देखा, उसने हार वहीं डाल दिया और वह साँप को उठा ले गई। बहू ने देखा तो हार को उठाकर रख लिया। उधर राजा के सिपाहियों ने सारा चील के घोंसले छान डाले लेकिन कहीं हार का पता न लगा। दिवाली नजदीक आने लगी तो बहू ने हार अपने पति को दिया और कहा कि दरबार में जाओ तब इसे राजा को सौंप देना, राजा इनाम के लिए कहे तो कह देना कि कल निवेदन करूँगा। राजा हार पाकर बहुत प्रसन्न हुआ और उसने मुँह माँगा इनाम सेठ के लड़के को देना चाहा लेकिन उसने कहा कि इनाम तो मैं कल माँगूँगा। घर आने पर उसकी पत्नी ने कहा कि कल राजा जब फिर इनाम माँगने के लिए कहे तो उससे पहले वचन ले लेना ताकि वह मुकर न सके।

फिर कहना कि दिवाली के दिन सिवा मेरे घर के और कही भी रोशनी न हो, आपके महल मे भी नही। दूसरे दिन उसने वैसा ही किया। राजा बडे असमजस मे पड गया लेकिन वचनबद्ध था, अत उसने डोंडी पिटवादी कि दिवाली के दिन कोई भी अपने घर मे रोशनी न करे। इसके अतिरिक्त राजा ने उसे और भी इनाम दिया। दूसरे ही दिन बहू ने सारा कर्ज चुका दिया और अपने ससुर की हवेली मे प्रवेश किया। उसने हवेली को बुहार झाडकर साफ करवाया। दिवाली की रात उसने बहुत बढिया रोशनी की। सिर्फ वही एक हवेली रोशनी से जगमगा रही थी और बाकी सारी नगरी अन्धकार मे डूबी हुई थी। आधी रात को लक्ष्मी ने आकर दरवाजा खटखटाया तो बहू ने कहा कि तू कौन है? लक्ष्मी ने उत्तर दिया कि मैं लक्ष्मी हूँ। बहू ने कहा कि तू तो हमें छोडकर चली गई थी, अब फिर क्यों आई है? तब लक्ष्मी ने कहा कि सारे नगर मे अन्धकार ही अन्धकार छा रहा है, अत मुझे यही आने दो। तब बहू ने कहा कि पहले प्रतिज्ञा करो कि फिर न जाओगी। तब लक्ष्मी ने कहा कि मैं तुम्हारे घर से नौ पीढी तक न जाऊँगी। तब बहू ने दरवाजा खोल दिया और लक्ष्मी ने घर मे प्रवेश किया। घर का कोना-कोना हीरे मोतियो से जगमगा उठा। तभी एक फटे चिथडा वाला बदसूरत आदमी घर से बाहर भागने लगा। बहू ने कहा कि तू कौन है? तब उसने कहा कि मैं तो दिवाला हूँ, लक्ष्मी के आने से अब इस घर मे मेरा ठौर नही है। तब बहू ने उसकी पीठ मे एक लात जमाई और कहा कि अब फिर न आना। सबेरा हुआ तो लोगो ने देखा कि उस घर की काया पलट हो गई है। राजा ने भी लडके को दरबार मे उच्च स्थान दे दिया और सब आनन्दपूर्वक रहने लगे। तब एक दिन बहू को याद आया कि तेरे बाप ने कहा था कि तेरे जन्म दिन पर मेरे दो हजार रुपये खर्च हुए थे अत वे रुपये उसे लौटा देने चाहिएँ। अत वह अपने बाप के घर रुपये लेकर गई और अपने बाप से कहा कि मेरे जन्म-दिन पर जो दो हजार रुपये तुमने खर्च किये थे वे ले लो। लेकिन वह ले नही रहा था। और उन्ही दोनो को तुमने झगडते देखा है।

● गोकुलिये गुसाइयों की लीला

कहते हैं कि एक बार जोधपुर में गोकुलिया गुसाइयों का बहुत जोर था। स्वामी दयानन्द सरस्वती जोधपुर आये तो उन्होंने देखा कि ये लोग धर्म की आड़ में अनाचार फैला रहे हैं। उन्होंने महाराजा से इसकी चर्चा की। महाराजा ने उनके प्रधान को बुलाकर पूछा कि आप लोग क्या-क्या करते हैं? प्रधान ने कहा कि श्रीकृष्ण की लीलायें किया करते हैं, जैसे कृष्ण की बाललीला, रासलीला आदि। तब महाराज ने फिर पूछा कि चीर-हरण लीला भी करते हो न? गुसाइं ने कहा कि अन्नदाता, कृष्णलीला में तो उनकी सभी लीलायें चलती हैं। तब महाराजा ने फिर पूछा कि तब तो गोवर्द्धन लीला भी करते ही होगे? लेकिन गोवर्द्धन तो बहुत बड़ा पर्वत होगा, तुम सामने खड़ी इस छोटी सी पहाड़ी को ही अपनी उंगली पर उठाकर दिखलाओ। गुसाइं ने अपनी असमर्थता प्रकट की तो महाराज ने सरोष कहा कि गुसाईं जी, चीरहरण-लीला करना ही आसान है, गोवर्द्धन-लीला करना नहीं। खैरियत इसी में है कि आप सब लोग यहाँ से कूच कर जाएँ।

● क्याको मोट्यार है? परलै बासको है

एक ननद और भौजाई गाँव के तालाब में स्नान कर रही थीं। भौजाई ने किसी आदमी को उधर आते देखा तो कहा कि बाईजी, मरद आ रहा है। तब उसकी ननद ने कहा कि यह गाँव का मरद है! नहातीं क्या नहीं! वह तो किसी दूसरे मुहल्ले का रहने वाला है। कोई जान पहिचान का थोड़े ही है जो उससे शर्म की जाए।

● स्याणो आदमी लीक कोनी पीटै

एक मन्दिर में एक अन्धा पुजारी पूजा किया करता था। मन्दिर में विशेष आय न थी। पुजारी अपने लिए जो रोटियाँ बनाता उन्हें ही भगवान् के आगे रखकर स्वयं खा लेता। मन्दिर में एक बड़ा बिलाव हिल गया और ज्यों ही अन्धा भगवान के आगे रोटियाँ रखकर हाथ जोड़ता त्यों ही बिलाव रोटियाँ को उठा कर भाग जाता। पुजारी हैरान हो गया, आखिर

उसने एक तरकीब निकाली कि रोटिया रखकर उनमे एक काठ की खूँटी गाड दिया करता जिससे कि बिलाव उन्हे उठाकर न भाग सके । तभी से उस मन्दिर मे यह प्रथा पड गई कि भगवान् के जो भोग लगाया जाए उसमे खूँटी अवश्य गाडी जाए । उस पुजारी की मृत्यु पर जब दूसरा पुजारी आया तो उसने भी प्रथा के अनुसार रोटिया मे खूँटी गाडना शुरू कर दिया । फिर तीसरा पुजारी आया, वह कुछ समझदार था । उसने बडे-बूढ़ो से पूछा कि यह क्या प्रथा है ? तब किसी जानकार बूढे ने उसे बतलाया कि यह प्रथा किसलिए चली । तब उसने कहा कि वे बाबाजी तो अन्धे थे अत वे ऐसा करते थे लेकिन मेरे तो मुँह पर आँखें हैं मैं भला लकीर का फकीर क्या बनूं । और उसी दिन से उसने उस प्रथा को तोड दिया ।

● धन के जोर पर कूदे

एक मढी मे एक साधु रहता था । एक दिन उस साधु के पास कोई दूसरा साधु उससे मिलने के लिए आया । रात को जब दोनो खा पीकर सो गए तो आने वाले साधु ने कोई बात कहनी शुरू की । लेकिन मढी वाला साधु उसकी बात को ध्यान से नही सुन रहा था। बात यह थी कि उसने सबेरे के खाने के लिए कुछ रोटिया बाध कर खूटी से लटका रक्खी थी और एक चुहिया उछल उछलकर रोटियो तक पहुँचना चाहती थी । साधु अपने डडे से उसे बार-बार भगा रहा था । आगन्तुक साधु को उसकी उपेक्षा अच्छी न लगी । लेकिन जब उसे उपेक्षा का कारण जान पडा तब उसने कहा कि इस चुहिया का बिल खोदना चाहिए अवश्य ही बिल मे कुछ धन गडा हुआ है जिसके बल पर वह कूद रही है । बिल खोदा गया तो उसमे कुछ सोने के गहने मिले । तब आगन्तुक साधु ने कहा कि अब तुम निश्चिन्त हो जाओ, अब वह चुहिया कदापि रोटियो तक नहीं पहुँच सकेगी, जिस धन के बल पर वह कूद रही थी वह हमने निकाल लिया है ।

● लड्डू पर भगवान को भी मन चालै

एक बार मातीचूर का लडडू विष्णु भगवान् के पास गया और उसने

पुकार की कि प्रभो ! मुझे जो भी देखता है खाने के लिए लालायित हो जाता है। अपनी सुरक्षा का साधन मेरे पास नहीं है। तब भगवान् ने कहा कि भाई ! मन तो मेरा भी ललचा रहा है, इसलिए तुम जरा दूर हटकर बात करो। तब लड्डू सोचने लगा कि यह तो नीचे से लेकर ऊपर तक एक-सा ही हाल है, कहीं भी निस्तार नहीं।

● बांकीदास अर मानसिंह

जोधपुर नरेश मानसिंहजी ने कविवर बांकीदासजी की स्पष्टवादिता से रुष्ट होकर उन्हें दो बार अपने राज्य से बाहर जाने का हुक्म दिया था, लेकिन उनकी गुण-ग्राहकता ने उन्हें फिर वहीं बुला लिया। महाराजा ने प्रसन्न होकर एक बार उन्हें लाख-पसाव भी दिया था। कविराज की प्रशंसा में महाराज ने एक दिन उनसे कहा

बांका थारी बांक नें काढ़ सक्यो ना कोय।

(हे बांकी दास तुम्हारे बांकपन को कोई नहीं निकाल सका)

बीच में ही बांकीदासजी बोल उठे

लाख पसाव तो एक दियो, देस निकाला दोय।

(आपने लाख-पसाव तो एक बार ही दिया और देशनिकाले दो बार दे दिये)

महाराजा सुनकर शर्मिन्दा हो गए।

● टक्के हाली को झूझणियों बाजसी

एक आदमी मेले में जा रहा था। किसी स्त्री ने कहा मेरे लड़के के लिए मेले से अमुक चीज लाना, किसी ने कहा कि मेरी लड़की के लिए अमुक चीज लाना। लेकिन पैसा एक ने भी न दिया। तब एक स्त्री ने उसके हाथ में टका देते हुए कहा कि मेरे नन्हें के लिए एक झुनझुना लेते आना। तब उसने कहा कि तू ने टका दिया है सो तेरा नन्हा ही झुनझुना बजायेगा। अर्थात् बिना पैसे दिये अन्य स्त्रियों ने जो चीजें मगाई हैं वे नहीं आयेंगी, और तुम्हारे बेटे के लिए झुनझुना अवश्य आएगा।

० हूँ अर हुँकार दास

एक मढ़ी मे एक बाबाजी रहते थे। जब गाँव मे दक्षिणा आदि की राई चिट्ठी बँटती तो बाबाजी चालाकी से दुगनी चिट्ठियाँ हथिया लिया करते, वे कहते कि हम इतने आदमी हैं —

> हूँ अर हुँकार दास, चेलो गोपालदास ।
> मे अर बा, छोरो अर छोरै की मा
> अर मन्नै थे जाणो ई हो ।

हू याने मैं और हुँकारदास याने हुकारा देने वाला, चेला गोपाल दास, मैं और मेरी पत्नी, लडका और लडके की माँ और मुने तो तुम जानते ही हो।

० सिहा सिर नीचा किया

मल्हारराव होल्कर की फौज चित्तौड के पास डेरा डाल पडी थी। राजपूत राजे अपने को लडने म असमर्थ पाकर होल्कर के फौजी अफसरो से किसी प्रकार सन्धि करने का प्रयत्न कर रहे थे। जिस वक्त बातचीत चल रही थी सयोग से उसी वक्त एक चारण घोडे पर चढकर उधर स गुजर रहा था। पूछने पर जब उसे राजपूत राजाओ की अकर्मण्यता का पता चला तो वह उनके तम्बुओ के पास गया और उसने जोर स यह दोहा कहा—

> सिहा सिर नीचा किया, गाडर करै गिलार ।
> अधिपतियाँ सिर ओढणी, माथै पाग मल्हार ।।

(सिहो ने सिर नीचे कर लिए है और भेड अहकार जता रही है। राजाओ के सिरो पर ओढनिया हैं और मल्हार राव के सिर पर पगडी है।)

दोहे को सुनकर राजपूतो ने अपना आपा सँभाला बातचीत बन्द कर दी और उन्होंने होल्कर की फौज को मार भगाया।

० इसी राणिया कई आवै

जोधपुर नरेश मानसिह जी ने एक बार सावन का उत्सव मनाने के

लिए सूरसागर पर एक बड़ा आयोजन किया । महारानियाँ भी उत्सव में शामिल होने के लिए पालकियों में बैठ-बैठकर चल पड़ीं । एक चौराहे पर एक महारानी और कवि बाँकीदासजी की पालकी टकरा गई। महारानी की पालकी के साथ चलने वाले घुड़सवारों ने बाँकीदासजी की पालकी के कहारों को टोका कि पहले महारानी की पालकी निकल जाए फिर तुम अपनी पालकी लाना । लेकिन बाँकीदासजी ने कहा कि पालकी को रोको मत, आगे बढ़े चलो, ऐसी रानियाँ कई आती हैं । महारानी को बड़ा बुरा लगा और उसने निश्चय किया कि महाराज से इस उद्दण्ड को अवश्य दण्ड दिलाऊँगी । सूरसागर पहुँच कर जब रानी ने महाराजा से उसके अपमान की बात कही तो महाराजा ने यह कहकर टाल दिया कि यहाँ तो हम आनन्द मनाने आये हैं । जब राजधानी चलें तब फरियाद करना । उस वक्त तो रानी मन मारकर रह गई लेकिन राजधानी लौटते ही उसने फिर महाराजा से फरियाद की । महाराजा उस वक्त महल की छत पर सावन की हल्की फुहारों का आनन्द लेते हुए बाँकीदासजी का रचा हुआ एक दोहा गुनगुना रहे थे—

केहर तणी कलाइयां, भणणाहट भमरांह ।
भँजी गजसिंह भाजना, मद सौरभ उमरांह ॥

(हाथी का शिकार करते समय शेर के पंजे हाथी के मद से सराबोर हो गये थे और उसी मद की गंध से आकर्षित होकर शेर के पंजों के चारों ओर भौंरे मँडरा रहे हैं ।)

महाराजा ने महारानी से पूछा कि क्या ऐसा दोहा कहने वाले कवि को दण्ड देना चाहती हो ? महारानी ने कहा कि तो क्या कि उसने उद्दण्डतापूर्वक यह कहा था कि ऐसी रानियाँ कई आती हैं । तब महाराजा ने कहा कि कवि ने ठीक ही तो कहा था यदि मैं चाहूँ तो तुम जैसी कई रानियाँ ला सकता हूँ, लेकिन ऐसा विद्वान् कवि मुझे दूसरा नहीं मिल सकता, अतः इस विषय में अब चुप रहना ही अच्छा है । निदान रानी मन मसोसकर ही रह गई ।

० देपालदे

देपालदे अमरकोट का गोगा था। वह अपनी ससुराल (जैसलमेर) से गौना करके लौट रहा था। रथ में उसकी पत्नी थी तथा साथ में और बहुत से सेवक थे। रथ आगे-आगे चल रहा था। देपालदे स्वयं घोड़े पर चढ़ा पीछे-पीछे आ रहा था। रास्ते में उसने देखा कि एक चारण खेत में हल चला रहा है। उसके पास एक ही बैल है और दूसरे बैल की जगह उसने अपनी पत्नी को जोत रखा है। सूर्य मध्य-आकाश में पहुँच गया था और स्त्री के माथे से पसीने की बूंदें चलकर जमीन तक आ रही थीं। देपालदे उनके नजदीक गया और उसने चारण से पूछा कि क्या तुम्हारे पास दूसरा बैल नहीं है? तब चारण ने कहा कि नहीं। तब देपालदे ने कहा कि मेरा रथ आगे जा रहा है, तुम मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें दूसरा बैल दे दूं। चारण ने जाने से इन्कार किया तो देपालदे ने कहा कि अपनी स्त्री को भेज दो, वह बैल ले आयेगी। तब चारण ने कहा कि इतनी देर हल चलना बंद हो जायेगा और जमीन सूख जायेगी। तब देपालदे ने कहा कि तब तक मैं तुम्हारी स्त्री के स्थान पर हल खींचूंगा। चारण की स्त्री बैल लाने गई तो देपालदे हल में जुत गया। चारणी ने जाकर कहा कि ठाकुर ने एक बैल देने के लिए कहा है। ठकुरानी ने सुना तो बोली कि इस बैल के साथ तुम्हारा बैल चल नहीं सकेगा, अतः दोनों बैलों को ही ले जाओ। चारणी दोनों बैलों को ले आई तो देपालदे को अधिक संतोष हुआ। वह हल छोड़कर घोड़े पर सवार हुआ और आगे बढ़ा। फिर उसने नये बैल मँगवाये और रथ जोतकर अपने घर गया। इधर जब फसल पकी तो जितनी दूर से देपालदे ने हल से लकीरें खिचाई थी उतनी दूर में जितने सिट्टे पके उनमें अनाज के दानों की बजाय मोती निकले, तब चारण ने कहा—

> **जो जाणू जिणवार निज भल मोती नीपजै।**
> **बाहूँ तो बड बार दी हू सूं, देपालदे ॥**

(हे देपालदे यदि मुझे उस वक्त यह पता होता कि तुम्हारे हल खींचने से मोती पैदा होंगे तो मैं तुम्हारे से ही बहुत देर तक हल खिंचवाता)

● दोनू एकसा मिलग्या

जोधपुर महाराज अमरसिंहजी ने अपने पिता को मार कर जोधपुर की गद्दी प्राप्त की थी। और जयपुर नरेश जयसिंहजी ने अपने पुत्र को मरवा दिया था। एक बार दोनो राजे पुष्कर मे एक जगह मिले। कविराजा करणीदानजी को कुछ सुनाने का हुक्म हुआ तो कविराजा ने दोनो को ही खरी-खरी सुनाई—

> पत जैपर जोधाणपत, दोनू थाप उथाप।
> कूरम मार्‌यो डीकरो, कमधज मार्‌यो बाप॥

(जयपुर और जोधपुर दोनो के अधीश्वर एक जैसे ही हैं कूरम अर्थात् कछवाहा राजा जयसिंह ने अपने पुत्र की हत्या करवाई और जोधपुर के राजा ने अपने पिता की हत्या की। दोनो मे से किसी का भी यश कम नही है।)

● कायथ को हिसाव

एक कायस्थ अपने परिवार सहित किसी दूसरे गाँव जा रहा था। रास्ते मे एक नदी पड़ी। कायस्थ ने सोचा कि पहले नदी की गहराई माप लेनी चाहिए और तब लड़के-लड़कियों को नदी पार करवाना ठीक रहेगा। कायस्थ ने अपना फीता निकाला और नदी की गहराई मापने लगा। किसी जगह पानी दो फुट गहरा था तो किसी जगह चार फुट और किसी जगह पाँच फुट। उसने सारा हिसाव लगाया तो गहराई का औसत तीन फुट निकला। कायस्थ ने सोचा कि इतने पानी मे लड़के-लड़कियाँ नही डूब सकेंगे, अत सबको नदी पार कराने लगा लेकिन जहाँ पानी की गहराई पाँच फुट थी वहाँ जाकर सारे बालक डूब गए। तब कायस्थ ने सोचा कि कही हिसाव लगाने मे भूल हो गई है। अत उसने फिर हिसाव लगाया तो गहराई का औसत वही निकला तब उसे बड़ी हैरानी हुई और बोला—

हिसाब बैठे ज्यू रो त्यू।
छोरा छोरी डूब्या क्यू।

(हिसाब ज्यो का त्यो बैठता है फिर लडके लडकी क्योकर डूब गए ?)

● हठीला, हठ छोड दे

एक शेरनी का जब भूख लगी तो उसने शेर से कहा कि भूख लगी है, जाकर शिकार कर लाओ। तब शेर उठा, उसने एक झटके के साथ अपने शरीर को झाडा, उसकी पूँछ खडी हो गई और आँखें लाल हो गई। उसने एक दहाड लगाई तथा एक ओर को दौड गया। थोडी ही देर मे वह एक जगली भैसे को मार कर ले आया। एक गीदड ने यह सब देखा तो उसने सोचा कि अब शिकार करने की अटकल मुझे भी आ गई है। वह दौडा-दौडा अपनी घरवाली के पास गया और बोला कि क्यो भूख लगी है क्या ? यदि भूख लगी हो तो मुझसे कहो, मैं आज शिकार करने की विद्या सीखकर आया हूँ। उसके हाँ करने पर गीदड ने कहा कि देखा मेरी पूँछ हवा म सीधी खडी हो गई है न ? और मेरी आखें लाल हो गई है न ? तब सियारी ने कहा कि अभी तो पूँछ नीचे लटक रही है और आखो की पुतलियाँ सफेद पडी है, तब गीदड ने उसे फटकारा और कहा कि तुम्ह इतनी भी तमीज नहीं। तब सियारी ने कहा कि नाराज क्या होते हो ? तुम जैसा कहोगे मैं हाँ भर लूँगी। तब गीदड शिकार की खोज म दौडा। थोडी ही दूर पर एक ऊँट चर रहा था, गीदड ने झाड म घुसकर उसके मुँह पर अपना पजा जमाया ? ऊँट ने अपनी गदन ऊपर का उठाई तो गीदडसिहजी जमीन से पाँच हाथ ऊपर हवा मे लटक गये। तब सियारी ने अपने पति से शिकार का हठ छोडने के लिए कहा, "हठीला, हठ छोड दे' तब सियार ने कहा कि मैं हठ तो छोड दूँ, लेकिन कम्बख्त ने तो मुझे जमीन से पाँच हाथ ऊपर उठा रक्खा है, कहीं जमीन पर पैर भी तो टिकें

सुन्दर का बोल मेरै मन भावै।
पण धरती पर पग मेंडण भी पावे॥

(सुन्दरी के बोल मेरे मन को बडे अच्छे लग रहे हैं लेकिन धरती पर पैर टिकने पाए तब तो शिकार करने का हठ छोड़ू)

● कै घड बैठे ऊट

एक दिन एक ऊँट माली की बाडी मे घुस गया और उनके बूटे चरने लगा। कुछ बूटे उसने खाये और कुछ तोड डाले। माली की लडकी उस वक्त बाडी मे थी, उस बडा रज हुआ, लेकिन सामने ही कुएँ पर कुम्हार की लडकी खडी थी वह खिलखिला कर हँसने लगी। तब माली की लडकी ने कहा—

गड गड हँसे कुम्हार की,
माली की का चर रह्यो बूट।
तू के हँसे कुम्हार की,
कै घड बैठे ऊट॥

(ऊँट माली की लडकी के बूटा का चर रहा है यह देखकर कुम्हार की लडकी हँस रही है। लेकिन कुम्हार की बेटी तू क्या हँस रही है, न जाने ऊँट किस करवट बैठे।)

तब कुम्हार की लडकी ने कहा कि ऊँट मेरा क्या खायेगा—

सुख सोवै कुम्हार की, चोर न मटिया ले।
गधो पगाणे बाँध कर, छाज सिरहाणे दे।

(कुम्हार की तो अपने गधे का पैताने की ओर बाँधकर तथा अपने छाज को सिरहाने देकर सुख पूर्वक सोती है उसकी मिट्टी को चोर भी नही चुराता)

लेकिन सयोग ऐसा हुआ कि ऊँट बाडी मे निकलकर कुम्हार के आँगन की तरफ चला गया जहाँ कुम्हार ने बहुत सारे बरतन पकाने के लिए इकट्ठे कर रखे थे और वहीं ऊट लोटने लगा। कुम्हार के सारे बरतन फूट गये।

● क़ाजी और तेली

एक बार क़ाजी और तेली के बैल आपस में लड़ पड़े। क़ाजी के बैल ने तेली के बैल को मार दिया। लेकिन क़ाजी को खबर मिली कि तुम्हारे बैल को तेली के बैल ने मार डाला है, तब क़ाजी ने फ़ैसला दिया—

लाल किताब उठ बोली यूं।
तेली बलद लड़ाया क्यूं॥

(लाल किताब यों बोल उठी कि तेली ने बैलों को क्यों लड़ाया। उसने खल खिला खिला कर अपने बैल को मुस्टंडा कर दिया। इसलिए तेली बैल के बदले का बैल दे और पच्चीस रुपये दंडस्वरूप और दे)

खुवा के खल कर दिया मुसटंड,
बलद का बलद पच्चीस रिपिया डंड॥

लेकिन जब क़ाजीजी को सही खबर मिली तो उन्होंने फ़ैसला बदल दिया—

बलद का बलद पर पड़ग्या डाव,
इसका क्या करै क़ाजी न्याव।

(बैल का बैल पर दाँव पड़ गया, इसका भला काजी क्या न्याय करे)

● तोला बड़ा क रत्ता

एक ठाकुर ने एक सुनार को अपने यहाँ गहना गढ़ने के लिए बुलवाया। ठाकुर की बाई हर वक्त सुनार के पास बैठी एक टक उसे देखा करती थी। सुनार ने समझा कि बाई बहुत कड़ी निगरानी रखती है, इसलिए उसने खोट नहीं मिलाया। जब गहना गढ़ा जा चुका तो बाई ने पूछा कि सोनीजी! तोला बड़ा या रत्ता ? (वजन मे तोला अधिक होता है या रत्ती) तब सुनार ने जान लिया कि यह तो यों ही आँखें फाड़ा करती थीं अतः बोला, "बाईजी का तो फेर घडावण का मत्ता" (बाई जी का विचार तो फिर से गहना गढ़वाने का है)। उसने ठाकुर से कहा कि गहना मेरे मन मुआफ़िक

नहीं गढ़ा गया है अतः दुबारा गढूंगा । दूसरी बार जब सुनार ने गहना बनाया तो उसने मनचाहा खोट उसमें मिला दिया ।

● न नर, न मादा

एक मछुआ एक राजा के पास बहुत सुन्दर मछली पकड़कर लाया । राजा मछली को देखकर बहुत खुश हुआ और उसने कारिन्दे से कहा कि इसे सौ रुपये पुरस्कार स्वरूप दे दो । कारिन्दे को ईर्ष्या हुई और उसने राजा से कहा कि हुजूर ! चार आने की मछली के लिए आप सौ रुपये क्यों दे रहे हैं ? आप उससे पूछिये कि यह मछली नर है या मादा, यदि यह नर कहे तो उससे कहिये कि इसकी मादा भी लाओ और यदि मादा बतलाये तो कहिए कि इसकी जोड़ी का नर लाओ, तब पुरस्कार मिलेगा । राजा ने इच्छा न होते हुए भी कारिन्दे की बात मछुए से कही । तब मछुए ने हाथ जोड़कर कहा कि अन्नदाता ! यह मछली न नर है, न मादा, यह तो नपुंसक है । राजा उसके उत्तर से बहुत खुश हुआ और उसे अपने सामने दो सौ रुपये दिलवाकर विदा किया ।

● बुग और गादड़ो

एक गीदड़ के शरीर पर एक बुग चिपक गई । गीदड़ इधर-उधर बहुत दौड़ा, लेकिन बुग टस से मस न हुई । तब गीदड़ ने तरकीब से काम निकालने की सोची और उसने बुग की बड़ाई करनी शुरू कर दी । गीदड़ ने कहा, "बुग मौसी ! तुम मुझे बड़े भाग्य से मिली हो, तुम हर वक्त मेरी रखवाली करोगी, यदि मैं मारा हूँगा और सिंह मुझपर झपटेगा तो तुम मुझे तुरत सावधान कर दोगी ।" बुग ने कहा कि तुमने तो मुझे गिराने की बहुत कोशिश की थी लेकिन तुम्हारी एक न चली इस पर तो गीदड़ ने कहा कि नहीं मौसी ! मैं तो तुम्हें जगत की सैर करा रहा था । यों बातें करते-करते गीदड़ अपनी माद के पास पहुँच गया और बोला, 'बुग मौसी ! मैं जरा लेट लगा लूँ । तब तक तुम इस खाते (टापे) के चारों ओर कुछ चक्कर

काट ला।" बुग ने गोदड की बात मान ली और उसकी पीठ से उतरकर उपले के चक्कर काटने लगी। अवसर पाकर गोदड अपनी मांद में घुस गया, जहां अँधेरा होने के कारण बुग नहीं घुस सकती थी, तब किसी ने कहा—

> बुग छाणं बैठाय कं अम्बुक छिबकी जाण।
> मेल धसक मनवार की खिसक गये खुरसाण॥

(चतुर गोदड ने बुगकी झूठी मनुहार करने की गप लगाकर उसे उपले पर *बैठा दिया और स्वयं खिसक गया*)

● जल्लाद औरत

एक जाट के बेटे की बहू भैंस दुह रही थी। तभी एक काला नाग उसके पास से गुजरा। उसने भैंस दुहते-दुहते ही काले नाग का अपनी एडी से कुचलकर मार डाला और भैंस दुह लेने पर उसे एक लकडी से उठाकर घूरे पर फेंक आई और फिर घर म चली गई। जाट ने सारी घटना देखी और उसे बहू के पराक्रम पर बडा आश्चर्य हुआ। उसने सोचा कि बहू फुरसत के समय अपनी सास-ननद के सामने अपने बल का बखान अवश्य करेगी। लेकिन कई दिन निकल गये और बात आई-गई हो गई। बहू ने कोई जिक्र नहीं किया, तब जाट ने सोचा कि यह स्त्री तो बडी क्रूर है। बहुत सभव है कि यह पति से थोडी सी कहासुनी हो जाने पर ही रात को सोते मे उसे मार डाले। यह सोचकर जाट एक बारगी ही काप गया और उसने उसी वक्त अपनी पुत्रवधू को घर से निकाल दिया। वह घर से निकलकर दूसरे गाँव की ओर चल दी। उस गाव के एक जाट की औरत मर गई थी और कुछ लोग उसे जलाकर मरघट से वापिस जा रहे थे। रास्ते म उस औरत को खडी देखकर उन्होंने पूछा कि तुम कौन हो? तब उस औरत ने कहा कि मैं एक जाट की लडकी हूँ और एक जाट के घर ही व्याही थी, लेकिन अब मेरा कोई नहीं है सवथा एकाकी हूँ। वे लोग उसे गाव म अपने साथ ले गये और जिसकी औरत मर गई थी, उस जाट से उसका नाता कर दिया। जब

कुछ दिन बीत गये तो एक दिन जाटने गुस्से में आकर अपनी औरत को कुछ कह दिया। उसी रात को जाटनी ने सोते में अपने पति को गँडासे से मार डाला और वहीं झोंपड़ी में एक गड्ढा खोदकर उसे गाड़ दिया। सवेरे घर के अन्य लोगों ने पूछा तो जाटनी ने कह दिया कि मुझे तो कुछ भी नहीं मालूम कि वह कहाँ गया। उन लोगों ने बहुत तलाश की लेकिन जाट का कोई पता ठिकाना नहीं लगा। ढूँढ़ते-ढूँढ़ते वे लोग उसी जाट के गाँव में पहुँचे, जिसने उस औरत को निकाल दिया था। बातचीत के सिलसिले में उस जाट ने उन लोगों से पूछा कि कहीं ऐसा तो नहीं हुआ कि वह घरवालों से खटपट करके अपनी ससुराल चला गया हो ? तब उन लोगों ने कहा कि उनके ससुराल तो है ही नहीं जाट के दुबारा पूछने पर उन लोगों ने वह सारा किस्सा बतलाया कि किस प्रकार एक राह चलती औरत से उसका विवाह कर दिया गया था। जाट ने अनुमान लगाया कि हो न हो यह वही औरत है जिसे उसने अपने घर से निकाला था और अवश्य उसने ही अपने पति को काटकर वहीं कहीं गाड़ दिया है। तब उसने उन लोगों से कहा कि घर जाकर उस जगह की छान-बीन करो जहाँ वह रात को सोया करता था। वे लोग अपने गाँव चले आये और घर आकर उस झोंपड़ी के आँगन को खोदने पर उन्हें लाश मिल गई। पर अब क्या हो सकता था ? उन्होंने भी उस जल्लाद औरत को घर से बाहर निकाल दिया।

० खरो-खोटो परखाल्यो

एक चमार और एक सुनार साथ-साथ जा रहे थे। रास्ते में उन्हें दो लुटेरे मिल गये। सुनार तो शीघ्रता से सरकंडा के एक ढेर में छुप गया लेकिन चमार को उन लोगों ने पकड़ लिया। चमार के पास कुल एक रुपया मिला, सो उन लोगों ने छीन लिया। तब चमार ने सोचा कि मैं तो लुट गया, लेकिन सुनार बच गया है। अतः सुनार को पकड़वाने की नीयत से उसने लुटेरों से कहा कि देखो भाई, सरकंडा में सुनार बैठा है, खोटा-खरा उससे परखवा लेना, फिर मैं जिम्मेदार नहीं हूँ। तब उन लोगों ने सरकंडा में छुपे हुए सुनार

को जा पकड़ा और उसके पास जो कुछ मिला, छीनकर चलते बने। तब चमार को भी सन्तोष हो गया।

● भाट अर चारण

एक भाट और एक चारण मे विवाद हो गया। भाट ने चारण को नीचा दिखाने के लिए कहा—

चारण, चूरण, चींचड़ो, खटमल जैंपा जूं।
मैं बूझूं करतार नें इता बणाया क्यूं ?

(मैं ईश्वर से पूछता हूँ कि हे करतार, तू ने चारण, चमूने, चींचड़े, खटमल जैंया और जूं आदि निरर्थक जीवों की रचना क्यों की ?)

तब चारण ने उत्तर दिया—

चारण, चवर, चतुर नर गढ़पतियाँ कै होय।
भाट, टाट, गाडर, गिंडक सब कोई कै होय॥

(भाट बकरी, भेड और कुत्ते ये तो हर किसी के भी होते हैं लेकिन चारण, चँवर और चतुर मनुष्य राजाओं के यहाँ ही होते हैं)

भाट सुनकर चुप हो गया।

● तीनूं ई आग्या ?

एक अंधी बुढ़िया के तीन दौहित्र थे। एक बार एक दौहित्र अपनी नानी के घर गया। उसका कद बहुत लम्बा था। अपनी नानी के पास उकड़ूं बैठा हुआ था तो नानी ने उसके सिर और घुटनों पर हाथ फेरते हुए पूछा कि बेटा, तीनों ही आ गए हो क्या ? तब उसने कहा कि नहीं नानी ! ये दो तो मेरे घुटने हैं मैं तो अकेला ही आया हूँ। तब उसकी नानी ने आश्चर्यचकित होकर कहा कि मर निपूते ! कहीं इतने बड़े भी घुटने हुआ करते हैं।

● सीली हो सपूती हो

राजस्थान के रिवाज के अनुसार जब एक औरत किसी बुढ़िया के

पैरा लगी तो बनिया ने उसे आशीष देते हुए कहा—"सोली हो सपूती हो, सात पूत की माँ हो।" बनिया ने उसे सात बेटा की माँ होने का आशीर्वाद दिया लेकिन उस औरत के नौ बेटे तो पहले से ही थे, इसलिए उसने नाराज होते हुए कहा कि आप मुझे गाली क्या देते हैं? मेरे नौ पुत्र तो पहले ही हैं, क्या तुम उनमें से दो को मारना चाहते हो?

● रड्डो और घेसलो

एक जाट के पास दो बैल थे। एक का नाम था 'रड्डा' और दूसरे का नाम था 'घेसला'। जाट की छोटी बच्ची का नाम 'मोमरडी' था। एक दिन एक बटाऊ जाट के घर आया। शाम हो गई थी और जाट खेत से आ गया था। उसने जाटनी से पुकारकर कहा कि आज रड्डा (मोटा रस्सा) और 'घेसला' को तैयार कर रखना। बटाऊ ने सोचा कि जाट मेरे लिए ही 'रड्डा' और 'घेसला' (मोटा लट्ठ) तैयार करने को कहता है। अतः वह एक खारी के नीचे छिप गया। जाट की स्त्री ने उत्तर दिया कि मेरे पास तो मोमरडी (गम खा) है। तब जाट ने कहा कि 'मोमरडी' को खारी में डाल दे। इतना सुनते ही बटाऊ वहाँ से निकलकर भागा। जाट ने बटाऊ को भागते हुए देखा तो वह उसके पीछे यह कहता हुआ दौड़ा कि तुम्हें खाये बिना न जाने दूँगा। बटाऊ ने समझा कि जाट मुझे ही खाना चाहता है। अतः वह और भी जोर से भागने लगा और पीछे मुड़कर देखने की हिम्मत भी न कर सका।

● जाट को गरू

दो भाई एक जाट के कुछ रुपये माँगते थे। जब एक भाई रुपये माँगने के लिए जाट के घर गया तो जाटनी ने कह दिया कि जाट खेत गया है और खाने के लिए उसे एक अधपकी सी रोटी और 'राबड़ी' दे दी। इस प्रकार वो खाना देखकर वह बिना कुछ खाये-पीये ही लौट गया। तब दूसरे भाई ने कहा कि इस बार मैं जाता हूँ। जाटनी ने उसी प्रकार इसे भी टरकाना चाहा, लेकिन उसने उस अधपकी रोटी को बड़े स्वाद से खाते हुए कहा कि ऐसी

बढ़िया रोटी तो मैंने आज तक कभी नहीं खाई। यदि साल भर भी इस तरह की रोटी खाता रहूँ तो भी मन न भरे। वह दो तीन दिन वहाँ टिका रहा। तब जाटनी ने सोचा कि यह निगोड़ा तो सचमुच ही नहीं टलेगा। तब वह जाट के पास खेत में गई और उससे कहा कि उस दुष्ट का मन तो यहीं लग गया है, मुझसे रोजाना पीस-पोकर उसे नहीं खिलाया जायेगा। इसलिए उसे रुपये दे- दिलाकर विदा करो। तब जाट घर आया और उसे रुपये देकर उससे अपना पीछा छुड़ाया।

● लुगाई अर भाड़ेती

एक औरत ने किसी दूसरी जगह जाने के लिए एक ऊँट किराये पर किया। ऊँट वाले ने सिर्फ एक टूटा-सा पलान ऊँट पर डाल दिया। न उसके पास तंग था न नकेल। तब उस स्त्री ने कहा—

> तंग नीं, तोरण नीं, मूरी की नीं जात।
> रामारया भाड़ेती, तेरी आगै जातां बात॥

निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचकर उसने ऊँट वाले को दो रूखी-सूखी रोटियाँ पकड़ा दीं और स्वयं घी में रोटियाँ चूरकर खाने लगी। तब ऊँट वाले ने सोचा कि इसने बदला तो खूब लिया है, लेकिन लौटते वक्त देखूंगा। लौटती बार जब ऊँट टीले से नीचे उतर रहा था तब ऊँट वाले ने पीछे से पलान खिसका दिया और वह औरत ऊँट की गर्दन पर से होती हुई नीचे गिर पड़ी। तब ऊँट वाले ने कहा—

> हाथ टूट्यो, चूड़ो फूट्यो, नाड़ ऊपर कै चाली।
> तूं घंघट में घी घसकायो, मनै लूखी घाली॥

(तू ने खुद तो घूघट के भीतर भीतर खूब घी सरकाया और मुझे रूखी सूखी रोटी दी। उसी का यह फल है कि तेरा हाथ टूट गया, चूड़ा फूट गया और तू ऊँट की गर्दन पर से होती हुई नीचे आ गिरी।)

पनजी अर मंगलजी

नवलगढ ठिकाने में पनजी नाम का एक बीदावत राजपूत रहता था। आये-गये को खिलाने पिलाने का काम उनके जिम्मे था। एक बार मंगलजी नाम का एक बारहठ वहाँ आया और उसने बड़प्पन जताते हुए कहा कि आज तो ऐसा सुहावना दिन है कि एक हाथ में तो वह हो और दूसरे हाथ में वह हो। उसका मतलब शराब और पके मांस से था। पनजी को उसका रौब अच्छा न लगा, अतः उसने कहा कि एक हाथ में तो वह हो (तुम्हारी चोटी हो) और दूसरे हाथ में वह हो (दूसरे हाथ में जूता हो) तब कैसा रहे? बातों-बातों में बात बढ़ गई। तब वहाँ बैठे किसी अन्य व्यक्ति ने मंगलजी को समझाया —

गरब करै मत मंगलजी, धर धरती को ध्यान।
बीदावत नर बांकड़ा, तेरी सट दे लेले स्यान॥

(हे मंगल जी, तू घमंड न कर और स्थान का ध्यान रख। बीदावत सरदार बड़ा बांकुरा है, वह झट से तेरी इज्जत खो देगा)

लेकिन मंगलजी नहीं माना तब —

मान्यो कोनी मंगलजी, जो कं धरती को धन जी।
पटक्यो बालू रेत में, पकड़ कंठ पनजी॥

(लेकिन मंगलजी नहीं माना तो पनजी ने उसके कंठ पकड़ कर उसे बालू रेत मे पछाड़ दिया)

नींबू निचोड़

एक सराय के अन्दर एक नींबू निचोड़ नाम का मुसलमान रहा करता था। जब कोई भी मुसलमान यात्री सराय में आता, नींबू निचोड़ उसके साथ जबरन खाना खाने बैठ जाया करता। एक दिन एक पठान उस सराय में आया तो भठियारिन ने नींबू निचोड की आदत उसे बतला दी। लेकिन पठान ने कहा कि जबरन खाना खाने वाले को मैं देख लूंगा। जब पठान

खाना खाने के लिए बैठा तो नीबू निचोड भी आधा नीबू लेकर वही आ गया और पठान के मना करते-करते दाल मे नीबू निचोडकर खाने के लिए बैठ गया। पठान ने कसकर एक थप्पड उसको जमा दिया। तब नीबू निचोड ने कहा कि भाई पठान ! या तो बचपन मे अम्मा ही इस प्रकार मार मार कर खिलाया करती थी या आज तुम ही खिला रहे हो। तब पठान को हँसी आ गयी और उसने नीबू निचोड को अपने साथ खाना खिलाया।

● एक टाँग को मुरगो

एक पठान बाजार से एक मुरगा खरीदकर लाया और उसे अपने नौकर को पका लाने के लिए दे दिया। जब नौकर मुरगे को पकाकर पठान के पास ले जा रहा था तो उसका मन ललचाया और उसने मुरगे की एक टाँग तोडकर खा ली। शेष पठान के पास ले गया। पठान ने पूछा कि इसकी एक टाँग कहाँ गई तो नौकर ने कह दिया कि हुजूर ! मुरगा एक ही टाँग का था। पठान ने कहा कि मूर्ख, कही एक टाँग का भी मुरगा हुआ करता है तो नौकर ने कहा कि किसी दिन आपको एक टाँग का मुरगा दिखला दूँगा। एक दिन जब दोनो साथ-साथ जा रहे थे, तो नौकर ने देखा कि एक मुरगा एक टाँग के बल खडा हुआ है और दूसरी टाँग उसने ऊपर को छिपा रक्खी है। उसे अच्छा मौका मिल गया और उसने पठान से कहा कि जनाब ! उधर देखिये, एक टाँग का मुरगा खडा है। पठान ने मुरगे के पास जाकर चुटकी बजाई तो मुरगे ने अपनी दूसरी टाँग भी निकाल ली। तब पठान ने कहा कि यह देख दूसरी टाँग भी हाजिर है। तब नौकर ने कहा कि हुजूर ! उस वक्त आपने चुटकी कहा बजाई थी ? यदि चुटकी बजाते तो उस मुरगे की भी दूसरी टाग निकल आती।

● क्यु ई बणनो नई

एक साधु अपने चेले के साथ जा रहा था। चेले ने साधु से ज्ञान पूछा तो साधु ने इतना ही कहा कि कभी कुछ बनना नही चाहिए। चलते-चलते एक बाग आया तो दोनो उसमे ठहर गये। साधु एक कमरे मे ठहर गया

और चेला दूसरे कमरे में जाकर लेट गया । थोड़ी देर में बाग के रखवाले आये तो उन्होंने चेले से पूछा कि तू कौन है ? तब चेले ने कहा कि मैं साधु हूँ । उन्होंने तिरस्कारपूर्वक कहा कि साधु की सूरत ऐसी ही होती है क्या ? चल निकल यहाँसे। यों कहकर उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया। फिर उन लोगों ने गुरु से पूछा कि तुम कौन हो ? लेकिन गुरु कुछ बोला नहीं । तब उन लोगों ने सोचा कि यह कोई करामती साधु है और उन लोगों ने विनयपूर्वक साधु से किसी दूसरे स्थान को चले जाने के लिए कहा । जब गुरु और चेले फिर मिले तब चेले ने अपने अपमान की बात गुरु से कही। इस पर गुरु ने कहा कि तू कुछ बना होगा ? चेले ने कहा कि गुरुजी ! मैंने तो उनके पूछने पर इतना ही कहा था कि मैं साधु हूँ । इस पर मुझे धक्के देकर बाहर निकाल दिया गया । तब गुरु ने कहा कि तू साधु बन गया न इसीलिए तेरी दुर्दशा हुई । तुझसे तो तीस वर्ष पहले मैं साधु बना था लेकिन मैंने नहीं कहा कि मैं साधु हूँ ।

● बाबै का अर धोलिये बलद का पग

एक जाट के चार-पाँच साल का पोता था । उसमे यह कुटेव थी कि जब भी जाट किसी काम से बाहर जाता, वह उसे टोक दिया करता । जब वर्षा हो गई और जाट हल लेकर खेत जाने की तैयारी करने लगा तो उसने सोचा कि पोता टोके बिना न रहेगा । अत उसने उसे एक कुठले में बद कर दिया । उधर जाट अपने बैलों को लेकर और कंधे पर हल रखकर खेत को चला, इधर लड़का कुलबुलाने लगा । उसने कुठले के नीचे के सूराख से झाँककर देखा और बोला कि बाबा के और धौले बैल के तो मारने के पैर ही दिखलाई देते हैं। इस प्रकार बाबा को टोककर उसने अपनी साध पूरी की ।

● जाटणी की रीभ

एक पंडित अपने जाट यजमान के घर गया और स्नान करके स्त्री के

पाठ करने लगा। अपनी पंडिताई जताने के लिए वह जोर-जोर से पाठ करने लगा। जाटनी उसके समीप आकर बैठ गई और उसे एक टक देखने लगी। जाटनी की आँखों मे आँसू आ गए। पंडितजी ने सोचा कि जाटनी पर पंडिताई का सिक्का जम रहा है अतः वे और भी जोर से पाठ करने लगे। पाठ समाप्त होने पर पंडितजी ने जाटनी से पूछा कि मालूम होता है तुम्हें पाठ सुनने मे बहुत आनन्द आया है। तब जाटनी ने कहा कि पाठ-पूठ तो मैं कुछ समझी नही, मैं तो यह समझी कि तुम अब मरोगे, क्योंकि कुछ ही दिन पहले मेरी एक भेड तुम्हारी ही तरह चिल्ल-पों करती-करती मर गई। मैंने समझा कि भेडवाली बीमारी तुम्हे भी हो गई है।

● धाप्या पड़्या छां

एक ठाकुर के घर में बहुत भूख थी। बच्चों को चुप कराने के लिए उसने छीके पर एक बेंत रख छोडा था। जब बच्चे रोटी के लिए अधिक हठ करते तो वह छीके पर से बेंत उठाकर उन्हें पीट दिया करता। बच्चे चुप हो जाते। एक दिन उक्त ठाकुर के एक पाहुना आया। बच्चों की हालत देखकर उसने कहा कि बच्चे तो बहुत दुबले हो रहे है। तब ठाकुर ने कहा कि खाना चनों का है। बच्चों ने यह सोचकर कि पाहुने के सामने तो बाप नही पीटेगा, बोल उठे कि चने यदि मिलें तो सूखे ही चबा लें। तब ठाकुर ने कहा कि क्यों, छीके पर से लाऊँ क्या ? पाहुने ने सोचा कि छीके पर रोटी रक्खी होगी, लेकिन बच्चे सही बात को जानते थे, इसलिए उन्होंने कहा कि नहीं बापजी, हम तो अघाये हुए हैं।

● नई राह

एक बनिया अपने घर मे सोया हुआ था कि एक चूहा उसकी छाती पर से निकल गया। बनिया जाग उठा और जोर-जोर से रोने लगा। घर के सारे लोग वहाँ जमा हो गए और उससे रोने का कारण पूछने लगे। कारण जानकर उन लोगों ने कहा कि चूहा निकल गया तो क्या हो गया, रोते क्यों हो ? उनकी बात सुनकर तब उसने कहा कि मैं चूहे के निकल

जाने में नहीं रोता हूँ। मैं तो इसलिए रोता हूँ कि यह राह बुरी निकली। आज चूहा निकला है, कल साँप भी इसी राह निकल सकता है। (इसी वास्ते शायद कोई नई राह नहीं निकालने देता है।)

दिल्लगीबाज और हलवाई

एक हलवाई की यह आदत थी कि वह किसी को भी अपनी भट्ठी से चिलम के लिए आग नहीं लेने देता था। कोई अनजान में ले भी लेता तो उसे बिना मारे न छोड़ता। एक दिन एक दिल्लगीबाज उधर से निकला। भट्ठी में लाल अंगारों को देखकर उसने सोचा कि एक चिलम पी लेनी चाहिए। उस समय हलवाई वहाँ मौजूद नहीं था अतः वह भट्ठी से आग लेकर चिलम पीने लगा। इतने में हलवाई वहाँ आ गया और उसने गुस्से में भरकर कहा कि इस बार तो तुम्हें ब्राह्मण जान कर छोड़े देता हूँ, आगे कभी यहाँ चिलम पीने का विचार करके आओ तो सिर पर तवा बाँधकर आना। तब दिल्लगीबाज ने कहा कि यदि वक्त पर तवा न मिले तो क्या सेहरा बाँधकर आ जाऊँ? हलवाई सुनकर लज्जित हो गया।

बाप-बेटो दोनू एक सा

एक सेठ के यहाँ बाप और बेटा दोनों नौकर थे। सेठ का लड़का मर गया तो नौकर ने अपने बेटे से कहा कि मैं बीमार हूँ, सेठ के यहाँ तुम हो आओ और जो सब लोग कहें वही तुम कह देना। नौकर का लड़का गया तो उसने सेठ के मकान के बाहर कुछ आदमियों को यों कहते सुना कि सेठ को अपने किये का फल मिल गया। नौकर के लड़के ने अन्दर जाकर उसी प्रकार कह दिया। तब सेठ के आदमियों ने उसे मार-कर बाहर निकाल दिया। उसने जाकर सारी बात अपने बाप से कही तो दूसरे दिन वह खुद लाठी टेकता हुआ सेठ के यहाँ गया और उसने कहा कि सेठजी, लड़का मूर्ख है, उसने अनजान में कुछ कह दिया हो तो क्षमा करें, आपके यहाँ दुबारा जब कोई मरेगा तो मातमपुरसी के लिए मैं खुद

आऊँगा। तब सेठ ने कहा कि आप बड़ा बुद्धिमान् बनकर आया है और फिर उसको भी घर से बाहर निकलवा दिया।

अनाज को कोठलियो

एक औरत का पति मर गया तो वह जोर-जोर से रोने लगी। पड़ोस मे ही एक नशेबाज रहता था, वह भी सहानुभूति जताने के लिए उस औरत के पास आया। उसने औरत से पूछा कि क्या वह भंग पीता था? औरत ने कहा कि कभी नहीं। तब उसने पूछा कि क्या वह अफीम खाता था? औरत ने कहा कि बिल्कुल नहीं। तब नशेबाज ने फिर पूछा कि क्या वह तबाकू भी नहीं पीता था, तब उस औरत ने कहा कि जी नहीं। तब नशेबाज ने बड़ी लापरवाही से कहा कि भला ऐसे आदमी को क्या रोती हो? वह तो अनाज का कुठला था सो लुढ़क गया।

ढेढ की बेगार

एक चमार बेगार से उकताकर कुएँ में जा गिरा। वहाँ मेंढक ने पूछा कि भाई! तुम कौन हो? जब उसने कहा कि मैं तो चमार हूँ तब मेंढक ने रोब से कहा कि इस चारो ओर फैली हुई सिवार को साफ करदे, मैं तैरूँगा। तब चमार ने सोचा कि इसी बेगार से डरता तो मैं कुएँ मे गिरा था और वही बेगार यहाँ भी तैयार मिली।

भली करी रे दायमा

एक दायमा ब्राह्मण जब मरने लगा तो उसने सोचा कि अपने पड़ोसी को भी साथ ही ले चलूं। अत उसने पड़ोसी को बुलाकर कहा कि भाई, मैं तो मर रहा हूँ लेकिन मेरा एक काम कर देना। हमारी परपरा के अनुसार जब तक मरे हुए आदमी के पेट म एक लठ नहीं घुसेड दिया जाता तब तक उसकी मुक्ति नहीं होती। अत तुम कृपा करके मरने के बाद मेरे पेट मे एक लठ घुसेड देना। पड़ोसी उसकी बातो में आ गया और मरने के बाद उसने एक लठ लाकर उसके पेट में घुसेड दिया। पुलिस को इस बात का

मुराग लगा तो उसने ब्राह्मण वे पडोसी का हत्या करने के अपराध मे फँसा लिया। उसने बहुत कहा कि मैं निर्दोष हूँ लेकिन हत्या के अपराध मे उस फाँसी की सजा हो गई। तब उसने कहा—

भली करी रे दायमा, अण पढि थाई भट्ट।
मरतो मरतो मारग्यो, दिरा पेट मे लट्ट॥

राजस्थान मे दायमा जाति के ब्राह्मण बहुत चालाक समझे जाते हैं। वे अनपढ भी बुद्धिमान होते हैं। इसी बात को लेकर उपर्युक्त दोहा कहा गया है कि (अरे बिना पढे भी भट्ट दायमा, तू ने खूब किया। तू मरता हुआ भी अपने पेट में लट्ठ दिलवाकर मुर्दा मार गया)

● अट्टा-सट्टा

एक जाट का लडका अपनी ससुराल का चला। उसके पास एक बढिया तलवार थी। रास्ते में उसने एक आदमी को कंधे पर फरसा उठाये हुए जाते देखा। फरसा धूप में चमक रहा था। जाट के लडके को फरसा बहुत अच्छा लगा और उसने तलवार के बदले में वह फरसा ले लिया। आगे चला तो उसने एक आदमी को अलगोजा बजाते हुए देखा। जाट के लडके ने सोचा कि अलगोजा एक साधारण बाजा बजाने में कितनी मस्ती है? उसने फरसे के बदले में अलगोजा ले लिया और मस्त होकर बजाता हुआ चलने लगा। थोडी देर में उसे भूख लगी। उसने चारो तरफ नजर घुमाकर देखा तो एक आदमी उस मूलियाँ ले जाते हुए दिखाई पडा। उसने अलगोजे के बदले में एक मोटी मूली ले ली और एक कुएँ पर बैठकर उस आनन्द से खाने लगा और बोला।

तरस बेचकर फरस लो, फरस बेचकर फू।
अट्टा सट्टा जो करे, सो अरडाकावे यू॥

(मैंने तलवार बेच कर फरसी ली और फरसी बेचकर बाजा लिया, हाँ भाई जो उलट पुलट करता है वही इस प्रकार मूली गटका सकता है)

● तेरी मा डाकण है

एक आदमी ने दूसरे आदमी से कहा कि तेरी माँ तो डाकिन है। तब

दूसरे ने पूछा कि तुम्हें कैसे मालूम हुआ ? पहले ने कहा कि वह श्मशान में मेरी माँ को मिली थी और मुर्दों को निकाल निकालकर खा रही थी। तब दूसरे ने कहा कि यदि तुम्हारी माँ रांड अच्छी है तो वह भला वहाँ क्यों गई थी ?

● जौहरी की निजर

एक राजा के यहाँ एक जौहरी एक कीमती हीरा बेचने के लिए आया। राजा ने नगर के सबसे बूढ़े जौहरी को बुलाकर वह हीरा दिखलाया। जौहरी हीरे की परख कर ही रहा था कि उसे पेशाब की हाजत हो गई और उसने वहीं थोड़ा हटकर पेशाब कर लिया। फिर उसने आकर राजा को बतलाया कि इस हीरे में साढ़े तीन रत्ती मैल है। राजा उसकी बात सुनकर चकित हुआ और उसने पूछा कि इस बुढ़ापे में भी आपकी नजर इतनी तेज है, इसका क्या रहस्य है ? तब जौहरी ने कहा कि इसका रहस्य इतना ही है कि मैं कभी लघुशंका की हाजत को रोकता नहीं, चाहे कितना ही आवश्यक काम हो ?

● पल्लै बाधले रोटी

एक चारण (बीकानेर डिवीजन में) जसरासर गया। इस तरफ खारिया गाँव आया, आगे पोटी नाम का गाँव आया। लेकिन न खारिये में, न पोटी में और न जसरासर में ही उसे खाने के लिए रोटी मिली। तब उसने कहा—

उरलै नाकै खारियो, परलै नाकै पोटी।
जे जसरासर जाय चटाऊ, पल्लै बाँध ले रोटी॥

(जसरासर के इस तरफ खारिया नाम का गाँव है और उस तरफ पोटी है। हे चटाऊ, यदि तुझे जसरासर जाना हो तो पल्ले रोटी बाँध कर ले जाना। वहाँ खाने को रोटी नहीं मिलेगी।)

● थारो म्हारो के रूसणो ?

एक चुहिया घर का काम धंधा बिल्कुल न करती थी, लेकिन खाने

में बहुत होशियार थी। एक दिन चूहे ने उसे पीट दिया तो वह एक नीम के वृक्ष के नीचे जाकर बैठ गई। जब चूहे ने पुकारा कि आकर घर में बुहारी निकाल लो तो उसने रूठे रूठे वहीं से कहा—

'मन्नै मारी थी, मन्नै कूटी थी,
मैं नीम तलै जा सूती थी,
मैं कयुं आऊ मेरो के लियो।'

तुमने मुझे मारा था, पीटा था और मैं रूठकर नीम के नीचे आकर सो गई। अब भला मैं क्या आऊँ? मेरा क्या लेता है?

इसी प्रकार जब भी उसने घर के काम के लिए कहा, वह उपर्युक्त बहाना बनाकर टालती रही। अन्त में चूहे ने घर में बुहारी निकाली, बरतन साफ किये और खाना बनाया। खाना बनाकर उसने चूहिया को फिर पुकारा कि आकर खाना खालो। तब चुहिया ने कहा—

"आऊ छू जी आऊ छू,
मुखड़ो धोकर आऊ छू,
थारा म्हारा के रूसणा"

(आ रही हूँ जी आ रही हूँ, मुंह धोकर आ रही हूँ, हमारा और तुम्हारा भला कैसा रूठना?)

और वह शीघ्र ही उछलती कूदती वहाँ आ गई। चूहे को बड़ा गुस्सा आया और उसने एक पत्थर उठाकर उसको मार दिया। पत्थर के लगते ही चुहिया वहीं ढेर हो गई।

● रमज्यान नै मार दियो

एक काजीजी मस्जिद में बैठे लोगों से कह रहे थे कि कल रमजानशरीफ आयेगा सो आप सब लोग रोजा रक्खें। वहीं बैठे एक अनाड़ी आदमी ने पूछा कि काजीजी रमजान किधर से आयेगा? काजी ने भी मज़ाक करते हुए दूसरे गाँव से आने वाले रास्ते की तरफ इशारा करके कह दिया

कि इस रास्ते आयेगा। वह आदमी यह सोचकर कि रमजान को आते ही मार डालूँगा ताकि सबको भूखा न रहना पड़े, उसी रास्ते पर जा बैठा और इधर आने वालों से उसका नाम पूछने लगा। किसी ने कुछ नाम बताया किसी ने कुछ। अन्त में एक ऊँट वाला आया और नाम पूछने पर उसने अपना नाम रमजान बतलाया। तब उस आदमी ने लट्ठ मार-मारकर उस बेचारे को जान से मार डाला और फिर ऊँट पर पिल पड़ा। ऊँट को भी मारकर वह काजी के पास गया और उसने कहा कि मैंने रमजान को मार डाला है, अब किसी को रोजा रखने की आवश्यकता नहीं है। काजी उसकी बात सुनकर लाहौल बिला, लाहौल बिला कह उठा तो उसने सोचा कि लाहौल बिला रमजान के साथ वाले जानवर का नाम है इसलिए काजी की शंका मिटाने के लिए उसने कहा कि मैंने उसका भी काम तमाम कर दिया है।

● जाट और भूत

एक बार एक गाव में अकाल पड़ा तो एक जाट अपने परिवार को लेकर किसी दूसरे स्थान को चला। रात हो गई तो सब लोग जंगल में ही ठहर गए। जो कुछ पास था सो खाया और सो रहे। बड़े तड़के ही सब लोग उठे और काम में लग गए। जाट ने सोचा कि चलते हुए जंगल से कुछ लकड़ियाँ काटकर ले चलें तथा कुछ रस्सियाँ बाट लें तो पास के गाव में उन्हें बेचकर कुछ पैसे प्राप्त कर लेंगे। उधर वृक्ष पर एक भूत रहता था, उसने सोचा कि न जाने ये लोग आज क्या करने वाले हैं? उसने मुखिया से पूछा तो मुखिया ने कहा कि इन रस्सियों से आज तुझे ही बाँधकर ले जाएँगे। भूत ने कहा कि तुम मुझे यहीं रहने दो मैं तुम्हें बहुत धन दूँगा। मुखिया ने उसकी बात मान ली और भूत ने उसे बहुत धन दिया। धन लेकर वे सब अपने गाव आ गए और सुख से रहने लगे। पड़ोसी ने पूछा तो जाट ने सारी बात बतला दी। तब वह भी अपने परिवार को लेकर उसी स्थान पर पहुँचा। उसने सबको काम करने के लिए कहा लेकिन

किसी ने उसका कहना नहीं माना। किसी ने कहा मुझे नींद आ रही है, किसी ने कहा कि मैं बहुत थका हुआ हूँ। भूत ने प्रकट होकर पूछा कि तुम क्या आये हो ? परिवार के मुखिया ने अपना मन्तव्य बतलाया तो भूत ने कहा कि जब तुम अपने परिवार के लोगों को वश में नहीं कर सकते तो मुझे क्या वश में करोगे ? अतः शीघ्र ही यहाँ से चले जाओ अन्यथा सबको मार डालूँगा। यह सुनकर सब लोग खाली हाथ ही वहाँ से भाग गए।

● अनाज लेसी 'क आटो

एक जाट ने एक नया खेत मोल लिया। जब वह उसमें हल चलाने लगा तो एक भूत ने प्रकट होकर जाट से कहा कि तुम्हारे हल की नोक से हमारी अँतड़ियाँ फट रही हैं, अतः तुम यहाँ हल न चलाओ। इस पर जाट ने कहा कि क्या मैं अपने परिवार सहित भूखा मर जाऊँ ? मुझे पाँच मन अनाज हर महीने चाहिए वह कहाँ से आयेगा ? तब भूत ने कहा कि हम पाँच मन अनाज हर महीने तुम्हारे घर पहुँचा दिया करेंगे। तब जाट हल लेकर अपने घर चला गया और भूत हर महीने पाँच मन अनाज उसके घर भिजवाने लगा। एक दिन उन भूतों के यहाँ कोई उत्सव था। बहुत से भूत वहाँ एकट्ठे हुए थे। वे लोग उत्सव मना ही रहे थे कि इतने में उस भूत को जाट के घर अनाज भेजने की बात याद आई तो वह उठकर चलने को हुआ। आये हुए भूतों ने जब पूछा कि कहाँ चले, तो उक्त भूत ने सारी बात कही और कहा कि आज महीना पूरा हो गया है अतः जाट के घर अनाज डालने जा रहा हूँ। आये हुए भूतों में से एक ने कहा कि तुम भूत होकर आदमी से डर गए लो आज मैं जाट के घर जाकर तुम्हारा पीछा ही छुड़वा देता हूँ। वह भूत जाट के घर चला। उधर जाट के घर में एक बिलाव हिल गया था सो वह दूध, दही खा जाया करता। जाट ने उसे फँसाने के लिए रस्से का एक फन्दा बनाया और मोरी के पास छुप कर बैठ गया। उधर भूत ने मोरी में मुँह डाला तो जाट ने उसे बिलाव का सिर समझकर फन्दा उसके गले में डाल दिया और बोला कि तुने

बहुत दिन हो गए हैं, आज तुझे जान से मारूँगा। जाट की बात सुनकर भूत सकपका गया और हाथ जोड़ने लगा। जाट ने जब देखा कि यह तो बिलाव नहीं कोई और ही है तो उसने कड़क कर भूत से पूछा कि तू कौन है ? भूत ने और कोई चारा न देखकर जान बचाने के लिए गिड़गिड़ाते हुए कहा कि मैं भूत हूँ, आज तुम्हारा महीना पूरा हो गया है इसलिए इस भूत ने यह पुछवाया है कि तुम्हें अनाज वैसे ही ला दें या पीसकर ला दिया करें। जाट ने सोचा कि चलो पीसने का झझट भी खत्म करें, अत बोला कि हमें तो अनाज पीसकर ही ला दिया कर और तब जाट ने भूत को फदे से मुक्त कर दिया। भूत जान बचाकर भागा और जब उसने आकर सारी बात कही तो वह भूत बोला कि तुमने पांच मन अनाज हर महीने पीसने की आफत और खड़ी कर दी, ऐसा पीछा छुड़वाया ?

● शिवजी को शख

एक बार पृथ्वी पर लगातार कई वर्षों तक अकाल पड़ा। बात यह हुई कि शिवजी महाराज ने कुपित होकर अपना शख बजाना छोड़ दिया और जब तक शिवजी शख नहीं बजायें तब तक वर्षा होती नहीं। एक दिन शिवजी पार्वती सहित मृत्युलोक से होकर जा रहे थे तो उन्होंने देखा कि एक किसान अपने खेत मे हल चला रहा है। शिवजी ने पूछा कि भले आदमी, वर्ष गुजर गए वर्षा हुई नहीं, तू सूखे मे क्यों हल चला रहा है ? तब किसान ने उत्तर दिया कि मैं इसलिए हल चला रहा हूँ कि कहीं मैं हल चलाना न भूल जाऊँ। यदि वर्षा हो गई और मैं हल चलाना भूल गया तो वह वर्षा मेरे किस काम आयेगी ? तब शिवजी ने सोचा कि मैंने भी कई वर्षों से शख नहीं बजाया है, कहीं मैं ही तो शख बजाना नहीं भूल गया हूँ। यह सोच कर उन्होंने अपना शख लेकर जोर से बजाया। शख बजते ही घनघोर वर्षा हुई और सारी दुनिया निहाल हो गई।

● बारठजी को आगलो

एक बारहट के पास घर मे तो कुछ था नहीं लेकिन गाँव मे उसकी मान

प्रतिष्ठा अच्छी थी। एक दिन एक बटाऊ उनके यहां आया तो बारहटजी ने किसी तरह उनका अच्छा सत्कार कर दिया। कहीं से खाट माँगकर लाये, कहीं से कपड़े। किसी के घर से अच्छी रसोई बनकर आ गई। रात को बारहटजी जब उसके लिए एक कचोला (कटोरा) दूध का लाये और दूध में पड़ी चीनी को अपनी उँगली से मिलाने लगे तो बटाऊ ने कहा कि बारहटजी! आपने तो मेरी बहुत अच्छी खातिर की है तब बारहटजी बोले, "बारठजी को तो बस आगला है', अर्थात् मेरी तो सिर्फ उँगली उँगली ही है जो दूध के कटोरे में फिरा रहा हूँ, बाकी सब चीजें तो माँगी हुई हैं।

● सोड़ ल्याओ

एक पंडितजी अपने छोटे लड़के को जाड़े के दिनों में साथ लेकर सोया करते थे। वे सोड (रजाई) में सोये सोये-उसको विवाह पद्धति रटाया करते। धीरे-धीरे लड़के को सारी विवाह पद्धति कंठस्थ हो गई। पंडितजी ने सोड में लेटे-लेटे ही कई बार उससे विवाह पद्धति सुन ली। जब उन्हें पूरा विश्वास हो गया कि बच्चे को विवाह पद्धति अच्छी तरह याद हो गई है तो वे एक दिन एक विवाह करवाने उसे भी अपने साथ ले गए। वहाँ लोगों पर रोब डालने के लिए पंडित जी ने कहा कि आज यह लड़का ही विवाह करवायेगा और उन्होंने लड़के से विवाह-पद्धति बोलने के लिए कहा। इस पर लड़के ने अपने पिता से कहा कि पिताजी 'सोड मँगवाइये। घर वालों ने पूछा कि 'सोड' का क्या करोगे ? तब लड़के ने कहा कि मैंने 'सोड' के अन्दर ही विवाह-पद्धति रटी है, उसी में बोलने का मुझे अभ्यास है, उसके बिना मैं नहीं बोल सकता। तब सब लोग पंडितजी की ओर देखकर हँसने लगे।

●

कथाओं की प्रतीकानुक्रमणिका

कथा-क्रम

ध

पृ स

न

प